सपनों का मनोविज्ञान

फ्रायड

सपनों का मनोविज्ञान

(The Interpretation of Dreams का संक्षिप्त अनुवाद)

सिगमंड फ्रायड

साहित्य

क्रम

स्वप्न–समस्याओं का वैज्ञानिक साहित्य

सपनों की व्याख्या करने की पद्धति

इच्छा-पूर्ति के रूप में स्वप्न

सपनों में विद्रूपण

सपनों के स्रोत व सामग्री

स्वप्न-क्रिया

स्वप्न-प्रक्रिया का मनोविज्ञान

अध्याय | 1

स्वप्न–समस्याओं का वैज्ञानिक साहित्य

इस पुस्तक में मैं यह सविस्तार बताने जा रहा हूँ कि एक ऐसी मनोवैज्ञानिक तकनीक है जो स्वप्न-व्याख्या को–सपनों का अर्थ निकालने कोसम्भव बनाती है और यह भी कि इस तकनीक को लागू करने पर हर सपना स्वयं ही उस मनोवैज्ञानिक संरचना को, उस ताने-बाने को प्रकट कर देता है जिसका अपना भरपूर महत्त्व है और जो जाग्रत अवस्था के दौरान होने वाली मानसिक गतिविधियों में एक सुनिश्चित स्थान रखता है। साथ ही मैं उस प्रक्रिया को स्पष्ट करने का प्रयास करूँगा जो सपनों की विचित्रता और दुरुहता के मूल में रहती है और इन प्रक्रियाओं से उन मानसिक प्रबलताओं की प्रकृति तक पहुँचने का भी प्रयास करूँगा जिनका द्वंद्व या सहयोग हमारे सपनों के लिए ज़िम्मेदार रहता है। इतना हो जाने पर मेरी खोजबीन सत्य हो जाएगी क्योंकि तब यह उस बिन्दु तक पहुँच चुकी होगी जहाँ स्वप्न की समस्या अधिक व्यापक समस्याओं में मिल चुकी होगी और उसका समाधान करने के लिए हमें विभिन्न प्रकार की सामग्री का सहारा लेना पड़ेगा।

अपनी बात की शुरुआत में मैं इस विषय पर अपने से पहले वाले लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों और तत्कालीन विज्ञान में स्वप्न-समस्या की अवस्थाओं से शुरु करूँगा क्योंकि इस पुस्तक में इसके बाद इन दोनों में से किसी पर भी बात करने का मौका मुझे शायद न मिल पाए। हज़ारों सालों से किए जा रहे प्रयासों के बावजूद सपनों की वैज्ञानिक समझ पाने में कोई प्रगति नहीं हो पाई है। मुझसे पहले वाले लेखकों ने इस तथ्य को पूरी दुनिया में इस तरह स्वीकार कर लिया है कि उन में से हर एक की व्यक्तिगत राय का उद्धरण देने की आवश्यकता नहीं रह गई है। अन्य अनेक मामलों में और हमारे इस विषय से जुड़ी काफी दिलचस्प सामग्री में पाठक देखेंगे कि स्वप्न की वास्तविक प्रकृति से सम्बद्ध कोई बात या इसकी पेचीदगी को हल करने जैसी कोई बात उनसे ना के बराबर है और एक आम आदमी तो इस विषय में और भी कम जानकारी रखता है।

प्रागैतिहासिक काल में आदिम लोगों द्वारा सपने के बारे में बनाई गई अवधारणा और आत्मा तथा ब्रह्मांड की रचना के बारे में उनकी अवधारणा पर पड़े इसके प्रभाव का विषय इतना अधिक दिलचस्प है कि मैं उन्हें इस पुस्तक में स्थान न दे पाने का निर्णय बड़े बेमन से ले पाया। पाठकों के समक्ष मैं सर जॉन लब्बाक (Lord Avebury), हरबर्ट स्पैंसर, ई.बी. टायलर और अन्य लेखकों के जाने-माने साहित्य का ही उल्लेख करूँगा। मैं इतना ही कहूँगा कि जब तक हम, अपने सामने रखे हुए सपने का अर्थ निकाल लेने के काम को पूरा नहीं कर लेते, तब तक हम इन समस्याओं और अनुमानों के महत्त्व को समझ नहीं सकते। आदिम युग में सपनों के बारे में बना ली गई अवधारणा के संस्मरण ही आज के प्रतिष्ठित पुराण-प्रेमी लोगों द्वारा स्वप्न की व्याख्या करने की विचारधारा का आधार प्रतीत होते हैं। पुरातन लोग यह मान बैठे थे कि सपनों का सीधा सम्बन्ध उस अलौकिक और दैविक संसार से है जिसमें वे विश्वास रखते थे, और यह भी कि देवता और शैतान सपनों के सूत्रधार हुआ करते हैं। साथ ही उन्हें यह भी लगता था कि सपना स्वप्नद्रष्टा के लिए कोई प्रयोजन लेकर आता है और आने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी करता है। सपने की कथावस्तु के असाधारण उतार-चढ़ाव और स्वप्नद्रष्टा पर पड़ने वाले उनके प्रभाव दरअसल उनकी कोई स्थिर या सुनिश्चित व्याख्या कर पाना सचमुच मुश्किल कर देते थे और इसीलिए उनके अर्थ तथा उनकी विश्वसनीयता के आधार पर उन्हें विभिन्न वर्गों से बाँट देना आवश्यक हो जाता था। पुराकाल के दार्शनिकों द्वारा सपनों को दिए गए अपने-अपने अर्थ स्वाभाविक रूप से उस महत्त्व पर आधारित रहते थे जिसे वे ज्योतिष सम्बन्धी जनमत में अपने-अपने विश्वास के आधार पर तैयार किया करते थे।

अरस्तू की जिन दो किताबों में सपनों का ज़िक्र आया है उन्हें पहले से ही मनोविज्ञान की समस्या पैदा करने वाली माना जाता रहा है। इनमें बताया गया है कि सपने ईश्वर द्वारा प्रेषित नहीं होते, इनका स्रोत ईश्वरीय न होकर शैतानी होता है, क्योंकि स्वभाव सचमुच शैतानी होता है, अर्थात् सपना कोई अलौकिक प्राकट्य नहीं है बल्कि मानव-आत्मा के विधान के अधीन होता है जिसका निकट सम्बन्ध दिव्य से है। स्वप्न को स्वप्नद्रष्टा की सोते हुए की जा रही मानसिक गतिविधि के रूप में परिभाषित किया गया है। स्वप्न के दौरान होने वाली विशिष्टताओं से अरस्तु सुपरिचित थे, जैसे वह जानते थे कि सोते-सोते महसूस की गई किसी छोटी-मोटी अनुभूति को सपना किसी प्रबल अनुभव में बदल देता है (यदि सोते हुए किसी के शरीर के किसी अंग को थोड़ी भी गरमाई महसूस होती है तो वह सपने में स्वयं को आग के बीच में से गुजरता हुआ और बेहद गर्मी महसूस करता हुआ देखता है)। इससे वह इस निष्कर्ष पर पहुँच गए हैं कि सपने चिकित्सकों को आसानी से उन प्रारम्भिक शारीरिक बदलावों को उन प्राथमिक

संकेतों के रूप में लिए जाने से भटका देते हैं जो दिन के दौरान अनदेखे कर दिए गए हों।

जैसा कि बताया जा चुका है, पुराकाल के और अरस्तु से पहले के लेखक सपनों को स्वप्नद्रष्टा के मन की उपज न मानकर उसे किसी दैवीय स्रोत से आया हुआ माना करते थे। स्वप्न की कथावस्तु के अर्थ निकालने के बारे में सदियों से चले आ रहे ये दोनों विरोधामासी रुझान प्राचीन काल से ही देखे जा सकते हैं। पुरातन लोगों ने उन सपनों की अलग-अलग पहचान बना ली थी जो स्वप्नद्रष्टा को किसी चेतावनी के रूप में भेजे जाने वाले, वास्तविक व अर्थपरक होते थे और जो उसे गुमराह करने वाले, विनाश की ओर ले जाने वाले, व्यर्थ, भ्रामक और निरर्थक होते थे।

सपनों के बारे में वैज्ञानिक सोच आने से पहले प्राचीन लोगों द्वारा अपनायी गयी अवधारणा वास्तव में ब्रह्मांड के बारे में उनकी व्यापक अवधारणा से पूरी तरह मेल खाती थी जो कि केवल मानसिक जीवन की वास्तविकता को बाह्य वास्तविक की तरह आगे बढ़ाने की आदी रही थी। साथ ही, सपने के बाद सुबह जागने पर याद रही उसकी स्मृति को भी वह महत्त्व देती थी क्योंकि मन में बैठी बातों की तुलना में सपने की यह स्मृति कुछ परदेसी जैसी लगती है–किसी और दुनिया से आई हुई। यह मान बैठना ग़लत होगा कि सपनों के स्रोत को अलौकिक मानने वाले हमारे युग में नहीं रहे हैं क्योंकि कट्टर रूप से धर्मपरायण और रहस्यवादी उन लेखकों के अलावा भी–जो कि कभी अतीत में हावी रही अलौकिक या आधिदैविक अवधारणाओं से चिपके रहते हैं–अन्य बातों में कल्पना प्रधान बातों के विरुद्ध रहने वाले अच्छे खासे बुद्धिमान लोग भी आज भी सपनों की दृश्य-घटना की अव्याख्येय प्रकृति के बारे में अपने धार्मिक विश्वास को आधार बनाकर इसके पीछे मानवेतर अलौकिक शक्ति का अस्तित्व होना और उसी का हाथ होना मान लेने की हद तक चले जाते हैं (Haffner)। दर्शन की कुछ विचार धाराओं—जैसे शैलिंग—द्वारा स्वप्न की कथावस्तु को दी गई मान्यता दरअसल पुराकाल में प्रचलित सपनों की अलौकिकता के निर्विवाद विश्वास का स्पष्ट संस्मरण ही है, लेकिन कुछ विचारकों के लिए सपनों की ज्योतिष या भविष्यवाणी सम्बन्धी शक्ति अभी भी बहस का मुद्दा है। इसका कारण यह वास्तविकता है कि इस विषय में जमा होती गई तमाम बातों की तुलना में मनोविज्ञान द्वारा सपनों की व्याख्या करने के प्रयास बहुत ही कम हुए हैं–भले ही विचारक प्रबल रूप से यह महसूस करते रहे हों कि इस तरह के अंधविश्वासपूर्ण सिद्धान्तों का खंडन किया जाना चाहिए।

स्वप्न-समस्या के वैज्ञानिक ज्ञान के इतिहास के बारे में लिखना बहुत ही कठिन है क्योंकि यह ज्ञान कुछ मामलों में भले ही महत्त्वपूर्ण रहा हो परन्तु फिर भी यह किसी निश्चित दिशा में कोई वास्तविक प्रगति नहीं कर पाया है। इसके

द्वारा सत्यापित परिणामों की ऐसी कोई आधार शिला अभी तक नही रखी गई है जिस पर भावी विवेचनकर्ता अपना निर्माण जारी रख सकें। एक ही समस्या पर हर नया लेखक अपने ही एक नए ढंग से–और बिल्कुल शुरुआत ही से–पहुँच रहा है। ऐसे लेखकों को यदि मुझे कालक्रम में रखकर गिनना पड़े और स्वप्न-समस्या के सम्बन्ध में हर एक के द्वारा व्यक्त विचार का सर्वेक्षण करना पड़े तो मैं इस विषय पर उपलब्ध ज्ञान की कोई स्पष्ट और पूरी तस्वीर प्रस्तुत करने में बिल्कुल अक्षम रहूँगा। इसीलिए, मैंने इलाज के अपने तरीके को लेखकों पर आधारित न करके उसकी विषयवस्तु पर आधारित रखा है और स्वप्न की हर समस्या के समाधान के प्रयास में मैं उस विषय पर उपलब्ध साहित्य-सामग्री का ही उद्धरण दूँगा।

परन्तु मैं इस सम्पूर्ण सामग्री में पारंगत हो जाने में सफल नहीं हुआ हूँ क्योंकि यह सामग्री बहुत अधिक छितराई हुई और दूसरे विषयों के साहित्य के साथ गुंथी हुई है–मैं अपने पाठकों से अपने सर्वेक्षण से यथावत सन्तुष्ट रहने का आग्रह करता हूँ–अपवाद स्वरूप वहाँ के जब कि कोई आधारभूत तथ्य या कोई महत्त्वपूर्ण बिन्दु इससे छूट गया हो।

बाद में प्रकाशित एक जर्मन संस्करण के परिशिष्ट में लेखक ने ये शब्द जोड़े हैं :

“इस पुस्तक के प्रथम संस्करण और द्वितीय संस्करण के बीच की अवधि के दौरान प्रकाशित स्वप्न-समस्या के साहित्य के सार-संक्षेप को यहाँ न जोड़ने के औचित्य को मुझे सिद्ध करना पड़ेगा। हो सकता है कि इसके लिए दी गई दलीलों से पाठक संतुष्ट न हों, लेकिन फिर भी, मुझे यह निर्णय लेना ही पड़ा है। नौ वर्षों के इस अंतराल के दौरान सपने की अवधारणाओं के बारे में कुछ भी नया या महत्त्वपूर्ण सामने नहीं आया है–न तो किसी पाठ्य-सामग्री के रूप में और न ही किसी नए दृष्टिकोण के रूप में। मेरी इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद से सामने आए अधिकांश साहित्य में इस पुस्तक की न तो कोई चर्चा है और न परिचर्चा। तथाकथित ‘स्वप्न पर अनुसंधानकर्ताओं’ ने इस पर कोई तवज्जो ही नहीं दी है, और इस तरह उन्होंने कुछ भी नया न सीखने-जानने की वैज्ञानिकों की विशिष्टता को उजागर किया है। अंतोले फ्रांस ने कहा भी है–‘विद्वानों और पंडितों में जिज्ञासा नहीं होती।’ विज्ञान में अगर बदला लेने का अधिकार जैसी कोई चीज़ होती तो बदले के रूप में इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद आए साहित्य को मेरे द्वारा भी अनदेखा कर दिया जाना न्यायसंगत ही रहता। वैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित गिनी-चुनी समीक्षाएँ इतनी गलतफहमियों से भरी हैं और समझ से परे हैं कि अपने समालोचकों से प्रत्युत्तर स्वरूप मैं इतना ही अनुरोध कर सकता हूँ कि वे इस पुस्तक को एक बार फिर से पढ़ें–या शायद यह कहूँ कि वे इसे पढ़ें तो सही।”

और 1914 में जर्मन में प्रकाशित इसके चौथे संस्करण के परिशिष्ट में–अर्थात् इस पुस्तक के अंग्रेज़ी अनुवाद के प्रकाशन के एक वर्ष बाद–वह लिखते हैं:

"तब से स्थिति अब वाकई बदली है। इस विषय पर प्रकाशित होने वाले साहित्य में मेरे योगदान 'स्वप्न-व्याख्या' को अब नज़र अन्दाज नहीं किया जाता है। लेकिन इस नई स्थिति में उसका सार-संक्षेप लिखना और भी कठिन हो गया है। 'द इन्टरप्रीटेशन ऑफ ड्रीम्स' ने नए तर्क-वितर्क और समस्याओं का पूरा सिलासिला ही खड़ा कर दिया है जो लेखकों द्वारा तरह-तरह से प्रतिपादित किया जा रहा है, परन्तु मैं उन लेखों पर तब तक चर्चा नहीं कर सकता जब तक कि मैं उन सिद्धान्तों को जान न लूँ, समझ न लूँ, जिनका ये लेखक सन्दर्भ दे रहे हैं। आधुनिक साहित्य में मुझे जो कुछ महत्त्वपूर्ण लगा है, उसे मैंने इस पुस्तक में स्थान भी दिया है और उसकी समीक्षा भी की है।"

अध्याय | 2

सपनों की व्याख्या करने की पद्धति

सपने का विश्लेषण

मैं प्रदर्शित करना चाहता हूँ कि सपनों की व्याख्या की जा सकती है और इस की समस्या के जिस समाधान पर हम पहले चर्चा कर आए हैं उस दिशा में उठाया गया कोई भी कदम मेरे इस विशेष कार्य को सिद्ध करने में सहायक होगा। इस परिकल्पना पर कि सपने अपना अर्थ बताने में सक्षम होते हैं, मैं स्वयं को सपनों के मौजूद सिद्धान्त की असहमति में खड़ा पाता हूँ–सचमुच, स्वप्न-सम्बन्धी सभी सिद्धान्तों की असहमति में, सिवाय शर्नर के सिद्धान्त के, क्योंकि 'सपनों का अर्थ' निकालने का मतलब है, उसकी एक-एक बात का विशिष्ट अर्थ बताना, उसकी जगह वह बात रखना जो हमारे मन की सिलसिलेबार गतिविधियों के साथ किसी निश्चित महत्त्व और मूल्य से जुड़ी होती है। परन्तु, जैसा कि हमने देखा है, सपनों के बारे में सारे के सारे वैज्ञानिक सिद्धान्त सपनों का अर्थ निकालने की समस्या को कोई स्थान ही नहीं देते क्योंकि इन सिद्धान्तों के अनुसार सपना मानसिक गतिविधि है ही नहीं बल्कि यह तो शारीरिक प्रक्रिया है जो प्रतीकों के माध्यम से मानसिक तंत्र को अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है। जन सामान्य की राय इन सिद्धान्तों के सदा विरुद्ध रही है। बिना किसी तर्क के अपनी बात पर अड़े रहने के अपने अधिकार का यह प्रयोग करती आयी है, और यह स्वीकार करते हुए भी कि सपने दुर्बोध और बेसिर-पैर के होते हैं, यह इस बात से इंकार करने का साहस नहीं कर पाती है कि सपनों का कोई न कोई अर्थ ओर अभिप्राय तो होता ही है। अपने भीतर किसी कोने से प्रेरित होकर यह इस बात को मानती प्रतीत होती है कि सपनों का कोई न कोई अर्थ तो होता ही है–भले ही वह छिपा हुआ हो, कि वे किसी अन्य विचार प्रक्रिया के अनुकल्प के रूप में प्रकट होते हैं और यह भी कि हमें तो बस इस अनुकल्प को समुचित रूप से सामने लाना होता है ताकि सपनों का छिपा अर्थ सामने लाया जा सके।

अवैज्ञानिक जगत इस तरह हमेशा ही सपनों का 'अर्थ निकालने' में, और वह भी दो बिल्कुल भिन्न पद्धतियों में से किसी एक को लागू करने में लगा रहा है। इनमें से पहली पद्धति सपने की विषयवस्तु को एक पूरी बात की तरह लेती है और उसे किसी ऐसी अन्य बात से प्रतिस्थापित करना चाहती है जो सुगम और सुबोध हो–और कुछ मामलों में उसके सदृश भी। यह प्रतीकात्मक स्वप्न-व्याख्या है लेकिन यह वास्तव में उन मामलों में तो शुरुआत में ही ताश के पत्तों के महल की तरह भरभराकर बिखर जाती है जिनमें सपने अस्पष्ट और भ्रामक होते हैं। बाइबिल में जोसफ ने जो ढाँचा फैरों के सपने के आधार पर खड़ा कर दिया था वह इसी पद्धति का एक उदाहरण है। सात मोटी-ताजी गायें जिन्हें उनके पीछे-पीछे आने वाली दुबली व दुर्बल गायें लील गई थीं–मिस्र की धरती पर सात वर्ष तक चलने वाले अकाल की अनुकल्प थीं जो इस भविष्यवाणी के अनुसार हरे-भरे सात वर्षों की अतिरिक्त उपज को लील जाने वाला था। कवियों द्वारा कल्पित व रचित अधिकांश सपने कुछ इसी तरह की प्रतीकात्मक व्याख्या की मंशा लिए होते हैं क्योंकि वे कवि द्वारा कल्पित विचार को ऐसे लिबास में पुन: प्रस्तुत कर देते हैं जो उस छद्मवेश से भिन्न नहीं होता जिसे हम अपने सपनों में देखने के आदी हो गए हैं।

यह अवधारणा कि सपनों का सरोकार मुख्यत: ऐसे भविष्य से जुड़ा होता है जिसके स्वरुप का वह पहले ही अनुमान लगा लेता है–दरअसल कभी सपनों को भविष्य सूचक के रुप दे दी गई मान्यता व प्रतिष्ठा का ही अवशेष है और यही बात सपनों के उस अर्थ को भविष्य का रूप दे देने की हेतु बन गई है जो कि इस प्रतीकात्मक व्याख्या में भी पाई जाती है।

निश्चय ही, ऐसी प्रतीकात्मक व्याख्या पर पहुँचने के तौर-तरीकों को बताया–दिखाया नहीं जा सकता। इसमें सफल होना तो अटकल और अनुमान लगाने की प्रवीणता का और सीधे सहज बोध का मामला है। यही कारण है कि स्वप्न-व्याख्या स्वाभाविक रुप से एक ऐसी कला के रूप में उभरी जो किसी असाधारण और विलक्षण प्रतिभा पर आधारित प्रतीत होने लगी। स्वप्न-व्याख्या की दूसरी पद्धति इस प्रकार के सभी दावों को एक तरफ कर देती है। इसे 'कूट-विधि' (cipher method) कहा जा सकता है क्योंकि यह सपनों को एक ऐसे गुह्य संकेत के रूप में लेती है जिसमें हर संकेत को किसी ज्ञात अर्थ के रूप में तब्दील किया जाता है–और वह भी एक निर्धारित विधि से। उदाहरण के लिए, मैंने एक पत्र आने का और एक अन्तिम-संस्कार होने का सपना देखा। इसका अर्थ जानने के लिए मैंने 'स्वप्न-पुस्तक' के पन्ने पलटे और पाया कि पत्र आने का मतलब है परेशानी का आना और अन्तिम संस्कार देखने का मतलब है कोई करार या सगाई होना। मेरा मानना है कि ये भी भविष्य में होने वाली बात के ही सूचक हैं और सपनों का गुह्य अर्थ बताने वाली ऊटपटांग

किताब के माध्यम से मैं इन्हें भविष्य से ही जोड़ कर देखता हूँ। इस कूट-विधि में एक दिलचस्प फेर-बदल डालडिस के अर्टी मिडोरस द्वारा प्रस्तुत अपनी स्वप्न-व्याख्या के विवरण में किया गया है जिसमें इस पूरी तरह मशीनी अर्थ-यन्तरण की प्रणाली को किसी हद तक सुधारा गया है। इसमें केवल स्वप्न-कथा को ही नहीं बल्कि स्वप्नद्रष्टा के व्यक्तित्व और उसकी सामाजिक अवस्थिति को भी विचाराधीन रखा गया है ताकि एक ही स्वप्न-कथा का अर्थ धनी व निर्धन के लिए, विवाहित व अविवाहित के लिए, वक्ता तथा व्यापारी के लिए भिन्नता रखने वाला हो। 'तो, इस पद्धति का सारभूत बिन्दु यह है कि अर्थ निरुपण का कार्य समूचे स्वप्न पर लागू नहीं किया जाता बल्कि स्वप्न-कथा के प्रत्येक खंड पर पृथकत: लागू किया जाता है–मानों कि सपना भिन्न-भिन्न चीज़ों का कोई गुच्छा हो जिसके हर हिस्से को अलग-अलग तरह से देखा-समझा जाना आवश्यक हो। ऊलजलूल और गड्ड-मड्ड सपने निश्चय ही वे सपने हैं जो कूट-विधि के अविष्कार के लिए जिम्मेदार हैं।

स्वप्न-व्याख्या करने वाली इन दोनों पद्धतियों के नाकारापन पर कोई विचार-विमर्श करने की आवश्यकता नहीं है। जहाँ तक इस विषय के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परखने का प्रश्न है प्रतीकात्मक पद्धति तो अपने ही दायरे में कूप-मंडूक बनी रहती है और सर्व-सामान्य व्याख्या के लिए सुग्राही नहीं होती, जबकि कूट-विधि में सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि स्वप्न-पुस्तक और उसकी संकेत-कुंजी विश्वसनीय है भी या नहीं–और उसकी विश्वसनीयता की कोई गारंटी भी तो नहीं होती। तभी तो दार्शनिकों और मनोचिकित्सकों की बहस को होने देने के लिए और स्वप्न-व्याख्या की समस्या को पूरी तरह कपोल कल्पित होने के कारण उसे नकार देने के लिए हर व्यक्ति आतुर रहता है।

फिर भी मैं कुछ अलग तरह से सोचता आया हूँ। यहाँ मैं देख रहा हूँ कि एक बार फिर हम उस जगह आ पहुँचे हैं जहाँ आधुनिक विज्ञान की अपेक्षा एक प्राचीन और हठपूर्वक थामे रखा गया प्रचलित विश्वास सत्य के अधिक निकट आता प्रतीत होता है। मैं यह निश्चित तौर पर मानता हूँ कि सपना सचमुच एक अर्थ रखता है और यह भी कि स्वप्न-व्याख्या की एक वैज्ञानिक पद्धति संभव है। मैं इस पद्धति पर निम्नलिखित रूप से पहुँचा हूँ।

वर्षों तक मैं मनोरोग विज्ञान के स्वरूपों (psychopathological structures) के समाधानों में लगा रहा हूँ जैसे हिस्टीरिया की दुर्भीति (hysterical phobias) मनोग्रास्तिज धारणाएँ (obsessional ideas) इत्यादि। सच तो यह है कि तब से मैं बहुत व्यस्त हो गया जब से मैंने जोसेफ़ ब्रूर का यह महत्त्वपूर्ण उल्लेख सुना है कि रुग्ण तथा अस्वस्थ लक्षण वाले मनोरोग विज्ञान के इन स्वरूपों में समाधान और इलाज साथ-साथ चलते हैं। रोगी के मानसिक जीवन के उन तत्वों को रोग-विज्ञानी धारणा

(pathological idea) में वापस ढूँढ़ पाना जहाँ से वे उत्पन्न हुए हैं–ऐसा करना जहाँ-जहाँ संभव हुआ है, वहाँ-वहाँ वह धारणा टूटी है और रोगी उससे मुक्त हुआ है। हमारे अन्य चिकित्सकीय प्रयासों की विफलता को देखते हुए और रोग विज्ञान (pathology) की स्थिति की जटिलताओं को देखते हुए तमाम कठिनाइयों के बावजूद, ब्रूमर द्वारा प्रतिपादित पद्धति पर तब तक चलते रहना मुझे सही लगता है जब तक कि इस विषय पर विशद व्याख्या उपलब्ध न हो जाए। जहाँ-जहाँ आवश्यक होगा वहाँ-वहाँ मैं इस प्रणाली की नवीनतम तकनीक के स्वरूप का तथा अपने प्रयासों के परिणाम का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता रहूँगा। इस मनोविश्लेषणात्मक (psychoanalytic studies) अध्ययन के दौरान स्वप्न-व्याख्या का प्रश्न संयोगवश मेरे सामने आ गया था। अपने रोगियों से यह वादा ले लेने के बाद कि वे किसी विषय विशेष के सम्बन्ध में उठने वाले अपने सारे विचार और धारणाएँ मुझे बता देंगे, उन्होंने अपने सपनों के बारे में मुझे बताना शुरू कर दिया और इस प्रकार मुझे सिखाया कि सपना हमारे मानसिक विचार-प्रवाह के साथ गुंथा हो सकता है और रोगी की स्मृति में प्रवेश कर रही रोग-विज्ञान की धारणा से पलट कर आ सकता है। दूसरा कदम था–स्वप्न को ही एक लक्षण के रूप में देखना और व्याख्या की उस पद्धति को उस पर लागू करना जो ऐसे लक्षणों के लिए काफी खोजबीन के बाद तैयार की गई थी।

इसमें रोगी के लिए एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक तैयारी आवश्यक होती है। एक दोहरा प्रयास किया जाता है–उसकी मनोवैज्ञानिक दृष्टि के प्रति उसके अवधान को बढ़ाना और उसकी उस पेचीदा मनोदशा को कम करना जिसमें रहते वह ऐसे विचारों को सतह पर आते देखने का आदी होता है। आत्म-निरीक्षण और केन्द्रित अवधान के प्रयोजन से यह उपयुक्त रहता है कि रोगी एक आरामदेह स्थिति में रहे और अपनी आँखें बन्द रखे। उसे उन विचारों के प्रति पूरी तरह निष्पक्ष रहने की साफ-साफ हिदायत दी जाए जो उसके सामने आते-जाते रहें। उसे यह भी बता दिया जाए कि मनोविश्लेषण की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने दिमाग से गुजरने वाली हर एक बात पर ध्यान दे और उस बात को बताए भी। साथ ही, वह किसी भी विचार को यह मानकर दबा न दे कि वह उसे विषय के अनुसार महत्त्वपूर्ण, अप्रासंगिक या अनर्गल लग रहा है। अपने विचारों के बारे में उसे पूरी तरह निष्पक्षता बनाए रखनी चाहिए क्योंकि यदि वह अपने स्वप्न का, या अपने मनोग्रास्तिज विचार का या किसी ऐसी ही बात का वांछित निदान ढूँढ़ पाने में विफल रहा तो इसका कारण उसका उन विचारों में स्वयं को आलोचक होने देना ही होगा।

अपने मनोविश्लेषणात्मक कार्य के दौरान मैंने पाया है कि अपने चिन्तन के रुझान में रहने वाली किसी व्यक्ति की मनोदशा उसकी अपनी ही मानसिक

प्रक्रिया का अवलोकन करती हुई मनोदशा से बिल्कुल भिन्न होती है। आत्म-अवलोकन में भरपूर अवधान की अवस्था की अपेक्षा चिंतन में मानसिक गतिविधि बहुत हरकत में रहती है। इस बात को स्वयं का अवलोकन करने वाले व्यक्ति की मौन शान्ति के विपरीत चिन्तन करने वाले व्यक्ति की सिकुड़ती भौहों और उसके तनावपूर्ण व्यवहार में साफ देखा जा सकता है। दोनों ही–मामलों में हालाँकि केन्द्रित अवधान (concentrated attention) होना अनिवार्य है परन्तु चिन्तन करता हुआ व्यक्ति अपनी चिंताकारी मनःशक्तियों का प्रयोग करता है, परिणामस्वरूप वह ऐसे कुछ विचारों को नकार देता है जो उसके चेतन मन में तब उठे होते हैं जब वह उनके प्रति सजग हो चुका होता है; और फिर वह यकायक दूसरे विचारों को छोड़ देता है ताकि वह उन विचारों की लकीर पर न चल पड़े जो उसके लिए अन्यथा खुले होते, जबकि अन्य विचारों के मामलों में वह फिर भी कुछ इस प्रकार बर्ताव करने में कामयाब रहता है कि वे कतई जाग न जाएँ–अर्थात् उन्हें देखें जाने से पहले ही उन्हें दबा दिया जाता है। दूसरी ओर, आत्म-अवलोकन में उसके पास बस एक ही काम रहता है–और वह है समीक्षात्मकता (criticism) को दबाना और यदि वह ऐसा कर पाने में सफल रहता है तो ऐसे अनगिनत विचार उसके सचेतन मन में प्रवेश कर पाते हैं जो अन्यथा उसकी पकड़ से बच कर निकल जाते। इस प्रकार प्राप्त सामग्री के साथ–उस सामग्री के साथ जो आत्म-अवलोकनकर्ता (self-observer) के लिए नई-नई होती है–रोगविज्ञान की अवधारणाओं की व्याख्या करना तब स्वप्न रचनाओं तक पहुँच पाना सम्भव हो जाता है। जहाँ तक मानसिक ऊर्जा (mobile attention) अर्थात् उसके अवधान की चलायमानता के बँटे होने की बात है तो, जैसा कि हम आगे देखेंगे, मुद्दा यह है कि एक ऐसी मनःस्थिति पैदा की जाए जो सोने से ठीक पहले होने वाली मानसिक दशा के सदृश भी हो और सम्मोहन दशा के भी। नींद में डूब जाने पर स्वत: होने वाली–और समीक्षा करने वाली भी–कुछ खास क्रियाएँ शिथिल पड़ जाती हैं जिससे 'अन-इच्छित विचार' भी उभर कर सामने आने लगते हैं और अपनी सुध-बुध खोते ये अन-इच्छित विचार फिर दृश्य-श्रवण वाली छवियों में परिवर्तित होने लगते हैं। स्वप्न-व्याख्या और रोगविज्ञानी धारणा के लिए उपयोग की जाने वाली इस अवस्था में इस गतिविधि को प्रयोजनपूर्वक और जानबूझ कर छोड़ दिया जाता है और इस प्रकार बचाई गई मानसिक ऊर्जा को सतह पर आ चुके अन-इच्छित विचारों के पीछे लगा दिया जाता है–उन विचारों के पीछे जो धारणा के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए होते हैं (यह अवस्था निद्रालुता से भिन्न होती है)। इस प्रकार 'अन-इच्छित विचार' फिर 'इच्छित' में बदल जाते हैं।

बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्हें 'मुक्त रूप से उठते' विचार के प्रति आवश्यक रुख अपनाना और उस समय उस समीक्षा को छोड़ देना आसान नहीं लगता

जो अन्यथा सदा बनी रहती है। 'अन-इच्छित विचार' अपने स्वभाव के अनुसार सबसे प्रचंड प्रतिरोध पैदा करते हैं, और यह प्रतिरोध ही उन्हें उभर कर आने से रोकता है। हमें अपने महान कवि-दार्शनिक फ्रैडरिक शिलर को श्रेय देना चाहिए जिन्होंने बताया है कि काव्य रचना के लिए आवश्यक अवस्था में भी इसी प्रकार का रुख होना शामिल रहता है। कूरनर के साथ अपने पत्राचार में शिलर ने अपने एक मित्र द्वारा की गई अपनी रचनात्मक शक्ति के अभाव की शिकायत पर उत्तर दिया था : "मुझे ऐसा लगता है कि आपकी शिकायत का कारण अवरोध में बैठा हुआ है जो आपकी बौद्धिकता आपकी कल्पना पर लगा देती है। इस पर अपनी टिप्पणी देते हुए मैं इसे एक रूपक के माध्यम से वर्णित करूँगा। सच तो यह है कि बुद्धि द्वारा अपने अंदर आते प्रत्येक विचार की प्रवेश द्वार पर ही गहरी जाँच पड़ताल करना जाहिर तौर पर कोई अच्छी बात नहीं है। कोई अकेला विचार अपने आप में बिल्कुल महत्त्वहीन हो सकता है और अपनी अति में पूरा जोखिम भरा भी, परन्तु अपने पीछे आते किसी अन्य विचार से वह महत्त्वपूर्ण बन सकता है, शायद किसी ऐसे अन्य विचार से सम्बद्ध होने के कारण जो कि स्वयं में एकदम बेतुका नज़र आता हो लेकिन फिर भी एक बहुत उपयोगी सूत्र बनने की क्षमता रखता हो। बुद्धि इन सब विचारों के बारे में तब तक सही-गलत का निर्णय नहीं ले सकती जब तक वह स्वयं में इन्हें रोके रखे हुए इन्हें एक दूसरे से जोड़कर जाँच-परख नहीं लेती। रचनात्मक मन (creative mind) के बारे में मेरा मानना है कि वहाँ बुद्धि अपने प्रवेश द्वार से इन निगरानी करने वालों को हटा चुकी होती है और उसमें विचार धड़ल्ले से प्रवेश कर जाते हैं, तभी वह उन सब की समीक्षा करती है, विचारों की इस भीड़ का निरीक्षण करती है। आप जैसे संभ्रान्त आलोचक–या स्वयं को आप जो कुछ कहलाना चाहें–इस क्षणिक और गुजरती हुई सनक से या तो शर्मिंदा हो जाते हैं या घबरा जाते हैं–हालाँकि यह सभी वास्तविक रचनाकारों में पाई जाती है। इस शर्मिंदगी या घबराहट की लम्बी या छोटी अवधि ही विचारशील कलाकार होने और सपने देखने वाला होने का कारक बनती है। आप विफलता की शिकायत इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आप नकारने में बहुत जल्दबाजी करते हैं और छाँटने में बहुत निष्ठुरता? (दिसम्बर 1, 1788 का पत्र)।

फिर भी, जैसा कि शिलर ने बताया है, बुद्धि के प्रवेश-द्वार से निगरानी करने वालों को हटाना और उसे एक समीक्षा रहित आत्म-अवलोकन की स्थिति में बदल देना, कोई कठिन काम नहीं है।

मेरे अनेक रोगी मेरे प्रथम परामर्श के बाद ही इसे कर पाने में कामयाब रहे हैं। मैं स्वयं इसे पूरी तरह कर सकता हूँ–विशेषकर तब जबकि मैं अपने दिमाग में कौंधियाते विचारों को लिख डालने के तरीके की मदद लेता हूँ। इस तरह आलोचनात्मक कार्रवाई को घटाने वाली और आत्म-अवलोकन की सघनता को

बढ़ाने वाली इस मानसिक ऊर्जा की मात्रा उस विषयवस्तु के अनुसार पर्याप्त घटती-बढ़ती रहती है जिस पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

इस पद्धति के प्रयोग का प्रथम चरण ही हमें यह सिखा देता है कि हम पूरे स्वप्न को अपने अवधान (attention) का विषय नहीं बना सकते–बल्कि इसकी कथा के अलग-अलग अंशों को ही बना सकते हैं। इस पद्धति के अनभ्यस्त किसी रोगी से मैं अगर पूछूँ : "इस स्वप्न के सम्बन्ध में तुम्हारे साथ हुआ क्या था?" तो सिद्धान्त रूप में वह दर्शन की अपनी मानसिकता की किसी भी चीज़ को पक्के तौर पर नहीं बता पाता है। पहले तो मुझे उसके स्वप्न का विच्छेदन-विश्लेषण करना पड़ता है, फिर वह सपने के हर भाग के सम्बन्ध में अनेकों विचार बताता है जिन्हें सपने के उस भाग के 'पीछे का विचार' कहा जा सकता है। इसके बाद अर्थात् इस प्राथमिक व महत्त्वपूर्ण अवस्था के बिन्दु से मेरे द्वारा अपनाई जाने वाली स्वप्न-व्याख्या की पद्धति उस पद्धति से एक भिन्न दिशा में चली जाती है जो प्रतीकों द्वारा स्वप्न-व्याख्या करने की प्रचलित और परम्परागत पद्धति है, लेकिन यह 'कूट-विधि' के थोड़ा निकट चली जाती है। इस तरह यह अंश-दर-अंश सविस्तार व्याख्या होती है न कि एक मोटे तौर पर की गई कोई व्याख्या। इस तरह यह सपने की संरचना को उसकी नींव से देखना शुरू करती है, उसे मानसिक घटकों के एक गुच्छे के रूप में देखना शुरू करती है। मनोरोगियों और विक्षिप्त लोगों का मनोविश्लेषण करने के दौरान शायद एक हज़ार से भी अधिक सपने मेरा विषय बन चुके हैं, परन्तु उस सामग्री को मैं स्वप्न-व्याख्या की पद्धति व तकनीक का परिचायक बनाना नहीं चाहता। ऐसा मैं इस बात के आधार पर नहीं कर रहा हूँ कि कहीं मुझ पर यह आरोप व आपत्ति न हो कि विक्षिप्त लोगों के सपनों के निष्कर्ष स्वस्थ लोगों पर जैसे लागू किए जा सकते हैं, बल्कि एक कारण और भी है जो मुझे इन्हें इसके लिए अस्वीकृत करने के लिए बाध्य करता है। जिस वर्ण्य विषय की ओर ये स्वप्न इंगित करते हैं वे सचमुच और सदैव उस व्यक्ति का इतिहास होते हैं जो उनकी विक्षिप्तता के लिए ज़िम्मेदार हैं। अत: हर सपने के साथ यह आवश्यक हो जाएगा कि उसकी एक लम्बी भूमिका बताई जाए, साइकोन्यूरोसिस की कारण विज्ञानीय (etiological) अवस्था व प्रकृति की जाँच-परख रिपोर्ट दी जाए तथा वह सारी सम्बन्धित सामग्री भी दी जाए जो अपने आप विलक्षण तथा विचित्र ही होती है। निश्चय ही, यह सब हमारा ध्यान हटा देने वाला होगा। जबकि, मेरा प्रयोजन स्वप्न-समस्या के समाधान द्वारा एक ऐसा रास्ता निकाल लेने का रहता है ताकि मनस्ताप ग्रस्त व्यक्ति के मनोविज्ञान की कहीं अधिक कठिन समस्या को सुलझाया जा सके। परन्तु, यदि मैं अपनी इस सामग्री में प्रमुख स्थान रखने वाली विक्षिप्त लोगों के सपनों की व्याख्या को निकाल ही देता हूँ तो फिर मैं इसके शेष बचे भाग की भी समुचित समीक्षा नहीं कर पाऊँगा। यहाँ केवल उन्हीं

सपनों को छोड़ दिया गया है जो प्रसंगवश मेरे परिचित क्षेत्र के स्वस्थ व्यक्तियों द्वारा मेरे सम्बन्ध में देखे गये, या जिन्हें मैं स्वप्न-जीवन के साहित्य में उदाहरण स्वरूप दे चुका हूँ। दुर्भाग्यवश, इन सभी सपनों का विश्लेषण मेरे हाथ नहीं लग पाया जिसके अभाव में मैं इन सपनों का अर्थ नहीं जान सका। वास्तव में मेरी पद्धति की विधि प्रचलित गूढ़ार्थ पद्धति (cipher method) की अपेक्षा सरल है। गूढ़ार्थ पद्धति उपलब्ध स्वप्न-कथा को एक निर्धारित कुंजी के सन्दर्भ से रुपान्तरित करती है, जबकि, इसके विपरीत, मेरा मानना यह रहता है कि एक ही स्वप्न भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न-भिन्न निहित अर्थ रखने वाला या भिन्न-भिन्न सन्दर्भ रखने वाला हो सकता है। इसलिए भरपूर और सुविधाजनक सामग्री के स्रोत के रूप में मुझे सीधे ऐसे व्यक्ति के सपनों का ही सहारा लेना चाहिए जो कमोबेश सामान्य हो दिन-प्रतिदिन के जीवन की अनेकानेक घटनाओं से ओतप्रोत हो। इन 'आत्म विश्लेषणों' (self-analyses) की विश्वसनीयता पर उठने वाले सन्देहों का सामना तो निश्चय ही मुझे करना होगा और यह भी कहा ही जाएगा कि इन विश्लेषणों में मनमानी की गई है। मेरा मानना है कि दूसरों द्वारा किए गए अवलोकन की अपेक्षा आत्म-अवलोकन में स्थितियाँ अधिक अनुकूल रहने की सम्भावना होती है। जो भी हो, आत्म विश्लेषण के माध्यम से स्वप्न-व्याख्या के मामले में जितनी भी उपलब्धि की जा सकती हो, उसकी खोजबीन की छूट रहती है। कुछ और कठिनाइयाँ हैं जिनका मुझे अपने अन्तरतम में निदान करना आवश्यक होता है। अपनी ही मानसिकता के अंतरंग विवरण को उघाड़ दिये जाने से मैं साफ़ तौर पर बचना चाहता हूँ; और अपरिचितों द्वारा उसका अन्यथा अर्थ लगा लिये जाने से भी मैं घबराता हूँ। परन्तु, मुझे ऐसी बातों से उबरना होगा, इनके पार जाना होगा।

इसलिए स्वप्न-व्याख्या के तरीके को स्पष्ट करने व समझने के उद्देश्य से मैं अपने ही सपनों में से एक को लूँगा। ऐसे प्रत्येक सपने को एक छोटी भूमिका की आवश्यकता होती है, इसके लिए, मैं पाठक से अनुरोध करता हूँ कि कुछ समय के लिए वह मेरी रुचि को अपनी रुचि के रूप में ले लें और मेरी सबसे छिछोरी इस दास्तान में मेरे साथ निमग्न हो जाएँ, क्योंकि सपनों में छिपे तात्पर्य के प्रति जुड़ाव रखने के लिए ऐसे अभिगमन की नितांत आवश्यकता होती है।

भूमिका : 1895 की गर्मियों में मैंने एक युवती का मनोविश्लेषण द्वारा इलाज किया था जो मेरी व मेरे परिवार की अंतरंग मित्र थी। यह बात समझ लेने की आवश्यकता है कि ऐसे जटिल सम्बन्ध काय-चिकित्सक के–और विशेषकर मनोचिकित्सक के मन में बहुआयामी भावनाओं को उठा सकते हैं। उस चिकित्सक की व्यक्तिगत रुचि तो बहुत हो सकती है परन्तु उसके अधिकार बहुत कम होते हैं। वह यदि विफल रहता है तो रोगी के घर वालों के साथ

उसकी मित्रता की जड़ें खुदने का खतरा पैदा हो जाता है। फिर भी, इस मामले में इलाज आंशिक सफलता के साथ पूरा हो गया था–उसकी हिस्टीरिया जनित व्यग्रता तो ठीक हो गई थी परन्तु उसके सारे शारीरिक लक्षण दूर नहीं हुए थे। उस समय मैं पक्के तौर पर किसी ऐसे आधार के बारे में सुनिश्चित नहीं था जो हिस्टीरिया के अन्तिम इलाज की ओर संकेत करता हो। इसीलिए मैं उससे उम्मीद कर रहा था कि वह मेरे बताए गए निदान को स्वीकार कर लेगी परन्तु वह उसे स्वीकार्य नहीं लग रहा था। इस असहमति के चलते हमने गर्मियों की छुट्टियों तक के लिए इलाज स्थगित कर दिया था। एक दिन मेरा एक मुझसे कम उम्र का सहयोगी चिकित्सक मुझसे मिलने आया जो मेरा काफ़ी घनिष्ठ भी था और जो उस रोगी–इर्मा के ग्रामीण निवास में उससे व उसके परिवार से मिल कर आया था। मैंने उससे पूछा कि इर्मा कैसी है और जबाब मिला, "पहले से तो बेहतर है परन्तु अभी बिल्कुल ठीक नहीं हुई है।" मैंने महसूस किया था कि मेरे उस मित्र ओटो द्वारा बोले गये शब्द या स्वर जिस तरह कहे गए थे उनसे मैं कुछ चिढ़ सा गया था। मुझे लगा कि शब्दों में मुझे उलाहना दिया गया है–शायद यह दिखाने या बताने के लिए कि मैंने रोगी को कुछ ज़्यादा ही भरोसा दे दिया था और सही हो गलत–इस बात को मैंने जाहिरा तौर पर अपने विरुद्ध और रोगी के घरवालों की तरफ से बोलना माना जो कभी भी मेरे इलाज के पक्ष में बोलते मुझे नहीं लगे थे। फिर भी, उसकी यह प्रतिकूल धारणा मुझे स्पष्ट न हो सकी और न ही मैंने इस सम्बन्ध में आगे कोई बात की। उसी शाम मैंने इर्मा की क्लीनिकल हिस्ट्री तैयार की ताकि स्वयं को सही सिद्ध करने के लिए उसे मैं डॉ. एम. को दिखा सकूँ जो कि हम दोनों के ही मित्र थे और हमारे क्षेत्र में उस समय के अग्रणी व्यक्तित्व भी। उस रात (बल्कि उस रात की सुबह को) मैंने निम्नलिखित सपना देखा जिसे मैंने जागते ही लिख डाला :

जुलाई 23-24, 1895 का स्वप्न :

एक विशाल कक्ष–बड़ी संख्या में अतिथि, जिनका हम स्वागत कर रहे हैं–उनमें इर्मा भी है जिसे मैं एकदम एक तरफ ले जाता हूँ जैसे उसके पत्र की बातों का उत्तर देना चाहता हूँ। मेरे बताये गए 'निदान' को न मानने के लिए उसे खरी-खरी सुनाना चाहता हूँ। मैं उससे कहता हूँ "यदि अभी भी तुम्हें तकलीफ है तो यह केवल तुम्हारी गलतियों का नतीजा है।" वह कहती है, "काश, आप जान पाते कि मेरे गले में और सारे पेट में अब भी कितना दर्द हो रहा है, मेरा दम कितना घुट रहा है।" मैं अचम्भे से उसे देखता हूँ। उसके रंग में पीलापन आ गया है और उसकी साँस फूल रही है। मुझे लगा कि अवश्य ही मैंने उसके किसी अंग में इस संक्रमण को नजर-अंदाज कर दिया है। मैं उसे खिड़की के पास ले जाता हूँ और उसके गले में झाँकता हूँ। वह इस पर थोड़ा ना-नुकुर करती है। जैसा कि

हर कोई महिला तब करती जब उसके नकली दाँत लगे हों। मैं सचमुच महसूस करता हूँ कि उसे तो इनकी ज़रूरत ही नहीं है–तब तक उसका मुँह पूरा खुल जाता है। मुझे मुँह में दाहिनी ओर एक बड़ा सफेद दाग़ दिखाई देता है, मुझे इधर-उधर बहुत सारे स्लेटी-सफेद खुरंड जैसे उभार दिखाई देते हैं जो विचित्र प्रकार के वक्र आकार में हैं और जो देखने में नाक की टरबाइन-बोन जैसे हैं। मैं जल्दी से डॉ. एम. को बुलाता हूँ। वह आकर इस जाँच को दोहराते हैं और मेरी बात की पुष्टि करते हैं...डॉ. एम. आमतौर पर जैसे दिखते हैं वैसे नहीं दिखाई पड़ रहे हैं, वह पीले-पीले दिख रहे हैं और लंगड़ाकर चल रहे हैं तथा उनकी ठोड़ी पूरी तरह शेव की हुई है...अब मेरा मित्र ओटो भी इर्मा के बराबर में खड़ा हुआ है और मेरा दूसरा मित्र लियोपोल्ड इर्मा के ढके हुए वक्ष को थपथपाकर देखता है और कहता है, “इसके नीचे की तरफ कुछ ठस है, बायीं ओर”, और साथ ही उसके बाएँ कँधे के गहरे रंग वाले स्थान की ओर इशारा भी करता है (जिसे मैं कपड़ों के भीतर होने के बावजूद महसूस कर सकता हूँ जैसा कि वह कह रहा है)...एम. कहता है : ‘इसमें कोई शक नहीं है कि यह एक संक्रमण है, परन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं है, अतिसार (dysentery) से सारा विष निकल जाएगा। ‘...हम भी जानते थे कि संक्रमण शुरू कैसे हुआ था। बहुत पहले की बात नहीं है, इर्मा जब अस्वस्थ चल रही थी। तब मेरे मित्र ओटो ने उसे एक इंजेक्शन तैयार करके लगाया था प्रोपाइल का...प्रोपाइल्स का... प्रोपियोनिक एसिड का...ट्राइमेथिलेमीन का (वह फार्मूला जिसे मैंने बड़े-बड़े अक्षरों में छपा देखा था)...कोई इतनी जल्दबाजी में इंजेक्शन थोड़े ही लगाता है...और शायद सिरिंज भी साफ़ नहीं थी।

वह स्वप्न किसी भी अन्य सपने से अधिक काम का है। एक ओर तो इसमें पहले दिन का घटनाक्रम साफ़ दिखाई देता है और दूसरी ओर वह विषय भी जिसके बारे में यह सपना है। ओटो से सुना इर्मा का स्वास्थ्य सम्बन्धी समाचार और देर रात तक उसकी क्लीनिकल-हिस्ट्री तैयार करना–इसने मेरी मनोवैज्ञानिक गतिविधि को अपने नियन्त्रण में ले लिया, सोते समय भी। जो सपने की कथावस्तु से परिचित न हो वह यह ‘अन्दाज़ भी नहीं लगा सकता कि इस सपने का तात्पर्य क्या है। खुद मैं भी नहीं जानता। सपने में जिन अजीब से लक्षणों की शिकायत इर्मा करती है, उनसे मैं चकरा जाता हूँ, क्योंकि ये वे लक्षण तो हैं ही नहीं जिनके लिए मैं उसका इलाज कर रहा हूँ। प्रोपियोनिक एसिड देने की बेतुकी बात पर और डॉ. एम. द्वारा दी गई तसल्ली पर मुझे हँसी आती है। सपना अपनी शुरूआत की अपेक्षा अपने अन्तिम दौर में कुछ अधिक गूढ़, दुरुह और गतिमान होता जाता प्रतीत होता है। इन सब बातों का अर्थ समझने के लिए मैं इसका विशद-विश्लेषण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

विश्लेषण

विशाल कक्ष–बड़ी संख्या में अतिथि जिनका हम स्वागत कर रहे हैं : उन दिनों हम बैलेब्यू में रहा करते थे जो केहलनबर्ग से लगी पहाड़ियों में से एक पहाड़ी पर एक अलग-थलग पड़ा मकान था। इस मकान को मूलरूप से एक मनोरंजन-स्थल के रूप में बनाया गया था, इसीलिए इसके कमरे बड़े-बड़े और हॉल जैसे थे। सपना बैलेब्यू में देखा गया था और वह भी अपनी पत्नी के जन्मदिन से कुछ दिन पहले ही। उस दिन के दौरान मेरी पत्नी ने मुझे बताया था कि उसके जन्मदिन पर हमारे घर में काफ़ी संख्या में मेहमानों के आने की उम्मीद है जिनमें इर्मा भी है। तो मेरे सपने ने इसकी पूर्व प्रत्याशा कर ली : मेरी पत्नी का जन्मदिन मनाया जा रहा है और बैलेब्यू के एक हॉल जैसे कमरे में हम अतिथियों के स्वागत-सत्कार में लगे हुए हैं, जिनमें इर्मा भी हैं।

मेरे निदान को न मानने के लिए मैं इर्मा को खरी-खरी सुनाता हूँ और कहता हूँ अगर तुम्हें अभी भी दर्द है तो यह तुम्हारी ही गलतियों का परिणाम है : हो सकता है कि जागृत अवस्था में मैं ऐसा सचमुच कह चुका होऊँ। उस समय तक मेरा यह मानना था (जो कि बाद में गलत साबित हुआ) कि मेरा काम रोगी के लक्षणों में छिपे अर्थ को बताने तक ही सीमित है। फिर इलाज में वह मेरे बताए गए निदान को माने या न माने–जिसपर कि इलाज की सफलता आधारित रहती थी–इसके लिए मैं ज़िम्मेदार नहीं था। सौभाग्य से यह गलती अब सुधर गई है, फिर भी मैं इस गलती का आभारी हूँ क्योंकि इसने ऐसे समय में मेरे जीवन को काफ़ी सँभाला जबकि अपनी तमाम अपरिहार्य अज्ञानता के बावजूद मेरे द्वारा सफल इलाज किए जाने की अपेक्षाएँ रहती थीं। परन्तु मेरा यह ध्यान रहता है कि सपने में इर्मा से कही गई अपनी बातों में मैं सबसे अधिक इस बात के लिए चिन्तित था कि उसे अभी भी हो रहे दर्द के लिए मैं ज़िम्मेदार न ठहराया जाऊँ। यह गलती यदि इर्मा की है तो भला मेरी कैसे हो सकती है। क्या इस स्वप्न का हेतु इस पहलू से नहीं देखा जा सकता है?

इर्मा की शिकायतें–गरदन गले व सारे पेट में दर्द होना, घुटन होना : पेट में अलग-अलग जगह दर्द होना रोगी के जटिल लक्षणों से जुड़ी बात है, परन्तु उनमें प्रबलता नहीं है बल्कि वह घबराहट और मितली की शिकायत अधिक करती है। गर्दन व पेट में दर्द और गले में घुटन होने का उसके रोग से शायद कोई सम्बन्ध न हो। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि सपने में मैंने उसके ऐसे लक्षणों को क्यों चुना होगा। मैं अभी भी इसका कारण नहीं जान पाया हूँ।

वह पीली दिखाई पड़ रही थी और उसकी साँस फूली हुई थी : उसकी कान्ति हमेशा गुलाबी आभा लिए हुए होती थी। मुझे लगता है यहाँ उसमें कोई अन्य व्यक्ति निरूपित कर दिया गया है।

मुझे लगा कि अवश्य ही मैंने उसके किसी अंग में हुए संक्रमण को नज़र अंदाज कर दिया है : जैसा कि पाठक सहमत होंगे कि वह विशेषज्ञ जो केवल मानसिक रोगियों को देखता हो और जो काय-चिकित्सकों द्वारा शारीरिक रोग समझे जाने वाले अनेक रोगों को भी हिस्टीरिया से जुड़ा हुआ मान लेने का आदी हो गया हो वह सदैव ऐसे लक्षणों के प्रति चिन्तित हो उठता है। दूसरी तरफ, एक हल्का सा संदेह भी मुझे बेचैन कर डालता है कि क्या मेरी चेतावनी पूरी तरह खरी भी है और मैं यह भी नहीं जानता कि यह सन्देह आता क्योंकर है। इर्मा के दर्द यदि सचमुच शारीरिक प्रकार के हैं तो उनका इलाज करना मेरा काम नहीं है। मेरा इलाज तो बस हिस्टीरिया सम्बन्धी दर्दों को दूर करने वाला है। वास्तव में, ऐसा लगता है कि यहाँ मैं लक्षण के परीक्षण की त्रुटि ढूँढ़ निकालना चाह रहा हूँ ताकि फिर इलाज का प्रभाव न होने के कारण मैं आलोचना का शिकार होने से बच सकूँ।

मैं उसे खिड़की के पास ले जाता हूँ और उसका गला देखता हूँ। वह इस पर थोड़ा संकोच करती है जैसा कि कोई भी ऐसी महिला करेगी जिसके दाँत नकली हों। मुझे सचमुच लगता है कि उसे तो इनकी ज़रूरत ही नहीं है : मुझे इर्मा के दाँतों के कोटर या गड्ढे देखने का अवसर कभी नहीं मिला। सपने की घटना मुझे कुछ समय पहले एक संभ्रात महिला के इलाज के लिए किए गए परीक्षण की याद दिलाती है जिसने पहले तो स्वयं को कम उम्र दिखाने की कोशिश की, परन्तु कुछ बोलने पर वह अपनी नकीली बत्तीसी को तरह तरह से सम्भालने की कोशिश करती नज़र आई। इर्मा के चिकित्सकीय परीक्षण की अन्य स्मृतियों और उन परीक्षणों द्वारा प्रकट किए गए कई छोटे-मोटे रहस्य–जिन्होंने चिकित्सक ओर रोगी दोनों को ही असमंजस में डाल दिया था–इस मामले में आ जुड़े थे। 'उसे तो इनकी ज़रूरत ही नहीं है'–यह शायद प्रथमत: तो इर्मा के प्रति प्रशंसात्मक टिप्पणी है, परन्तु फिर भी मैं इसमें एक और अर्थ को भी भाँप रहा हूँ। इसका ध्यानपूर्वक विश्लेषण करने पर मैं यह महसूस कर पा रहा हूँ कि हो न हो ये मेरे मन के अनकहे भाव थे जो कहे जाना चाहते थे और जिन्हें सपने में कह दिया गया। जिस अन्दाज़ में इर्मा खिड़की के पास खड़ी थी उससे मुझे अचानक एक अन्य घटना की याद आती है। इर्मा की एक महिला मित्र है जिनकी मैं बहुत इज़्ज़त करता हूँ। एक दिन उनके घर पहुँचने पर मैंने इर्मा को खिड़की के पास इसी अन्दाज़ में खड़े पाया था और उसके चिकित्सक–वही डॉ. एम.–ने बोला था कि उसके गले में डिप्थीरिया की झिल्ली बन गई है। वास्तव

में, सपने में उसी डॉ. एम. का व्यक्तित्व और झिल्ली लौट आए हैं। अब मुझे लग रहा है कि कुछ महीनों से मेरा यह अनुमान पक्का होता जा रहा है कि वह महिला भी हिस्टीरिया से ग्रस्त है। हाँ, इर्मा ने मुझसे यह तथ्य छिपाया था। परन्तु उसकी हालत के बारे में मैं क्या जानता हूँ? केवल एक बात कि सपने में इर्मा को हुई घुटन की तरह उसे भी हिस्टीरिया वाली घुटन होती है। इस तरह, मैंने अपने रोगी के स्थान पर उसकी उस महिला मित्र को रख दिया। और, मुझे अब यह भी याद आ रहा है कि वह महिला भी अपने उन लक्षणों से मुक्त होने के लिए मुझसे गुहार कर सकती है, परन्तु साथ ही मैं यह नामुमकिन भी मानता रहा हूँ क्योंकि वह बहुत अधिक संकोची महिला है। जैसा कि सपने में दिखा कि वह 'संकोच' करती है। इसकी दूसरी व्याख्या यह भी हो सकती है कि 'उसे तो इनकी ज़रूरत ही नहीं है' से लगता है कि वास्तव में अभी तक वह स्वयं को इतना सबल व सक्षम दिखाती आई है कि वह किसी और की सहायता के बिना अपनी स्थिति नियन्त्रण में रख सकती है। अब जो रूपक शेष रह गए हैं उन्हें न तो मैं इर्मा के साथ जोड़ सकता हूँ और न उसकी मित्र के साथ–पीला पड़ना, साँस फूलना और नकली दाँत। नकली दाँत तो मुझे उस संभ्रात महिला की याद दिलाते हैं, अत: मैं नकली दाँतों की बात से तो सन्तुष्ट होने की तरफ आ गया हूँ। एक और व्यक्ति भी मुझे याद आ रहा है जिसकी ओर ये रुपक इशारा कर रहे हैं। वह मेरी रोगी नहीं है, और न ही मैं चाहता हूँ कि वह मेरी रोगी बने, क्योंकि मैंने महसूस किया है कि वह मेरे साथ सहज नहीं हो पाती है और साथ ही उसे मैं ऐसी रोगी नहीं समझता जो मेरे परामर्श पर अमल कर सके। वह अकसर पीली-पीली सी नज़र आती है और एक बार जब वह अस्वस्थ थी तो उसकी साँस फूल रही थी। इस प्रकार मैंने अपनी रोगी इर्मा की तुलना. दो अन्य व्यक्तियों के साथ कर ली थी जो इसी तरह इलाज में ना-नुकुर करते। क्या इस बात का तात्पर्य यह है कि सपने में मैंने इर्मा के स्थान पर उसकी मित्र को रख दिया था? शायद इसलिए कि मैं उसके स्थान पर उसकी मित्र को रखना चाहता भी था–या तो इसलिए कि उसने मुझमें अपने प्रति भारी सहानुभूति अर्जित कर ली थी या इसलिए कि मैं उसकी बुद्धिमत्ता को अत्यधिक आदर-सम्मान देता था। इस मामले में मैं इर्मा को बुद्धू ही मानता था, क्योंकि उसने मेरे निदान को मानने से इंकार कर दिया था। उसकी जगह दूसरी वाली महिला होती तो अधिक समझदार होती और काफ़ी सम्भावना थी कि वह मेरी बात भी मानती। 'तब उसका पूरा मुँह खुल जाता है'–अर्थात् वह इर्मा की अपेक्षा अधिक बातचीत करने वाली होती।

मैं गले में झाँकता हूँ और एक सफ़ेद दाग और खुरंडनुमा व नाक की टरबाइन हड्डी जैसा आकार : सफेद दाग़ डिफ्थीरिया की याद दिलाता है और इस प्रकार इर्मा की उस महिला मित्र की, साथ ही यह दो वर्ष पहले मेरी बड़ी

बेटी के बुरी तरह बीमार पड़ने की भी याद दिलाता है और उस बुरे समय की व्यग्रताओं की भी। नाक की टरबाइन हड्डी जैसी खुरंडनुमा चीज़ मेरे अपने स्वास्थ्य से जुड़ी चिन्ता की भी याद दिलाती है। उस समय अपनी नाक में हुई परेशान कर देने वाली सूजन को दबाने के लिए मैं कोकीन का अक्सर प्रयोग किया करता था और, कुछ दिन पहले ही मैंने सुना था कि ऐसा ही करने वाली एक महिला रोगी के नाक की श्लेष्मा झिल्ली के ऊतक गलने लगे थे। 1885 में मैं ही कोकीन के प्रयोग की संस्तुति किया करता था जिसके फलस्वरूप मुझे भारी आलोचना झेलनी पड़ी थी। इस स्वप्न से पहले ही दिवंगत हो चुके मेरे एक मित्र ने इसी उपचार के दुष्परिणाम के चलते अपने जीवन का समय से पहले ही अंत कर डाला था।

मैंने जल्दी से डॉ. एम. को बुलाया जिसने फिर से जाँच की; यह सीधे-सीधे डॉ. एम. की हमारे बीच बनी प्रतिष्ठा से जुड़ी बात हे, परन्तु 'जल्दी से' शब्द एक विशेष जाँच की माँग पर बल देता है। यह मुझे एक दुखद चिकित्सा-अनुभव की याद दिलाता है। उस समय अहानिकर मानी जाने वाली एक दवा (सलफोनल) को लगातार अपने नुस्खों में लिखने के दौरान एक बार एक महिला रोगी के मामले में उसकी हालत बुरी तरह बिगड़ जाने वाली स्थिति मेरे गले पड़ चुकी थी और उसे संभालने के लिए मुझे जल्दी से अपने एक वरिष्ठ और अनुभवी सहकर्मी को बुलाना पड़ा था। यह तथ्य कि वह मामला अभी भी मेरे दिमाग में था, एक अन्य छोटी सी घटना से इसकी पुष्टि हो सकती है। जो महिला उस दवा को विषाक्तता का शिकार हुई थी उसका नाम भी वही था जो मेरी बड़ी बेटी का था। अभी तक मैंने कभी इस बारे में सोचा नहीं था, परन्तु अब मुझे यह भाग्य के साथ सिद्धान्त सरीखा लग रहा है कि जैसा करोगे वैसा भरोगे– जैसे किसी व्यक्ति का विकल्प किसी अन्य भाव में जारी रहता हो : पोटली के बदले पोटली, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत। यह ऐसा है जैसे अपनी चिकित्सकीय कर्तव्य निष्ठा के अभाव के लिए मैं अपनी भर्त्सना करने का कोई न कोई अवसर ढूँढ़ लेना चाहता था।

डॉ. एम. पीले से हैं, उनकी ठोड़ी शेव की हुई है और वह लंगड़ाकर चल रहे हें : यह काफ़ी कुछ सही है कि उनकी बीमार सी दिखने वाली छवि उनके मित्रों के लिए अकसर चिन्ता का कारण बनी रहती है। दो अन्य बातें अवश्य ही किसी अन्य व्यक्ति से जुड़ी होंगी। विदेश में यह रहा मेरा एक बड़ा भाई मुझे याद आ रहा है क्योंकि वह ठोड़ी की शेव करता है और जहाँ तक मुझे लग रहा है सपने में आए हुए डॉ. एम. से उसका व्यक्तित्व कुल मिलाकर कुछ मेल खाता है। और, कुछ दिन पहले ही खबर आई थी कि कूल्हे में हुए गठिया के संक्रमण के कारण

वह लंगड़ा कर चल रहा है। इसका कोई न कोई तो कारण होगा ही कि सपने में मैंने इन दोनों व्यक्तियों को मिलाकर देखा।

मुझे यह भी याद आ रहा है कि इन दोनों से ही मेरे सम्बन्ध एक जैसे कारणों से सचमुच अच्छे नहीं चल रहे थे–दोनों ने ही पिछले दिनों भेजे मेरे एक विशेष प्रस्ताव को ठुकरा दिया था।

मेरा मित्र ओटो अब रोगी के बराबर में खड़ा हुआ था और मेरा एक और मित्र लियोपोल्ड इर्मा की जाँच कर रहा था और उसके बाईं ओर कुछ ठस होने की ओर इशारा कर रहा था : मेरा मित्र लियोपोल्ड एक काय-चिकित्सक भी है और ओटो का सम्बन्धी भी। चूँकि दोनों की विशेषता का तथा इलाज करने का क्षेत्र एक ही है अत: भाग्य ने दोनों को परस्पर प्रतिद्वंद्वी बना दिया है, इसलिए हमेशा उनकी तुलना एक दूसरे से की जाती रही है। कई वर्षों तक दोनों ही मेरे सहायक रह चुके हैं जब मैं मानसिक रूप से रोगी बच्चों के एक सार्वजनिक क्लीनिक में निदेशक पद पर रहा था। वहाँ इस प्रकार के दृश्य अकसर होते रहते थे जैसे कि मुझे सपने में दिखाई दिए थे। जब मैं ओटो के साथ किसी रोगी के रोग की पहचान के बारे में चर्चा कर रहा होता था तो लियोपोल्ड उस बच्चे की नए सिरे से जाँच करना शुरू कर देता था। इन दोनों व्यक्तियों के तौर-तरीकों में उतना ही अन्तर था जितना इंस्पेक्टर ब्रेसिग और उसके मित्र कार्ल के बीच था। ओटो विशेष रूप से सचेत व फुर्तीला रहता था, जबकि लियोपोल्ड कुछ सोचता सा रहता था परन्तु काम को पूरा करके ही दम लेने वाला था। मैंने सपने में यदि ओटो व लियोपोल्ड की तुलना की है तो जाहिर तौर पर इसलिए कि मैं लियोपोल्ड को तरजीह देना चाहता था। यह तुलना ऐसी ही है जैसी अवज्ञाकारी रोगी इर्मा और उसकी समझदार लगने वाली मित्र के बीच ऊपर की गई है। स्वप्न की प्रक्रिया में विचारों के जुड़ाव के साथ चलते सिलसिलों में से एक को तो अब मैं पहचान पा रहा हूँ : बीमार बच्चे से बच्चों के क्लीनिक तक। बायीं तरफ नीचे की ओर कुछ ठस होने के सम्बन्ध में मेरा मानना है कि यह किसी ऐसे मामले से जुड़ा है जिसका विवरण इस जैसा ही है–एक मामला जिसे पूरी तरह जाँच करके लियोपोल्ड ने मुझे प्रभावित कर दिया था। मैंने भी किसी परिवर्तन सम्बन्धी प्रभाव जैसी किसी बात को कुछ कुछ सोचा तो था, परन्तु यह उस रोगी के किसी सन्दर्भ में भी हो सकता है जिसे मैं इर्मा पर होना पसन्द करता था। क्योंकि, जहाँ तक मुझे याद पड़ता है इस महिला में ऐसे लक्षण दिख रहे थे जैसे क्षय रोग में दिखते हैं।

बाएँ कँधे पर त्वचा का एक गहरे रंग वाला हिस्सा : मैं एकदम जान गया हूँ कि यह मेरे ही कँधे की गठिया है जिसे मैं देर रात तक जगे रहने पर हमेशा ही महसूस करता हूं। सपने में बोली गई बात अपने आप में अस्पष्ट है : कुछ ऐसा जो मैं कपड़ों के भीतर होने के बावजूद महसूस कर सकता हूँ–जैसा कि वह भी कर रहा

था–'अपने शरीर पर होने वाला एहसास' इसमें छिपा हुआ है। साथ ही मुझे ये शब्द बड़े अजीब लगते हैं–'त्वचा का गहरा पड़ा रंग'। आम तौर पर हम यूँ कहते हैं–'ऊपरी पिछले बाएं हिस्से का गहरा रंग'। और ऐसा फेफड़ों के बारे में कहा जाता है, यानि फिर वही क्षय रोग का प्रसंग।

कपड़ों के भीतर होने के बावजूद : यह निश्चित रूप से एक क्षेपक है। दरअसल, क्लीनिक में बच्चों की जाँच उनके कपड़े उतरवा कर की जाती है। यहाँ उसी के विपरीत वह ढंग बताया गया है जिसमें वयस्क महिला रोगियों की जाँच की जाती है। एक प्रतिष्ठित चिकित्सक के बारे में यह उक्ति प्रसिद्ध है कि वह अपने रोगियों की जाँच उनके कपड़ों में से कर लेता है। इसके अलावा शेष बातें मेरे लिए अस्पष्ट हैं, साफ़ कहूँ तो इससे आगे इनका कोई अर्थ निकालने की रुचि भी मुझ में नहीं है।

डॉ. एम. कहते हैं, "यह एक संक्रमण है, परन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं है, अतिसार होगा और 'विष निकल जाएगा'" : पहली बात तो यह कि यह बात मुझे बड़ी हास्यास्पद लगती है, फिर भी और बातों की तरह इसका भी सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जाना चाहिए। यदि गौर से देखें तो इसका कोई न कोई अर्थ तो निकलना ही चाहिए। मैंने जो रोगी में पाया था वह थी एक खास जगह की झिल्ली। अपनी बेटी की बीमारी के दौरान डिपथीराइटिस और डिपथीरिया के बारे में हुई चर्चा मुझे याद है। डिपथीरिया एक सामान्य संक्रमण है जो एक खास जगह के डिपथीराइटिस से फैलता है। लियोपोल्ड ऐसे सामान्य संक्रमण को ठस होने के आधार पर घोषित करता है जो कि एक आन्तरिक बदलाव होने का भी संकेत है। तथापि मैं जानता हूँ कि ऐसा कोई बदलाव डिपथीरिया के मामले में नहीं होता। बल्कि, मुझे तो यह पायमिया की याद दिलाता है।

चिन्ता की कोई बात नहीं है : यह एक तसल्ली देना मात्र है। मेरा मानना है कि यह इस बात में पूरी उतरती है : सपने के अन्तिम भाग में कुछ ऐसी बात उभरकर आती है कि रोगी की तकलीफ किसी गम्भीर शारीरिक संक्रमण के कारण है। मुझे लग रहा है कि इस बात के द्वारा मैं तोहमत को अपने ऊपर से उतार फेंकने की कोशिश कर रहा हूँ। मनोवैज्ञानिक इलाज को डिपथीरिया के संक्रमण के बने रहने के लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। केवल स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने की नीयत से इर्मा के लिए इतनी गम्भीर बीमारी को खोज निकालने के विचार से मैं सचमुच बहुत व्यथित हूँ। यह मुझे बड़ी निर्दयता लग रही है। मुझे यह आश्वासन चाहिए था कि परिणाम भला होगा और मुझे लगता है कि डॉ. एम. के मुँह से दिलासा के ये शब्द बुलवाकर मैंने अच्छा ही किया। परन्तु, यहाँ मैं सपने के मामले में स्वयं को एक बेहतर स्थिति में रख रहा हूँ और यह एक ऐसा तथ्य हे जिसकी व्याख्या की जानी चाहिए।

परन्तु यह दिलासा इतनी बेमानी क्यों है?

अतिसार (dysentery) : यह एक सुनी सुनाई धारणा से उपजी एक दूर की कौड़ी है कि बीमारी के कीटाणुओं का सफ़ाया आंतों के माध्यम से किया जा सकता है। क्या मैं ऐसा कहकर डॉ. एम. के कपोल-कल्पित विवरणों के भंडार की और पैथोलोजी के सम्बन्ध में उनकी अजीबों ग़रीब तरीके से सोचने की आदत की खिल्ली उड़ा रहा हूँ। कुछ महीने हुए मेरे इलाज में एक ऐसा मरीज आया जो आंतों की खास बीमारी से त्रस्त था और जिसे दूसरे चिकित्सक ने 'कुपोषण से हुई रक्ताल्पता' (anaemia with malnutrition) मान कर इलाज किया था। मैं पहचान गया कि यह तो हिस्टीरिया का मामला है। मैं उस पर अपनी मनोरोग चिकित्सा का प्रयोग करना नहीं चाहता था, इसलिए मैंने उसे समुद्री यात्रा पर भेज दिया। कुछ दिन पहले ही उसका पत्र आया था जो निराशाजनक था और मिस्र से लिखा गया था। उसने उसमें बताया था कि उसे एक बार फिर दौरा पड़ा है। और वहाँ के चिकित्सक ने अतिसार बताया है। मुझे शक है कि इसे अतिसार बताना उस लापरवाह चिकित्सक द्वारा की गई गलती है जो हिस्टीरिया से धोखा खा रहा है। फिर भी उस बेचारे मरीज को ऐसी हालत तक पहुँचाने के दोष से मैं स्वयं को मुक्त नहीं कर सकता जिसमें उसे हिस्टीरिया के साथ साथ आँतों का संक्रमण भी हो गया हो। इसके अलावा, डायसैंट्री और डिपथीरिया सुनने में काफ़ी समान ध्वनि देते हैं और, सपने में डिपथीरिया शब्द नहीं था।

हाँ, 'अतिसार होगा और...'–यह तसल्ली देने वाला पूर्वानुमान अवश्य ही वह किस्सा है जिसमें मैं डॉ. एम. से मज़ाक करता हूँ क्योंकि मुझे याद पड़ता है कि कई साल पहले उन्होंने अपने साथी का ऐसा ही किस्सा बड़ी चुटकी लेते हुए सुनाया था। एक बहुत गम्भीर रूप से बीमार महिला के मामले में उन्हें परामर्श हेतु बुलाया गया था; परन्तु वहाँ उन्हें एक अन्य चिकित्सक की बात का विरोध करना पड़ा था जो कि रोगी के मूत्र में एल्बूमेन (जल में विलयनशील प्रोटीन) पाये जाने के आधार पर बहुत आशावादी लग रहा था। उसने बड़े इत्मीनान से कहा था, "चिन्ता की कोई बात नहीं है सर, एल्बूमेन तो जल्द ही निकाल दिया जाएगा।' इसलिए मुझे बिल्कुल सन्देह नहीं है कि सपने का यह अंश मेरे उन साथी चिकित्सकों का उपहास उड़ाता प्रतीत होता है जो हिस्टीरिया को नहीं पहचानते। और, इसी की पुष्टि करता हुआ विचार मेरे दिमाग़ में प्रवेश कर जाता है, "क्या डॉ. एम. जानते हें कि उनकी मरीज और इर्मा की मित्र में प्रकट होते लक्षण हिस्टीरिया के ही समान हैं, जिन्हें वह क्षय रोग मान रहे हैं? क्या उन्होंने हिस्टीरिया को पहचाना है, या वह खुद को बेवकूफ़ बनने दे रहे हैं?"

परन्तु अपने इस साथी के प्रति इतना बुरा व्यवहार करने का मेरा हेतु क्या रहा होगा? यह सीधी सी बात है : डॉ. एम. भी मेरे निदान से उतने ही असहमत

हैं जितनी इर्मा। इस तरह सपने में मैंने दो जनों से बदला लिया है : इर्मा से यह कहकर कि 'अगर तुम्हें अभी भी तकलीफ़ है तो यह तुम्हारी ही गलतियों का परिणाम है,' और डॉ. एम. से उनसे बेतुकी तसल्ली दिलाकर।

हम निश्चित रूप से जानते हैं कि संक्रमण कैसे शुरू हुआ : सपने में यह 'निश्चित रूप से जानना' एक अनोखी बात है। इससे कुछ पल पहले तक तो हम संक्रमण के बारे में जानते तक नहीं थे क्योंकि यह तो लियोपोल्ड द्वारा बताया गया था।

जब उस (इर्मा) की तबीयत कुछ ठीक नहीं थी तब मेरे मित्र ओटो ने उसे एक इंजेक्शन लगाया था : दरअसल यहाँ ओटो का सम्बन्ध इर्मा के घर जाने वाली बात से कुछ इस तरह जुड़ा हुआ है कि इर्मा के घर के निकट एक होटल में ठहरे हुए और अचानक बीमार हुए एक व्यक्ति को इंजेक्शन देने के बाद वह कुछ देर के लिए इर्मा के घर भी गया था। इंजेक्शन मुझे एक बार फिर अपने उस अभागे मित्र की याद दिलाता है जिसने कोकीन का इंजेक्शन लगाकर अपने शरीर को विषाक्त कर डाला था। उसे ऐसा करने की सलाह मैंने केवल तब के लिए दी थी जब मोर्फियो घट रहा हो, परन्तु वह तो तत्काल ही इंजेक्शन लगा बैठा।

प्रोपाइल से बना...प्रोफाइल...प्रोपियोनिल एसिड : ऐसा मेरे सपने में, हुआ कैसे? जिस रात मैंने यह सपना देखा था, उस शाम को इर्मा की क्लीनिकल हिस्ट्री लिखी जाने के बाद मेरी पत्नी ने 'अनानास' नाम की शराब की बोतल खोली थी। जो हमारे मित्र ओटो की ओर से भेंट की गई थी। दरअसल वह कोई न कोई उपहार देने के लिए मौके की तलाश में रहने वाला आदमी है। इस शराब से फ्यूज़ेल तेल की तीखी गंध आई तो मैंने उसे लेने से इन्कार कर दिया था। मेरी पत्नी ने सुझाया था, "यह बोतल हम नौकरों को दे देंगे", तो दूर की सोचते हुए मैंने आपत्ति की कि "उनको भी ज़हर भला क्यों पिलाया जाए।" फ्यूज़ेल तेल (ऐमिल...) की गंध अब मुझमें वह स्मृति जगा चुकी है, उसका सिलसिला शुरू हो गया है : प्रोपाइल, मिथाइल इत्यादि जिसने सपने में प्रोपाइल तैयार किया था। मैं विकल्प में सचमुच गड़बड़ कर बैठा था : प्रोपाइल सूँघे जाने के बाद मैंने प्रोपाइल के इंजेक्शन का सपना देखा, परन्तु ऐसा विकल्प चल जाता है–विशेषकर जैविक रसायन में।

ट्राइमैथाइलेमिन : सपने में मैं इसका रासायनिक सूत्र देखता हूँ–जो कि हर बात पर की जा रही मशक्कत की गवाही है–और यह सूत्र भी मोटे टाइप में छपा दिखता है जैसे इसे पूरे मामले में विशेष महत्त्व दिया जा रहा हो। परन्तु मेरा ध्यान इस प्रकार अपनी ओर आकर्षित करने वाला यह ट्राइमैथाइलेमिन मुझे ले कहाँ जा रहा था? एक ऐसे मित्र के साथ बातचीत की ओर जो कई वर्षों से मेरे दिमाग में उपजते विचारों से परिचित, था और मैं उसके। उसने हाल ही में सैक्सुअल कैमिस्ट्री से जुड़े अपने कुछ विचार मुझे बताए थे। अन्य बातों के

अलावा उसने बताया था कि सैक्सुअल-मैटाबोलिज्म से उत्पन्न होने वाले तत्त्वों में उसे ट्राइमैथाइलेमिन को भी पाया है। इस तरह यह तत्त्व मुझे सैक्सुअलिटी की ओर ले जा रहा है–यह वह कारक है जिसे मैं उन नर्वस प्रभावों के पैदा होने के मामले में सबसे अधिक महत्त्व देता हूँ जिनका इलाज मेरे पास चल रहा है। मेरी रोगी इर्मा एक युवा विधवा है। यदि उसके इलाज में विफल हो जाने का ठीकरा मुझे किसी के मत्थे फोड़ना पड़े तो मैं उसकी इसी दशा का नाम लूँगा जिसका पटाक्षेप करने में उसके प्रशंसक प्रसन्न ही होंगे। परन्तु, यह सारा कुछ एक ही सपने में इकट्ठा कैसे हो गया। सपने में इर्मा के स्थान पर मरीज बनी मेरी मित्र भी उसी की तरह युवा विधवा थी।

ऐसा क्यों हुआ कि ट्राइमैथाइलेमिन का फॉरमूला सपने में इतने जोरदार ढंग से दिखाई पड़ा-इस बात का मैं अन्दाज़ लगा सकता हूँ। इस एक शब्द के साथ बहुत सारी महत्त्वपूर्ण चीज़ें आ जुड़ती हैं–ट्राइमैथाइलेमिन तो एक संकेत मात्र है–न केवल सैक्सुएलिटि का भरपूर महत्त्व वाला कारक इससे जुड़ा हुआ है बल्कि एक मित्र भी जुड़ा हुआ है. जिसकी सह-अनुभूति ने तब-तब मुझे सन्तुष्टि दी जब-जब मैं अपनी राय में अलग-थलग पड़ गया हूँ। और मेरा यह मित्र जिसने मेरे जीवन में इतनी बड़ी भूमिका निभाई है, क्या वह खासतौर पर इस सपने की श्रृंखला में क्या पुन: नहीं आएगा? वाकई, नाक व साइनस की आत्मीयता के परिणामों की उसे खासी जानकारी थी और उसने टरबाइनल बोन व स्त्रियों के यौनांगों के बीच अनेक अति विलक्षण सम्बन्ध की बात विज्ञान के समक्ष प्रकट की थी (इर्मा के गले में तीन घुमावदार बनावटें) मैंने उसे इर्मा की जाँच करने के लिए बुलाया था–यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या उसके पेट के वायु-प्रकोप की जड़ उसकी नाक में तो नहीं है। परन्तु वह तो खुद ही बहती नाक (suppurative rhinitis) का शिकार था जिसकी मुझे चिन्ता रहती है और यही शायद मुझे पायमिया की ओर इंगित करता है जो सपने में रूप बदल कर मेरे सामने मंडराता है।

कोई ऐसा इंजेक्शन इतनी जल्दबाज़ी में नहीं लगाता : यहाँ जल्दबाज़ी का आरोप सीधे मेरे मित्र ओटो पर लगा दिया जाता है। मुझे विश्वास है कि ऐसे ही कुछ विचार उस दिन दोपहर बाद मेरे दिमाग में आए थे जब उसके शब्दों और हाव भाव से लग रहा था कि वह मेरे पाले में नहीं खड़ा था। वह विचार शायद कुछ इस तरह था : 'वह कितनी जल्दी प्रभावित हुआ, कितनी गैर-ज़िम्मेदारी से वह अपना निर्णय बदल देता है।' साथ ही, उपर्युक्त वाक्य एक बार फिर मेरे दिवंगत मित्र की ओर इशारा करते हैं जिसने गैर-जिम्मेदाराना ढंग से कोकीन का इंजेक्शन ठोक लिया था। जैसा कि मैं बता चुका हूँ कि मेरा यह मन्तव्य बिल्कुल नहीं था कि उस ड्रग का इंजेक्शन लगा लिया जाए। मैं देख रहा हूँ कि ओटो की नुक्ताचीनी करते हुए मैंने उस अभागे माटिल्डा की कहानी को एक

बार फिर छू लिया है जो मेरे विरुद्ध की गई ऐसी ही नुक्ताचीनी किए जाने का एक बहाना था। यह साफ़ है कि मैं यहाँ अपनी निष्ठा के और साथ ही उसकी विपरीतता के उदाहरण एकत्रित कर रहा हूँ।

शायद सिरिंज भी साफ़ नहीं थी : ओटो को लक्ष्य बनाकर की गई एक और आलोचनात्मक टिप्पणी, परन्तु इसका जन्म कहीं और हुआ था। इस सपने से पहले दिन एक बयासी वर्षीया वयोवृद्ध महिला के बेटे से मेरा मिलना हुआ था। उस महिला को मुझे मोरफ़िया के दो इंजेक्शन लगाने पड़े थे। आजकल वह महिला गाँव में है और मैंने सुना है कि वह फ्लैबाइटिस से पीड़ित है। मेरे दिमाग में तुरन्त यह आया था कि हो न हो यह एक गन्दी सिरिंज से हुए संक्रमण का मामला है। सिरिंज को साफ़ रखने के प्रति मैं सचमुच सदा सचेत रहता हूँ क्योंकि मैं कर्तव्यनिष्ठ हूँ। फ्लैबाइटिस की तरफ़ से अब मैं अपनी पत्नी की ओर मुड़ता हूँ जो एक गर्भावस्था के दौरान थोम्बोसिस से पीड़ित रही थी। अब मेरी स्मृति में एक दूसरे से जुड़ी तीन बातें उभर कर आ रही हैं जिनमें मेरी पत्नी, इर्मा और दिवंगत माटिल्डा शामिल हैं जिनकी प्रकट पहचान को तीनों जनों के एक दूसरे के स्थान पर रखे जाते हुए देखा जा सकता है।

मैंने इस सपने का विश्लेषण पूरा कर दिया है। इस विश्लेषण के दौरान मैंने उन तमाम धारणाओं और विचारों को एक तरफ करने का पूरा प्रयास किया है जो स्वप्न-कथा की तुलना उस कथा के पीछे छिपे हुए स्वप्न-विचार से किए जाने की ओर संकेत देते रहे हैं। इसी दौरान मुझे इस स्वप्न का 'अर्थ' प्रकट हुआ है। मैंने उस मंसूबे को देख लिया है जो इस स्वप्न के माध्यम से पूरा हो गया है ओर जो इस स्वप्न को देखने में मेरा हेतु रहा है। यह सपना मेरी उन अनेक इच्छाओं को पूरा करता है जो सपने की पूर्व संध्या को घटित घटना-क्रम द्वारा मुझ में जाग उठी थीं (ओटो द्वारा लाया गया समाचार व इर्मा की क्लीनिकल हिस्ट्री लिखना)। सपने के परिणाम के लिए, अर्थात् इर्मा अभी भी पीड़ित है, इसके लिए मुझे दोष नहीं दिया जा सकता बल्कि दोषी तो ओटो है। वह इर्मा का आधा-अधूरा इलाज करने के लिए मुझ पर टिप्पणी करके मुझे गुस्सा दिला चुका है। यह सपना उससे बदला लेने का अवसर मुझे देता है जिसमें आलोचना पलट कर उसी पर पड़ जाती है। इर्मा की जिम्मेदारी से मुझे यह सपना मुक्त कर देता है, क्योंकि अन्य अनेक कारणों की ओर उँगली उठाता है (जो सचमुच पर्याप्त विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं) यह सपना कुछ विशेष मानसिक अवस्थाओं को दर्शाता है, जैसे मैं जीवित रहना चाहता हूँ इस तरह स्वप्न-कथा किसी इच्छा की पूर्ति होते दिखाती है, इसके पीछे कोई न कोई इच्छा रहती ही है।

यह सब प्रथम दृष्ट्या स्पष्ट है। परंतु इस सपने के अन्य विवरण इच्छापूर्ति की दृष्टि से देखने पर बुद्धिगम्य होते जाते हैं। मैं ओटो से प्रतिशोध लेता हूँ, न केवल मेरे विरुद्ध तुरत-फुरत में टिप्पणी कर देने के कारण–जिसमें मैं उस पर

लापरवाह होने (इंजेक्शन लगाने) के लिए उसकी आलोचना करता हूँ, बल्कि फ्यूज़ल तेल की गंध वाली शराब के लिए मैं अपने आप से भी प्रतिशोध लेता हूँ और सपने में एक ऐसा भाव ढूँढ़ लेता हूँ जो इन दोनों आलोचनाओं को मिला देता है–प्रोपाइल से तैयार किया गया इंजेक्शन। फिर भी मैं सन्तुष्ट नहीं होता हूँ बल्कि एक अधिक विश्वसनीय साथी से उसकी तुलना करके मैं स्वयं प्रतिशोध लेता हूँ। इस तरह मैं यह कहता प्रतीत होता हूँ : उसे मैं तुमसे अधिक पसन्द करता हूँ। परन्तु ओटो अकेला ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे मेरे गुस्से का एहसास कराना आवश्यक हो। इर्मा के स्थान पर आज्ञापरायण रोगी को रखकर अपने अवज्ञाकारी रोगी से भी प्रतिशोध ही लेता हूँ। डॉ. एम. के विरोधाभास को भी मैं नज़र अन्दाज नहीं करता क्योंकि उसके बारे में प्रकट की गई मेरी राय इस ओर स्पष्ट संकेत देती है, जैसे इस मामले में उसका रवैया ऐसा है जैसा नीम हकीम का होता है (अतिसार होगा...) दरअसल ऐसा लगता है जैसे उसमें मैं एक अधिक सुभिज्ञ चिकित्सक होने की छवि चाह रहा था (अपने मित्र की, जिसने मुझे ट्राइमेथिलेमिन के बारे में बताया था) जैसा कि मैंने इर्मा के स्थान पर उसकी महिला मित्र को और ओटो के स्थान पर लियोपोल्ड को स्थापित कर दिया था। यह ऐसा था जैसे मैं कह रहा होऊँ : इन तीनों लोगों से मेरा पीछा छुड़ाओ उनके स्थान पर मेरी पसन्द के अन्य तीन जने रख दो ताकि मैं अपनी उन आलोचनाओं से बच सकूँ जिन्हें मैं कतई मानने को तैयार नहीं हूँ कि मैं उन आलोचनाओं के योग्य हूँ। मेरे इस सपने में इन आलोचनाओं की अनौचित्यता का प्रदर्शन मेरे लिए बखूबी किया गया है। इर्मा की तकलीफ़ों का दोष मेरे माथे नहीं मढ़ा जा सकता क्योंकि इनके लिए वह स्वयं दोषी हैं कि वह मेरा निदान स्वीकार नहीं करती। उनका मुझसे कोई सरोकार नहीं है क्योंकि वे कायिक प्रकार के हैं और शायद किसी मनोचिकित्सक द्वारा किए जाने वाले उपचार से वे ठीक होने वाले न हों–इर्मा की तकलीफ़ का हाल उसके वैधव्य (Trimethylamin) द्वारा अच्छी तरह व्यक्त कर दिया गया है, एक ऐसी स्थिति जिसे मैं नहीं बदल सकता–इर्मा की बीमारी का कारण ओटो द्वारा दिया गया इंजेक्शन है–एक ऐसी अननुकूल ड्रग का इंजेक्शन जिसे मैं कभी नहीं लगाता–इर्मा की तकलीफ अस्वच्छ सिरिंज से इंजेक्शन लगाये जाने का परिणाम है, जबकि फ्लैबाइटिस से पीड़ित मेरी वृद्ध महिला रोगी के मामले में मेरे द्वारा लगाये गए किसी भी इंजेक्शन ने कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं किया। मुझे मालूम है कि मुझे दोष मुक्त करने वाले इर्मा की बीमारी के ये स्पष्टीकरण आपस में मेल खाना तो दूर एक दूसरे को छूते तक नहीं हैं। सारी दलील–क्योंकि यह सपना दलील के अलावा कुछ और नहीं है–उस आदमी की दलीलों की याद दिलाता है जिसने अपने पड़ोसी से उधार ली गई केतली बड़ी बुरी दशा में लौटाई थी। पहली बार तो वह कहता है कि उसने केतली सही-सलामत लौटाई है। दूसरी बार कहता है कि जब उसने केतली ली थी तभी उस में छेद थे, और

तीसरी बार कहता है कि उसने अपने पड़ोसी से केतली कभी उधार ली ही नहीं। बड़ा उलझा हुआ बचाव है, फिर भी उससे बेहतर है क्योंकि इन तीनों दलीलों में से यदि एक भी मान ली जाती है तो वह आदमी साफ़ छूट जाता है।

साथ ही, कुछ और विषय भी सपने में अपनी भूमिका निबाहते हैं, यद्यपि इर्मा की बीमारी के प्रति मेरी गैर-जिम्मेदारी उनसे सीधी जुड़ी हुई प्रतीत नहीं होती : मेरी बेटी की बीमारी और उसी बीमारी से ग्रस्त रोगी का वही नाम होना, मिस्र की यात्रा करते हुए मेरे रोगी का मेरे प्रति स्नेह, कोकीन का हानिकर होना, अपनी पत्नी के, अपने भाई के व डॉ. एम. के स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता होना, मेरी अपनी शारीरिक परेशानी और अपने दूर बैठे मित्र के बारे में व्यग्रता होना जो सपरेटिव रहाइनाइरिस से पीड़ित था। परन्तु, यदि मैं इन सभी पर विहंगम दृष्टि डालूँ तो इन्हें एक ही विचार श्रृंखला से जुड़ा पाता हूँ जिसे नाम दिया जा सकता है : अपने और दूसरों के स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता, अपने व्यवसाय के प्रति कर्तव्यनिष्ठा मुझे–अपनी उस कुछ-कुछ अप्रिय अनुभूति का होना याद आता है जब ओटो ने इर्मा के स्वास्थ्य के बारे में समाचार दिया था। अंत में, इस घटना के बाद, मैं विचारों के सिलसिले में पलायन करती अपनी उस भावना की अभिव्यक्ति चाहने की तरफ़ मुड़ जाता हूँ और वही इस सपने की माँग बन जाती है। यह कुछ ऐसा है जैसे ओटो ने मुझसे कहा हो, "तुम अपने चिकित्सक वाले कर्तव्य का निर्वाह गंभीरतापूर्वक नहीं कर रहे हो, तुम कर्तव्यनिष्ठ नहीं हो, तुम जो कहते हो उसे करते नहीं हो।" यह होते ही मेरे विचारों का सिलसिला मुझे बचाने आ पहुँचता है ताकि अपनी कर्तव्यनिष्ठा को और अपने सम्बन्धियों, मित्रों और रोगियों के प्रति अपने गहरे सरोकार को मैं सिद्ध कर सकूँ। अजीब बात यह है कि इस कथा में कुछ दुखद स्मृतियाँ भी हैं, जो कि मुझे दोष मुक्त करने से अधिक ओटो को दोषी सिद्ध करने में लग जाती हैं। सारी कथा ऊपरी तौर पर निर्पेक्ष दिखाई पड़ती है, परन्तु सपने का आधार बनी इस विहंगम कथा के और इर्मा की बीमारी के प्रति निर्दोष रहने की मेरी इच्छा को उत्पन्न कर देने वाले एक विशेष विषय के बीच एक सम्बन्ध होने में निश्चित ही कोई भूल नहीं की जा सकती।

मैं ऐसा कोई दावा करना नहीं चाहता कि मैंने इस सपने से पूरा पर्दा हटा दिया है, या कि मेरे इस विश्लेषण पर आप कलम नहीं चला सकते।

मैं इस विश्लेषण पर कुछ समय लगा सकता था, इससे कुछ और स्पष्टीकरण ले सकता था, और कुछ अन्य ऐसी समस्याओं पर चर्चा कर सकता था जिन्हें यह सपना प्रकट करता प्रतीत होता है। मैं कुछ ऐसे मुद्दे भी देख सकता था जिनमें कुछ और मानसिक सम्बद्धताएँ तलाशी जा सकती थीं, परन्तु हर स्वप्न में ऐसी सम्बद्धताएँ चूँकि स्वप्न 'द्रष्टा' की अपनी निजी सोच को भी शामिल कर लेती है अत: वे मुझे और अधिक विश्लेषण करने से रोक देती है। जो लोग ऐसी रोक की आलोचना करने में अति उत्साही हैं, उन्हें अधिक

स्पष्टवादिता का प्रयोग करने का प्रयास करना होगा। आजकल मैं एक नई खोज से खुश हूँ जो मैंने हाल ही में की है : यदि यहाँ वर्णित स्वप्न-विश्लेषण को अपनाया जाए तो आप देखेंगे कि सपने का सचमुच एक अर्थ होता है, किसी तरह वह किसी छितराई हुई दिमागी हरकत की अभिव्यक्ति नहीं होता जैसा कि इस विषय के लेखकों ने हमारे दिमाग में भर दिया है। जब किसी स्वप्न का विश्लेषण सम्पन्न हो जाए तो आप उसे एक इच्छा-पूर्ति के रूप में पहचान सकते हैं।

अध्याय 3

इच्छा-पूर्ति के रूप में स्वप्न

किसी तंग घाटी में से गुजरने के बाद जब हम अचानक एक ऐसी ऊँचाई पर पहुँच जाएँ जहाँ से रास्ते बँट जाते हों जबकि हर दिशा में भरपूर दृश्यावली फैली हो तो बेहतर होगा कि हम कुछ पलों के लिए थम जाएँ और सोच-विचार कर लें कि अब हमें किस रास्ते पर जाना है। स्वप्न की इस प्रथम व्याख्या में पारंगत हो जाने के उपरान्त हम लगभग उसी स्थिति में पहुँच गए हैं। हम स्वयं को एक अचानक हुए अन्वेषण के प्रकाश में खड़ा पाते हैं। इस स्वप्न की तुलना उस वाद्य के बेतुके सुरों की ध्वनियों से नहीं की जा सकती जिसे किसी संगीतज्ञ द्वारा विधिवत बजाए जाने के बजाय इसे किसी बाहरी चीज़ या व्यक्ति ने छेड़ दिया हो। कोई भी स्वप्न अर्थहीन नहीं होता, न ही बेतुका होता है और न ही यह मानकर चलता है कि हमारे विचारों का आधा हिस्सा सुषुप्त रहता है और आधा सजग व सचेत। सपना तो एक पूर्णतया तर्कसंगत घटना क्रम की दृश्यावली होता है, अपूर्ण इच्छा की सचमुच पूर्तिकर्ता होता है। यह जागृत अवस्था की स्पष्ट मानसिक गतिविधियों की निरन्तरता का अभिलेख हो सकता है। यह बहुत ही जटिल बौद्धिक कार्य-प्रणाली द्वारा रचा जाता हैं परन्तु हम ज्यों ही इस अन्वेषण में प्रसन्नता अनुभव करते हैं, त्यों ही समस्याओं का एक पुलिंदा हमारे सामने बाधाएँ खड़ी कर देता है। इस सिद्धान्त की परिभाषा के अनुसार कोई सपना यदि किसी इच्छा की पूर्ति को दर्शाने वाला होता है तो उस विचित्र और अनजान व अजनबी तौर-तरीकों व रंग-ढंग का कारण क्या होता है जिसके माध्यम से वह पूर्ति होती दर्शाई जाती है? किसी स्वप्न के रूप में प्रकट होने से पहले हमारे स्वप्न-विचारों में ऐसे कौन से बदलाव आते हैं कि वे ऐसा रूप व आकार धर लेते हैं? यह बदलाव, यह रूपांतरण होता कैसे है? वह सामग्री आती कहाँ से है जिससे सपने का ताना-बाना बुना जाता है? सपनों में दिखने वाली विचित्रताओं का कारण क्या होता है? उदाहरणार्थ, ऐसा कैसे हो जाता है कि वे परस्पर विरोधी हो जाएँ (पृष्ठ 28 पर केतली वाला प्रसंग देखिए)। सपना क्या हमारी भीतरी मानसिक प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में कुछ नयी बातें हमें बता पाने

की क्षमता रखता है और क्या इसकी कथा हमारी उन धारणाओं व अभिमतों मैं कुछ सुधार ला सकती है जो हमने दिन के दौरान बना ली हैं? मेरा सुझाव है कि फिलहाल इन सारे सवालों को एक तरफ़ रख दिया जाए और कोई एक रास्ता चुनकर उस पर आगे बढ़ा जाए। हमने पाया है कि सपने किसी इच्छा का पूरा होना चित्रित करते हैं। हमारा अगला उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि जिस स्वप्न-कथा के साथ हम अपना विश्लेषण शुरू करने जा रहे हैं वह क्या सपनों का अपना सामान्य स्वरूप है या वह इसी सपने के लिए ख़ास तौर पर बन गई कथा है (इर्मा के इंजेक्शन के बारे में सपना) क्योंकि हम भले ही इस निष्कर्ष पर पहुँच गए हों कि हर सपना एक अर्थ रखता है, एक मनोवैज्ञानिक मूल्य रखता है, फिर भी इस सम्भावना को नकारना नहीं चाहिए कि हो सकता है एक ही अर्थ हर सपने पर लागू न हो सकता हो। हमने पहले सपने को तो मान लिया है कि वह किसी इच्छा की पूर्ति करता है, परन्तु दूसरा सपना किसी शंका का स्वरूप हो सकता है, तो तीसरा अपनी कथा को केवल प्रतिबिम्बित करने वाला हो सकता है और चौथा किसी स्मृति की मात्र पुनरावृत्ति हो सकता है। तो क्या इच्छापूर्ति करने वाले सपनों से भिन्न भी कोई सपना होता है, या सारे सपने केवल इच्छापूर्ति करने वाले ही होते हैं।

यह बात बड़ी आसान है कि सपनों में होने वाली इच्छापूर्ति अकसर बहुत साफ़ और खुली होती है और सरलता से पहचानी जा सकती है। उससे किसी को भी अचम्भा हो सकता है कि सपनों की भाषा को इतने लम्बे समय से समझा क्यों नहीं गया है। उदाहरण के लिए, एक सपना है जिसे मैं, प्रयोग रूप में, जब चाहूँ तब बुला सकता हूँ। मैं जब कभी रात्रि-भोज में एंचोबी (भूमध्य सागरीय मछली), जैतून या अन्य कोई तेज़ नमक वाली चीज़ खा लेता हूँ तो रात में मुझे प्यास लगती है और उससे मेरी नींद खुल जाती है, परन्तु नींद के खुलने से पहले एक सपना चल रहा होता है जिसकी कथा सदा एक जैसी रहती है और यह वह कि मैं पानी पी रहा हूँ–बड़े-बड़े घूँट भरता हुआउसका स्वाद इतना बढ़िया लग रहा है जैसे गला सूख जाने पर कोल्ड ड्रिंक पीने पर लगता है और, फिर मेरी नींद खुल जाती है और मैं पाता हूँ कि कुछ पीने की वास्तविक इच्छा तो मुझ में बनी हुई ही है। पर सपना आने का कारण है प्यास जिसे तब जान पाता हूँ जब मैं जाग जाता हूँ। प्यास की अनुभूति से पीने की इच्छा पैदा होती है और यह सपना मेरी उस इच्छा को पूरी होता दिखा देता है। इस तरह यह सपना एक काम को अंजाम देता है जिसकी प्रकृति का मैं शीघ्र ही अनुमान लगा लेता हूँ। वैसे मैं अच्छी तरह सोता हूँ और किसी तरह की शारीरिक आवश्यकता के कारण जाग जाने का आदी नहीं हूँ। सपने में यह देखते हुए कि मैं पानी पी रहा हूँ यदि मैं अपनी प्यास बुझाने में सफल हो जाता हूँ तो फिर उस प्यास को बुझाने के लिए मुझे जागने की आवश्यकता नहीं रहती। इस तरह, यह एक सुविधाजनक स्वप्न

की क्षमता रखता है और क्या इसकी कथा हमारी उन धारणाओं व अभिमतों मैं कुछ सुधार ला सकती है जो हमने दिन के दौरान बना ली हैं? मेरा सुझाव है कि फिलहाल इन सारे सवालों को एक तरफ़ रख दिया जाए और कोई एक रास्ता चुनकर उस पर आगे बढ़ा जाए। हमने पाया है कि सपने किसी इच्छा का पूरा होना चित्रित करते हैं। हमारा अगला उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि जिस स्वप्न-कथा के साथ हम अपना विश्लेषण शुरू करने जा रहे हैं वह क्या सपनों का अपना सामान्य स्वरुप है या वह इसी सपने के लिए ख़ास तौर पर बन गई कथा है (इर्मा के इंजेक्शन के बारे में सपना) क्योंकि हम भले ही इस निष्कर्ष पर पहुँच गए हों कि हर सपना एक अर्थ रखता है, एक मनोवैज्ञानिक मूल्य रखता है, फिर भी इस सम्भावना को नकारना नहीं चाहिए कि हो सकता है एक ही अर्थ हर सपने पर लागू न हो सकता हो। हमने पहले सपने को तो मान लिया है कि वह किसी इच्छा की पूर्ति करता है, परन्तु दूसरा सपना किसी शंका का स्वरुप हो सकता है, तो तीसरा अपनी कथा को केवल प्रतिबिम्बित करने वाला हो सकता है और चौथा किसी स्मृति की मात्र पुनरावृत्ति हो सकता है। तो क्या इच्छापूर्ति करने वाले सपनों से भिन्न भी कोई सपना होता है, या सारे सपने केवल इच्छापूर्ति करने वाले ही होते हैं।

यह बात बड़ी आसान है कि सपनों में होने वाली इच्छापूर्ति अकसर बहुत साफ़ और खुली होती है और सरलता से पहचानी जा सकती है। उससे किसी को भी अचम्भा हो सकता है कि सपनों की भाषा को इतने लम्बे समय से समझा क्यों नहीं गया है। उदाहरण के लिए, एक सपना है जिसे मैं, प्रयोग रूप में, जब चाहूँ तब बुला सकता हूँ। मैं जब कभी रात्रि-भोज में एंचोबी (भूमध्य सागरीय मछली), जैतून या अन्य कोई तेज़ नमक वाली चीज़ खा लेता हूँ तो रात में मुझे प्यास लगती है और उससे मेरी नींद खुल जाती है, परन्तु नींद के खुलने से पहले एक सपना चल रहा होता है जिसकी कथा सदा एक जैसी रहती है और यह वह कि मैं पानी पी रहा हूँ–बड़े-बड़े घूँट भरता हुआउसका स्वाद इतना बढ़िया लग रहा है जैसे गला सूख जाने पर कोल्ड ड्रिंक पीने पर लगता है और, फिर मेरी नींद खुल जाती है और मैं पाता हूँ कि कुछ पीने की वास्तविक इच्छा तो मुझ में बनी हुई ही है। पर सपना आने का कारण है प्यास जिसे तब जान पाता हूँ जब मैं जाग जाता हूँ। प्यास की अनुभूति से पीने की इच्छा पैदा होती है और यह सपना मेरी उस इच्छा को पूरी होता दिखा देता है। इस तरह यह सपना एक काम को अंजाम देता है जिसकी प्रकृति का मैं शीघ्र ही अनुमान लगा लेता हूँ। वैसे मैं अच्छी तरह सोता हूँ और किसी तरह की शारीरिक आवश्यकता के कारण जाग जाने का आदी नहीं हूँ। सपने में यह देखते हुए कि मैं पानी पी रहा हूँ यदि मैं अपनी प्यास बुझाने में सफल हो जाता हूँ तो फिर उस प्यास को बुझाने के लिए मुझे जागने की आवश्यकता नहीं रहती। इस तरह, यह एक सुविधाजनक स्वप्न

है। स्वप्न वही क्रियाएँ करता है जो हम अपने जीवन में करते हैं। परन्तु, यह दुर्भाग्य ही है कि प्यास को बुझाने के लिए पानी की आवश्यकता को सपना पूरा नहीं कर सकता–ठीक ओटो व डॉ. एम. से प्रतिशोध लेने की मेरी प्यास की तरह, परन्तु दोनों में मंशा वही है। कुछ दिन हुए मैंने यही सपना कुछ भिन्न रूप में देखा। उस दिन सोने से पहले मुझे प्यास लगी और अपने बिस्तर के बराबर में मेज पर रखे गिलास का पूरा पानी मैं पी गया। कुछ घंटे बाद, सोते-सोते मुझे फिर प्यास लगी जिसके कारण मुझे कुछ बेचैनी सी हुई। अब पानी के लिए मुझे बिस्तर से उठना पड़ता और पत्नी के बिस्तर के बराबर में रखे गिलास तक जाना पड़ता। तब, मुझे बिल्कुल अनुकूल सपना दिखाई दिया कि मेरी पत्नी मुझे एक बर्तन से पानी दे रही है, यह बर्तन मिट्टी का एक टोंटीदार जलपात्र था जो मैं इटली से लाया था और बाद में जिसे मैंने किसी को दे दिया था। परन्तु सपने में मुझे उसका पानी इतना खारा लगा (जाहिर तौर पर मिट्टी के कारण) कि उसने मुझे जगा दिया। यह देखा जा सकता है कि सपना किसी मामले की व्यवस्था कितनी सुविधापूर्वक कर सकता है। चूँकि इच्छा को पूरा करना ही केवल उसका प्रयोजन होता है, अत: वह पूरी तरह आत्म-केन्द्रित, स्वार्थी और आत्मरत हो सकता है। सुविधा की चाहत हो तो भला दूसरे को महत्त्व कैसे दिया जा सकता है? इस सपने में मिट्टी के जलपात्र का दिखना भी एक इच्छा की पूर्ति ही है; मुझे कई बार अफ़सोस होता है कि वह जलपात्र अब मेरे पास नहीं है, वह पत्नी के बिस्तर के परली तरफ़ रखे गिलास की तरह मेरी पहुँच से बाहर है। यह मिट्टी का जलपात्र बढ़ते जाते खारे स्वाद की अनुभूति से भी जुड़ा हुआ है जोकि, मैं जानता हूँ कि वह निश्चित ही मुझे जगा देगा।

ऐसे सुविधाजनक स्वप्न मेरी युवावस्था में बहुत आया करते थे। मैं चूँकि देर रात तक काम करने का आदी था, अत: सुबह जल्दी उठना मेरे लिए एक समस्या हुआ करती थी। तब मैं सपने देखा करता था कि मैं बिस्तर छोड़ चुका हूँ और वाश-बेसिन के सामने खड़ा हूँ। कुछ देर बाद मैं यह समझ जाया करता था कि मैं तो अभी बिस्तर में हूँ परन्तु इस बीच रहता मैं नींद में ही था। इसी तरह का एक सपना मेरे एक युवा सहकर्मी ने देखा था। उसे यह एक मज़ेदार रूप में दिखाई दिया था। वह भी मेरी तरह देर तक सोने का आदी था। अस्पताल के निकट जिस मकान-मालकिन के यहाँ वह रहा करता था, उसके कड़े निर्देश थे कि हर सुबह निश्चित समय पर उठना आवश्यक है; परन्तु उसने पाया कि इन निर्देशों का पालन कराना इतना आसान नहीं था। एक सुबह मेरे उस मित्र को नींद कुछ बढ़िया ही आ रही थी। मकान-मालकिन ने उसके कमरे के बाहर से आवाज़ लगाई, "हे पैपी, उठो, तुम्हें अस्पताल जाना है।" इस पर उसने सपना देखा कि वह अस्पताल के एक कमरे में है, बिस्तर वही है जिस पर वह घर में लेटा हुआ है, और एक चार्ट उसके सिरहाने पिन से लगा हुआ है जिस पर लिखा

है : "पैपी एम. मेडिकल विद्यार्थी, आयु 22 वर्ष।" स्वप्न में वह स्वयं से कह रहा है, "मैं यदि अस्पताल में ही हूँ तो मुझे वहाँ जाना थोड़े ही है।" वह करवट लेता है और फिर सो जाता है। इस तरह उसने सपना देखने के हेतु को स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लिया है।

एक अन्य सपना है जिसका उद्दीपक नींद के दौरान बड़ा सक्रिय रहा था। मेरी एक महिला रोगी को अपने जबड़े का एक ऑपरेशन कराना पड़ा जो सफल नहीं रहा। उसके चिकित्सकों ने उसे अपने प्रभावित गाल पर एक ठंडा रखने वाला उपकरण लगाने का निर्देश दिया था, लेकिन जैसे ही वह नींद में होती, उसे उतार फेंकती थी। 'उसे ऐसा न करने हेतु थोड़ा झिड़कने के लिए मुझसे कहा गया, परन्तु उसने फिर भी उस उपकरण को नींद में उतार कर फर्श कर फेंक दिया। तब उसने अपनी सफाई कुछ इस तरह दी : "इस बार तो सचमुच मेरी गलती नहीं है। यह सब तो उस सपने के कारण हुआ जो मैंने रात में देखा। सपने में मैं एक संगीत कार्यक्रम में बैठी हुई थी और पूरे चाव से संगीत-प्रस्तुति का आनंद ले रही थी। परन्तु हेर कार्ल मीयर तो सैनिटोरियम में भर्ती था और अपने जबड़े के दर्द से कराह रहा था। मैंने स्वयं से कहा, 'दर्द कोई मुझे थोड़े न है, तो फिर मुझे इस उपकरण के पहनने की क्या आवश्यकता है?' सपने में यह कहते हुए मैंने उसे सचमुच उतार फेंका था।" इस बेचारी तकलीफ मंद महिला का सपना मुझे उस भावाभिव्यक्ति की याद दिलाता है जो किसी प्रतिकूल परिस्थिति में हमारे होठों पर आ जाती है और हमारे मुँह से निकल जाता है, "कोई बात नहीं मैं इससे बेहतर बात सोच सकता हूँ।" यह सपना ऐसी ही 'बेहतर' या 'अधिक सुखद' बात को प्रकट करता है। स्वप्न द्रष्टा ने जिस हेर कार्ल मीयर पर अपना दर्द आरोपित कर दिया है वह एक ऐसा निकटतम परिचित था कि वह उसी के बारे में सोच सकती थी।

स्वस्थ व्यक्तियों से प्राप्त एवं संकलित अनेक सपनों में इच्छा-पूर्ति को खोज निकालना एकदम सरल बात है। मेरा एक मित्र है जो मेरे स्वप्न सिद्धान्त से परिचित है और जिसने यह अपनी पत्नी को भी बता रखा है। वह मुझसे एक दिन बोला, "मेरी पत्नी ने मुझसे तुम्हें यह बताने के लिए कहा है कि उसने कल सपना देखा है कि उसे मासिक धर्म हो गया है। तुम्हें इसका अर्थ मालूम है?" मैं वाकई इसका अर्थ जानता हूँ : यदि कोई युवा पत्नी स्वप्न देखती है कि उसे मासिक धर्म हो गया है तो समझ लीजिए कि उसका मासिक धर्म रुक चुका है। मैं अच्छी तरह कल्पना कर सकता हूँ कि इससे पहले कि मातृत्व की उलझने शुरू हों जाएँ, वह अपनी स्वतन्त्रता को कुछ और बढ़ाना चाहती है। अपनी पहली गर्भावस्था बताने का भी यह एक खूबसूरत तरीका था। एक अन्य मित्र ने लिखा है कि कुछ दिन हुए उसकी पत्नी ने सपना देखा कि उसके ब्लाउज पर दूध के निशान हैं। यह

भी गर्भवती होने का संकेत है, परन्तु पहली बार का नहीं, वह युवा माँ आशा कर रही थी कि पहले शिशु की अपेक्षा वह इस दूसरे शिशु को अधिक पोषण देगी।

अपने बच्चे के एक संक्रामक रोग से ग्रस्त हो जाने के कारण एकान्त वास में उसका उपचार व पालन-पोषण करते हुए समाज से अलग-थलग रहने वाली एक युवा महिला ने उस शिशु के निरोग हो जाने के बाद सपना देखा कि एलफोंजे डाडेट, पाल बरगेट और मार्सल प्रोबेस्ट सहित अनेक लोगों का एक दल उसके सामने है, वे सभी उससे बहुत खुश हैं और बड़ी खुशमिज़ाजी के साथ उससे मिल रहे हैं। उसके सपने में इन लेखकों की शकल-सूरत वही है जो उनके चित्रों में दर्शाई जाती है। एम. प्रोवेस्ट को वह नहीं जानती थी अत: उसे वह कुछ ऐसा दिखाई दिया जैसा कि वह आदमी जो एक दिन पहले ही उस रोगी-कक्ष को रोगाणु मुक्त करने के लिए आया था और जो कि लम्बे नितान्त एकान्त में रहने के बाद उस कमरे में प्रवेश करने वाला पहला व्यक्ति था। साफ़ तौर पर इस सपने को यूँ कहा जा सकता है : 'लम्बे समय से खिंचती चली आ रही इस नर्सिंग की अपेक्षा अब कुछ मनोरंजक बातों का समय आ गया है।' सपनों का यह संकलन शायद यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि अकसर और अत्यन्त जटिल स्थितियों में सपने इच्छा-पूर्ति के रूप में देखे जा सकते हैं और वे अपनी कथा-वस्तु को बिना किसी लाग-लपेट के ही प्रस्तुत भी कर देते हैं। अधिकांश मामलों में ये सपने छोटे व सीधे-सरल होते हैं और उलझे हुए, लम्बे व भारी स्वप्न-कथाओं के विपरीत ये सुखद भी होते हैं। जबकि, केवल उलझे हुए, लम्बे व भारी सपने ही इस विषय के लेखकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते रहे हैं। परन्तु, इन सीधे-सरल सपनों की जाँच-परख को यदि हम थोड़ा-बहुत समय दें तो अच्छे परिणाम हमारे हाथ लगेंगे। मेरा मानना है कि सारे सपनों में सबसे सीधे व सरल सपने बच्चों के होते हैं क्योंकि उनकी मनोवैज्ञानिक गतिविधि वयस्क लोगों की तुलना में निश्चित ही कम उलझन वाली होती है।

मेरी राय में, बाल-मनोविज्ञान वयस्क लोगों के मनोविज्ञान को जानने के लिए उसी प्रकार प्रयुक्त किया जा सकता है जैसे नन्हें जीवों की बनावट और विकास का अध्ययन विशाल आकार के जीवों की बनावट तथा विकास को समझने में सहायता करता है। बच्चों के मनोविज्ञान को इस प्रयोजन से प्रयुक्त करने के अभी तक इने-गिने ही प्रयास किए गए हैं।

छोटे बच्चों के सपने अकसर इच्छापूर्ति के सीधे-सरल उदाहरण होते हैं और इसी कारण वयस्क लोगों के सपनों की तुलना में कुछ विशेष रुचिकर नहीं होते। उनमें ऐसी कोई समस्या नहीं दिखती जिसका समाधान खोजा जाए, फिर भी वे अपने सारभूत अर्थ में किसी इच्छा की पूर्ति का भरा-पूरा सबूत पेश करते हैं। मैंने अपने ही बच्चों द्वारा दी गई ऐसी सामग्री में से बहुत सारे उदाहरण एकत्रित किए हैं।

1896 में हाल्सटैट को गए अपने सपरिवार सैर-सपाटे के दौरान के दो सपने उल्लेखनीय हैं जिनमें से एक मेरी बेटी ने देखा था जो तब साढ़े आठ साल की थी और दूसरा मेरे बेटे ने जो तब सवा पाँच साल का था। पहले मैं यह बता दूँ कि हम वह गर्मी औसी के निकट एक पहाड़ी पर बिता रहे थे, मौसम साफ़ होने पर जहाँ से हम डशटीन पर्वतमाला के भव्य दृश्यों का आनन्द लिया करते थे। दूरबीन से हम उस पर स्थित 'सिमोनी हट' (ईसाई धर्म सम्बन्धी क्रय-विक्रय केन्द्र) को सरलता से ढूँढ़ लेते थे। बच्चे भी दूरबीन से इसे देखने का प्रयास करते थे–मालूम नहीं वे कहाँ तक इसमें सफल रहते थे। इस सैर-सपाटे पर आने से पहले मैंने बच्चों को बता दिया था कि हाल्सटैट नगर डशटीन पर्वतमाला की तलहटी में स्थित है। वे बड़ी उमंग से बाहर घूमने जाने के लिए आतुर थे। हाल्सटैट से हमने ईशर्न की घाटी में प्रवेश किया जिसकी निरन्तर बदलती दृश्यावली ने बच्चों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। फिर भी, उनमें से एक, वह पाँच साल का लड़का धीरे-धीरे कुछ असन्तुष्ट होने लगा। जैसे ही कोई पर्वत उसे दिखता वह पूछता, "क्या यह डशटीन है?" जिस पर मुझे जवाब देना पड़ता, "नहीं, यह तो एक पहाड़ी है।" इस प्रश्न को कई बार पूछने के बाद वह चुप सा हो गया, और तो और ऊपर चढ़कर एक झरने तक पहुँचने के लिए हमारे साथ चलने को भी उसका मन नहीं रहा। परन्तु, अगले दिन सुबह वह बड़ा खुश होते हुए मेरे पास आया और बोला, "कल रात सपने में मैंने देखा कि हम 'सिमोनी हट' गए हैं।" उसकी वह बात अब मेरी समझ में आती है कि जब हम डशटीन की बात करते थे तो उसे अपेक्षा थी कि हाल्सटैट को जाते हुए वह पहाड़ों पर चढ़ेगा और उस 'सिमोनी हट' को क़रीब से देख सकेगा जिसका जिक्र हम दूरबीन से देखते समय अकसर किया करते थे। जब उसे पता चला कि उसे किसी छोटी-मोटी पहाड़ी, एक झरने से ही सन्तुष्ट होना पड़ेगा तो उसे निराशा हुई थी और वह असन्तुष्ट हो गया था। परन्तु उसके सपने ने इस सबकी क्षतिपूर्ति कर दी थी। मैंने उसके सपने का कुछ और विवरण भी जानना चाहा था परन्तु वह कुछ ख़ास नहीं था।

इस सैर-सपाटे के दौरान मेरी साढ़े आठ साल की बेटी की भी कुछ मन में पली इच्छाएँ एक सपने द्वारा पूरी होनी थीं। हम अपने साथ अपने पड़ोसी के बारह साल के बेटे को भी लाए थे जो कि पूरा शिष्टाचारी एक नन्हा सुजन बालक था, और मुझे ऐसा लगता है कि वह इस नन्हीं महिला का मन कुछ-कुछ पहले ही जीत चुका था। अगली सुबह मेरी बेटी ने अपना यह सपना सुनाया, "ज़रा सोचिए, मैंने सपने में देखा कि ऐमिल हमारे परिवार का सदस्य हो गया है, वह आप लोगों को 'पापा' व 'मम्मा' कहता है, और हमारे घर में ही सोता है–बड़े वाले कमरे में, जैसे वह इसी घर का लड़का हो। तब मम्मा कमरे में आती हैं और नीली-हरी पन्नी में लिपटी हुई चाकलेट-बार मुट्ठी भर भर

कर हमारे बिस्तरों के नीचे बिखेर जाती हैं।" उसके भाइयों को स्वप्न विश्लेषण की समझ कोई वंशानुगतता में तो मिली नहीं थी, इसलिए उन्होंने इस सपने को उसी तरह 'बेतुका' घोषित कर दिया जैसे वे लेखक करते आए हैं जिनका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ। लड़की ने सपने के कम से कम एक भाग के सही होने की तो हिमायत की ही थी, और न्यूरोसिस के सिद्धान्त के दृष्टिकोण से यह जानना दिलचस्प है कि उसने किस भाग की हिमायत की : 'ऐमिल हमारे घर का एक सदस्य है, यह बात तो बेतुकी है, परन्तु चाकलेट-बार वाली बात सही है।' केवल यह बाद वाला भाग मेरे लिए तब तक अस्पष्ट और दुरुह रहा जब तक मेरी पत्नी ने मुझे इससे जुड़ा हुआ एक विवरण नहीं सुनाया। रेलवे स्टेशन से घर की ओर चलते समय बच्चे स्लाट-मशीन (सिक्का डालने पर काम करने वाली मशीन) के सामने रुके थे और बिल्कुल वैसी ही चाकलेट बार लेना चाहते थे जैसी मशीन की धातु की रंगत वाली पन्नी में लिपटी हुई थी। परन्तु उसकी माँ ने सोचा, और ठीक ही सोचा कि उनकी पसन्द की काफ़ी चीज़ें तो हम ले ही आए हैं; और, उनकी वह इच्छा सपने में पूरा होने के लिए शेष रह गई। मैं इस दृश्य को नहीं देख पाया था। सपने के जिस भाग को मेरी बेटी ने बेतुका ठहरा दिया था उसे मैं बिना किसी कठिनाई के समझ गया था। जब ये बच्चे हम से आगे निकल गए थे तब उस शिष्टाचारी नन्हें मेहमान को यह कहते खुद मैंने सुना था कि 'पापा' और 'मम्मी' पीछे रह गए हैं, उन्हें आने दो। उस लड़की के सपने ने इस अस्थायी सम्बन्ध को एक स्थायी सम्बन्ध का रूप दे दिया था। अपने इस मित्र के स्थायी साथ का आनन्द लेने के लिए अपने स्नेह को सपने में स्थायी कर देने के अतिरिक्त उसे कोई और रास्ता नहीं सूझा। बिस्तरों के नीचे चाकलेट-बार बिखेरी गईं–बच्चों से कुछ प्रश्न पूछे बिना इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती।

एक और मित्र से भी मैंने अपने बेटे के सपने जैसे ही एक और सपने के बारे में सुना है जो उसकी आठ साल की बेटी द्वारा देखा गया था। दरअसल, उस बच्ची का पिता कुछ और बच्चों को साथ लेकर डोर्नबाश की ओर इस मंशा से टहलने निकला कि वे 'रोहरर हट' जाएँगे, परन्तु शाम ढलती देखकर वह यह वादा करते हुए बच्चों को लौटा चले कि वहाँ फिर किसी दिन चलेंगे। लौटते हुए उन्होंने एक साइनबोर्ड देखा जो हैम्यू जाने वाले रास्ते की ओर इंगित कर रहा था। बच्चों ने अब हैम्यू चलने की ज़िद की परन्तु उसी कारण से वहाँ भी किसी और दिन चलने के आश्वासन से ही उन्हें सन्तुष्ट होना पड़ा। अगली सुबह वह लड़की अपने पिता के पास आकर बड़े सन्तुष्ट स्वर में बोली, "पापा, कल रात मैंने सपना देखा कि आप हमारे साथ 'रोहरर हट' गए हैं और हैम्यू भी।" इस प्रकार उसकी अधीरता ने अपने पिता द्वारा किए गए वादे को सपने में पूरा होने की प्रत्याशा कर ली।

एक और स्वप्न है–और यह तब का है जब मेरी बेटी सवा तीन वर्ष की थी और औसी के मनोरम सौन्दर्य ने उसका मन मोह लिया था। नाव से झील को पार करने का उसका पहला अवसर और अनुभव था; इसलिए उसे यह नौका-यात्रा बहुत छोटी लगी, उसका जी नहीं भरा था। किनारे आने पर वह नाव से उतरने को तैयार नहीं हुई और बिलख कर रोने लगी थी। अगली सुबह उसने हमें बताया, "कल रात मैं झील में नौका विहार कर रही थी।" यह स्वप्न-यात्रा शायद उसे अधिक तृप्ति दायक लगी थी।

मेरा बड़ा बेटा जब आठ वर्ष का हुआ तो उससे पहले से ही वह सपनों के माध्यम से अपनी कल्पनाओं को साकार करता आ रहा था। वह सपने में अचिलेस और डियोमिडीज़ के साथ सारथी के रूप में रथ-यात्रा तक कर चुका था। पिछले दिनों अपनी बड़ी बहन द्वारा उसे दी गई ग्रीस मिथक की पुस्तक में उसने बहुत रुचि ली थी।

यदि यह मान लिया जाए कि बच्चों द्वारा सोते-सोते बोले जाने वाले संवाद सपनों की परिधि में आते हैं तो मैं अपनी याद के शुरुआती दिनों से जुड़ी एक बात से इसे जोड़ना चाहता हूँ : मेरी सबसे छोटी बेटी जब उन्नीस महीने की थी तो एक सुबह उसे उलटी हुई और इसलिए उसे सारे दिन निराहार रखा गया। रात में वह सपने में ऊँची आवाज में बोलते सुनी गई : अन्ना फ़ (र) आयड, स्टाबेबी, वाइल्ड स्टाबैवी आमलैट, पप!" लाड़ में आकर वह अपना नाम इसी तरह लिया करती थी, और अपने इस मीनू में उसने शायद वे सभी चीज़ें शामिल कर ली थीं जो उसका मनपसन्द भोजन हुआ करता था। यह तथ्य कि स्ट्राबैरी की दो किस्मों का नाम इसमें लिया गया है, यह घर के स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों के प्रति उसके विरोध को दर्शाता है जो कि उन परिस्थितियों पर आधारित है जिनकी वह उपेक्षा नहीं कर सकती थी, और वह यह थी कि आया ने उसकी शिकायत की थी कि बहुत अधिक स्ट्राबैरी खाने के कारण उसका मन अब उनसे हट गया है, इसलिए वह अपने सपने में इस राय के विरुद्ध अपना प्रतिशोध लेते हुए अपनी असहमति जता रही थी।

जब हम बचपन को सुखी इसलिए बताते हैं क्योंकि उसमें यौनाचार के प्रति इच्छा नहीं जगी होती है, तब हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि निराशा और विवशता में किया गया अपनी किसी प्रिय चीज़ का त्याग बच्चों के लिए वे दूसरे प्रबल आवेग हैं जो बच्चों के सपनों का संसार रच देते हैं। यहाँ मैं दूसरा उदाहरण देता हूँ। बाइस महीने के मेरे भाँजे को यह कहा गया कि वह मेरे जन्मदिन पर मुझे बधाई दे और उपहार में चैरी की एक छोटी टोकरी भी दे जो कि उस मौसम में मुश्किल से ही मिल पाती हैं। शायद चैरी देने वाला काम उसे बड़ा कठिन लगा था तभी बार-बार यह कहते हुए–"इसमें चैरी हैं, इसमें चैरी हैं वह उस चैरी की छोटी सी टोकरी को अपने नन्हें हाथों से छोड़ने को तैयार नहीं

हुआ था। परन्तु वह जानता था कि अपने नुकसान की भरपाई कैसे की जाए। इस दिन से पहले तक वह अकसर सुबह को अपनी माँ को बताता आया था कि सपने में उसने सफेद सिपाही देखा–सफेद वर्दी पहने गार्ड जिसे उसने सचमुच में सड़क पर देखा था और जो उसे बड़ा अच्छा लगा था। मेरे जन्मदिन पर चैरी का विवश बलिदान करने से अगले दिन सुबह वह बड़ी खुशी-खुशी अपने सपने के बारे में बता रहा था : उस सिपाही ने सारी चैरी खा लीं।

मैं नहीं जानता कि पशु-पक्षी क्या-क्या सपने देखते हैं। अपने छात्र द्वारा सुनाई गई एक लोकोक्ति इस बारे में कुछ बताती हैं जिसमें प्रश्न किया जाता है : हंस किस चीज़ का सपना देखता है? और उत्तर दिया जाता है : मक्का का। (इसी तरह हंगरी में कहा जाता है : सूअर बांजफल का सपना देखता है और हंस मक्का का। यहूदी कहावत में पूछा जाता है : 'मुर्गी किस चीज़ का सपना देखती है?'–'दाने का') इन वाक्यों में यह पूरा सिद्धान्त समाहित है कि सपना किसी न किसी इच्छा की पूर्ति करने वाला होता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि यदि हमने लोक-भाषा को ही देखा-समझा होता तो हम सपनों में छिपे अर्थ के सिद्धान्त तक एक छोटे रास्ते से ही पहुँच सकते थे। यह भी सच है कि कहावतों और मुहावरों के ज्ञान में सपनों के बारे में काफी कुछ हेय कहा गया है–जब यह कहा जाता है कि 'सपने तो बुलबुले होते हैं? तब ऐसा लगता है कि यह वैज्ञानिकों की हाँ में हाँ मिलाना चाहता है। परन्तु लोकभाषा में, जन-जन की भाषा में सपने प्रमुख रूप से इच्छाओं की पूर्ति करने वाले वरदान होते हैं। तभी तो जब कभी हमें अपनी उम्मीद से कुछ अधिक मिल जाता है तो हम खुशी से कह उठते हैं–'इसकी तो मैंने सपने में भी उम्मीद नहीं की थी।'

अध्याय | 4

सपनों में विद्रूपण

मैं यदि अब यह घोषित कर दूँ कि इच्छापूर्ति ही प्रत्येक स्वप्न का आशय और अर्थ होता है–अर्थात् इच्छापूर्ति कर्ता के अतिरिक्त कोई स्वप्न होता ही नहीं–तो मुझे मालूम है कि मुझे इस बात पर सबसे अधिक और सबसे प्रबल विरोध का सामना करना पड़ेगा। मेरे आलोचक आवाज उठाएँगे : "यह तथ्य कि ऐसे सपने होते हैं जिन्हें इच्छापूर्ति कर्ता के रूप में लिया जा सकता है, यह कोई नयी बात नहीं है, बल्कि यह तो एक लम्बे अरसे से–रेडस्टाक, वॉलकैल्ट, परकिंजे जैसे अनेक लेखकों के ज़माने से–यह बात कही जाती रही है। परन्तु यह कहना कि इच्छापूर्ति कर्ता स्वप्न के अतिरिक्त कोई अन्य स्वप्न सम्भव ही नहीं है न तो न्याय संगत है, न औचित्यपूर्ण और न ही इसे तमाम सपनों पर थोपा जा सकता है; और बड़ी आसानी से इसे गलत सिद्ध किया जा सकता है। ऐसे स्वप्न तो अक्सर दिखाई पड़ते हैं जिनमें इच्छापूर्ति का अंश लेशमात्र भी नहीं होता बल्कि जिनकी कथा मेरी व्यथा से भारी होती है। निराशावादी दार्शनिक एडुवर्ड वॉन हर्टमैन ने तो इच्छापूर्ति वाले सिद्धान्त का शायद पूरे प्रबल रूप से विरोध किया हैं। अपनी पुस्तक 'अवचेतन मन का दर्शन' भाग द्वितीय में वह कहते हैं, "जहाँ तक सपनों का सम्बन्ध है, जागृत अवस्था' की सारी समस्याएँ निरन्तर चलती हुई निद्रावस्था में प्रवेश कर जाती हैं–सिवाय उन बातों के जिसे कि सुसंस्कृत व्यक्ति द्वारा अपने जीवन में किसी हद तक समाहित कर लिया गया हो, जैसे वैज्ञानिक तथा कलात्मक आह्राद..." परन्तु इनसे कहीं कम निराशावादी अवलोकनकर्ताओं ने भी इस तथ्य पर बल दिया है कि हमारे सपने में सुख-आनन्द की अपेक्षा पीड़ा और उलझन अधिक दिखाई पड़ती है। सराह वीड तथा फ्लोरेंस हैलम नामक दो महिलाओं ने तो अपने ही सपनों के आधार पर सपनों में व्याप्त रहने वाली व्यथा व उलझन की बहुलता के संख्यात्मक महत्त्व को सविस्तार प्रस्तुत किया है। उन्होंने पाया है कि 58 प्रतिशत सपने तो अप्रिय होते हैं और केवल 26.8 प्रतिशत सकारात्मक रूप से सुखद होते हैं। जीवन की अनेक पीड़ाप्रद भावनाओं को नींद में प्रकट करने वाले सपनों के अतिरिक्त व्यग्रतापूर्ण

सपने भी होते हैं जो कि पीड़ाप्रद भावनाओं में सबसे अधिक भयावह होते हैं और हमें तब तक उत्पीड़ित करते रहते हैं जब तक हम जाग नहीं उठते। और, दरअसल ये ही वे सपने हैं जिनमें बच्चे अकसर बुरी तरह डर जाते हैं, परन्तु फिर भी ये बच्चे ही हैं जिनके सपनों में आप इच्छापूर्ति वाले सपने सबसे अधिक स्पष्ट रूप से पा सकते हैं। पिछले अध्याय में दिए गए उदाहरणों से निकाले गए सिद्धान्त के इस निष्कर्ष पर कि सपने इच्छापूर्ति कर्ता होते हैं, व्यग्रतापूर्ण सपनों ने सभी सपनों पर इस निष्कर्ष का लागू होना सचमुच न केवल प्रतिबाधित कर दिया है बल्कि इसे बेतुका भी ठहरा दिया है।

फिर भी, अपराजेय लगने वाली इन आपत्तियों के वार से बचना कोई कठिन काम नहीं है। इसके लिए इतना भर देख लेना आवश्यक है कि हमारा सिद्धान्त सपने में देखी गई कथावस्तु पर आधारित नहीं है बल्कि उस विचार की विषयवस्तु पर आधारित है जो विश्लेषण के दौरान सपने के नेपथ्य में पाया जाता है। आइये, अब हम स्वप्न-कथा की प्रकट और अप्रकट समानताओं और विषमताओं को देखें। यह सच है कि ऐसे सपने होते हैं जिनकी प्रकट कथा बहुत पीड़ाप्रद प्रकृति की होती है। परन्तु क्या कभी किसी ने इन सपनों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है–इनके पीछे छिपी हुई कथा से परदा उठाना चाहा है? यदि नहीं तो हमारे इस सिद्धान्त के विरुद्ध उठाई गईं दोनों ही आपत्तियाँ टिक नहीं पाती हैं, क्योंकि इस बात की प्रबल सम्भावना बनी रहेगी कि हमारे दुखद और भयावह सपने भी विश्लेषित किए जाने पर इच्छापूर्ति कर्ता सपने ही सिद्ध होंगे।

किसी वैज्ञानिक खोज में ऐसा करना अकसर फायदेमंद रहता है कि यदि किसी समस्या का समाधान कठिनाइयाँ खड़ी कर रहा हो तो उसमें एक और समस्या जोड़ दी जाए–यह बिल्कुल ऐसा ही है जैसे कि बादाम या अखरोट जैसे सूखे मेवे को एक-एक करके फोड़ने के बजाए दो-दो को साथ-साथ फोड़ने में सफलता अधिक मिलती है। इस प्रकार हमारा सामना केवल इस एक समस्या से नहीं रह जाएगा कि दुखद और भयावह सपने इच्छापूर्ति करने वाले स्वप्न कैसे हो सकते हैं, बल्कि हम इसमें एक और समस्या जोड़ सकते हैं, जो कि सपनों की सामान्य समस्या की बहस को एक तरफ रख देने से पैदा होती है : अमहत्त्वपूर्ण कथावस्तु वाले सपने इच्छापूर्ति करने वाले होने के बावजूद कोई और रूप धरे बिना अपना अर्थ प्रकट क्यों नहीं करते? सविस्तार व्याख्या किए गए इर्मा के इंजेक्शन वाले सपने को ही ले लीजिए : यह किसी भी तरह की दुखद प्रकृति का सपना नहीं है, परन्तु विश्लेषण करने पर यह सीधे-सीधे एक इच्छापूर्ति करने वाले सपने के रूप में पहचाना जा सकता है। परन्तु विश्लेषण की आवश्यकता पड़ती ही क्यों है? सपना अपना अर्थ सीधे-सीधे क्यों नहीं बता देता? सच तो यह है कि इर्मा के इंजेक्शन वाला सपना प्रथम दृष्टया ऐसी कोई झलक नहीं

देता कि यह स्वप्नद्रष्टा की इच्छा की पूर्ति कर रहा है। पाठकों को भी ऐसा नहीं लगा और यहाँ तक कि मुझे भी ऐसा तब तक नहीं लगा जब तक कि मैंने उसका विश्लेषण करना शुरू नहीं कर दिया। यदि हम सपनों के अजूबेपन अर्थात् उनके स्पष्टीकरण की आवश्यकता को सपनों में होने वाला विद्रूषण कह देते हैं तो दूसरा प्रश्न उठ खड़ा होता है : सपनों में होने वाला विद्रूषण पैदा कहाँ से होता है?

इस विषय पर यदि मेरे पहले विचारों को देखा-समझा जाए तो अनेक सम्भव समाधान स्वयं प्रस्तुत हो जाएँगे : उदाहरणार्थ यह कि नींद के दौरान अपने स्वप्न-विचारों को समुचित रूप से अभिव्यक्त करने का निर्णय लेने में व्यक्ति असमर्थ रहता है। इस बात को मैं अपने ही एक अन्य सपने के माध्यम से स्पष्ट करूँगा जिसमें अनगिनत अविवेकपूर्णताएँ समाई हुई हैं, परन्तु जो समस्या का भरपूर स्पष्टीकरण देते हुए इसकी भरपाई कर देता है।

भूमिका : 1897 के बसन्त में मुझे पता चला कि हमारे विश्वविद्यालय के दो प्रोफेसरों ने 'प्रोफेसर एक्स्ट्रा ओडिनेरियस' (सहायक प्रोफेसर) के पद के लिए मेरा नाम प्रस्तावित किया है। यह समाचार मेरे लिए एक सुखद आश्चर्य की तरह था। उन दोनों लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्तियों के प्रति बड़ा भला-भला महसूस करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही थी। परन्तु, तत्काल ही मैंने स्वयं से कहा कि उनके इस प्रस्ताव से मुझे बहुत अधिक आशा नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि कुछ वर्ष पहले भी इस प्रकार के प्रस्तावों को मन्त्रालय ने ठंडे बस्ते में रख दिया था और मेरे वे अनेक सहकर्मी जो मुझसे भी वरिष्ठ हैं या पात्रता व योग्यता में कम से कम मेरे समकक्ष तो हैं ही, वे सभी अभी तक उस नियुक्ति की बस बाट ही जोह रहे हैं। मेरे पास ऐसा कोई कारण नहीं था कि मैं स्वयं को उनसे कुछ अधिक भाग्यशाली समझूँ। जहाँ तक मैं स्वयं को जानता हूँ, मैं महत्त्वाकांक्षी नहीं हूँ। वैसे भी किसी नियुक्ति के लिए संस्तुतित किए जाने के बिना भी मैं अपना पेशा एक सन्तोषप्रद सफलता के साथ चला रहा था। वे अंगूर इतने ऊपर लगे हुए थे कि मैं उन्हें खट्टा मानूँ या मीठा, इससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं था।

एक शाम मेरा एक मित्र मुझसे मिलने आया। वह मेरे उन सहकर्मियों में से एक था जिनके भविष्य को मैं चुनौती मानता हूँ। चूँकि वह प्रोफेसर पद (जो हमारे समाज में डाक्टर को उसके रोगियों की नज़र में एक देवता जैसा बना देता है) के लिए एक लम्बे समय से अभ्यार्थी चला आ रहा था, और मेरी अपेक्षा उसमें धीरज कुछ कम ही था, अत: वह उच्चाधिकारियों को समय-समय पर अपने हित की याद दिलाते रहने का आदी हो गया था। ऐसी ही उनसे कुछ मुलाकातों के बाद वह मुझसे मिलने आया था। उसने बताया कि इस बार उसने सम्बन्धित उच्चाधिकारी को घेर ही लिया और उससे साफ-साफ पूछ डाला कि

क्या उसके धार्मिक पंथ का आधार उसकी नियुक्ति के स्थगन के लिए सचमुच ज़िम्मेदार नहीं हो रहा है? तो उसका उत्तर था : महामहिम ने यह स्वीकार किया है कि वर्तमान जनमत को देखते हुए वह यह नियुक्ति नहीं कर सकते, आदि आदि। "अब कम से कम मुझे यह मालूम तो हो गया कि मेरी स्थिति क्या है"– यह कहते हुए मेरे उस मित्र ने अपना बयान पूरा किया परन्तु, साथ ही इस बात ने मेरे धैर्य को उचित ठहरा दिया क्योंकि वह पंथ वाला आधार मेरे अपने मामले में भी लागू होता है।

जिस दिन वह मित्र मुझसे मिलने आया था, उससे अगली सुबह को मुझे निम्नलिखित सपना दिखाई दिया जो अपने रंग-ढंग में भी कुछ विलक्षण ही था। इसमें दो विचार और दो छवियाँ थीं, इसीलिए एक-एक करके एक विचार और एक छवि उभर कर सामने आते रहे। परन्तु मैं यहाँ इस स्वप्न के पूर्वार्द्ध का ही उल्लेख करूँगा क्योंकि जिस प्रयोजन से मैं यह सपना बता रहा हूँ, उससे सपने के उत्तरार्द्ध का कोई लेना-देना नहीं है।

1. मेरे मित्र आर. मेरे अंकल हैं–मेरा उनसे बहुत लगाव है।
2. इसलिए मुझे उनका चेहरा दिखाई देता है–कुछ-कुछ बदला हुआ सा। वह कुछ लम्बा सा दिखता है, पीली दाढ़ी से घिरा हुआ, कुछ ख़ास भिन्नता लिए हुए।

फिर सपने के दो अंश दिखाई पड़ते हैं, पुन: एक विचार और एक छवि, जिनका मैं उल्लेख नहीं कर रहा हूँ।

इस स्वप्न का विश्लेषण निम्नानुसार प्रकट होता है :

सुबह उठने पर जब मुझे अपना यह सपना याद आया तो मुझे हँसी आई और मैंने तुरन्त ही कह डाला–"क्या बेतुका सपना था!" परन्तु इस सपने को मैं अपने दिमाग से निकाल नहीं पाया और यह सारे दिन मेरे दिमाग में तब तक घूमता रहा जब तक कि मैंने स्वयं को धिक्कारते हुए यह नहीं कहा, "किसी स्वप्न विश्लेषण के दौरान यदि तुम्हारा कोई रोगी इस बात के अलावा कुछ न कह पाए कि 'यह सपना तो बेतुका था' तो तुम उसे झिड़क देते हो और सन्देह करते हो कि इस सपने के पीछे कोई न कोई प्रतिकूल बात अवश्य ही छिपी हुई है जिसके खुल जाने से वह स्वयं को बचाना चाहता है। तुम्हारी यह राय कि यह सपना बेतुका है शायद इसके विश्लेषण से बचने का तुम्हारा भीतरी प्रतिरोध ही है। अपने आप से यह हीला-हवाला मत करो।" इस पर मैंने विश्लेषण करना आरम्भ कर ही दिया।

आर. मेरे अंकल हैं। इस का क्या अर्थ हो सकता है? मेरे अपने केवल एक अंकल हैं–मेरे अंकल जोसफ। उनकी कहानी सचमुच बड़ी दुख भरी है। तीस साल से कुछ पहले उन्होंने अपने आपको एक ऐसे लेन-देन में शामिल होने दिया

जिस पर कानून कड़ी सज़ा देता है, इसलिए उन्हें जुर्माना भरना पड़ा था। इस आघात से मेरे पिता के केश कुछ ही दिनों में सफ़ेद हो गए थे और वह यह कहते रहते थे कि तुम्हारा अंकल जोसेफ कभी बुरा आदमी नहीं था, परन्तु फिर भी वह अनाड़ी तो था ही। तो, यदि मेरा मित्र आर. मेरा अंकल जोसफ़ है यह बात यह कहने के बराबर होगी कि आर. अनाड़ी है। यह बात विश्वसनीय तो कतई नहीं है, बेमेल भी पूरी तरह है। परन्तु, सपने में मैंने एक चेहरा भी देखा था–लम्बे नैन-नक्श वाला जिस पर पीली दाढ़ी भी थी। मेरे अंकल का चेहरा सचमुच ऐसा है भी–लम्बा, जो कि खूबसूरत पीली दाढ़ी में फ्रेम हुआ जैसा लगता है। मेरा मित्र आर. गहरा साँवला है, परन्तु जब काले बाल वालों के बाल पकने शुरू होते हैं तब उनकी काली दाढ़ी में कुछ विचित्र रंग परिवर्तन होते हैं–बाल दर बाल। पहले वे लालिमा युक्त और फिर पक्की तरह से भूरे। मेरे मित्र आर. की दाढ़ी अब इसी अवस्था में है। इस मामले में मैं भी इसी अवस्था में हूँ और इसके लिए मुझमें कहीं खेद रहता है। सपने में देखा गया चेहरा प्रत्यक्षत: मेरे मित्र आर. का है, और मेरी सचमुच यही राय है कि मेरा मित्र आर. अनाड़ी है–मेरे अंकल जोसफ़ की तरह।

मैं अब तक यह नहीं समझ पाया हूँ कि यह तालमेल, यह सम्बन्ध मैंने बनाया किस प्रयोजन से है। निश्चय ही यह एक ऐसा सम्बन्ध है जिस पर आपत्ति करने में मुझे कतई झिझक नहीं है। फिर भी इसमें कुछ गहराई नहीं है, क्योंकि मेरे अंकल तो एक अपराधी थे जब कि मेरा मित्र आर. अपराधी नहीं है–अपवाद स्वरुप उसे अपने एक सहायक की साइकिल में टक्कर लगाने के कारण एक बार जुर्माना अवश्य हुआ था। क्या मैं इसे अपराध मान सकता हूँ? ऐसा करना उनकी तुलना को हास्यास्पद बना देगा। यहाँ मुझे एक और वार्तालाप याद आ रहा है जो मेरे व मेरे सहकर्मी एन. के बीच कुछ दिन पहले हुआ था। दरअसल इसी विषय पर मेरी एन. से सड़क पर बातचीत हुई थी। उसे भी प्रोफेसर पद के लिए नामित किया गया है और यह जानते हुए कि उसी प्रकार मुझे भी सम्मानित (नामित) किया गया है, उसने मुझे बधाई दी। उसकी बधाई को मैंने यह कहते हुआ टालना चाहा : "कम से कम आप तो ऐसा मज़ाक न करें, क्योंकि आप तो जानते ही हैं कि इस प्रकार के नामांकन का क्या मूल्य है।" इस पर उसने कहा, यद्यपि बहुत उत्साह से नहीं, "आप निश्चित रूप से ऐसा नहीं कह सकते। मेरे मामले में तो एक विशेष अपत्ति आड़े आ गई थी। आपको नहीं मालूम कि एक बार एक महिला ने मेरे विरुद्ध एक आपराधिक अभियोग लगा दिया था? ब्लैकमेल करने का उसका यह एक बहुत घटिया तरीका था और याचिकाकर्ता को सजा से बचाने के अलावा मैं और कर भी क्या सकता था। परन्तु हो सकता है कि मन्त्रालय में यही प्रसंग मेरे विपरीत चला गया हो। परन्तु आपके ऊपर तो ऐसा कोई दाग़ नहीं है।" तो यहाँ मैं अपराध के साथ-साथ सपने के विश्लेषण

और प्रवृत्ति को भी लेकर चल रहा हूँ। सपने में मेरे अंकल जोसफ़ उन दोनों साथियों के रूप में प्रकट हुए हैं, जिनमें से एक को तो उसके अनाड़ी होने के कारण प्रोफेसर पद नहीं मिला और दूसरे को अपराधी होने के कारण। और, मैं यह भी जानता हूँ कि मुझे किस प्रयोजन से उनके इस रूप की आवश्यकता पड़ी। यदि कोई धार्मिक आधार मेरे इन दोनों मित्रों की नियुक्ति के स्थगन का निर्णायक कारक रहा था तब तो मेरी अपनी नियुक्ति पर भी यही खतरा मंडराने वाला था। परन्तु मेरे दो अन्य मित्रों की नियुक्ति निरस्त होने के कुछ और कारण होने की बात को अगर देखता हूँ–जो कि मेरे मामले पर लागू नहीं होते, तो मेरी आशा धूमिल नहीं होती। मेरे सपने ने यही प्रक्रिया अपनाई है : इसने मेरे एक मित्र आर. को तो अनाड़ी बना दिया है और दूसरे को–अर्थात् एन को, एक अपराधी। परन्तु, चूँकि मैं इन में से कुछ नहीं हूँ अत: हम में कोई साम्यता नहीं है। प्रोफेसर का पद व पदवी पाने के अपने अधिकार का मैं आनन्द ले रहा हूँ और अपने मित्र आर. को उच्चाधिकारी द्वारा दी गई सूचना को मैं अपने मामले में लागू किए जाने की उलझन को दरकिनार कर देता हूँ।

इस सपने के विश्लेषण को मैं थोड़ा और आगे बढ़ाता हूँ क्योंकि मुझे लग रहा है कि इसे अभी भी सन्तोषजनक रूप से स्पष्ट नहीं किया गया है। प्रोफेसर पद तक पहुँचने के लिए अपना रास्ता बनाने में अपने दो सम्मानीय सहकर्मियों को थोड़ा नीचा करने में जो मुझे सुखद अहसास हुआ है, उससे बेचैन हुआ मैं अभी भी उद्विग्नता अनुभव कर रहा हूँ। इस प्रक्रिया से मेरा असन्तोष निश्चय ही कम हुआ है क्योंकि सपनों के साक्ष्य को उसके वास्तविक मूल्य के रूप में पहचान लेना मैंने सीख लिया है। मैं किसी भी ऐसे व्यक्ति से सहमत नहीं हो सकता जो कहे कि मैं सचमुच आर. को अनाड़ी मानता हूँ या कि एन. की ब्लैकमेल वाली बात पर विश्वास नहीं करता हूँ। और, निश्चय ही मैं नहीं मानता कि इर्मा ओटो द्वारा दिए गए प्रोपाइल के इंजेक्शन के कारण गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गई थी। पहले की तरह ही यहाँ भी मेरा स्वप्न जिसे प्रकट कर रहा है वह केवल मेरी इच्छा है कि ऐसा-ऐसा हो। जिस वक्तव्य में मेरी इच्छा पूरी होती दिख रही है वह पहले सपने की अपेक्षा दूसरे में कुछ कम विसंगत लगता है। यहाँ एक युक्तियुक्त मिथ्यावाद जैसी बात को सिद्ध करने के लिए दिए जाने वाले वास्तविक मुद्दों का चतुराईपूर्वक प्रयोग किया गया है जिनमें से एक यह कह सकता है कि “इसमें कुछ तो है”, क्योंकि उस समय मेरे मित्र आर. को अपने ही विभाग के एक प्रोफेसर की प्रतिकूल वोट पर ही थम जाना पड़ा था और एन. ने तो स्वयं ही पूरे निश्चय के साथ अपने दाग़ की सारी दास्तान सुना दी थी। फिर भी मेरा यह पुन: कहना है कि इस सपने को अभी और स्पष्ट करना बाकी है।

अब मुझे याद आ रहा है कि इस स्वप्न का एक और भाग भी है जिसे विश्लेषण में अभी तक अनदेखा किया गया है। जब मुझे यह भान हुआ कि

मेरा मित्र आर. मेरे अंकल हैं तो सपने में मैंने उनके प्रति बड़ा लगाव महसूस किया। यह भाव किस ओर संकेत कर रहा है? यह पक्की बात है कि अपने अंकल जोसफ़ के प्रति मेरे मन में कभी कोई लगाव नहीं रहा था। आर. कई वर्षों से मेरा प्रिय मित्र रहा था परन्तु जैसा स्नेह मैंने सपने में उसके प्रति महसूस किया है वैसा मैं यदि सचमुच उसके प्रति प्रकट करूँ तो निस्सन्देह उसे आश्चर्य ही होगा। मेरा यह स्नेह सपने में यदि उसके प्रति था तो मिथ्या और अतिरंजित था, बिल्कुल उसकी बौद्धिक अवस्था की तरह जिसे मैंने अपने अंकल के व्यक्तित्व में आरोपित करके देखा था, परन्तु यह था विपरीत दिशा में ही। फिर भी अब एक नए तरह की अवस्था मुझमें उभरने लगी है।

स्वप्न में दर्शाया गया स्नेह अप्रकट कथावस्तु से; स्वप्न के पार्श्व-विचार से संबंधित नहीं है, यह तो कथावस्तु की उलट दिशा में खड़ा है, यह तो विश्लेषण द्वारा बताई गई जानकारी को छिपाने के लिए की गई कल्पनाएँ हैं। संक्षेप में शायद यही इसका काम रहा है। मुझे याद है कि इस विश्लेषण को मैंने कितनी अनिच्छा से हाथ में लिया था, कितने समय तक इसे स्थगित रखा था और किस तरह मैंने इस स्वप्न को बस बेतुका घोषित कर दिया था। मनोविश्लेषण के अपने व्यवसाय से में सीख चुका हूँ कि इस प्रकार की भर्त्सना की व्याख्या कैसे की जाए। इसका कोई सूचनापरक मूल्य नहीं होता, बल्कि यह एक प्रभाव को प्रकट करता है। यदि मेरी छोटी बेटी को सेब खाने की इच्छा नहीं है तो जब उसे सेब दिया जाता है तो वह जोर देकर कहती है कि वह कड़वा है–बिना चखे ही। यदि मेरे रोगी इस प्रकार का बर्ताव करते हैं तो मैं समझ जाता हूँ कि वे उस विचार व उस धारणा के साथ बर्ताव कर रहे हैं जिसे वे दबाने की जुगत में हैं। यही बात मेरे इस स्वप्न पर भी लागू होती है। मैं उसका विश्लेषण करना नहीं चाहता था क्योंकि उस विश्लेषण में ऐसा कुछ है जिस पर मुझे एतराज है। इस स्वप्न का विश्लेषण पूरा हो जाने के बाद मेरे सामने वह बात प्रकट हो ही जाती है जिस पर मुझे एतराज था और वह था इस बात पर बल देना कि आर. अनाड़ी है। इस बात का सन्दर्भ मैं अपने इस स्नेह-भाव से जोड़ सकता हूँ जो कि अप्रकट स्वप्न-कथा के साथ तो नहीं है, परन्तु इस बात के प्रति मेरी अनिच्छा के साथ है। अप्रकट बातों की तुलना में यदि मेरा स्वप्न इस विषय में छद्मवेश धारण किए हुए है और उन बातों की विपरीतता दर्शाकर सचमुच गलतबयानी कर रहा है तो स्वप्न में दर्शाया गया स्नेह इस ग़लतबयानी का उद्देश्य पूरा कर देता है। दूसरे शब्दों में, यहाँ अर्थ के साथ किया गया बिगाड़ जानबूझकर किया गया है–यह छद्मवेश का माध्यम है। आर. के बारे में मेरे स्वप्न-विचार अनादरसूचक हैं और ताकि मैं इस अनादर की विपरीतता को न जान पाऊँ अत: उसके प्रति एक सौम्य स्नेह मेरे स्वप्न में प्रवेश कर लेता है।

यह खोज सामान्यत: सिद्ध की जा सकती है। अध्याय तीन में दिए गए उदाहरण बताते हैं कि कुछ सपने तो बिना कोई छद्मवेश धारण किए सचमुच साफ-साफ बता देते हैं कि वे इच्छापूर्ति वाले सपने हैं। जहाँ कहीं भी किसी इच्छपूर्ति वाले स्वप्न को पहचाना न जा सका हो या वह छद्मवेश में रहा हो, तो वहाँ उस इच्छा के विरुद्ध स्वयं को बचाने की प्रवृत्ति अवश्य ही विद्यमान होगी, और इस बचाव की प्रक्रिया के फलस्वरूप उस इच्छा के समक्ष स्वयं को किसी विकृत या तोड़ी-मरोड़ी अवस्था में प्रकट करने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा न रह जाएगा। आन्तरिक मानसिक जीवन के इस घटनाक्रम की समानान्तरता को मैं सामाजिक जीवन में तलाशने का प्रयास करूँगा। सामाजिक जीवन में इस प्रकार की गलतबयानी कहाँ मिल सकती है? वहाँ जहाँ केवल दो व्यक्तियों का मामला हो, जिनमें से एक को कुछ शक्ति व अधिकार प्राप्त हों, जबकि दूसरे को इस शक्ति व अधिकार के अन्तर्गत कुछ सीमाओं व शर्तों के साथ कार्य करना हो–तब वह दूसरा व्यक्ति अपनी मानसिक क्रियाओं को तोड़-मरोड़ कर पेश करेगा, या यूँ कह सकते हैं कि वह मुखौटा लगा लेगा। दिन प्रतिदिन मैं जिस विनम्रता का प्रयोग करता हूँ वह इसी प्रकार का मुखौटा है और य़दि अपने पाठकों के हित के लिए मैं अपने सपनों का विश्लेषण करता हूँ तो मैं इसी प्रकार की गलतबयानी करने के लिए बाध्य रहूँगा। दास बेस्ते कवि भी ऐसी गलतबयानी की विवशता की व्यथा कुछ यूँ बयाँ करता है : 'जो बात आप स्वयं अच्छी तरह नहीं समझ सकते उसे अपने बेटे को भी नहीं समझा सकते।'

किसी राजनैतिक लेखक के पास सत्तासीन व्यक्ति को बताने के लिए यदि कुछ अप्रिय सत्य होते हैं तो वह भी स्वयं को ऐसी ही स्थिति में पाता है। वह यदि बिना किसी लाग-लपेट के सब कुछ बता देता है तो सरकार उन्हें दबा देगी–मौखिक रूप से व्यक्त अभिव्यक्ति के मामले में पूर्वव्यापी ढंग से और प्रैस में प्रकाशित होने की आशंका के मामले में निषेधाज्ञा लागू करके। लेखक सैंसराशिप के भय में रहता है, इसीलिए वह अपनी राय के तीखेपन को कम कर देता है और उस पर कोई छद्म आवरण डाल देता है। सैंसर की संवेदनशीलता के अनुरूप वह विवशत: या तो कुछ खास तरह की आक्रामक टिप्पणियाँ करने से स्वयं को पूरी तरह रोक लेता है या सीधे-सीधे बलपूर्वक अपनी बात कहने के बजाय वह स्वयं को संकेतों में व्यक्त करता है, या फिर वह अपने आपत्तिजनक वक्तव्य को निरापदता की चाशनी में पागने का प्रयास करता है। सैंसरशिप का नियंत्रण जितना कड़ा होगा, छद्म आवरण उतना ही अधिक होगा और इससे भी बड़ी बात यह कि पाठक को वास्तविक अर्थ बताए जाने के लिए अधिक कुशल व प्रवीण तरीके अपनाने होंगे।

सैंसर करके दिखाए गए परिदृश्य और स्वप्न में तोड़-मरोड़ कर दिखाए गए दृश्य के बीच की व्यापक अनुरूपता दोनों के लिए समान अवस्थाओं की

अपेक्षा करने को सही ठहराती है। हमें यह बात मान लेनी चाहिए कि हर व्यक्ति में सपना बनने के मूल कारण के रूप में दो मानसिक शक्तियाँ (प्रवृत्तियाँ या प्रणालियाँ) विद्यमान रहती हैं जिनमें से एक तो स्वप्न द्वारा व्यक्त इच्छा को प्रकट करती है और दूसरी इस स्वप्न-इच्छा पर कैंची चलाने का काम करती है और इस तरह उसका रूप विद्रूप कर देती है। प्रश्न यह है कि इस दूसरी शक्ति की सत्ता की प्रवृत्ति क्या है जिसके रहते यह अपनी सैंसरशिप लागू करती है? यदि हम यह याद रखें कि छिपे हुए स्वप्न-विचार भले ही विश्लेषण से पहले चेतन न हो पायें परन्तु उनसे उत्पन्न होने वाली प्रकट स्वप्न-कथा चैतन्य रूप से याद रहती है तो यह बात कि चेतनता (consciousness) में प्रवेश पा लेने की क्षमता ही इस दूसरी शक्ति का विशेषाधिकार है–कोई कपोल कल्पित बात नहीं रह जाती। पहली प्रणाली से ऐसी कोई भी चीज़ चेतनता तक नहीं पहुँच पाती है जो दूसरी अवस्था से न गुजरी हो; और यह दूसरी अवस्था किसी भी चीज़ पर अपना पूरा हक़ जमाये बिना और चेतनता में प्रवेश करने की इच्छुक किसी भी चीज़ को अपने अनुकूलतः संशोधित किए बिना गुजरने नहीं देती। यहाँ हम चेतनता के 'सार' की एक बड़ी निश्चित अवधारणा पर पहुँच जाते हैं; हमारे लिए चेतन रहने की अवस्था एक विशेष मानसिक क्रिया होती है जो कि स्थिर रहने की क्रिया से भिन्न व अनिर्भर होती है और चेतनता हमें एक ऐसा मस्तिष्कीय अंग प्रतीत होती है किसी अन्य स्रोत से उत्पन्न होती चीज़ों को देख रहा हो। यह दिखाया जा सकता है कि मनोविज्ञान का काम इन आधारभूत परिकल्पनाओं के बिना बिल्कुल नहीं चल सकता।

तो, शायद हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि स्वप्न व्याख्या हमारे उस मानसिक तंत्र की संरचना से जुड़ी सूचनाओं को उपलब्ध कराने में सक्षम होती है जिसे अभी तक दर्शन शास्त्र से प्राप्त करने की व्यर्थ आशा की जाती रही है। प्रश्न यह पैदा होता है कि किसी अननुकूल और अप्रिय कथावस्तु वाले स्वप्न को इच्छा पूर्ति-कर्ता स्वप्न के रूप में कैसे विश्लेषित कर सकता है। ऐसा होना तब संभव है जब कोई स्वप्न विद्रूपित हो गया हो और जब अननुकूल व अप्रिय कथावस्तु कोई छद्मवेश धारण करके इच्छित बात को दर्शा रही हो। दोनों मानसिक अवस्थाओं के प्रति अपनी अभिधारणा के बारे में अब हम यह भी कह सकते हैं कि अननुकूल व अप्रिय सपनों में वास्तव में कुछ ऐसा होता है जो दूसरी अवस्था को तो अननुकूल व अप्रिय ही लगता है परन्तु साथ ही वह पहली अवस्था की कोई न कोई इच्छा पूरी कर रहा होता है। चूँकि हर स्वप्न पैदा तो पहली अवस्था से ही होता है, दूसरी अवस्था तो स्वप्न के प्रति केवल एक रक्षात्मक भूमिका निबाह रही होती है–परन्तु रचनात्मक रूप में नहीं–अतः हर एक स्वप्न की इच्छा से जुड़ा स्वप्न ही कहा जाएगा। यदि हम इसी बात से सरोकार रखने तक सीमित रहते कि पहली अवस्था का क्या योगदान है तो हम स्वप्न को

कभी नहीं समझ पाते और वे तमाम समस्याएँ जो इस विषय के लेखकों ने सपनों में खोज निकाली हैं; अनसुलुझी ही रह जातीं।

यह बात हर मामले में विश्लेषण द्वारा सिद्ध की जानी चाहिए कि स्वप्न वास्तव में एक ऐसा छिपा हुआ अर्थ रखता है जो उसे इच्छा-पूर्ति-कर्ता होना सिद्ध करता है। इसलिए मैं कुछ सपनों का चयन करूँगा जिनकी कथावस्तु में पीड़ा है कष्ट है, और उनका विश्लेषण करने का प्रयास करूँगा। इनमें से कुछ स्वप्न हिस्टीरिया से ग्रस्त रोगियों के हैं, इसलिए उनकी लम्बी भूमिका को बताए जाने की आवश्यकता है और कुछ ऐसे परिच्छेदों की भी जिनमें हिस्टीरिया में होने वाली मानसिक प्रक्रियाओं की जाँच का उल्लेख किया गया हो। यद्यपि प्रस्तुतिकरण इससे कुछ जटिल हो जाता है, परन्तु इसके अलावा और कोई चारा नहीं है।

मेरे रोगी एक स्वर से मेरे इस सिद्धान्त का खंडन करते हैं कि सपने इच्छा-पूर्ति-कर्ता होते हैं। मैं यहाँ कुछ स्वप्न-कथाओं को उदाहरण स्वरूप रख रहा हूँ जो मेरे सिद्धान्त को गलत सिद्ध करने के लिए मेरे समक्ष रखी गईं।

“आप हमेशा यही कहते हैं कि सपना किसी इच्छा की पूर्ति करने वाला होता है”, एक तेज़ दिमाग महिला रोगी कहना शुरू करती है, “मगर मैं आपको अपना एक ऐसा सपना सुना रही हूं जिसकी कथा इस बात के विपरीत है और जिसमें मेरी कोई इच्छा-पूर्ति नहीं हो रही है। अपने सिद्धान्त से आपका इसका तालमेल बैठ नहीं पाएगा। वह सपना इस प्रकार था–मैं रात के खाने पर किसी को बुलाना चाहती हूँ परन्तु मेरे पास कुछ सिकी हुई सालमन के अलावा कुछ नहीं है। मैं बाजार में जाकर कुछ खरीद लाने की सोचती हूँ, परन्तु मुझे याद आता है कि आज तो रविवार की शाम है और सारी दुकानें बन्द हैं। फिर मैं कुछ खान-पान सेवा वालों को फोन करने की कोशिश करती हूँ, परन्तु फोन खराब मिलता है। रात के खाने पर बुलाने की अपनी इच्छा का मुझे दम घोटना पड़ता है।”

मैंने जवाब दिया कि केवल विश्लेषण ही इस स्वप्न का अर्थ बता सकता है–हालाँकि मैं मानता हूँ कि प्रथम दृष्ट्या यह स्वप्न समझदारी वाला और तर्क संगत लगता है और इच्छा पूर्ति वाले सिद्धान्त के विपरीत भी।

“परन्तु क्या हुआ था जिसने इस स्वप्न को पैदा किया” मैं पूछता हूँ “क्योंकि आप तो जानती ही हैं कि किसी स्वप्न की उत्पत्ति हमेशा गत दिवस के किसी अनुभव से जुड़ी होती है।”

विश्लेषण : उस महिला रोगी का पति, जो कि एक ईमानदार और काबिल सेल्समैन है, उसने इस महिला से पिछले दिन कहा था कि वह मोटा होता जा रहा है और वह इसके लिए कुछ करेगा। सुबह जल्दी उठेगा, व्यायाम करेगा,

सीमित खुराक लेगा और रात के खाने के किसी बुलावे को स्वीकार नहीं करेगा। वह मजाकिया ढंग से बताती रही कि किस तरह एक दावत में उसके पति की मुलाकात एक चित्रकार से हो गई थी जिसने उसका चित्र बनाने पर बड़ा ज़ोर दिया था क्योंकि उस चित्रकार ने पहले कभी इतना भावपूर्ण चेहरा नहीं देखा था। परन्तु उसके पति ने स्पष्ट शब्दों में जबाव दे दिया था कि वह उनके प्रस्ताव का धन्यवाद करता है, परन्तु अपना चित्र बनवाने में उसकी कोई रुचि नहीं है और उसका मानना है कि उसके चेहरे की अपेक्षा किसी सुन्दर युवती का चित्र बनाने में उस चित्रकार को अधिक आनन्द आएगा। वह महिला अपने पति से बहुत प्रेम करती है और उसे खूब छेड़ती भी हैं वह उससे कह चुकी है कि वह उसके लिए कैवियार (खाने से पहले भूख बढ़ाने के लिए लिया जाने वाला मछली का नमकीन व्यंजन) बिल्कुल न लाकर दे। इसका मतलब?

सच बात तो यह है कि कई दिनों से वह सुबह को कैवियार का सैंडविच खाना चाह रही थी परन्तु महँगा होने के कारण मन मसोस कर रह जाती थी। यह बात पक्की है कि यदि वह अपने पति से कैवियार लाने के लिए कहती तो वह उसे मिल भी जाती परन्तु वह तो उल्टा उसे कैवियार लाने को मना कर चुकी थी ताकि वह उसे थोड़ा और चिढ़ा सके।

मुझे इस वर्णन में कोई दम नज़र नहीं आया। जिन हेतुओं को हम स्वीकार नहीं करते हैं वे ऐसी ही असन्तोषप्रद व्याख्याओं के पीछे स्वयं को छिपा लेते हैं। मुझे दिख रहा है कि जागृत अवस्था में वह किसी न किसी अपूर्ण इच्छा की ईजाद करने की जद्दोजहद में लगी है। उसका स्वप्न भी उसकी इच्छा का पूरा-पूरा न होना दिखाता है। परन्तु उसे किसी अपूर्ण इच्छा की आवश्यकता क्या है?

जिन बातों पर अब तक प्रकाश डाला गया है वे स्वप्न की व्याख्या करने के लिए अपर्याप्त हैं। अत: मैं कुछ और बताए जाने का आग्रह करता हूँ। वह थोड़ा रुकती है जिससे लगता है कि वह किसी संकोच पर काबू पाना चाह रही है; फिर वह बताती है कि एक दिन पहले वह अपनी एक सहेली के घर गई थी जिसके प्रति वह थोड़ी ईर्ष्यालु भी है क्योंकि मेरी इस महिला रोगी का पति उसकी इस सहेली की तारीफ़ के पुल बाँधता रहता है। अच्छी बात यह है कि उसकी यह सहेली बहुत दुबली-पतली है जबकि इस महिला के पति को भरा-भरा गहराया बदन पसन्द है। तो उसकी यह कृशकाय सहेली किस बारे में बात करती है? निश्चय ही कुछ गोल-गोल होने के बारे में। उसने मेरी रोगी से यह भी कहा–"तुम हमें फिर कब बुला रही हो? तुम हमेशा ही बहुत बढ़िया खाना खिलाती हो।"

अब इस स्वप्न का अर्थ स्पष्ट है। मैं रोगी को इसका अर्थ बताने की स्थिति में पहुँच गया हूँ :

"यह बिल्कुल वही है जो आपने उसके द्वारा खाने पर बुलाए जाने का आग्रह किए जाने पर सोचा था–'हाँ हाँ, मैं तुम्हें खाने पर बुलाऊँ ताकि तुम मेरे

घर छक कर खाओ और तुम पर मुटाई चढ़े ताकि फिर तुम मेरे पति को और भी ज़्यादा भाने लगो। मैं तुम्हें रात्रि-भोज पर हरगिज़ नहीं बुलाऊँगी।"

आपका सपना तब आपको दिखाता है कि आप रात्रि-भोज नहीं दे पा रही हैं और इस तरह आपकी इस इच्छा को पूरी कर रहा है कि आप अपनी सहेली के अंगों को गोलाई देने में कोई योगदान न दें। किसी दावत को स्वीकार न करने का आपके पति का संकल्प आपको बताता है कि दूसरों की मेज पर खाना खाकर लोग मुटा जाते हैं। अब अर्थ में कोई कोर-कसर नहीं रह गई है सिवाय कुछ इत्तफाक़ के–जो कि समाधान की पुष्टि ही करेगा। सपने में सिकी हुई सालमन मछली वाली बात का सिरा अभी हाथ नहीं आया है।

"आपके सपने में सालमन कैसे आई?"

"सिकी हुई सालमन मेरी उस सहेली का प्रिय व्यंजन है," उसने जवाब दिया।

यह सपना अभी एक और तथा अधिक सटीक व्याख्या की गुंजाइश रखता है–जो कि अनुपूरक व सहायक परिस्थिति के चलते सचमुच आवश्यक हो गई है। दोनों व्याख्याएँ एक दूसरे का न तो खंडन करती हैं और न विरोध, बल्कि एक दूसरे के साथ गठचूल की तरह रहती हैं और सपनों में प्रायः पायी जाने वाली अस्पष्टता का एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करती हैं–किसी भी अन्य मनोरोगीय स्वरूप की तरह। इस सपने में हम देखते हैं कि एक परित्यक्त इच्छा वाले अपने सपने के दिनों यह रोगी महिला अपनी एक वास्तविक इच्छा (कैवियार सैंडविच खाने की इच्छा) का गला घोटने के लिए बाध्य हो गई हैं। उसकी सहेली ने भी अपनी एक इच्छा प्रकट की है–कुछ गदराया होने की, और यदि मेरी यह रोगी अपने स्वप्न में उसकी इस इच्छा को पूरा न हो पाना देखती है तो हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इसके बजाय वह सपने में देखती यह है कि उसकी स्वयं की एक इच्छा पूरी नहीं हो पा रही है। यदि स्वप्न में वह स्वयं के स्थान पर अपनी सहेली को आरोपित कर देती है या कहें कि स्वयं को अपनी सहेली के साथ तादाल्थ कर लेती तो यह सपना एक नई व्याख्या के योग्य हो जाता।

मैं सोचता हूँ कि उसने यही किया है, और इस तादात्म्यता के प्रतीक स्वरूप उसने अपने वास्तविक जीवन में एक अपूर्ण इच्छा को खड़ा कर लिया है। परन्तु इस भावोन्मादी (hysterical) तादात्म्यता का अर्थ क्या है? इस पर प्रकाश डालने के लिए एक अधिक व्यापक विवरण की आवश्यकता है। भावोन्मत्तता (hysteria) के लक्षणों की क्रिया विधि में तादात्म्यता का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हेतु होता है। इसका अर्थ है कि रोगी न केवल अपने ही लक्षण प्रकट करने में समर्थ रहता है बल्कि अनेक अन्य व्यक्तियों के अनुभवों को भी इस प्रकार व्यक्त और प्रकट करने लगता है, और समाज के किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को स्वयं में ऐसे ही आरोपित कर लेता है जैसे वह किसी नाटक

में उसकी भूमिका निबाह रहा हो। परन्तु यह तादात्म्यता कोई नकल मात्र नहीं रहती बल्कि यह कारण वैज्ञानिक दावे पर आधारित तल्लीन हो जाना, तद्रूप हो जाना होता है, यह 'बिल्कुल वैसा ही' दिखना हो जाता है और उन सामान्य अवस्थाओं से जुड़ जाता है जो अवचेतन मन में बची रह गई हैं।

भावोन्मत्ततापूर्ण तादात्म्यता कामुक प्रकार के व्यक्तियों द्वारा अपनी भावनाओं को बाहर प्रकट करने के लिए सबसे अधिक प्रयुक्त की जाती है। हिस्टीरियाग्रस्त महिला उस व्यक्ति के साथ स्वयं को अपनी भाव-भंगिमाओं द्वारा तादात्म्य कर लेती है जिसके साथ उसने समागम किया है या जिसने उसी की तरह औरों से भी समागम किया है। भाषा भी इस प्रवत्ति की जानकारी देती है : दो प्रेमी 'एक' हो जाते हैं। हिस्टीरिया पूर्ण कल्पना में, और स्वप्न में भी, यदि कोई समागम की सोचता भर है तो भी तादात्म्यता सुनिश्चित लगती है, उसका वास्तव में होना आवश्यक नहीं होता। इस सपने में यह महिला केवल हिस्टीरिया–प्रक्रिया की विचार-शृंखला का अनुसरण करती दिखाई पड़ रही है जब वह अपनी सहेली के प्रति ईर्ष्या दर्शाते हुए अपने सपने में सहेली के स्थान पर स्वयं को आरोपित कर लेती है और स्वयं को उस रचे गए लक्षण (परिक्त इच्छा) के साथ तादात्म्य कर लेती है। इस प्रक्रिया को और अधिक स्पष्ट रुप में हम यूँ कह सकते हैं : सपने में वह स्वयं को सहेली के स्थान पर आरोपित कर लेती है क्योंकि उसकी इस सहेली ने इस महिला के पति के साथ संबंध में इसी का स्थान हथिया लिया है, और क्योंकि वह अपनी सहेली के पति की नज़रों में अपनी सहेली वाला स्थान पा लेना चाहती है।

मेरे सारे स्वप्न द्रष्टाओं में सबसे अधिक बुद्धिमान एक अन्य महिला रोगी के बारे में मेरे इस सिद्धान्त का विरोध बड़े सरल ढंग से हल हो गया–यद्यपि हुआ इसी तर्ज पर कि सपने में किसी इच्छा का पूरा न होना किसी दूसरी इच्छा की पूर्ति होने का प्रतीक होता है।

एक दिन मैं उसे सविस्तार बता रहा था कि स्वप्न देखना किसी इच्छा की पूर्ति होना होता है। अगले दिन उसने कुछ इस तरह बताया कि वह अपनी सास के साथ उस स्थान की ओर यात्रा कर रही है, जहाँ वे दोनों अपनी गर्मियाँ बिताने वाली हैं। परन्तु मैं जानता हूँ कि अपनी सास के साथ गर्मियाँ बिताने जाने के विरुद्ध वह अपना प्रबल विरोध जता चुकी है। मैं यह भी जानता हूँ कि जहाँ उसकी सास गर्मियाँ बिताने जा रही थी वहाँ से काफी दूर एक मकान इस महिला ने किराए पर लेकर सास के साथ रहने वाली बात से खुद को बचा भी लिया था। परन्तु, अब यह सपना इस इच्छित समाधान को उलट रहा था। क्या यह मेरे इच्छा पूर्ति वाले सिद्धान्त का खंडन नहीं करता? इस सपने की व्याख्या करने के लिए हमें केवल इस सपने का निष्कर्ष निकालना होगा। इस सपने के अनुसार मैं गलत सिद्ध हो गया था, *परन्तु यह उसकी इच्छा थी कि मैं गलत सिद्ध कर दिया*

जाऊँ, और उसके सपने ने उसकी यह इच्छा पूरी कर दी थी। परन्तु दूर-दराज एक गाँव के निवास को विषय-वस्तु बनाकर सपने में पूरी की गई यह इच्छा कि मैं गलत सिद्ध कर दिया जाऊँ, एक अन्य गम्भीर मामले की हकीकत से जुड़ी हुई है। उस समय इसके विश्लेषण के लिए उपलब्ध हुई सामग्री के आधार पर मैंने यह निष्कर्ष निकाला था कि उसकी बीमारी से जुड़ी हुई कोई न कोई बात उसके जीवन में कभी न कभी अवश्य घटित हुई है। उसने इस बात को तब नकार दिया था क्योंकि यह बात उसकी स्मृति में विद्यमान नहीं थी। परन्तु जल्दी ही उसने पाया कि मैं सही था। इस प्रकार उसकी यह इच्छा कि मैं गलत सिद्ध कर दिया जाऊँ, इस स्वप्न के रूप में परिवर्तित हो गई कि वह अपनी सास के साथ गाँव जा रही है–इसका तालमेल उसकी इस औचित्य तलाशती इच्छा के साथ बैठता है कि जिन बातों के लिए उस पर मेरे द्वारा सन्देह किया जा रहा था, वे तो कभी घटित ही नहीं हुईं।

बिना किसी विश्लेषण के और केवल अनुमान के आधार पर मैं अपने एक ऐसे मित्र के जीवन की एक छोटी सी घटना की व्याख्या करना चाहता हूँ जो स्कूल में मेरे साथ आठ कक्षाओं में मेरा सहपाठी रहा था। एक छोटे से श्रोता-समूह के बीच बैठे हुए उसने मेरी इस नयी अवधारणा का व्याख्यान सुना था कि सपने इच्छा-पूर्ति-कर्ता होते हैं। उसी रात को उसने सपना देखा कि वह सारे मुकद्दमें हार गया है–वह एक वकील था अत: उसने मुझे यह बात शिकायत के लहज़े में सुनाई। मैंने यह कहते हुए अपना बचाव किया कि भाई, कोई सारे मुकद्दमें थोड़े ही जीत सकता है। परन्तु मैंने सोचा–"आठ साल तक यदि मैं कक्षाओं में 'वरीयता प्राप्त' की तरह अगली बैंच पर बैठा रहा, जब कि वह बीच वाली बैंचों पर ही आगे-पीछे होता रहा था, तो क्या उसके मन में यह भावना स्वाभाविक रूप से उसी उम्र से पनपती नहीं रही होगी कि वह मुझे कभी तो मूर्ख सिद्ध कर सके।"

एक अन्य उदासी भरा सपना मुझे मेरी एक महिला-रोगी ने सुनाया जो कि मेरे इच्छा-पूर्ति वाले सिद्धान्त को काटता था। युवा आयु की इस महिला ने बताना शुरु किया : आपको याद होगा कि मेरी बहन के अब एक ही लड़का है–चार्ल्स। उसका बड़ा बेटा-ओटो अब नहीं रहा। मैं अभी भी उसी बहन के साथ रह रही हूँ। ओटो मुझे बहुत प्रिय था, सच तो यह है कि मैंने ही उसे पाला था। उसके छोटे बेटे को भी मैं प्यार करती हूँ परन्तु सचमुच उतना नहीं जितना उसके दिवंगत भाई को। अब मैंने कल रात सपना देखा कि मैं अपने सामने मृत पड़े चार्ल्स को देख रही हूँ। वह अपने छोटे से ताबूत में लेटा हुआ है, उसकी बाँहें मुड़ी हुई हैं, चारों ओर मोमबत्तियाँ जल रही हैं। यह सब बिल्कुल वैसा ही था जैसा कि ओटो की मृत्यु के समय था जिसने मुझे झकझोर दिया था। अब बताइए कि इस का मतलब क्या है? आप मुझे जानते हैं–"क्या मैं इतनी बुरी हूँ कि यह

चाहूँगी कि मेरी बहन अपना इकलौता बेटा भी खो बैठे। या इस सपने का यह अर्थ है कि जिसे मैं बहुत चाहती थी उस ओटो के बजाय चार्ल्स मर जाता?"

मैंने उसे आश्वस्त किया कि बाद वाला अर्थ तो असंभव है। कुछ सोच-विचार के बाद ही मैं उसके स्वप्न की व्याख्या कर पाया जिसे आखिर उसने स्वीकार भी किया। मैं ऐसा इसलिए कर पाया क्योंकि उस स्वप्न द्रष्टा के पूरे इतिहास की मुझे जानकारी थी।

बचपन में ही माता-पिता का साया सर से उठ जाने के कारण वह लड़की अपनी बड़ी बहन के घर में ही पली-बढ़ी थी। उस घर में आने-जाने वाले अनेक मित्रों व आगन्तुकों में से एक ने उसका मन मोह लिया था। एक बार तो ऐसा लगा था कि जग-जाहिर हो चुका यह प्रणय सम्बन्ध परिणय में परिणत हो ही जाएगा, परन्तु अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची इस प्यार की पेंग पर उसकी इस बड़ी बहन द्वारा ही कुठाराघात कर दिया गया, जिसका कारण भी आज तक नहीं बताया गया। इस संबंध-भंग के बाद उस व्यक्ति ने उस घर में आना-जाना लगभग बन्द ही कर दिया था जिसे वह लड़की बहुत प्यार करती थी। नन्हें ओटो–जिसे वह बहुत स्नेह-दुलार करती थी–की मृत्यु के कुछ समय बाद वह इस दुख से तो काफी हद तक उबर आई परन्तु अपनी बहन के उस मित्र के प्रति अपने प्रेम से बाहर न निकल सकी थी। उसका अपना आत्म-सम्मान उसे उस व्यक्ति से मिलने जाने से तो रोकता रहा था परन्तु उसका अपना प्रेमपात्र बनने की चाहत में आने वाले किसी अन्य व्यक्ति को अपना हृदय दे पाना उसे असम्भव लगता रहा। जिस व्यक्ति से वह प्रेम करती थी वह एक साहित्यकार था और जब भी उसका व्याख्यान कहीं होना घोषित होता था तो वह श्रोताओं के बीच अवश्य होती थी। इस तरह उस व्यक्ति की नज़र से बचकर उसे देखने का कोई भी अवसर वह हाथ से नहीं जाने देती थी। मुझे याद पड़ता है कि पिछले दिन उसने मुझे बताया था कि वह प्रोफेसर किसी आयोजन में आने वाला था और यह भी कि वह उस आयोजन में जा रही है ताकि उसे निहारने का सुख ले सके। यह बात सपने से पहले दिन की है और आयोजन उस दिन था जिस दिन उसने मुझे अपना सपना सुनाया था। अब मैं अपनी व्याख्या को बड़ी आसानी से देख सकता था। मैंने उससे पूछा कि ओटो की मृत्यु के बाद होने वाली कोई खास बात उसे याद है तो उसने तुरन्त उत्तर दिया–"हाँ, उस दिन प्रोफेसर आए थे–एक लम्बे अन्तराल के बाद–और मैंने उन्हें तब देखा जब वे नन्हें ओटो के ताबूत के पास खड़े थे।" यह वही बात निकली जिसकी मुझे अपेक्षा थी। तब मैंने उसके स्वप्न की व्याख्या इस प्रकार की : "अब यदि वह दूसरा लड़का भी मरता यही बात फिर होने वाली थी। तुम वह दिन अपनी बहन के साथ खड़ी हुई बितातीं, वह प्रोफेसर अपनी संवेदना प्रकट करने निश्चय ही आता और तुम एक बार फिर उसे वैसे ही देख पातीं जैसे पहली घटना में तुमने उसे देखा था। यह

सपना तुम्हारी उस देखने की इच्छा के अतिरिक्त किसी और तरफ इंगित नहीं करता–एक ऐसी इच्छा जिसके विरुद्ध तुम भीतर ही भीतर जूझती रहती हो। मुझे मालूम है कि तुम्हारे पर्स में उसके आज के आयोजन के टिकट हैं। तुम्हारा सपना अधीरता का सपना है। इसने आज होने वाली मुलाकात के समय से कई घंटे पहले ही उसे पूरा करने का प्रयास किया है।"

अपनी इच्छा पर छद्मावरण डालने के लिए जाहिर है कि उसने एक ऐसी स्थिति चुनी जिसमें ऐसी इच्छा आमतौर पर दबा ही दी जाती है–ऐसी शोकमय स्थिति जिसमें कोई प्रेम के बारे में सोच भी नहीं सकता। और, फिर भी इस बात की पूरी सम्भावना है कि अपने दुलारे बड़े लड़के के ताबूत के पास खड़े होने वाली वास्तविक स्थिति में भी वह उस प्रोफेसर के प्रति अपनी मधुर भावनाओं को दबा नहीं पाई थी जिससे वह इतनी लम्बे समय से बिछुड़ी हुई थी।

एक अन्य रोगी के ऐसे ही सपने के मामले में एक भिन्न प्रकार की व्याख्या हमने देखी है। अपने शुरुआती जीवन में यह महिला अपनी वाक् पटुता और खुशमिजाजी के लिए जानी जाती थी। इलाज के दौरान भी मुक्त भाव से मिलते हुए उसके ये गुण अभी भी साफ़ दिखते थे। एक लम्बे सपने के दौरान इस महिला को ऐसा लगा कि उसकी पन्द्रह वर्षीय पुत्री उसके सामने एक बक्से में मृत पड़ी है। इस स्वप्न-दृश्य को इच्छपूर्ति वाले सिद्धान्त के अनुरुप मानने के वह प्रबल विरोध में थी–यद्यपि उसे स्वयं भी यह लग रहा था कि उस बक्से की रुपरेखा सपने में किसी अन्य प्रतीक की ओर इंगित कर रही थी क्योंकि विश्लेषण के दौरान उसे याद आया कि पहले दिन शाम को जिन लोगों के साथ वह बैठी थी, उनकी बातचीत अंग्रेज़ी शब्द 'बॉक्स' और जर्मन में उसके अनुवाद जैसे शचटेल, थियेटर में लोज, कस्टेन (तिजोरी), ओहरफ्रीज (कान पर लगाने वाला बक्स) की ओर मुड़ गई। इसी सपने के दूसरे भाग से अब इस तथ्य का जोड़ बिठाना संभव हो गया कि इस महिला ने अंग्रेजी शब्द 'बॉक्स' और जर्मन शब्द 'बुशे' के बीच कोई सम्बन्ध होने का अनुमान लगा लिया था और तब यह बात उसके दिमाग में बार-बार आने लगी कि अभद्र बोलचाल में बुशे शब्द स्त्री के जननांगो को इंगित करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है अत: यह संभव है कि शारीरिक अंग रेखांकन की अपनी जानकारी से लगाव के चलते उसे यह भान हुआ हो कि बॉक्स में लेटा बच्चा अपनी माँ के गर्भ में है। व्याख्या की इस अवस्था में पहुँचने पर वह इंकार नहीं कर सकी कि सपने में दिखाई दिया दृश्य उसकी एक इच्छा से साम्यता रखता है। अन्य अनेक युवा महिलाओं की तरह ही वह यह जानकर कतई खुश नहीं थी कि वह गर्भवती हो गई है, और वह मेरे सामने कई बार पश्चाताप के साथ अपनी यह इच्छा प्रकट कर चुकी थी कि उसका बच्चा जन्म से पहले ही मर जाए। अपने पति के साथ किसी गरम बहस के बाद बहुत गुस्से में आकर उसने अपने पेट पर अपनी मुट्ठी से प्रहार तक कर डाले थे

ताकि गर्भस्थ शिशु को नुकसान पहुँचे। सपने में दिखाई दिया मृत शिशु वास्तव में उसकी इच्छा की पूर्ति कर रहा था, परन्तु वह इच्छा तो पन्द्रह वर्ष दूर खिसक गई थी। इसमें आश्चर्य की कोई बात भी नहीं थी कि उसकी इच्छा इतने वर्ष के अन्तराल के बाद पूरी हुई हो क्योंकि इस बीच बहुत से बदलाव आ चुके थे।

अपने प्रियजनों की मृत्यु को दिखाने वाले उपर्युक्त अन्तिम दो सपनों जैसे स्वप्न-वर्ग को हम पुन: 'प्रतीकात्मक स्वप्नों' के अन्तर्गत रखते हैं। तभी मैं नए उदाहरणों द्वारा यह दिखा पाऊँगा कि अप्रिय कथावस्तु वाले होने के बावजूद ये सारे सपने इच्छा-पूर्ति-कर्ता स्वप्न ही माने जाएँगे। सभी सपनों को एक ही लाठी से हाँकने वाले अपने सिद्धान्त से मुझे विरत करने के लिए निम्नलिखित सपना मुझे सुनाया गया जो मेरे एक रोगी–एक बुद्धिमान विधिवेत्ता–ने सुनाया :

"सपने मैं देखता हूँ कि मैं अपने घर के बाहर एक महिला को अपनी बाँहों में उठाए हुए चल रहा हूँ। वहीं एक ऐसी गाड़ी इन्तज़ार में खड़ी है जिसमें गिरफ्तार लोगों को ले जाया जाता है। उसमें से निकला एक आदमी मेरी ओर बढ़ता है, स्वयं को एक पुलिस अधिकारी बताने के लिए वह अपना आई-कार्ड मुझे दिखाता है, वह मुझे गिरफ्तार करने आया है। मैं तैयार होने के लिए उससे थोड़ा समय माँगता हूँ।

अपना सपना सुनाकर वह विधि-वेत्ता मुझसे पूछता है, "क्या आपका अन्दाज़ा है कि गिरफ्तार होना मेरी इच्छा हो सकती है?"

"बिल्कुल नहीं" मैं उसकी बात से सहमति जताते हुए उससे पूछता हूँ–"क्या सपने में आपको पता चला कि आप किस आरोप में गिरफ्तार किए गए?"

"हाँ, पक्के तौर पर शिशु हत्या के लिए।"

"शिशु हत्या? परन्तु आप तो जानते हैं कि यह आरोप तो केवल माँ द्वारा अपने नवजात शिशु की हत्या करने पर लगाया जाता है?"

"हाँ, सही बात है।"

"और किन हालात में आपने यह सपना देखा? उस शाम हुआ क्या था?"

"मैं वह सब आपको नहीं बता सकता। वह एक नाजुक मसला है", उसने कहा।

"परन्तु मुझे यह जानना बहुत आवश्यक है" मैंने ज़ोर देकर कहा, "अन्यथा हमें इस सपने की व्याख्या करने की बात भूल जानी चाहिए।"

इस पर अनमने ढंग से उसने बताना शुरु किया-"वह रात मैंने अपने घर नहीं बिताई थी बल्कि एक ऐसी महिला के घर बिताई थी जो मेरे लिए बहुत कुछ है। तड़के जब हम जागे तो हम दोनों का पुन: समागम हुआ जिसके बाद मैं फिर सो गया और सपने में वह सब देखा जो आपको बताया।"–"वह महिला क्या विवाहित है ?"–"हाँ"–"और आप नहीं चाहते कि वह गर्भवती हो?"–"बिल्कुल

नहीं, इससे तो हमारा भांडा फूट जाएगा"–"फिर तो आप समागम सामान्य तौर पर नहीं कर पाते होंगे?"–"हाँ, स्खलन से पहले ही मैं निकाल लेता हूँ।"–"क्या मैं मानूँ कि रात में कई बार आपने यही एहतियात बरती होगी और यह भी कि बिस्तर छोडने के बाद भी आपको सन्देह रहा होगा कि आप एहतियात में पूरी तरह कामयाब रहे हैं?"–"हो सकता है।"–"तो फिर आपका यह सपना इच्छा-पूर्ति वाला ही है। स्वप्न द्वारा आप सुनिश्चित हो गए हैं कि आपने अपना बच्चा प्रजनन नहीं किया है, या इससे मिलती-जुलती बात है कि आपने एक बच्चे की हत्या कर दी है। और हाँ, आपने क्या कवि लेनुआ की वह हिला देने वाली कविता नहीं पढ़ी है जिसमें वह शिशु की हत्या करना और गर्भ निरोध करना एक समान मानता है?"–"अजीब बात है कि इत्तफ़ाक से आज सुबह ही मैं लेनुआ के बारे में सोच रहा था।"–"यह आपके सपने में दूसरी अनुगूँज है। और अब मैं आपको इस सपने की इच्छा-पूर्ति वाली बात की दूसरी प्रासंगिकता दिखाता हूँ। सपने में आप उस महिला को बाँहों में उठाए हुए अपने घर आते हैं। इस तरह आप उसे अपने घर ले आते हैं जबकि वास्तव में वह रात आपने उसके घर पर बिताई है। यह तथ्य है कि सपने का सार इच्छा-मूर्ति ही है जो कि स्वयं को इस तरह के अप्रिय स्वरूप के छद्म वेश में प्रस्तुत कर रही है और जिसकी एक से अधिक व्याख्याएँ की जा सकती है। एंग्ज़ायटी-न्यूरोसिस के 'कारण-विज्ञान' पर लिखे मेरे निबंध में आप देख सकते हैं कि मैंने जिक्र किया है कि मैथुन-बाधा न्यूरोटिक भय को पैदा करने के जिम्मेदार घटकों में से एक है। इसी के साथ यह कहना सुसंगत होगा कि इस प्रकार की बाधा की बारंबार पुनरावृत्ति से आपका मन-मस्तिष्क एक असहज अवस्था में पड़ जाता है और उसी ने आपके इस सपने का ताना-बाना बुन डाला है। अपने मन-मस्तिष्क की ऐसी असहज अवस्था को अपनी इच्छा पूर्ति को छिपाने के लिए भी आप प्रयुक्त कर सकते हैं। तो भी, शिशु हत्या वाली बात अभी स्पष्ट नहीं हो पाई है। खास तौर से महिलाओं द्वारा होने वाला अपराध आपके साथ कैसे जुड़ गया है?"–"आपके सामने मैं कबूल करता हूँ कि कुछ साल पहले मैं एक ऐसे मामले में आलिप्त रहा हूँ। मैं इस सच्चाई के लिए जिम्मेदार रहा हूँ कि एक लड़की ने मुझसे समागम के बाद गर्भपात कराकर स्वयं को बचाने का प्रयास किया था। गर्भपात वाली उसकी योजना में मुझे कुछ नहीं करना था, फिर भी भेद खुल जाने के डर से मैं बहुत दिनों तक चिन्तित रहा था।"–"मैं समझ गया। आपकी इस बात ने दूसरा कारण भी सामने रख दिया है कि आपका यह मान बैठना कि आपने समागम-भंग किया है–और वह भी फूहड़पन से–इसका आपको मलाल है।"

मुझे आशा है कि ऊपर दिए गए उदाहरण पर्याप्त होंगे–यह विश्वास दिलाने के लिए कि अप्रिय स्वप्न-कथा वाली सपनों की व्याख्या भी इच्छा-पूर्ति-कर्ता स्वप्न के रूप में ही निकलती है और, न ही इस बात को केवल एक इत्तेफ़ाक

माना जाना चाहिए कि विश्लेषण के दौरान स्वप्न-द्रष्टा हमेशा ही वह बातें बता देता है जिसे वह कहना या सोचना भी नहीं चाहता। ऐसे सपनों द्वारा उठाई गई अप्रिय अनुभूति वास्तव में काफ़ी कुछ उस विमुखता और सहज विरोध से मेल खाती है जो आम तौर पर ऐसे मामलों की चर्चा या विवेचन करने से हमें रोके रखती है–इस विमुखता और विरोध के पार हम सब अवश्य ही जा सकते हैं बशर्ते हम ऐसे सपनों की समस्या को जीतने के लिए कृत संकल्प हों। परन्तु, सपनों में बारंबार होने वाली यह अप्रिय अनुभूति इच्छा के अस्तित्व को विसर्जित नहीं कर देती। हर व्यक्ति में ऐसी इच्छाओं का वास रहता है जिन्हें वह दूसरों के सामने कबूल करना नहीं चाहता–और तो और जिन्हें वह अपने आपसे भी कबूल करने में लापरवाह ही रहता है। दूसरी ओर इन सभी सपनों के अप्रिय पहलुओं को हम स्वप्न-विद्रूपण अर्थात् ऊट-पटांग होने से जोड़कर तसल्ली कर लेते हैं और इस निष्कर्ष पर पहुँच कर भी कि ये स्वप्न तो विद्रूपित हो गए हैं अत: इनके द्वारा कोई इच्छा-पूर्ति हुई भी है तो वह इतनी छद्म आवरण में है कि उसे पहचानना मुश्किल है। इस बात के कारण को यदि संक्षेप में कहें तो ऐसे स्वप्न की विषय-वस्तु या उस विषय-वस्तु द्वारा रचित इच्छा के विरुद्ध हममें प्रबल अरुचि और जुगुप्सा रहती है–इसे दमित करने व निरोधित करने की नीयत रहती है। ऐसे में स्वप्न-विद्रूपण सचमुच सैंसरशिप का काम करता है। अपने इस सूत्र को यदि हम इन शब्दों में ढाल दें कि 'स्वप्न एक (दमित व निरोधित) इच्छा-पूर्ति का (छद्मवेश धारी) स्वरूप होता है।' तो इसमें वे तमाम बातें समाहित हो जाती हैं जिन पर अप्रिय सपनों का विश्लेषण प्रकाश डालता है।

परन्तु सपनों के एक विशेष उपवर्ग पर विचार करना अभी शेष रह गया है–वे स्वप्न जिनकी कथावस्तु कष्टपूर्ण होती है और जिन्हें व्यग्रता-स्वप्न कहा जा सकता है; परन्तु व्यग्रतापूर्ण सपनों की समस्या पर मैं यहाँ तेजी से ही चर्चा करूँगा। वे जो कुछ प्रकट करते हैं वह स्वप्न-समस्या का एक नया पहलू होता है। सपने में हम जिस व्यग्रता को महसूस करते हैं उसे स्वप्न-कथा द्वारा ही जाहिर तौर पर समझाया जा सकता है। उस स्वप्न-कथा को यदि विश्लेषण का विषय बना दिया जाए तो हम देख सकते हैं कि स्वप्न में हुई व्यग्रता को स्वप्न-कथा द्वारा उस तरह सही नहीं ठहराया जा सकता जिस तरह कि फोबिया (भय का रोग) की अवस्था में हुई व्यग्रता को फोबिया से जुड़े विचार द्वारा सही ठहरा दिया जाता है। उदाहरण के लिए यह सच है कि हम खिड़की से बाहर गिर सकते हैं, और यह भी कि जब हम खिड़की के पास खड़े हों तो थोड़ी सावधानी बरतनी आवश्यक हो जाती है, परन्तु यह बात साफ़ नहीं है कि इससे जुड़े फोबिया में व्यग्रता इतनी अधिक क्यों हो जाती है, और यह अपने शिकार को इतना अधिक उद्वेलित व संतप्त क्यों कर देती है जितना होने की उसे आवश्यकता नहीं होती। जो बात फोबिया पर लागू होती है, वही बात सपने में होने वाली व्यग्रता पर

भी लागू होती है। दोनों ही मामलों में व्यग्रता उस अवधारणा से आबद्ध रहती है जो चलती तो इसके साथ-साथ है, परन्तु मूल रुप से सचमुच निकली और स्रोत से होती है।

स्वप्न में होने वाली व्यग्रता और न्यूरोटिक व्यग्रता के इस अंतरंग सम्बन्ध के कारण पहली की चर्चा करने पर दूसरी का सन्दर्भ लेना मेरे लिए आवश्यक हो जाता है। वर्ष 1895 में लिखे अपने एक संक्षिप्त निबंध 'एंग्जायटी न्यूरोसिस' में मैं अपनी इस बात पर कायम रहा हूँ कि न्यूरोटिक व्यग्रता का स्रोत व्यक्ति के यौनाचार सम्बन्धी जीवन में होता है और उस कामुकता की ताल पर काम करता है जो अपने प्रेमपात्र की ओर प्रवृत्त तो हुआ हो परन्तु उसे पा न सका हो। इस सिद्धान्त की सटीकता इसकी निरन्तर होती अभिवृद्धि में दिखाई पड़ जाती है। इससे हम इस सिद्धान्त पर पहुँच सकते हैं कि व्यग्रता वाले सपने दरअसल यौनेच्छा सम्बन्धी सपने होते हैं और इनकी कथावस्तु में आने वाली कामेच्छा व्यग्रता में बदल ही जाती है।

अध्याय | 5

सपनों के स्रोत व सामग्री

सपनों का सम्बन्ध जागृत जीवन से होने के बारे में तथा सपनों की सामग्री के स्रोत के बारे में पूर्व-लेखकों की राय यहाँ नहीं दी जा रही है, तथापि सपनों के दौरान की स्मृति के बारे में तीन विशिष्टताओं का उद्धरण यहाँ दिया जा सकता है जिनका उल्लेख तो अक्सर होता रहा है परन्तु जिनकी व्याख्या कभी नहीं की गई।

1. स्पष्ट रूप से, सपना विगत, कुछ दिनों के दौरान मन पर पड़े प्रभावों से जुड़ा होता है। (रॉबर्ट, स्ट्रम्पल, हिल्डेब्रांट तथा वीड-हैलम)
2. यह हमारी जागृत अवस्था के दौरान की स्मृति को नियन्त्रित करने वाले तौर-तरीकों से भिन्न आचरण करते हुए चीज़ों का चयन करता है और जिन-जिन बातों को याद करता है वे आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण प्रकार की न होकर गौण व उपेक्षित प्रकार की होती हैं।
3. प्रयोग करने के लिए हमारे बिल्कुल शुरुआती बचपन की स्मृतियाँ इसके पास रहती हैं और उस काल की बहुत सी उन बातों को वह प्रकाश में ले आता है जो बड़ी मामूली लगती हैं और जो जागृत अवस्था में बहुत पहले भुला दी गई मान ली जाती हैं।

प्रकट स्वप्न-कथा में स्वप्न द्वारा चुनी गई सामग्री के रूप में ये विलक्षणताएँ पूर्व-लेखकों द्वारा बताई गई हैं:

स्वप्न में हाल-फिलहाल की तथा अमहत्त्वपूर्ण स्मृति

मैं यदि स्वप्न-कथा में प्रकट होने वाली बातों के स्रोत के बारे में स्वयं अपने अनुभवों को देखता हूँ तो मुझे एकदम अपनी यह राय बनानी पड़ेगी कि हर स्वप्न में हम विगत दिन के अनुभवों का कुछ न कुछ सन्दर्भ पाते हैं। मैं किसी भी स्वप्न की बात करूँ–वह मेरा अपना हो या किसी और का–इस अनुभव की

पुष्टि हमेशा होली है। यह बात जानकर ही मैं व्याख्या करने का काम विगत दिन के उन अनुभवों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से शुरू करता हूँ जिन्होंने उस स्वप्न को उभारा है। कई मामलों में तो यही करना त्वरित तरीका रहता है। गत अध्याय में इर्मा के इंजेक्शन व अन्य सपनों का बारीकी से विश्लेषण किए जाने पर पिछले दिन का सन्दर्भ इतना सीधा व साफ़ दिखता है कि उसके लिए किसी और स्पष्टीकरण की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती। परन्तु यह दिखाने के लिए कि किस तरह यह सन्दर्भ लगातार परिलक्षित होता है, मैं अपने ही कुछ सपनों का अध्ययन करूँगा। मैं इन सपनों के उतने ही अंश की बात करूँगा जो प्रसंगाधीन स्वप्न-स्रोत की खोज के लिए आवश्यक होगा।

1. मैं एक ऐसे मकान में जाता हूँ जिसमें मैं बड़ी मुश्किल से ही प्रवेश कर पाता हूँ, और इस बीच एक महिला मेरी प्रतीक्षा कर रही होती है।
   स्रोत: उस शाम एक महिला रिश्तेदार के साथ हुई इस सम्बन्ध में बातचीत कि अपनी माँगी हुई राशि के लिए उसे प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, जब तक कि...इत्यादि...
2. मैंने एक पौधे (अनिश्चित) की प्रजाति पर एक लेख लिखा है।
   स्रोत: सुबह मैंने एक पुस्तक विक्रेता की खिड़की में 'साइक्लामेन पौधे की प्रजाति पर एक निबन्ध" नामक पुस्तक देखी थी।
3. मैं सड़क पर जाती दो महिलाओं को देखता हूँ-माता व पुत्री, जिनमें से दूसरी वाली मेरी मरीज है।
   स्रोत: मेरे इलाज में चल रही मेरी एक महिला रोगी ने उस शाम को मुझे बताया था कि उसका इलाज चलाते रहने में उसकी माँ क्या-क्या अड़ंगे लगा रही है।
4. एस. एंड आर नामक पुस्तकों की दुकान पर मैंने एक पत्रिका का चंदा भरा है जो 20 फ्लोरिंस वार्षिक है।
   स्रोत: दिन में मेरी पत्नी ने मुझे याद दिलाया था उसके साप्ताहिक खर्च के 20 फ्लोरिंस अभी मुझ पर बकाया है।
5. सोशियल डैमोक्रेटिल कमेटी की ओर से मुझे एक पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें मुझे सदस्य के रूप में संबोधित किया गया है।
   स्रोत: मुझे लिबरल कमेटी ऑन इलैक्शन तथा ह्यूमेनिटेरियन सोसायटी के अध्यक्ष, दोनों की ओर से पत्र साथ-साथ प्राप्त हुए थे जिनमें से दूसरी का मैं सचमुच सदस्य हूँ।

यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या सपना निश्चित रूप से विगत दिवस की घटनाओं का ही सन्दर्भ लेता है या यह सन्दर्भ निकट अतीत की कुछ लम्बी अवधि तक भी जा सकता है। यह प्रश्न शायद प्राथमिक महत्त्व वाला न हो,

परन्तु मैं इसका निर्णय स्वप्न के ठीक पहले वाले दिन के पक्ष में देने जा रहा हूँ। जब कभी भी मैंने देखा है कि मैंने एक ऐसा मामला पा लिया है जिसमें सपने का स्रोत दो या तीन दिन पहले की स्मृति से जुड़ा है तो ध्यानपूर्वक छानबीन के बाद मुझे यह भी स्पष्ट हो गया है कि दो-तीन पहले वाली स्मृति ठीक सपने वाले दिन दोहराई अवश्य गई थी, अर्थात् स्वप्न के समय और घटना वाले दिन के बीच उस स्मृति का प्रदर्शनीय अंश ठीक पहले दिन पुन: सामने आया था, और साथ ही मैं हाल ही के उस अवसर की ओर इंगित भी कर सका था जो इस पुरानी स्मृति के पुन: प्रस्तुत होने का कारण भी बना था। दूसरी ओर, मैं स्वयं इस बात पर कायल करने में असमर्थ रहा हूँ कि स्वप्न को उभारने वाले दिन की स्मृति और उसके स्वप्न में घटित होने के बीच एक शारीरिक स्तरीय अंतराल बीतता है (एच. एवोबोडा इस प्रकार के अंतराल को अठारह घंटे का बताता है)।

अत: मेरा विश्वास है कि हर सपने के लिए एक स्वप्न उद्दीपक उन अनुभूतियों व अनुभवों के बीच तलाशा जा सकता है जो सोने के समय तक सक्रिय रहा है।

इस समस्या पर इसी तरह ध्यान देने वाले हैवलोक इलिस बताते हैं कि अपने सपनों में वह ऐसे किसी प्रकार के पुन: प्रस्तुतिकरण को नहीं ढूँढ़ पाए हैं–यद्यपि उन्होंने इसके लिए कोशिश की है। वह एक सपने का जिक्र करते हैं जिसमें वह स्वयं को स्पेन में पाते हैं और एक ऐसे स्थान की यात्रा करना चाहते हैं जिसे डरौस, वरौस या जरौस कहा जाता है। जागने पर वह ऐसे किसी नाम को याद नहीं कर पाए और फिर उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं सोचा। कुछ महीने बाद उन्हें जरौस नाम सचमुच याद आ गया–यह एक ऐसा रेलवे स्टेशन था जो सैन सैबेस्टियन और बिलबाओ शहरों के बीच पड़ा था जहाँ से वह सपने के दिन से आठ महीने (250 दिन) पहले गुजरे थे।

इस प्रकार निकट अतीत (सपने वाली रात से ठीक पहले दिन के अतिरिक्त) की स्मृतियाँ स्वप्न-कथा से ऐसे ही जुड़ी रहती हैं जैसे बहुत दूर-दराज की स्मृतियाँ। स्वप्न हमारे जीवन की किसी भी अवधि को अपनी सामग्री के रूप में चुन सकता है, बशर्ते कि सपने वाले दिन के अनुभव व अनुभूति हमारे विचारों की शृंखला को वापस उस अवधि में ले गई हो।

परन्तु, हाल-फिलहाल की स्मृतियों को ही यह प्राथमिकता क्यों? यदि उपर्युक्त किसी सपने के विश्लेषण का कुछ और बारीकी से अध्ययन करें तो हम किसी अनुमान पर पहुँच सकते हैं। मैं निम्नलिखित सपने को चुन रहा हूँ:

वनस्पति विज्ञान सम्बन्धी लेख वाला सपना

मैंने किसी पौधे के बारे में एक निबंध पुस्तक लिखी है। पुस्तक मेरे सामने है। मैं मुड़े हुए रंगीन चित्र की तह खोलता हूँ। उस पौधे का एक सुखाया हुआ नमूना प्रत्येक चित्र के साथ लगाया हुआ है जैसे वह वनस्पति संग्रहालय से लाया गया हो।

विश्लेषण: सुबह मैंने एक पुस्तक विक्रेता की दुकान की खिड़की पर एक पुस्तक देखी थी जिसका शीर्षक था "साइक्लैमन प्रजातियाँ" जो उस पौधे के बारे में लिखे लेखों का संग्रह लग रही थी।

साइक्लैमन मेरी पत्नी का प्रिय पुष्प है। जितनी बार वह मुझसे यह पुष्प अपने लिए लाए जाने की अपेक्षा करती है उतनी बार उसके लिए यह पुष्प न ले जाने का मुझे अफसोस है।

अनुपूरक तथ्य: मैंने सचमुच एक बार एक पौधे पर एक लेख जैसा कुछ लिखा था–यद्यपि वह पौधा कीका था।

'पुस्तक मेरे सामने है' से मुझे याद आता है कि यह बात मेरे एक मित्र के पत्र से जुड़ी है जो मुझे बर्लिन से कल ही मिला था जिसमें उसने लिखा है: "मैं तुम्हारी स्वप्न-पुस्तक के बारे में अकसर सोचता हूँ: मुझे लगता है कि वह मेरे सामने है और मैं उसके पृष्ठ पलट रहा हूँ।"

मुड़े हुए रंगीन पृष्ठ: जब मैं मैडिकल का छात्र था तब निबंधों, लेखों को पढ़ने का मैं दीवाना था। सीमित साधनों के बावजूद मैं अनेक मेडिकल पत्रिकाओं के लिए चंदा भेजा करता था जिनके मुड़े हुए रंगीन पृष्ठ मुझे बड़ी सुखद अनुभूति देते थे। सपने से पहले दिन डॉ. कॉनिस्टीन के साथ बातचीत करते समय मेरे इस शौक के बारे में चर्चा हुई थी।

प्रकट स्वप्न-कथा में मैं केवल अमहत्त्वपूर्ण स्मृति का अस्पष्ट उल्लेख पाता हूँ, और इस तरह यह बात और भी पक्के तौर पर कह पाता हूँ कि सपना किसी अनावश्यक व अनपेक्षित वस्तु या व्यक्ति को अपनी कथा में शामिल करने को प्राथमिकता देता है। इसके विपरीत स्वप्न-व्याख्या में हर बात महत्त्वपूर्ण और सुसंगत तरीके से आन्दोलित होती घटनाओं की ओर पलट जाती है। किसी सपने का अर्थ यदि मैं सही तरीके से लगाऊँ–उस छिपे हुए अर्थ के अनुसार लगाऊँ जो विश्लेषण के दौरान प्रकाश में आया है, तो मैं पाता हूँ कि मैंने अनजाने में ही एक नई और महत्त्वपूर्ण खोज पर प्रकाश डाला है। मैं देखता हूँ कि इस उलझा देने वाले सिद्धान्त में कतई औचित्य नहीं है कि सपने दिनभर के केवल बेकार के बचे-खुचे मामलों से सरोकार रखते हैं। मैं इस दावे का भी विरोध करने के लिए मजबूर हूँ कि जागृत अवस्था की मानसिक दशा सपने में निरन्तर नहीं रहती और इसलिए यह कि सपने हमारी मानसिक ऊर्जा को तुच्छ मामलों में नष्ट कर देते हैं। बल्कि सत्य इसका उलट है: दिन के समय जो बात

हमारा ध्यान अपनी और खींचती है, वही हमारे स्वप्न-विचारों पर भी हावी रहती है और उन्हीं मामलों में हम सपने देखते हैं जिन्होंने दिन के दौरान हमारे विचारों को पोषित किया है, उन्हें हवा दी है।

इस तथ्य की कि 'दिन की अमहत्वपूर्ण स्मृति का तो मैं सपना देखता हूँ जबकि वह स्मृति जिसने पर्याप्त कारण के रहते मुझे उद्दीप्त किया है वह मेरे सपने को उत्पन्न करती है–इस तथ्य की शायद त्वरित व्याख्या यह है यहाँ हम पुन: स्वप्न-विद्रूपण के घटनाक्रम के मुद्दे पर आ गए हैं जिसे हमने सैंसरशिप की भूमिका निबाहने वाली मानसिक शक्ति माना है। अपने उपर्युक्त उदाहरण में हम दो एकदम अलग-अलग स्मृतियों का सामना करते हैं जिनमें प्रथम दृष्टया कुछ भी साम्यता नहीं है, सिवाय इसके कि वे एक ही दिन हुई हैं। पुस्तक मेरा ध्यान सुबह आकृष्ट करती है और शाम को मैं मित्र से बातचीत करता हूँ। विश्लेषण द्वारा इसका उत्तर कुछ इस प्रकार सामने आता है: ऐसी दो स्मृतियों का सम्बन्ध जो कि पहले से न हो बाद में एक स्मृति की विचार-कथा से दूसरी स्मृति की विचार-कथा के साथ मिल जाने से स्थापित हो जाता है। इस प्रकार विचारों के दो वृत्त एक-दूसरे में समा जाते हैं ताकि पहली अनुभूति का एक भाग दूसरी अनुभूति की ओर इशारा कर सके। यदि ये दो वैचारिक सम्बन्ध न बन पाते तो शायद कोई अन्य दो चुन लिए जाते। इस प्रकार के सम्बन्ध स्थापित कर लेना बड़ा आसान होता है जैसे कि मज़ाकिया सवाल और पहेलियाँ जिनमें हमारा अच्छा खासा मनोरंजन हो जाता है। इस मजाक की कोई सीमा नहीं होती। इससे भी आगे की बात यह है कि यदि दिन की किन्हीं दो स्मृतियों के बीच पर्याप्त सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाता है तो स्वप्न कोई दूसरा रास्ता अपना लेता है, दिन की किसी अन्य अमहत्वपूर्ण स्मृतियों में से एक–जो हमारे मन में बहुलता से तो आती है परन्तु भुला दी जाती है–इनमें से कोई एक उस पुस्तक का स्थान ले लेती, शाम को हुई बातचीत से अपना सम्बन्ध जोड़ लेती और फिर यह सब वह स्वप्न में दिखा देती।

हम इस तथ्य को मानते हैं कि स्वप्न-कथा हमारे अमहत्वपूर्ण अनुभवों के अवशेषों को उलट-पलट करके स्वप्न विद्रूपण के रूप में उन्हें प्रकट कर देती है और फलस्वरूप हम याद करते हैं कि हमने इस स्वप्न-विद्रूपण को उस सैंसरशिप के कारनामे के रूप में देखा है जो दो मानसिक घटनाओं के बीच कार्य कर रही है। इस तरह हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि स्वप्न-व्याख्या हमें स्वप्न के वास्तविक तथा मानसिक रूप से महत्त्वपूर्ण स्रोत को हमेशा दिन की उन घटनाओं में ही दिखाएगी जिनकी स्मृति ने अपना लेखा-जोखा किसी अमहत्वपूर्ण स्मृति में स्थानान्तरित कर दिया है। यह अवधारणा रॉबर्ट के उस सिद्धान्त के बिल्कुल विपरीत है जिसका अब हमारे लिए कोई मूल्य महत्त्व रह भी नहीं गया है। वह बात जो रॉबर्ट स्पष्ट करने का प्रयास कर रहे थे उसका

अनुमान एक गलतफहमी पर आधारित है और स्वप्न के प्रकट अर्थ के स्थान पर उसका वास्तविक अर्थ रख पाने में विफलता पर भी। रॉबर्ट के सिद्धान्त पर की जाने वाली एक और आपत्ति इस प्रकार है: हमारे सपने का कार्य व प्रयोजन यदि हमारी स्मृति से सचमुच पीछा छुड़ाना होता, एक विशेष मानसिक क्रिया द्वारा दिन की स्मृतियों के कचरे से मुक्त होना होता, तो हमारी नींद उस दिन के हमारे तमाम विचारों की कचहरी लगाए रखती, उसे बड़ी मशक्कत करनी पड़ती और वह बड़ी कठिनाई में बीतती क्योंकि दिन उन तमाम छोटी-बड़ी बातों की संख्या–जिन्हें हम अपनी स्मृति में रखना ही नहीं चाहते–उनकी संख्या तो इतनी बड़ी होती है कि हम उन्हें गिन भी नहीं सकते। उन सब के निपटान के लिए पूरी रात भी छोटी पड़ती है। बल्कि, इस बात की कहीं अधिक सम्भावना है कि छोटी-मोटी अमहत्वपूर्ण बातों को भुला देना हमारी मानसिक शक्ति के स्तर पर बिना किसी सक्रिय क्रिया के होता रहता है।

फिर भी, रॉबर्ट के सिद्धान्त पर कुछ और विचार किए बिना उसे अलविदा कह देना उचित नहीं लगता। हमने अभी इस बात की व्याख्या नहीं की है कि दिन की–या पिछले दिन की भी–अमहत्त्वपूर्ण स्मृतियों में से कोई एक हमेशा ही स्वप्न-कथा रचने में अपना योगदान करती है। हमारी स्मृति और अवचेतन मन में बनते स्वप्न के स्रोत के बीच के सम्बन्ध शुरू से ही नहीं बन जाते, वे तो बाद में बनते हैं–जब स्वप्न सचमुच चल रहा होता है–मानों वे वांछित विस्थापन के उद्देश्य को पूरा कर रहे हों। अत: हाल-फिलहाल ही की परन्तु अमहत्वपूर्ण स्मृति की दिशा में सम्बन्धों का दरवाज़ा खोलने के लिए किसी का होना तो आवश्यक है ही। इस स्मृति में कुछ तो ऐसी खूबी होनी चाहिए जो इसे एक विशेष उपयुक्तता प्रदान करे, अन्यथा तो स्वप्न-विचारों के लिए अपनी ही परिधि में स्थित किसी भी बात को प्रमुखता दे देना बड़ा आसान काम है।

अनुभव हमें इस व्याख्या की ओर ले जाते हैं: दिन के दौरान हम यदि किन्हीं ऐसे दो या दो से अधिक अनुभवों से गुज़रते हैं जो किसी स्वप्न को पैदा करने में सक्षम हैं तो वह सपना इन दोनों का घालमेल करके ही उसे एक सपने के रूप में दिखा देता है, वह इन दोनों को एक ही सपने की तरह दिखाने की अनिवार्यता को पूरा करता है। इस बारे में हुए अनेक अनुभवों के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि सपना एक बाध्यता में कार्य करता है जिसके अन्तर्गत इसे इसके समक्ष प्रस्तुत सारी सामग्री को एक ही कथा के रूप में रखने के लिए बाध्य किया जाता है।

अब मैं इस प्रश्न पर चर्चा करूँगा कि हमारा विश्लेषण हमें सपने के जिस उद्दीपन स्रोत की ओर ले जाता है, क्या वह हाल-फिलहाल की ही घटित कोई महत्त्वपूर्ण घटना होती है या वह कोई काल्पनिक अनुभव होता है, अर्थात् सपना क्या मनोवैज्ञानिक रूप से किसी महत्त्वपूर्ण घटना का अनुस्मरण मात्र होता है या

विचारों का कारवाँ होता है और वही स्वप्न-उद्दीपक की भूमिका निबाहता प्रतीत होता है? अनेकानेक विश्लेषणों से निकाला गया इसका उत्तर यह है: स्वप्न को उद्दीप्त करने वाला कारक एक काल्पनिक मामला हो सकता है जो हाल-फिलहाल में रचा गया है, मानो वह उसी दिन की गतिविधि रहा हो।'

और अब हम शायद वहाँ पहुँच गए हैं जहाँ उन विभिन्न स्थितियों को संक्षिप्त प्रारूप में ढाला जा सकता है जिनके अन्तर्गत स्वप्न-स्रोत परिचालित होता है।

सपनों के स्रोत निम्नलिखित हो सकते हैं:

क. हाल-फिलहाल की तथा मनोवैज्ञानिक रूप से महत्त्वपूर्ण कोई एक घटना जो स्वप्न में सीधे-सीधे उतर आती है (इर्मा के इंजेक्शन वाला स्वप्न)।

ख. हाल-फिलहाल की तथा मनोवैज्ञानिक रूप से महत्त्वपूर्ण अनेक घटनाएँ जिन्हें स्वप्न द्वारा इकट्ठा करके एक ही घटनाक्रम के रूप में दिखा दिया जाता है।

ग. हाल-फिलहाल की तथा मनोवैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण कोई एक या अनेक घटनाएँ जो स्वप्न-कथा में किसी समकालीन परन्तु अमहत्वपूर्ण घटना की ओर संकेत करती हैं (वनस्पति विज्ञानीय पुस्तक वाला स्वप्न)।

घ. काल्पनिक रूप से कोई महत्त्वपूर्ण अनुभव (स्मृति या विचार श्रृंखला) जो किसी हाल-फिलहाल की परन्तु अमहत्वपूर्ण घटना की ओर संकेत करता हुआ निरन्तर आता रहता है (विश्लेषण के दौरान मेरे रोगियों के अधिकांश सपने इसी प्रकार के पाए गए है)।

यह बात साफ है कि स्वप्न-विश्लेषण में यह शर्त पूरी होती है कि स्वप्न-कथा का कोई न कोई घटक स्वप्न वाले दिन की हाल-फिलहाल की स्मृति को दोहराता है। जो घटक स्वप्न में प्रकट होने के लिए नियत हो जाता है, वह या तो स्वप्न-उद्दीपक के समान ही उसी विचार-वृत्त से सम्बन्ध रखता है या वह किसी ऐसी अमहत्वपूर्ण स्मृति के पहलू से पैदा हुआ होता है जो कि स्वप्न-उद्दीपक के परीक्षेत्र के सम्बन्ध के साथ कमोबेश जुड़ी होती है। इन स्थितियों का प्रकट नानात्व केवल इस विकल्प का परिणाम होता है कि कोई उलट-फेर किया गया है या नहीं। और, यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह विकल्प हमें स्वप्न के उस विरोधाभास को तत्काल व्याख्या कर देने योग्य उसी तरह बना देता है जिस तरह स्वप्न की चिकित्सकीय पद्धति हमारी मस्तिष्क कोशिकाओं की आंशिक से लेकर पूर्ण-जागरण की अवस्थाओं की श्रृंखला का विवरण प्रस्तुत कर देती है।

स्रोत की इन शृंखलाओं पर विचार करते समय हमारे सामने यह बात भी आती है कि वे तत्व जो मनोवैज्ञानिक रूप से तो महत्त्वपूर्ण हैं परन्तु हाल-फिलहाल के नहीं हैं (जैसे विचारों का कारवाँ, कोई पुरानी स्मृति) उन्हें स्वप्न-रचना के प्रयोजन से किसी हाल-फिलहाल के परन्तु मनोवैज्ञानिक रूप से अमहत्वपूर्ण कारकों से बदल दिया जाता है, बशर्ते निम्नलिखित दो शर्तें पूरी होती हों:

1. स्वप्न-कथा हाल-फिलहाल में अनुभव की गई बातों से जुड़ी हों।
2. स्वप्न-उद्दीपक फिर भी कोई मनोवैज्ञानिक रूप से महत्त्वपूर्ण घटना रही हो।

एक इकलौते मामले (क) में वे दोनों शर्तें एक ही स्मृति से पूरी हो जाती हैं। अब हम यदि यह विचार करें कि हाल-फिलहाल की सीमा में रहने तक ही स्वप्न के लिए प्रयुक्त होने वाली ये अमहत्वपूर्ण स्मृतियाँ एक या दो दिन पुरानी होते ही स्वप्न में आने लायक नहीं रहतीं तो हमें यह मान लेना चाहिए कि किसी स्मृति की ताज़गी ही उसे स्वप्न-रचना के लिए एक निश्चित मनोवैज्ञानिक महत्त्व देती है।

प्रसंगवश, यहाँ हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर जाता है कि रात में–और चेतन मन की बिना जानकारी के ही–हमारी स्मृति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया जा सकता है।

यहाँ पहुँचने पर एक आपत्ति उठती है जो हमारे उस निष्कर्ष को चुनौती देती है जिस पर हम अभी पहुँचे हैं। यदि अमहत्वपूर्ण स्मृतियाँ केवल तभी तक स्वप्न में प्रवेश कर पाती हैं जब तक वे हाल-फिलहाल वाली रहती हैं तो यह कैसे हो सकता है कि स्वप्न-कथा में हम उन बातों को भी देखते हैं जो हमारे जीवन के शुरुआती समय की हैं, और जब वे हाल-फिलहाल वाली थीं भी तब भी उनका कोई मनोवैज्ञानिक महत्त्व नहीं था और इसीलिए उन्हें तो बहुत पहले ही भुला दिया जाना चाहिए था–अर्थात् स्वप्न में दिखी ऐसी बातें न तो ताज़ा थीं और न ही मनोवैज्ञानिक रूप से महत्त्वपूर्ण?

इस आपत्ति का पूरी तरह निराकरण किया जा सकता है यदि हम विक्षिप्त लोगों के मनो-विश्लेषण के परिणामों का सहारा लें। निराकरण इस प्रकार है: सोचते समय हो या सपना देखते समय, मनोवैज्ञानिक महत्त्व की सामग्री को अमहत्त्वपूर्ण सामग्री द्वारा बदले जाने की–उसे हटा देने तथा/अथवा पुनर्व्यवस्थित करने की प्रक्रिया–जीवन की शुरुआती अवधि में पहले ही पूरी हो चुकी होती है, और तभी से हमारी स्मृति में स्थाई स्थान ले चुकी होती हैं। वे बातें जो उस काल में अर्थात् शुरुआती समय में अमहत्वपूर्ण थीं अब वैसी नहीं रह गई हैं क्योंकि उन्होंने मनोवैज्ञानिक रूप से महत्त्वपूर्ण सामग्री वाला स्थान ले

लिया है। जो सचमुच अमहत्त्वपूर्ण ही रही होती हैं वे स्वप्न में कभी पुन: प्रकट नहीं हो सकतीं।

उपर्युक्त प्रतिपादन से पाठक निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मेरा दावा है कि अमहत्त्वपूर्ण स्वप्न-उद्दीपक जैसी कोई चीज़ नहीं होती और इसीलिए कोई सपना सीधा-सरल नहीं होता। मैं इस बात में पूरी तरह बिना किसी पक्षपात के विश्वास करता हूँ–बच्चों के सपनों को अपवाद स्वरूप छोड़कर। इन अपवादों के अतिरिक्त हम जो भी सपना देखते हैं वह या तो सीधा-सीधा मनोवैज्ञानिक महत्त्व वाला सपना होता है या विद्रूपित सपना, और उसका पूरा व सही-सही विश्लेषण किए जाने पर वह मनोवैज्ञानिक महत्त्व का सिद्ध होता है। कोई भी स्वप्न स्वयं को किसी साधारण या नगण्य बात से नहीं जोड़ता, हम मामूली बातों को अपनी नींद खराब करने नहीं देते।

जाहिर तौर पर सीधा-सादा लगने वाला सपना विश्लेषण किए जाने पर इसका उलटा सिद्ध होता है। यहाँ तक कहा जा सकता है कि हमारे सभी सपनों में पाशविकता की छाप होती है।

शैशवकालीन अनुभव: स्वप्न के स्रोत

स्वप्न-कथा की तीसरी विलक्षणता के रूप में और इस विषय पर रॉबर्ट के अतिरिक्त अन्य सभी लेखकों से सहमत होते हुए हम इस सत्य को रख रहे हैं कि हमारे बचपन के वे अनुभव स्वप्न में प्रकट हो सकते हैं जिनका हमारी जागृत-अवस्था से कुछ लेना-देना भी दिख न रहा हो। यह तय करना तो मुश्किल है कि कितनी कम बार या कितनी अधिक बार ऐसा होता है क्योंकि जागने के बाद स्वप्न से संबद्ध मामलों का स्रोत पहचाना नहीं जाता। इस बात के प्रमाण को कि हम बचपन क़ी स्मृतियों से जुड़े स्वप्न देखते हैं, विषय निष्ठता द्वारा दिखाया जा सकता है क्योंकि ऐसे मामले विरले ही निकलते हैं जिनमें हालात इस प्रमाण के पक्ष में नहीं जाते।

कुछ सपने तो बचपन की स्मृति से ही जुड़े रहते हैं। वे बचपन में भी दिखते हैं और फिर आगे भी बार-बार दिखते रहते हैं। अपने जीवन के तीसादि के दशक में चल रहे एक चिकित्सक ने मुझे बताया कि एक पीला शेर उसके सपनों में अकसर आता है और वह भी उसके बचपन से आज तक। इस शेर के बारे में उसने संक्षिप्त जानकारी दी। एक दिन इस शेर का रहस्य अपने आप खुल गया– भूले बिसरे एक चीनी पशु के रूप में। उसकी माँ ने उसे बताया कि शुरुआती बचपन में ऐसे–शेर का खिलौना उसका सबसे प्रिय खिलौना रहा था, परन्तु यह एक ऐसा सच था जिसे वह चिकित्सक स्वयं भूल चुका था।

इस प्रकार के सपनों की पूरी शृंखला प्रस्तुत की जा सकती है जिनके विश्लेषण से यह साफ़ हो जाता है कि जिस इच्छा ने स्वप्न को जन्म दिया है, जिसकी पूर्ति को उस स्वप्न ने सिद्ध कर दिया है, वह स्वयं कभी हमारे बचपन में पैदा हुई थी। और, इस तरह यह देखकर हम अचम्भित रह जाते हैं कि हमारा बाल-रूप हमारे सपनों में अभी भी उसी दम-खम के साथ जी रहा है। मैं समझता हूँ कि मेरे बचपन के प्रभाव मेरी सारी अवस्थाओं से गहराई तक जुड़े हैं। पढ़ना आ जाने के बाद मेरे हाथ लगी पहली पुस्तकों में से एक थी–'कंसुलेट एंड एम्पायर' और उसके इम्पीरियल मार्शलों के नाम अभी भी मेरे मन में बसे हैं।

सपनों के विश्लेषण में हम जितना गहरा उतरते हैं, हम स्वयं को उतना ही बचकाने रास्तों पर चलता पाते हैं, और यह भी पाते हैं कि वे ही हमारे सपनों की अप्रकट कथा के स्रोत की भूमिका निबाहते हैं।

हमने देखा है कि सपने स्मृतियों को उनमें कोई परिवर्तन किए बिना व उन्हें सक्षिप्त किए बिना शायद ही कभी प्रस्तुत करते हों कि वह पूरी तरह से प्रकट-कथा कही जा सकती हो। इस तरह के अनेक विश्वसनीय सपनों का संकलन किया गया है जो ऐसी पुनः प्रस्तुतीकरण वाली बात को दोहराते हैं। इनमें से एक स्वप्न का मैं यहाँ उल्लेख करने जा रहा हूँ जो बचपन के दृश्यों को पुनः प्रस्तुत करने का एक अच्छा उदाहरण है इसमें मेरे एक रोगी के मामले में एक सपने को एक यौन-सम्बन्धी घटना को थोड़ा-बहुत तोड़-मरोड़ कर पुनः प्रस्तुत किया है परन्तु जिसे ठीक उसी रूप में पहचान भी लिया गया है। जागृत अवस्था में उस घटना की स्मृति पूरी तरह लुप्त तो नहीं हुई थी परन्तु काफी हद तक उस पर वक्त की धूल अवश्य चढ़ गई थी परन्तु विश्लेषण से वह पुनःजीवित हो गई थी। स्वप्नद्रष्टा जब बारह वर्ष की आयु में था तब अपने एक बीमार पड़े सहपाठी को देखने उसके घर गया था। शायद करवट लिए जाने के कारण उस बीमार सहपाठी के शरीर का कुछ हिस्सा उधड़ गया, जिससे उसके गुप्तांग इसे दिख गए, इससे रहा नहीं गया और फिर इसने अपने अंग वस्त्र भी हटा दिए और उसका अंग पकड़ लिया। इस पर उस लड़के ने इसे अचरज और नाराज़गी से घूरा तो यह सकपका गया और वहाँ से खिसक आया। तेईस वर्ष बाद सपने ने इस दृश्य को उन्हीं तमाम भावनाओं के साथ दोहराया, बदलाव बस इतना किया गया था कि स्वप्न द्रष्टा ने इसमें कर्ता की भूमिका न निबाह कर ऐसी भूमिका निबाही है जिसके साथ यह हरकत की गई है और इस सहपाठी के स्थान पर वर्तमान काल के एक साथी को लेटा दिखाया गया।

सिद्धान्त के अनुसार किसी प्रकट स्वप्न-कथा में दिखाया गया बचपन सम्बन्धी कोई दृश्य केवल माया-रचना द्वारा दिखाया जाता है जिसे केवल विश्लेषण द्वारा ही स्वप्न से अलग करके देखा जा सकता है। इस प्रकार के उदाहरणों का उल्लेख बहुत कायल करने लायक नहीं हो सकता। इस बात की

कोई गारंटी नहीं दी जा सकती कि ये वाकई बचपन के अनुभव हैं। यदि ये हमारे जीवन के शुरुआती समय के होते हैं तो स्मृति द्वारा इन्हें पहचाना नहीं जा सकता। यह निष्कर्ष निकाल लेना कि इस प्रकार के बचकाने अनुभव सपनों में हो जाते हैं, उन अनेक कारकों द्वारा विश्लेषणात्मक कार्य में सही ठहरा दिए जाते हैं जो अपने कुल परिणाम में विश्वसनीय प्रतीत होते हैं। परन्तु, जब स्वप्न–विश्लेषण के उद्देश्य से इस प्रकार के बचकाने अनुभव अपने सन्दर्भ में से उभरते हैं, तो हो सकता है कि वे बहुत जँचने वाले न रह जाएँ। इस सम्बन्ध में मेरे पास अनेक उदाहरण हैं जिनमें से एक यहाँ प्रस्तुत है। एक बड़ी उमर की महिला द्वारा देखे गए इस स्वप्न में साफ़ दिखता है कि बचपन की ढेरों बचकानी स्मृतियाँ किस तरह तुरत-फुरत में किसी कल्पना को गढ़ लेती हैं:

"वह जल्दी-जल्दी कुछ खरीदारी करने जाती है। 'गार्डन' (वियना में एक गली का नाम) में वह धीरे-धीरे घुटनों के बल बैठ जाती है जैसे उसके घुटने जवाब दे गए हों, उसके चारों ओर बहुत से लोग इकट्ठा हो जाते हैं–विशेषकर टैक्सी ड्राइवर, परन्तु उसकी सहायता कोई नहीं कर रहा है। वह उठने की बहुत कोशिश कर रही है, परन्तु उठ नहीं पा रही है, आखिर वह अवश्य ही सफल हो गई होगी क्योंकि उसे एक टैक्सी में डाल दिया गया जिसने उसे घर पहुँचा दिया। उसके घर पहुँचने के बाद एक बड़ी और भरी हुई टोकरी (बाजार की टोकरी जैसी) खिड़की में से उसके कमरे में फेंक दी गई।"

यह एक ऐसी महिला है जिसे सपनों में हमेशा परेशान किया जाता है जैसा कि उसे बचपन में किया जाता रहा था। सपने की पहली स्थिति साफ तौर पर गिरे हुए घोड़े के दृश्य से ली गई है, 'घुटनों के बल बैठ जाना' घुड़-दौड़ की ओर संकेत करता है। अपनी युवावस्था में वह एक घुड़सवार रही थी। गिरने की बात उसके बचपन के एक पहले संस्मरण से जुड़ी है जिसमें हॉल के सत्रह वर्षीय बेटे को सड़क पर मिरगी का दौरा पड़ जाने के कारण टैक्सी में डाल कर ले जाया गया था। इस घटना को उसने केवल सुना था फिर भी मिरगी के दौरे की धारणा ने और इससे गिरने के विचार ने उसके मन पर गहरा प्रभाव डाला था और जो बाद में स्वयं उसके हिस्टीरिया ग्रस्त हो जाने का कारण बना था। जब कोई महिला गिर जाने का सपना देखती है तो यह हमेशा ही अधिकांशत: सैक्स से जुड़ा होता है, वह एक 'निम्नस्थ (नीचे पड़ी) महिला' हो जाती है। और, इस स्वप्न के मामले में तो इस व्याख्या पर कोई सन्देह किया ही नहीं जा सकता क्योंकि वह 'गार्डन' में गिरी थी–वियना की यह गली वैश्याओं के जमावड़े के लिए जानी जाती है। 'बाज़ार वाली टोकरी' उसकी इस कल्पना से जुड़ी है कि वह शहर से दूर रहती है और बाज़ार से सामान खरीदने आई है। साथ ही 'बाजार वाली टोकरी' नौकर का भी प्रतीक है। यह उसके बचपन की उस रसोई बनाने वाली नौकरानी वाली याद से जुड़ी है जिसे चोरी के आरोप में निकाल दिया

गया था और जिसने 'घुटनों के बल बैठकर' दया की भीख माँगी थी। यह स्वप्न-द्रष्टा महिला तब बारह वर्ष की थी। इसके साथ-साथ उस नौकरानी की याद उभर कर सामने आती है जिसे इसलिए निकाल दिया गया था क्योंकि उसके सम्बन्ध इस महिला के परिवार के कोचवान से हो गए थे। इस घटना ने टैक्सी ड्राइवरों वाली कल्पना पैदा कर दी थी। लेकिन टोकरी को खिड़की में से अन्दर फेंकने वाली बात अभी खुलनी बाकी है। यह बात उस रिवाज़ से जुड़ी है जिसमें जर्मनी के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रेमी अपनी प्रेमिका का दिल जीतने के लिए उसके शयन-कक्ष की खिड़की से प्रेम की याचना करते हैं। इसके साथ ही एक धुँधली सी याद और उभरती है जो उसके दस वर्ष की उम्र से जुड़ी है जब एक आया का सामान खिड़की से इस आरोप के साथ बाहर फेंक दिया गया था कि वह घर के ही एक नौकर के साथ आपत्तिजनक स्थिति में देखी गई थी, फर्क इतना है कि सपने में सामान खिड़की से बाहर फेंके जाने के बजाए अन्दर फेंका गया है।

मेरे पास अनेक रोगियों के ऐसे सपनों का पिटारा है जिनका विश्लेषण बचपन की स्मृतियों की ओर ले जाने वाला होता है। अक्सर ये स्मृतियाँ पहले तीन वर्षों की होती हैं जो या तो बिल्कुल याद नहीं रहतीं या रहती भी हैं तो बड़े धुँधले व अस्पष्ट रूप में। परन्तु, इनके आधार पर निष्कर्ष निकालना और फिर उन निष्कर्षों को सामान्य सपनों पर लागू करना एक विवादास्पद प्रक्रिया बन जाती है क्योंकि सामान्य सपने या तो विक्षिप्त लोगों के होते हैं या हिस्टीरिया ग्रस्त लोगों के। अतः इनके सपने में अहम भूमिका निबाहने वाले बचकाने दृश्य सपना देखने वाले के स्वभाव से प्रभावग्रस्त हो सकते हैं न कि स्वप्न के सामान्य स्वभाव से। मेरे अपने सपने–जो कि निश्चित रूप से किसी रोग के लक्षण से ग्रस्त नहीं हैं–उनकी व्याख्या में ऐसा अकसर होता है कि अप्रकट स्वप्न-कथा में मैं स्वयं को अप्रत्याशित रूप से बचपन के किसी दृश्य के समक्ष खड़ा पाता हूँ और यह भी कि मेरे सपनों की पूरी शृंखला अचानक ही बचपन के किसी एक अनुभव की ओर मुड़कर आगे बढ़ने लगती है। मैं इसका उदाहरण दे चुका हूँ फिर भी अपने बचपन के भुला दिए अनुभवों में से उपजे अनेक सपनों में से एक स्वप्न मैं यहाँ दे रहा हूँ।

"एक यात्रा से लौटकर मैं थका-मांदा और भूखा ही सो जाता हूँ। तब जीवन की प्रथम आवश्यकता अर्थात् भूख ने नींद में ही अपनी माँग उठानी शुरु कर दी और मैंने यह सपना देखा: कुछ पुडिंग लेने के लिए मैं रसोई में जाता हूँ। वहाँ तीन महिलाएँ खड़ी हैं जिनमें से एक अपने हाथों से कुछ लोई जैसी चीज़ बना रही है, वह मुझसे कहती हैं कि उसका काम पूरा हो जाने तक मुझे प्रतीक्षा करनी होगी। मैं अधीर हो हो जाता हूँ और अपमानित महसूस करता हुआ वहाँ से चला आता हूँ। फिर मैं एक ओवरकोट पहनने का प्रयास करता हूँ परन्तु पहले जिस ओवरकोट को पहनकर देखता हूँ वह बहुत लम्बा बैठता है। अतः मैं उसे

उतार देता हूँ परन्तु मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि वह ओवरकोट रोएंदार चमड़े का बना हुआ है। दूसरे वाले ओवरकोट में टरकिश डिज़ाइन से सिली हुई लम्बी पट्टियाँ हैं। तभी लम्बे चेहरे और छोटी परन्तु नुकीली दाढ़ी वाला एक अजनबी वहाँ आता है और मुझे इस ओवरकोट को पहनने से रोकता है तो मैं उसे दिखाता हूँ कि उस ओवरकोट में सारे में टरकिश कशीदाकारी की हुई है। इस पर वह पूछता है, "इस कशीदाकारी से तुम्हें क्या लेना-देना?" परन्तु हम जल्दी ही मित्रवत् हो जाते हैं।"

इस स्वप्न के विश्लेषण में मैंने पाया कि मुझे अपना वह पहला उपन्यास याद आ गया जो मैंने तब पढ़ा था–बल्कि मैंने उसे आखिर से पढ़ना शुरु किया था–जब मैं तेरह वर्ष का था। मुझे उस उपन्यास का नाम या उसके लेखक का नाम कभी याद नहीं रहा, परन्तु उस उपन्यास का अंत मेरी स्मृति में जीवन्त रहा। उस उपन्यास का नायक पागल हो जाता है और तीन महिलाओं का नाम लगातार पुकारता रहता है जो उसके जीवन में सबसे बड़ा सुख और सब से बड़ा दुख लेकर आई थीं। इनमें से एक का नाम था पेलागी। स्वप्न में ये तीन महिलाएँ 'पेरसी' के रुप में उभरी हैं अर्थात् आदमी का भाग्य बनाने वाली। उनमें से एक को मैं जानता हूँ–वह गृहस्वामिनी है, माँ है जो बच्चों का पोषण करती है। माँ के वक्ष में प्रेम और भूख का संगम रहता है। उन 'पेरसी' में से एक अपने हाथों में लोई जैसी कोई चीज़ बना रही है–यह भाग्य का एक विचित्र कार्य है और इसे व्याख्या की आवश्यकता है। इस व्याख्या में मेरे बचपन की आरम्भिक स्मृतियाँ शामिल हो जाती हैं। जब मैं छः वर्ष का था और माँ से जीवन के पहले पाठ सीख रहा था तव मुझे इस बात पर विश्वास करने के लिए कहा गया कि हम मिट्टी से बने हैं और मिट्टी में ही मिल जाते हैं परन्तु यह बात मेरे गले नहीं उतरती थी और मैंने इस पर अपनी शंका भी जताई थी। तब मेरी माँ ने अपनी हथेलियों को कुछ इस तरह रगड़ा था जैसे वह कोई लोई बना रहीं हों–उनके बीच बस गुंथा हुआ आटा नहीं था–और फिर इस रगड़ने से हथेली से उतरी हुईं मैल-मिट्टी की काली-काली बत्तियाँ सी भी दिखाईं–यह सिद्ध करने के लिए कि हम मिट्टी से ही बने हैं। अपनी ही आँखों के सामने हुए इस प्रदर्शन पर मैं सचमुच चकित हुआ था और वह धारणा मेरे मन में उतर गई थी। इस प्रकार वह महिला जिसके पास मैं रसोई में गया था–जैसे कि मैं तब अपनी माँ के पास जाया करता था जब मुझे भूख लगी होती थी–उसने मुझे तब तक इन्तजार करने के लिए कहा था जब तक भोजन तैयार नहीं हो जाता, वह सचमुच 'परेसी' ही थी, परन्तु वह लोई? यह बात मेरे इतिहास के अध्यापक के नाम के साथ जुड़ी है (जर्मन में उनके नाम के उच्चारण का अर्थ होता है–लोई)। इस प्रकार इन तमाम बातों की शृंखला उस पहले पढ़े उपन्यास से जुड़ जाती है–लोई और ओवरकोट जो कि सैक्स सम्बन्धी उपकरणों का स्पष्ट सन्दर्भ है (ओवरकोट–कंडोम) यह सच है कि

इस तरह जोड़ना ज़बरदस्ती का सौदा है, औचित्य पर खरा नहीं उतरता है, परन्तु ऐसा होना सपनों में ही सम्भव है, जागृत अवस्था में नहीं–(और अर्थ हम जागृत अवस्था में रहते निकालते हैं।)

इस प्रकार मैं उलझी हुई विचार श्रृंखला को काफ़ी आगे तक ला सका और उस टुकड़े से पर्दा हटा सका जो विश्लेषण में नहीं मिल पा रहा था। परन्तु, मुझे इस दिशा में सम्भलकर आगे बढ़ना चाहिए क्योंकि इसमें व्यक्तिगत निमग्नता के अधिक हो जाने का खतरा है। मैं इसका केवल एक सिरा पकडूँगा जो हमें इन स्वप्न-विचारों में से उस एक तक ले जाएगा जो इस पूरे गड़बड़झाले की तली में बैठा हुआ है। लम्बे चेहरे और नुकीली दाढ़ी वाला वह अजनबी जो मुझे ओवरकोट पहनने से मना करता है, उस दुकानदार से मिलता-जुलता है जिससे मेरी पत्नी बहुत सारे टरकिश वस्त्र खरीद कर लाई थी। उसका नाम पोयोविक है–एक ऐसा नाम जिसके कई अर्थ निकलते हैं, एक ऐसा अर्थ भी कि उसे भी अपना नाम बताने में शर्म आती है। हालाँकि इसमें कोई शक नहीं है कि नामों से इस प्रकार खेलना बच्चों का काम है।

अब मैं सपनों के केवल उस अंश की बात कर रहा हूँ जो मेरे बचपन के उन दृश्यों की ओर ले जाते हैं जिनके कारण मैंने उन्हें चुना है। पाठक यह मान सकते हैं कि यौन-सम्बन्धी विचारों को दबाना आवश्यक होता है, भले ही वे इस बात से सन्तुष्ट न हों। ऐसी "अनेक बातें होती हैं जिन्हें हम अपने लिए तो गोपनीय नहीं मानते परन्तु उन्हें दूसरों को बताने में हम उन्हें गोपनीय रखते हैं, परन्तु यहाँ मेरा सरोकार उस कारण से नहीं है जो मुझे समाधान को छिपाने के लिए प्रेरित करता है बल्कि उस भीतरी सैंसर के हेतु से है जो सपनों की वास्तविक कथा को मुझसे भी छिपाता है।

स्वप्न विश्लेषण में हुए अनुभव ने मेरा ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट किया है कि जिन सपनों का विश्लेषण प्रथम दृष्ट्या पूरा हो गया प्रतीत होता है–क्योंकि उनमें स्वप्न-स्रोत तथा इच्छा-प्रेरणा आसानी से देखे जा सकते हैं और बचपन की ओर ले जाने वाली विचार श्रृंखला की महत्त्वपूर्ण कड़ी भी दिखाई देती है–वहाँ मुझे स्वयं से पूछना पड़ता है कि क्या यही विशिष्टता स्वप्न देखने के लिए आवश्यक स्थिति को पैदा नहीं करती? यदि इस धारणा को सभी सपनों पर लागू कर दिया जाए तो मैं कह सकता हूँ कि हर सपना हाल-फिलहाल के अनुभवों के साथ तो अपनी प्रकट कथा के माध्यम से जुड़ा होता है जबकि अपनी अप्रकट कथा के माध्यम से वह बहुत पीछे के अनुभवों से जुड़ा होता है, और हिस्टीरिया वाले विश्लेषणों में तो मैं यह दिखा सकता हूँ कि दूर अतीत के अनुभव ही सही मायनों में वर्तमान तक फैलकर हाल-फिलहाल के बन जाते हैं परन्तु इस धारणा को सिद्ध करने में मैं अभी भी कठिनाई महसूस करता हूँ।

मैं इस बात पर पुन: बल दूँगा कि पिछले अनेक स्वप्न-विश्लेषण से यह प्रकट होता है कि कोई भी स्वप्न हो अधिकतर वह अनेकार्थी होता है उनसे न केवल अनेक इच्छाओं की मिली-जुली पूर्ति हो जाती है बल्कि उनका एक अर्थ किसी एक इच्छापूर्ति को किसी अन्य अर्थ या इच्छापूर्ति से ढाँप भी देता है–जब तक कि हम सबसे निचली परत तक पहुँच कर अपने बचपन के शुरुआती दिनों की किसी इच्छा से रु-ब-रु नहीं हो लेते। और ऐसा होना 'प्राय:' नहीं बल्कि 'हमेशा' होता है–यह कहना अधिक सही रहेगा।

स्वप्न के शारीरिक स्रोत

हम यदि किसी सभ्य-सामान्य व्यक्ति में स्वप्न-समस्या के प्रति रुचि जगाने का प्रयास करें और इसी प्रयोजन को लक्ष्य में रखते हुए उससे पूछें कि वह अपने स्वप्न का स्रोत किस चीज़ को मानता है तो हमने पाया है कि वह आमतौर पर इस पहलू के प्रति उसकी अपनी ही जानकारी पर पूरा भरोसा रखता है। तभी तो वह तुरन्त ही खराब पेट के कारण पैदा होने वाले सपनों के बारे में बताने लगता है ('सपने पेट से आते हैं') या फिर इत्तेफ़ाक से शरीर की किसी विशेष मुद्रा में रहने के कारण या सुप्तावस्था की छोटी-मोटी स्थिति उसके दिमाग में आने लगती है। वह बातों के अलावा भी सपने आने के अन्य कारणों के बारे में शायद सोचता ही नहीं है।

शुरुआती अध्याय में हमने सपनों के बनने में शारीरिक कारकों के ऊपर वैज्ञानिक लेखकों की राय के बारे में सविस्तार अध्ययन किया है। अत: यहाँ उसके केवल परिणाम का ही जिक्र करना काफ़ी है। हमने देखा है कि शारीरिक कारक तीन प्रकार के पहचाने गए हैं: वाह्य संवेदी कारक–जिसकी शुरुआत किसी बाहरी चीज़ से होती है, संवेदक अंगों की उत्तेजना की आन्तरिक स्थिति–जिसमें केवल काल्पनिक कारक होते हैं, और शरीर के भीतर से उठ रहे अन्य शारीरिक कारक। इन शारीरिक कारकों की ओर से किए गए दावों की जाँच में हमने पाया है कि संवेदक अंगों की बाहरी उत्तेजना को प्रयोगों के दौरान भी देखा गया और इसकी पुष्टि भी हुई–भले ही वह नींद के दौरान का कोई इत्तेफाकन कारक रहा हो या कोई ऐसा कारक रहा हो जिसे इन स्वप्न-छवियों से तथा भीतरी शारीरिक कारकों के सुषुप्त सम्बन्धों से अलग न किया जा सकता हो। साथ ही हमने पाया कि काल्पनिक संवेदी कारक द्वारा निबाही गई भूमिका सपनों में निद्रादायी संवेदी छवियों के प्रादुर्भाव से प्रकट होती प्रतीत होती है। इन स्वप्न-छवियों और भीतरी शारीरिक कारकों की धारणा के मोटे तौर पर स्वीकार कर लिए गए सम्बन्ध को भले ही पूरी तरह न दर्शाया जा सकता हो फिर भी हमारी स्वप्न-कथा पर हावी रहने वाले हमारे पाचन अंगों, मूत्र-अंगों और

यौनांगों की स्थिति की उत्तेजना के सर्व विदित प्रभाव ने इस बात की पुष्टि सभी घटनाओं में की है।

इस प्रकार 'मानसिक कारक' और 'शारीरिक कारक सपने के शरीरी स्रोत हैं अर्थात्–अन्य लेखकों के अनुसार–ये सपनों के एकमेव व अनन्य स्रोत हैं।

परन्तु हम ऐसे अनेक बिन्दुओं पर विचार कर चुके हैं जो शारीरिक सिद्धान्त की सटीकता पर उतने प्रश्न उठाते नहीं प्रतीत होते जितने उसकी पर्याप्तता पर।

इस सिद्धान्त की अगुआई करने वाले इसके वास्तविक आधार के प्रति कितने भी आश्वस्त हों–विशेषकर इत्तेफाकन और बाहरी मानसिक कारकों के, जो कि स्वप्न-कथा में आसानी से पहचाने जा सकते हैं–फिर भी वे यह स्वीकार करने से परहेज़ नहीं करते कि सपनों में पाए जाने वाली मुख्य कथा अकेले बाहरी मानसिक कारकों से नहीं ली जा सकती। स्वप्न के कारकों के बाहरी स्रोत की अपर्याप्त आवृत्ति पर प्रश्न उठाए जाने के साथ-साथ एक अन्य प्रश्न स्वयं खड़ा हो जाता है, और वह है स्वप्न-स्रोत के इस वर्ग द्वारा दी जाने वाली स्वप्न-व्याख्या की अपर्याप्तता। इस सिद्धान्त के प्रवर्तक दो बातों को समझा पाने में असमर्थ रहे हैं: पहली, बाहरी कारक के सही स्वरूप को सपने में पहचाना क्यों नहीं जाता बल्कि हमेशा ही उसे कुछ और समझने की गलती की जाती है, और दूसरी, इस गलतफहमी के शिकार कारक को देखने वाले दिमाग की प्रतिक्रिया का परिणाम इतना अनिश्चित और अस्थिर क्यों होता है? इन प्रश्नों के उत्तर में स्ट्रम्पवैल इस बात पर बल देते हैं कि दिमाग चूँकि नींद के दौरान बाहरी जगत से बाहर हो जाता है, अत: वह विषय निष्ठ शरीरी कारकों की सही व्याख्या करने की स्थिति में नहीं रहता बल्कि अनेक दिशाओं से आने वाली अनिश्चित उत्तेजनाओं के आधार पर मरीचिकाएँ रचने पर बाध्य हो जाता है। उन्हीं के शब्दों में:

"किन्ही बाहरी या भीतरी मानसिक कारकों के द्वारा नींद के दौरान जब कोई एहसास या कोई जटिल अनुभूति या किसी तरह की मानसिक प्रक्रिया दिमाग में उठनी शुरु हो जाती है और दिमाग उसे देख भी लेता है, तब यह प्रक्रिया जागृत अवस्था के दौरान हुए अनुभवों की प्रत्यक्ष देखी गई छवियों को दिमाग से बुला लाती है अर्थात् उन अनुभूतियों को जो पहले हो चुकी है। यह ऐसी स्मृतियों को बड़ी या छोटी संख्या में यथावत् उठा लाती है जिससे मानसिक कारक से प्राप्त स्मृति अपना महत्त्व व मूल्य प्राप्त कर लेती है। आमतौर पर इस सम्बन्ध में कहा जाता है कि मन मानसिक कारकों की स्मृति की नींद में व्याख्या करता है। इस व्याख्या के परिणाम ही तथाकथित मानसिक कारकों वाला स्वप्न (nerve stimulus dreams) कहलाता है, अर्थात् एक ऐसा स्वप्न जिसके घटक इस तथ्य से प्रभावित रहते हैं कि मानसिक कारक पुन: प्रस्तुतिकरण के नियमानुसार मन पर अपना प्रभाव डालते हैं।"

इस सिद्धान्त से उत्पन्न स्वप्न-कथा व स्वप्न-कारक के बीच सम्बन्ध का खुलासा करने के लिए स्ट्रम्पवैल एक उम्दा उपमा का प्रयोग करते हैं। वह कहते हैं–"जैसे संगीत से अनभिज्ञ व्यक्ति की दसों उँगलियाँ किसी वाद्य की कुंजियों पर भटकती फिर रही हों।" इसका निहितार्थ यह है कि स्वप्न किसी मानसिक घटना या मानसिक हेतु से उत्पन्न हुई घटना नहीं होता बल्कि यह शारीरिक कारक का परिणाम होता है जो स्वयं को मानसिक लाक्षणिक (psychic symptomatology) में प्रकट कर देता है क्योंकि इस कारक से प्रभावित अंग किसी अन्य प्रकार से स्वयं के बारे में बता पाने में अक्षम होते हैं।

सपनों के शारीरिक कारक वाला यह सिद्धान्त भले ही प्रचलित हो गया हो और कितना ही लुभाने वाला लगता हो, फिर भी इसकी खामियों को ढूँढ़ निकालना कोई कठिन काम नहीं है। स्वप्न का प्रत्येक शारीरिक कारक–जो नींद में मरीचिकाएँ रचकर मन को व्याख्या करने के लिए उकसाता है–वह व्याख्या करने के ऐसे न जाने कितने प्रयासों का आह्वान कर सकता है। फिर वह इस तरह प्राप्त व्याख्यान की अनेकानेक धारणाओं द्वारा स्वप्न-कथा में आगे बढ़ सकता है। मरीचिका वाले सिद्धान्त के पीछे किए जाने वाले मूल अनुमानों के विरुद्ध दूसरी आपत्ति इस बात पर उठाई जा सकती है कि यह मान लेना कि नींद के दौरान मन इस अवस्था में नहीं रहता है कि वह शरीर के संवेदी कारकों की प्रकृति को पहचान सके। शरीर विज्ञानी बुरडैश बताता है कि मन नींद के दौरान भी उस तक पहुँचने वाले संवेदी संकेतों को सही तरह समझने में और उसका सही-सही अर्थ निकालकर उसके अनुसार प्रतिक्रिया करने में पूरी तरह सक्षम रहता है। वह यह भी दिखा देता है कि सुषुप्त मस्तिष्क की सामान्य उदासीनता के बावजूद उस व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण संवेदी संकेतों को वह अपनी इस उदासीनता में शामिल नहीं करता, तभी तो सोते हुए व्यक्ति कान में पड़ने वाली अन्य बातों के प्रति उदासीन रहते हुए भी अपना नाम पुकारे जाने पर फट से जाग जाता है। इससे यह माना जा सकता है कि मस्तिष्क सोते समय भी संकेतों में विभेद कर सकता है, उन्हें अलग-अलग छाँट सकता है। इन अवलोकनों से बुरडैश इस नतीजे पर पहुँचा है कि हमें यह कल्पना नहीं कर लेनी चाहिए कि मस्तिष्क सुप्तावस्था में संवेदी-कारकों को समझने व उनका अर्थ निकालने में अक्षम रहता है, बल्कि वास्तविकता यह है कि वह उनमें कुछ अधिक रुचि नहीं रखता। वर्ष 1830 में बुरडैश द्वारा प्रतिपादित यह तर्क 1883 में लिप्स द्वारा जस का तस दोहराया गया। इससे जुड़ा एक प्रसंग भी सुनाया गया जिसमें बताया गया कि यह पूछे जाने पर–"क्या सो रहे हो?" मस्तिष्क उत्तर देता है–"नहीं", परन्तु फिर यह कहे जाने पर–"तो दस रुपये देना", वह यह कहकर करवट बदल लेता है–"मैं सो रहा हूँ।"

सपनों के शारीरिक-कारक वाले सिद्धान्त का अधकचरापन एक और तरह से भी दर्शाया जा सकता है। अध्ययन बताते हैं कि बाहरी उद्दीपक मेरे स्वप्न देखने का कारक नहीं बनते–भले ही मेरा स्वप्न शुरू होते ही ये उद्दीपक उस स्वप्न कथा का हिस्सा बन जाते हों। नींद के दौरान किसी स्पर्श या दाब की अनुभूति की अनुक्रिया मेरे समक्ष अनेक प्रतिक्रियाओं का विकल्प रखती है। पहला, मैं उसे नज़र अंदाज़ कर सकता हूँ और जागने पर यह पाऊँ कि मेरा पैर उघड़ा हुआ है या मैं अपने हाथ पर लेटा हुआ हूँ। इस प्रकार के अनेक उदाहरण हैं जो बताते हैं कि ऐसे कारक नींद के दौरान अप्रभावी रहते हैं। दूसरा, मैं नींद के दौरान उस संवेदना को महसूस कर सकता हूँ, जैसा कि दर्द के कारकों में ऐसा होता भी है, परन्तु मैं इस महसूसने को सपने के ताने-बाने में न बुनूँ। तीसरा, मैं इस कारक की अनुक्रिया स्वरुप जाग जाता हूँ–केवल उसे स्वप्न में न आने देने के लिए। परन्तु अभी एक और यानि चौथी प्रतिक्रिया भी सम्भव है, और वह है कि संवेदी-उद्दीपन मेरे सपने का कारण बन जाए। फिर भी, अन्य सम्भव प्रतिक्रियाएँ स्वप्न-रचना की प्रतिक्रिया के रूप में कहीं अधिक देखने में आती हैं, और ऐसा होना तभी सम्भव हो सकता है जब स्वप्न देखने की प्रेरणा शारीरिक स्वप्न-स्त्रोत से बाहर स्थित हो।

पिछले अध्याय में हम यह देख चुके हैं कि जब मन पर छाप छोड़ने वाली दो या दो से अधिक बातें पिछले दिन से दिमाग में पड़ी हों तो उनसे पैदा होने वाली इच्छाएँ एक ही स्वप्न में हिल-मिल जाती हैं अर्थात् मानसिक महत्त्व वाली छाप और गत दिवस के अमहत्वपूर्ण अनुभव स्वप्न-कथा में मिलजुल जाते हैं–बशर्ते दोनों को जोड़ देने वाले विचार अस्तित्व में आ जाएँ। इस प्रकार सपना हर उस चीज़ की प्रतिक्रिया का रुप प्रतीत होता है जो कि सोते हुए मस्तिष्क में सचमुच साथ-साथ विद्यमान रहती हैं। ये उद्दीपक सपनों के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं, स्वप्न-रचना के लिए सामग्री उपलब्ध कराने के लिए वे अन्य मानसिक वास्तविकताओं के साथ हिल-मिल जाते हैं। इसे यदि दूसरे शब्दों में कहा जाए तो नींद के दौरान घटित होने वाले कारक इच्छा-पूर्ति के रूप में फैल जाते हैं जिनके अन्य घटक हैं दिन के दौरान होने वाले वे मानसिक अवशेष जिनसे वे पहले ही परिचित हो चुके हैं। तथापि यह संयोजन अपरिहार्य नहीं होता–हम देख चुके हैं कि नींद के दौरान प्राप्त शारीरिक कारकों के प्रति हमारा व्यवहार एक ही तरह का नहीं रहता है। जब यह संयोजन प्रभावित होता है तब स्वप्न कथा के लिए एक कलात्मक सामग्री मिल जाती है जो दोनों ही प्रकार के स्वप्न-स्त्रोतों का प्रतिनिधित्व करती है–शारीरिक का भी और मानसिक का भी।

जब मानसिक स्वप्न स्त्रोत में शारीरिक सामग्री जोड़ दी जाती है, तब सपने की प्रकृति में कोई परिवर्तन नहीं होता है, वह तब भी इच्छापूर्ति वाली ही रहती है–भले ही इसकी अभिव्यक्ति उपलब्ध सामग्री के माध्यम से हो।

यहाँ मैं सपनों के बाहरी कारकों के महत्त्व को संशोधित करने वाली कुछ विलक्षणताओं का जिक्र करना चाहता हूँ। मेरा मानना है कि व्यक्ति के शारीरिक और आकस्मिक कारकों का एक दूसरे से तालमेल होना ही यह निर्धारित करता है कि नींद के दौरान अधिक घने शारीरिक कारक के निजी मामले में कोई व्यक्ति कैसे व्यवहार करता है। कारक की सघनता के संयोजन में नींद की आदतन या आकस्मिक गहनता किसी मामले में तो कारक का इस तरह दमन कर सकती है कि वह नींद में खलल न डाल सके, जबकि किसी दूसरे मामले में वह सोने वाले की नींद खुल जाने के लिए विवश तक कर सकती है, या कारक को सपने का ताना-बाना बनाकर उसे प्रयोग करते हुए अपने काबू में बनाए रख सकती है। सपनों की इन आकाश गंगाओं की बहुलता तथा विविधता के अनुसार ही ये बाहरी शारीरिक कारक किसी मामले में बहुत अधिक और किसी मामले में बहुत कम अभिव्यक्त होते हैं। चूँकि मैं घोड़े बेचकर सोने वाला व्यक्ति हूँ और नींद में खलल पड़ना किसी भी तरह पसन्द नहीं करता, अत: मेरे मेरे अपने मामले में उत्तेजना के इन बाहरी कारकों की घुसपैठ मेरे सपनों में शायद ही कभी हुई हो। जबकि मानसिक मुद्दों का अपने सपनों का कारण बनना मैं साफ-साफ और आसानी से देख सकता हूँ।

पिछले अनेक सपनों के विश्लेषण के आधार पर एक खास बात सामने आती हे कि सभी सपने 'सुविधाजनक सपने' होते हैं–वे हमें जगा देने के बजाय हमारी नींद को जारी रखने का प्रयोजन सिद्ध करने वाले होते हैं–'सपने नींद के संरक्षक होते हैं, उसमें व्यवधान डालने वाले नहीं।' नींद के दौरान मस्तिष्क या तो अनुभूति के किसी भी कारण से अपना सरोकार नहीं रखता है या वह सपनों का प्रयोग करते हुए इन कारकों को दरकिनार कर देता है, या, तीसरी बात, वह कारकों को पहचान लेता है और उनका ऐसा अर्थ निकाल लेना चाहता है जो नींद के सहवर्ती रहते हुए वांछित स्थिति के रूप में वास्तविक स्थिति के साथ बना रहे। वास्तविक अनुभूति को स्वप्न के रूप में बुन दिया जाता है ताकि वह अपनी वास्तविकता को खो दे।

यदि बाहरी मानसिक कारक और भीतरी शारीरिक कारक इतने सघन हो जाएँ कि मानसिक अवधान को विवश कर दें तो–यदि हमें जगा देने के बजाय वे स्वप्न बन जाते हैं–वे स्वप्न रचना हेतु एक स्थिर बिन्दु और स्वप्न-सामग्री हेतु केन्द्र-बिन्दु का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके लिए कोई समुचित इच्छा-पूर्ति तलाश ली जाती है। यहाँ तक कि यह बात अनेक सपनों पर सच उतरती है कि शारीरिक कारक स्वप्न-कथा को दिशा निर्देश देते हैं। किसी अति विशेष मामले में तो एक ऐसी इच्छा पैदा भी कर ली जाती है जो वास्तविक रूप से विद्यमान तक नहीं होती–ताकि स्वप्न रचना की जा सके। परन्तु सपना किसी इच्छा को

पूरा होने की कोई न कोई स्थिति पैदा करने के अलावा कुछ और कर ही नहीं सकता है।

हमने देखा है कि दमित इच्छाओं का अस्तित्व मन में बना रहता है, अर्थात् जो इच्छा कभी थी वह कभी बाद में विनष्ट हो गई हो–ऐसा नहीं होता। ये इच्छाएँ बनी तो रहती हैं परन्तु दबी रहती हैं। मानसिक तंत्र इन दबी हुई इच्छाओं को पूरा करने की जुगाड़ में रहता है। और, जब नींद के दौरान शारीरिक स्रोत से उपजी कोई प्रतिकूल प्रकार की अनुभूति महसूस होती है तो सैंसरशिप का कमोबेश प्रयोग करते हुए इसे स्वप्न प्रक्रिया के रूप में इच्छा-पूर्ति की तरह प्रयुक्त कर लिया जाता है।

इस प्रकार की स्थिति में कुछ सपनों के तो व्यग्रता-स्वप्न के रूप में बदल जाने की संभावना बन जाती है और बाकी कुछ और तरह के सपने बन जाते हैं–वे इच्छापूर्ति वाले सिद्धान्त के पक्ष में नहीं जाते। स्वप्न में व्यग्रता वास्तव में साइकोन्यूरोटिक का एक प्रकार है जो साइको-सैक्सुअल उत्तेजना से उपजता है और जिसमें व्यग्रता दमित कामेच्छा से जुड़ी होती है। तब यह व्यग्रता तमाम अन्य व्यग्र-स्वप्नों की तरह ही विक्षिप्त-लक्षण (neurotic symptom) की पहचान वाली हो जाती है और हम उस विभाजन-रेखा पर खड़े हो जाते हैं जहाँ सपने की इच्छा-पूर्ति वाली प्रकृति खिन्नता में बदल जाती है।

विचित्र स्वप्न

आमतौर पर हम ऐसे व्यक्ति के सपनों की व्याख्या नहीं कर पाते हैं जो अपने सपने के पीछे खड़े अवचेतन विचारों को हमें बताने में संकोच करता है। ऐसे अनेक सपनों में जिन्हें सभी ने एक ही तरह देखा है और जिनके मामले में हम यह मानने लगे हैं कि हर स्वप्न द्रष्टा के मामले में ये एक सा अर्थ रखते हैं। इन विचित्र सपनों के बारे में दिलचस्प बात यह है कि सपना किसी ने भी देखा हो, उसका स्रोत एक जैसा ही होता है, इसलिए उपलब्ध सूचना के आधार पर यह स्रोत ऐसे सभी सपनों पर 'फिट' बैठता है।

अत: एक विशेष प्रत्याशा के साथ हम अपनी स्वप्न-व्याख्या की तकनीक का परीक्षण करने जा रहे हैं। विचित्र सपनों की व्याख्या में हम स्वप्न द्रष्टा से जुड़ी उन बातों को सिद्धान्तत: प्राप्त कर पाने में असफल रहते हैं जो हमें अन्य सपनों को पूरी तरह समझाने की ओर ले जाती हैं। विचित्र सपनों के मामले में ये बातें या तो आधी-अधूरीं होती हैं या भ्रामक, अत: वे हमारी समस्या का हल ढूँढ़ पाने में हमारी सहायता नहीं कर पाती हैं।

कुछ मामले मैं यहाँ ले रहा हूँ:

घबराहट, उलझन, शर्मिंदगी-नग्नाबस्था के सपने

किसी ऐसे स्वप्न में जिसमें स्वप्न द्रष्टा अजनबी लोगों के सामने नग्नावस्था में हो या अपर्याप्त वस्त्र पहने हुए हो, ऐसा कभी कभी पाया गया है कि वह अपनी इस दशा पर लेशमात्र भी शर्मिंदा नहीं हो रहा होता है। परन्तु, नग्नावस्था के स्वप्न पर तब ध्यान देने की जरूरत होती है जब उसमें शर्म, घबराहट या उलझन महसूस की गई हो, जब वह वहाँ से भाग जाना चाह रहा हो या स्वयं को छिपा लेना चाहता हो परन्तु उस तकलीफदेह अवस्था की जगह से हिलने व हटने में स्वयं को बिलकुल असमर्थ या अशक्त पा रहा हो। इस स्वप्न का विचित्र होना इसकी इसी विशेषता के बारे में होता है, उसकी और बातें तो अन्य सपनों जैसी ही रहती हैं। मुख्य मुद्दा यह है कि व्यक्ति शर्म से गढ़ा जा रहा है और अपनी नग्नता छिपाने के लिए आकुल-व्याकुल है, वहाँ से हट जाना चाहता है परन्तु ऐसा कर नहीं पा रहा है। मुझे यकीन है कि अधिकांश पाठकों ने स्वयं को सपने में कभी न कभी ऐसी स्थिति में अवश्य ही पाया होगा।

वस्त्र विहीनता की प्रकृति और प्रकार प्राय: अस्पष्ट रहते हैं। स्वप्न द्रष्टा कहती है–"मैं शमीज़ में थी!" या "मैं पेटीकोट में थी!" सेना का व्यक्ति सपने में यदि निर्धारित वर्दी में न हो तो वह भी परेशान हो उठता है–"मैं सड़क पर था और वह भी बिना कॉलर के!" या "मैं पाजामा पहने हुए था!" ऐसी सभी छवियों में स्थिति बिल्कुल साफ़ नहीं रहती है। वैसे कम वस्त्र पहनने से शर्मसार होने की बात जुड़ जाना आवश्यक तो नहीं होता।

जिस व्यक्ति के सामने स्वप्न द्रष्टा सपने में शर्मिंदा हो रहा होता है वह व्यक्ति हमेशा ही अजनबी होता है जिसका चेहरा भी अनिश्चित सा होता है। इन विचित्र सपनों में ऐसा कभी नहीं होता कि नग्नता या वस्त्रों की अपर्याप्तता की ओर ध्यान दिया जाता हो या इसके कारण स्वप्न द्रष्टा को कुछ भला-बुरा कहा गया हो जिसके कारण वह कोई उलझन, घबराहट या शर्मिंदगी महसूस कर रहा हो। इसके विपरीत उसकी नग्नता या वस्त्रों की अपर्याप्तता के प्रति दूसरे लोग बिल्कुल उदासीन दिखाई देते हैं या भावहीन और गम्भीर रहते हैं। यह विचारणीय बात है।

स्वप्न द्रष्टा की घबराहट उलझन व शर्मिंदगी और उसे देखने वालों की उदासीनता एक विरोधाभास पैदा करते हैं जो कि सपनों में अक्सर दिखाई पड़ता है। यदि अजनबी व्यक्ति उसे आश्चर्य से देखता या उस पर हँसता या भड़क जाता तो उसके लिए यह कोई तुक की बात होती। मेरे विचार से यह बेहूदी लगने वाली अप्रिय स्थिति इच्छा-पूर्ति द्वारा आरोपित कर दी गई होती है जबकि घबराहट, उलझन व शर्मिंदगी किसी कारणवश टिकी रहती है, इसीलिए इन दोनों स्थितियों में तालमेल नहीं बैठ पाता है।

यह मान लेने में कोई हर्ज नहीं है कि समझ में न आने वाली स्वप्न-कथा ने ही निर्वस्त्रता की स्थिति को उकसाया है जो स्मृति में विद्यमान किसी अवस्था को अर्थ दे रही होती है। इस तरह इस अवस्था को इसके मूल अर्थ से विस्थापित कर दिया जाता है और यह असम्बद्ध सिरों से जुड़ जाती है। विक्षिप्त लोगों के सपनों के विश्लेषण के दौरान मैंने बिना सन्देह इन सपनों को जिस चीज़ से जुड़ा पाया है वह है स्वप्न द्रष्टा के शुरुआती बचपन की स्मृतियाँ। हमारे बचपन में ही एक समय ऐसा आया करता है जब हम अपने घरवालों द्वारा, नर्सों-नौकरों द्वारा और आगन्तुकों द्वारा भी नग्न या अपर्याप्त वस्त्रों में देखे जाते हैं और उस समय हमें अपनी नग्नता पर कोई झेंप या शर्म भी महसूस नहीं होती। अनेक बड़े बच्चों के मामले में तो यह भी देखा गया है कि उनके कपड़े उतारे जाने पर शर्म महसूस करने के बजाय उनमें एक विशेष चपलता आ जाती है। वे किलकारी मारते हैं, कूद-फांद करने लगते हैं और अपने नग्न शरीर पर थपकी बजाने लगते हैं। तब माँ या जो भी उसकी देखभाल कर रहा होता है, उन्हें डाँटता-डपटता है और कहता है "छि:, यह गन्दी बात है, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।" बच्चों में प्राय: स्वयं को दिखाने की इच्छा रहती है। बचपन में शर्म या लज्जा की अनुभूति एक अनजान चीज़ होती है। तभी तो, जब कभी हम पलट कर बचपन को देखते हैं तो वह हमें स्वर्ग सरीखा लगता है, और, स्वर्ग भी तो कुछ और नहीं बल्कि आदमी के बचपन का सामूहिक कल्पना-लोक ही होता है। तभी तो स्वर्ग में लोग बिना कपड़ों के रहते हैं और बिना शर्म के भी। फिर वह समय आता है जब शर्म और उसके साथ भय भी जाग जाते हैं। इसके पीछे-पीछे बहिष्कार चला आता है और इस तरह सैक्स जीवन और सभ्यता विकसित होने लगती है। बचपन के बीते उस स्वर्ग में केवल स्वप्न ही हमें वापस ले जा पाता है। हम यह अनुमान लगाने का साहस कर चुके हैं कि हमारा शुरुआती बचपन (तीन वर्ष तक) स्वयं को जताने के लिए लालायित रहता है, और, वह भी बिना किसी सन्दर्भ के। इस प्रकार इस बात की पुनरावृत्ति एक इच्छा ही है और नग्नता के स्वप्न 'प्रदर्शन-स्वप्न' बन जाते हैं।

मुझे ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिला है जिसमें इन बचकाने प्रदर्शन वाले सपनों में दर्शक अर्थात् दूसरा व्यक्ति फिर कभी दर्शक की तरह दोबारा आया हो। दरअसल स्वप्न में दर्शक के बारे में एक भ्रम सा रहता है। स्वप्नद्रष्टा उसकी उपस्थिति केवल महसूस करता है परन्तु उसे कभी देख नहीं पाता। एक के बजाय ये अजनबी दर्शक अनेक भी हो सकते हैं जो उसे देखने में कतई रुचि न रख रहे हों। संक्षेप में यह भी उस व्यक्ति के प्रति अपनी इच्छा पूर्ति का सपना है जिसके लिए स्वप्न में अपने शरीर से वस्त्र हटा दिए गए हों।

बचपन की दबी हुई और निषेध की गईं इच्छाएँ अब आकर अनापत्तिजनक व अनुमति योग्य इच्छाओं की आड़ में सपनों में फूट पड़ती हैं और व्यग्रता वाले सपनों में तब्दील हो जाती हैं!

अपने किसी प्रियजन की मृत्यु का स्वप्न

विचित्र कहे जाने वाले सपनों में दूसरे स्थान पर वे सपने आते हैं जिनमें हम देखते हैं कि हमारे किसी प्रिय सम्बन्धी, माता या पिता भाई-बहन, बच्चे इत्यादि की मृत्यु हो गई है। ऐसे सपनों को हम दो वर्गों में बाँट सकते हैं: प्रथम, जिनमें स्वप्न द्रष्टा विचलित व उद्विग्न नहीं हो रहा होता है, और दूसरा, जिनमें वह उस प्रियजन की मृत्यु से द्रवित-व्यथित हो रहा होता है और उस दुख से सोते-सोते भी आँसू बहाने लगता है।

पहली तरह के सपनों की अधिक गहराई या विस्तार में जाने की हम आवश्यकता महसूस नहीं करते क्योंकि वे विचित्र नहीं कहे जा सकते। यदि उनका विश्लेषण किया जाए तो पाएँगे कि स्वप्न द्रष्टा की कोई इच्छा ही मुखौटा लगाकर पूरी हुई है। पीछे दिए गए उस महिला के सपने के मामले में जिसमें उसकी बहन का दूसरा और इकलौता जीवित बेटा ताबूत में लेटा देखा गया था, दरअसल उसका अर्थ यह नहीं था कि वह अपने नन्हें भाँजे के मरने की कामना कर रही थी, बल्कि, जैसा हमने पाया, इसकी आड़ में उसकी यह इच्छा रही थी कि वह मुद्दत से बिछड़े अपने प्रेमी को पुन: देख पाए–वह व्यक्ति जिसे उसने पहले भाँजे की मृत्यु होने पर बहुत दिन बाद उसके ताबूत के पास खड़े देखा था। उसे पुन: देखने की इच्छा ही इस सपने के पीछे थी, इसीलिए इसमें किसी दुख की गुंजाइश नहीं थी। उसकी यही भावना प्रकट रूप में आने के बजाय अप्रकट रूप में एक दूसरे रूप में सपने में आती है।

परन्तु जिस सपने में अपने किसी प्रियजन की मृत्यु कल्पित कर ली गई हो और उसके कारण भारी दुख भी महसूस किया जा रहा हो–वह एक अलग बात होती है। ऐसे सपनों की स्वप्न-कथा हमें बताती है कि इनका अर्थ है हमारी यह इच्छा कि वह व्यक्ति मर जाए। मैं यहाँ अपने उन तमाम पाठकों की भावनाओं को समझ सकता हूँ जिन्होंने ऐसे सपने देखे हैं और जो मेरी इस व्याख्या को हाथों-हाथ नकार रहे हैं। अत: मैं यथा सम्भव विस्तार के साथ इसके सबूत पेश करने का प्रयास करूँगा।

हम पहले ही एक स्वप्न का उद्धरण देख आए हैं जिसमें हमने देखा है कि इच्छापूर्ति को दर्शाने वाला स्वप्न हमेशा ही हाल-फिलहाल की इच्छा वाला नहीं होता। सपने में पूरी होती दिखती इच्छा कोई भूली-बिसरी, छोड़ी-खड़ी, दबी-कुचली या दफन-दहन की हुई इच्छा हो सकती है। परन्तु, केवल किसी

स्वप्न में पुन: प्रकट होने के आधार पर उसे जीवित होने को लोग प्रमाणित नहीं मानते। दरअसल इस तरह की इच्छाएँ कभी मरती नहीं हैं–उन लोगों की तरह जो मर चुके हैं; जिस अर्थ में हम मृत्यु को जानते हैं–बल्कि कोई सूत्र हाथ लगते ही वे पुनर्जीवित हो उठती हैं।

कोई भी सपने में यदि अपने पिता, माता, भाई या बहन को मृत देखता है और इस पर दुखी भी हो रहा होता है तो इस बात के प्रमाण हेतु मुझे कोई उद्धरण देने की आवश्यकता नहीं है कि वह उसकी मृत्यु 'अब' चाहता है। यह सपना तो यह बताता हे कि स्वप्नद्रष्टा ने उसकी मृत्यु 'कभी न कभी' या बचपन में चाही अवश्य थी। मैं जानता हूँ कि मेरे आलोचक मेरी इस बात से सन्तुष्ट होना तो दूर इसका ज़ोरदार खंडन ही करते नज़र आएँगे, कि उन्होंने ऐसी इच्छा कभी की भी थी या उनके मन में ऐसी कोई इच्छा अभी भी है। इसलिए मुझे वर्तमतान को साक्ष्य बनाकर बचपन की डूबी हुई मनोवैज्ञानिकता की अंशत: पुन: रचना करनी होगी।

सबसे पहले हमें भाई या बहन के साथ बच्चे के सम्बन्ध को समझना होगा। मैं नहीं जानता कि हम क्यों यह मानकर चलते हैं कि यह सम्बन्ध प्रेमपूर्ण ही होना चाहिए क्योंकि वयस्क भाई-भाई, बहनों-बहनों और भाई-बहनों के बीच वैमनस्यता के उदाहरणों को कौन नहीं जानता और क्योंकि यह तथ्य भी हम आसानी से देख सकते हैं कि इस मनमुटाव का बीजारोपण बचपन में ही हो जाता है और फिर सदा बना रहता है–यहाँ तक कि जो लोग आज अपने भाई-बहनों के प्रति समर्पित हैं और बुरे दिनों में उनकी सहायता भी करते हैं, वे भी बचपन में आपस में निरन्तर वैमनस्य में रहते आए हैं। बड़े भाई-बहनों ने छोटों के साथ दुर्व्यवहार किया है, उनकी शिकायतें लगायी हैं, उनके खिलौने छीने-झपटे हैं। इससे छोटों में बड़ों के प्रति लाचारी और भय भर गया है, उनके प्रति डाह और डर रहने लगा है, और उससे मुक्त होने की व उस दमनकारी के विरुद्ध विद्रोह करने की इच्छा उसमें जाग जाती है। माता-पिता कहते हैं कि बच्चों में बनती नहीं है, परन्तु वे इसका कारण नहीं जान पाते हैं। यह हम साफ़ देख सकते हैं कि किसी शिष्ट-सुशील बालक में भी कुछ ऐसी बातें तो होती ही हैं जिन्हें हम अपने से बड़ों में होना पसन्द नहीं करेंगे। बच्चा पूरी तरह आत्म-केन्द्रित व अहंकारी होता है, उसे बस अपनी ही लगी रहती है और जो वह चाहता है उसे पाने में अपनी पूरी हठधर्मिता से जुटा रहता है–विशेषकर अपने प्रतिद्वंद्वी अर्थात् दूसरे बच्चों से और उनमें भी सबसे पहले अपने भाई-बहनों से। परन्तु इतना कुछ होते हुए भी हम उसे दुष्ट, आततायी या धूर्त जैसा कुछ नहीं कहते, बस शरारती कह देते हैं। अपने गलत कामों के लिए वह न तो हमारी अपनी नज़र में उत्तरदायी ठहराया जाता हे और न कानून की नज़र में।

इसीलिए, बहुत सारे लोग जो अपने भाई-बहनों को सपने में मृत देखकर शोकाकुल हो उठते हैं, उनके अवचेतन मन में बचपन से अमर्दित, शत्रुतापूर्ण इच्छाओं का डेरा अभी भी लगा हुआ होता है जो कि स्वप्न में अपनी मनोकामना पूरी करती नज़र आती है। और इसीलिए, बच्चों की तीन या चार वर्ष की आयु तक अपने छोटे भाई-बहन के प्रति उनके व्यवहार को ध्यानपूर्वक देखना बहुत आवश्यक होता है। घर में जब एक ही बच्चा रहता हो और फिर एक दिन उसे बताया जाए कि नर्स ने मम्मी को एक नया बेबी लाकर दिया है, तब वह बच्चा उस नवागंतुक नवजात को बहुत ध्यान से देख-परख कर अकसर कह देता है–"नर्स से कहिए कि वह इसे वापस ले जाए।"

मैं यह बात पूरी गम्भीरता से बता देना चाहता हूँ कि मेरे विचार से बच्चे में नवजात शिशु द्वारा उसे होने वाले नफे-नुकसान का अंदाज़ लगा लेने की क्षमता होती है। मेरे एक परिचित की चार वर्षीय बेटी को जब यह समाचार सुनाया गया कि अब उसकी छोटी बहन भी आ गई है तो उसने उसके प्रति अपने अधिकारों को सुरक्षित रखने वाले भाव को कुछ इस तरह प्रकट किया–"लेकिन मैं उसे अपनी लाल टोपी नहीं दूँगी–बिल्कुल भी नहीं।" किसी बच्चे को बाद में भी यदि यह लग जाए कि उसके छोटे भाई या बहन के कारण उसकी अपनी खुशियों पर ग्रहण लग सकता है तो तत्काल उसके प्रति उसका बैर-भाव पैदा हो जाता है। मैंने एक घटना सुनी है जिसमें एक लड़की–जो कि तीन साल की भी नहीं हुई थी–उसने पालने में लेटे नवजात का गला घोंटने का प्रयास किया था क्योंकि उसे ऐसा लगने लगा था कि उस नवजात का बने रहना आने वाले समय में उस लड़की के लिए भला नहीं है। जीवन के इस काल में बच्चे डाह व ईर्ष्या करने में समर्थ होते हैं और यह बात प्रबल रूप से प्रकट भी होती है। अपने भाई या बहन के प्रति बैरभाव बच्चों में कहीं अधिक होता है परन्तु वह लापरवाह बड़ों की नज़र में अपेक्षाकृत कम नज़र आता है।

बच्चों की नज़र में मर जाने का अर्थ होता है चले जाना–कभी फिर न आने के लिए, जैसे दादाजी 'चले गए।' इसीलिए कोई बच्चा जब दूसरे बच्चे का 'न रहना' चाहता है तो उसे उसके मर जाने की इच्छा करने के अलावा कुछ नहीं सूझता। भिन्न-भिन्न स्वप्न-कथाओं के बावजूद मृत्यु-इच्छा वाले स्वप्न की मानसिकता सिद्ध करती है कि बचपन में बनी इच्छा वयस्क होने पर उसी की प्रति-छाया होती है।

परन्तु, बच्चों द्वारा अपने भाई-बहन की मृत्यु चाहने के तार यदि उन्हें अपना प्रतिद्वंद्वी मान लेने वाली उनकी अपनी आत्मकेन्द्रितता व अहमन्यता से जुड़े होते हैं तो फिर माता या पिता की मृत्यु के स्वप्न के पीछे यह इच्छा कैसे विद्यमान रह सकती है जो कि उन पर अपना प्रेम न्यौछावर करते हैं, उनकी आवश्यकताओं

को पूरा करते हैं। और अपनी अहमन्यता को पालने के लिए जिनका बना रहना वह चाहता है।

इस प्रश्न के उत्तर की ओर चलते समय हमें यह बात ध्यान रखनी होगी कि अधिकांश सपनों में स्वप्न द्रष्टा अपने ही लिंग वाले अभिभावक की मृत्यु देखता है, इसीलिए आमतौर पर लड़का अपने पिता की और लड़की अपनी माता की मृत्यु का सपना देखती है। मैं यह दावा नहीं करता कि हमेशा ही ऐसा होता है परन्तु अधिकांश मामलों में ऐसा होना एक ऐसा सबूत है जिसे व्यापक अर्थ वाले कारकों द्वारा समझा जाना आवश्यक है। मोटे तौर पर कहा जाए तो यह बचपन के शुरुआती समय में लैंगिक प्राथमिकता को महसूस करने जैसा है– मानो लड़का अपने पिता को और लड़की अपनी माता को प्रेम प्राप्ति में अपना प्रतिद्वंद्वी मानते हो और जिसके हट जाने से उसे फायदा ही फायदा मिलने वाला हो।

इस विचार को बेतुका, असंगत और विकट कहकर नकार देने से पहले पाठकों को अभिभावकों व बच्चों के बीच के वास्तविक सम्बन्ध पर नए सिरे से विचार करना होगा। हमें अपने व्यवहार के परम्परागत मानक अर्थात् 'सन्तानोचित कर्तव्यपरायणता' तथा दिन-प्रतिदिन दिखाई देने वाली वास्तविकता के बीच अन्तर पहचानना होगा। अनेक अवसरों पर बच्चों व अभिभावकों के सम्बन्ध में वैमनस्यता छिपी रहती है, जिसके अन्तर्गत सैंसर न हो सकने वाली इच्छाएँ सपनों में निश्चित रुप से जाग जाती हैं। पहले पिता-पुत्र के सम्बन्ध पर चर्चा कर लें। मानव समाज का निम्नतम स्तर हो या उच्चतम स्तर, उसमें किसी भी अन्य हित की अपेक्षा माता-पिता के प्रति की जाने वाली सन्तानोचित कर्तव्यपरायणता का महत्त्व बताते रहना एक रिवाज़ हो गया है। इस समाज के आदिम काल से ही पीढ़ी दर पीढ़ी सौंपी जाने वाले मिथकों, पुराकथाओं व लोककथाओं की ऊट-पटांग कहानी-किस्सों में पिता की तानाशाही की खेदजनक अवधारणा भरी पड़ी है, साथ ही उस क्रूरता व कठोरता का भी बयान किया गया है जिसके द्वारा इसका प्रयोग किया जाता रहा है। हमारे मध्यवर्गीय परिवारों में भी पिता द्वारा अपने बेटे को एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व बनने देने के बजाय उस पर अंकुश लगाकर पिता-पुत्र सम्बन्ध में जुगुप्सा व घृणा का बीज बो देना एक आम बात है, और, यह पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। काम चिकित्सक अकसर यह बात साफ-साफ नोट करते हैं कि पिता की मृत्यु पर उसके पुत्र का शोक उसकी इस तसल्ली और सन्तुष्टि को नहीं रोक पाता कि आखिर उसे स्वतंत्रता तो मिली। सिद्धान्ततः प्रत्येक पिता इस खेदजनक व घिसी-पिटी पुरापंथी अवधारणा से चिपका रहता है कि वही परिवार का सुप्रीमों है–और यही हमारे आधुनिक समाज में भी व्याप्त है। ऐसा सपना देखने वालों की कमी नहीं है जो सपने में अपने आपको अपनी माँ के

साथ समागम करते हुए पाते हैं। वास्तव में यह पिता का स्थान लेने का अर्थात् उसकी मृत्यु चाहने का प्रतीक है।

माँ-बेटी के बीच टकराव के कारण तब पैदा होते हैं जब बेटी जवान हो जाती हे और अपनी यौन स्वतंत्रता पर अपनी माँ की कड़ी निगाह देखती है, जब कि माँ को अपनी बेटी के खिलते व खुलते सौन्दर्य से यह लगने लग जाता है कि अब उसकी अपनी यौनेच्छा के दिन लदने वाले हैं।

इन सारी स्मृतियों को हम सभी साफ़-साफ़ देख सकते हैं परन्तु फिर भी माता-पिता की मृत्यु को सपने में देखने का मतलब निकालने में ये हमारी सहायता नहीं कर पाती, क्योंकि माता-पिता के प्रति सन्तानोचित कर्तव्य परायणता सदियों से अनुपालन करने योग्य रही है–वह भी आँख मूँद कर। अब हम बच्चे में शुरुआती बाल्यावस्था से ही माता या पिता की मृत्यु की इच्छा के अंकुरण का पता लगाने का प्रयास करेंगे।

साइको-न्यूरोटिक के मामलों का अध्ययन इस अवधारणा का बिना किसी शक के पुष्टि करता है। विश्लेषण बताता है कि बच्चों में यौनेच्छाएँ जन्मजात होती हैं और यह भी कि शिशु लड़की शुरू से ही पिता को बहुत स्नेह देती है जबकि शिशु लड़के की शुरुआती शैशव इच्छाओं का केन्द्र माँ रहती है। लड़की के लिए माँ और लड़के के लिए पिता एक अप्रिय प्रतिद्वंद्वी बन जाते हैं और, जैसा कि हम भाई-बहन वाले मामले में देख चुके हैं कि बच्चों में यह भावना किस तरह बिना किसी झिझक के मृत्यु-इच्छा की ओर ले जाने वाली बन जाती हैं सामान्यत: माता-पिता द्वारा भी किया जाने वाला लिंग-भेद जल्दी ही प्रकट होने लगता है। पिता द्वारा छोटी बच्चियों को लाड़ से बिगाड़ देना और माँ द्वारा बेटे का पक्ष लेना एक नैसर्गिक व स्वाभाविक रुझान होता है। दोनों ही बच्चों के लालन-पालन में बहुत सचेत रहते हैं–बशर्ते लिंग-भेद का आकर्षण उनके फैसलों को प्रभावित न करे। बच्चा इस पक्षपात के प्रति पूरी तरह सजग रहता है और माता या पिता में से जो उसका विरोधी होता है, उसके प्रति वह अपना प्रतिरोध प्रकट करता है। किसी वयस्क व्यक्ति में प्यार पाना बच्चे की एक विशेष आवश्यकता की ही सन्तुष्टि नहीं करता, बल्कि इसका अर्थ यह भी होता है कि बच्चे की इच्छा अन्य मामलों में भी उससे तृप्त हो सकती है। इस प्रकार बच्चा अपनी ही यौन-सहजवृत्ति का अनुपालन कर रहा होता है और साथ ही माता-पिता के अपने व्यवहार से उत्पन्न अपनी पसन्द को प्रबलता दे रहा होता है।

इन शिशु-सुलभ प्रवृत्तियों को अधिकांशत: नजर-अंदाज कर दिया जाता है, परन्तु उनमें से कुछ शैशव-अवस्था के बाद भी देखी जा सकती हैं। मेरे एक परिचित की आठ वर्षीय बेटी की माँ जब-जब किसी कारण खाने की मेज़ पर नहीं होती है, तब-तब वह उसकी अनुपस्थिति का लाभ उठाते हुए घोषित करती

है–"अब मैं मम्मा बनूँगी। कार्ल क्या तुम्हें कुछ सब्जी चाहिए?" खास तौर से तेज़ और चपल एक अन्य लड़की जो अभी चार साल की भी नहीं हुई है, उसमें यह बाल-मनोविज्ञान खूब झलकता है। वह साफ़ तौर पर कहती है: "अब मम्मी कहीं चली जाए। फिर डैडी मुझसे शादी कर लेंगे और मैं उनकी पत्नी बन जाऊँगी।" क्या यह इच्छा किसी न किसी रूप में इस सम्भावना को बाहर नहीं धकेल देती कि यह बच्ची अपनी माँ से प्यार करती है? यदि किसी लड़के को अपनी माँ के पास सोना तब-तब मिलता है जब-जब उसका पिता कहीं बाहर यात्रा पर गया हुआ होता है और फिर उसके लौट आने पर उसे वापस अपने कमरे में अकेले सोना पड़ता है तो ऐसे व्यक्ति के लिए जिसे वह कम पसन्द करता हो, उसके मन में यह इच्छा तत्परतापूर्वक पैदा हो जाती है कि वह (उसका पिता) सदा-सदा के लिए अनुपस्थित रहे ताकि अपनी प्यारी सी, सुन्दर सी मम्मा के साथ सोना उसे मिलता रहे। और तब पिता की मृत्यु उसकी इच्छा-पूर्ति का सीधा-सादा जरिया बन जाती है क्योंकि बच्चे के अनुभव उसे बताते हैं कि मर जाने वाले–जैसे दादाजी–हमेशा अनुपस्थित रहते हैं, कभी लौट कर नहीं आते।

लोगों के सपनों की पृष्ठभूमि बताती है कि उनके सपनों को इच्छा-पूर्ति वाले स्वप्न कहे जाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं रह जाता है। एक बार एक अवसाद ग्रस्त महिला ने मुझे अपना एक सपना सुनाया जो उसने चार वर्ष की आयु में देखा था: "एक लोमड़ी या लिंक (विडाल वंशी एक पशु) छत पर घूम रहा है, फिर कोई चीज़ नीचे आ गिरती है या वही आ गिरती है, और उसके बाद उसकी माँ को घर से बाहर ले जाया जा रहा होता है–मृत अवस्था में, जिस पर वह फूट-फूटकर रोती है।" मैंने तुरन्त उसे बता दिया कि उसका यह सपना अपनी माँ की मृत्यु होने की बचकानी इच्छा को पूरी करने वाला सपना है। इस सपने से जुड़ी कुछ अन्य बातों को वह इस तरह बताती है–जब वह बहुत छोटी थी तो किसी ने उसे 'लिंक्स-आई' भेंट में दी थी और जब वह तीन वर्ष की थी तब उसकी माँ के सिर पर एक ईंट आ पड़ी थी जिससे काफ़ी खून बहा था।

मेरा विस्तृत अनुभव बताता है कि बाद में साइको-न्यूरोटिक का रूप ले लेने वाले हर व्यक्ति के शैशव-मनोविज्ञान में उसके माता-पिता एक प्रमुख भूमिका निबाहते हैं। माता या पिता में से किसी एक के प्रति लगाव और दूसरे के प्रति अलगाव शुरुआती बचपन में पैदा होने वाले मनोवेगों की स्थायी सामग्री बन जाता है और बाद में ये ही न्यूरोसिस के कारकों में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान ले लेते हैं। परन्तु मैं ऐसा नहीं मानता कि इस मामले में साइको-न्यूरोटिक लोगों को सामान्य लोगों से बिल्कुल भिन्न माना जाए। मैं यह भी नहीं मानता कि उनमें स्वयं कोई बिल्कुल नई या विलक्षण बात पैदा कर लेने की खूबी होती है। बल्कि बहुत संभव यह है और सामान्य बालकों के अध्ययनों से यह पुष्ट भी हो गया है, कि अपने माता-पिता के प्रति कामुक या उग्र व्यवहार में

साइको-न्यूरोटिक लोग हमारे सामने ऐसा कुछ अधिक प्रकट नहीं करते जो अन्य अधिकांश बच्चे के मन में गहराई से या उल्लेखनीय रूप से कम होता हो।

घरवालों की मृत्यु वाले स्वप्न विशेष के बारे में मैं सपनों के सामान्य सिद्धान्तों की दृष्टि से उनके महत्त्व के बारे में कुछ शब्द अवश्य जोड़ना चाहता हूँ। ये सपने हमें एक अति असामान्य स्थिति का होना दिखाते हैं। ये हमें दिखाते हैं कि दमित इच्छा द्वारा रचित स्वप्न-विचार सैंसर होने से पूरी तरह बच निकलता है और ज्यों का त्यों स्वप्न रुप में परिवर्तित हो जाता है। इसे सम्भव बनाने में विशेष परिस्थितियों का हाथ अवश्य होता है। इन सपनों के बनने में निम्नलिखित दो कारक कार्य करते हैं: प्रथम, इस इच्छा को पालना हम कतई नहीं चाहते, हमारा दिल कहता है कि ऐसी इच्छा 'हमारे सपने में भी न आए।' इसलिए इस विसंगता के प्रति स्वप्न-सैंसरशिप तैयार नहीं रहता। दूसरा, इस विशेष मामले में, दमित व अकल्पित इस इच्छा के साथ दिन के अनुभवों के अवशेष द्वारा समझौता तो किया ही जाता है–अपने प्रियजन के जीवन के बारे में सरोकार रखने के रूप में। यह व्यग्रता अपने से मेल खाती इच्छा का हाथ थामे बिना सपने में प्रवेश नहीं कर सकती परन्तु यह इच्छा इस सरोकार के पीछे-पीछे छिपते-छिपाते चले आने में माहिर होती है जो दिन के दौरान पैदा होता है।

इन सपनों का सम्बन्ध व्यग्रता वाले सपनों से जोड़ने से पहले हम इस बारे में कुछ और जान सकते हैं। अपने किसी प्रियजन की मृत्यु के सपने में दमित इच्छा स्वयं को सैंसरशिप से बचाकर ले जाती है–और उस विद्रूपता से भी जिसके लिए यही सैंसरशिप ज़िम्मेदार होती है। तब सपने में वह दुखद भावुकता का वातावरण साथ-साथ चला आता है। इसी प्रकार कोई व्यग्रतापूर्ण स्वप्न तभी आता है जब सैंसरशिप पूरी तरह या आंशिक रूप से हावी हो जाती है, और दूसरी तरफ़ सैंसरशिप के इस हावीपन को तब और हवा लग जाती है जब किसी शारीरिक स्रोत के कारण व्यग्रता की वास्तविक अनुभूति पहले से ही वहाँ डेरा डाल चुकी हो। इस प्रकार यह साफ़ हो जाता है कि सैंसरशिप की विद्यमानता क्या प्रयोजन सिद्ध करती है और स्वप्न विद्रूपता भी करती हें। ऐसों यह इसलिए करती है ताकि व्यग्रता को या अन्य कष्टप्रद प्रभावों को बढ़ने से रोका जा सके।

सभी स्वप्न पूरी तरह अहं पर टिके होते हैं, हर स्वप्न में हमारा प्रिय अहं ही दृष्टिगोचर होता है–भले ही वह वेश बदले हुए हो। सपनों में पूरी होती इच्छाएँ निरपवाद रूप से इस अहं की ही इच्छाएँ होती हैं। किसी दूसरे व्यक्ति में रुचि रखने से सपने का पैदा होना मान लेना मन को केवल धोखा देना है।

दूसरी तरह के विचित्र या अजीबोगरीब सपने वे हैं जिनमें आप बड़े आराम से उड़ रहे होते हैं या गिरते हुए डर से मरे जा रहे होते हैं। इस बारे में मेरा अपना कोई अनुभव नहीं है, अत: जो कुछ मुझे कहना है वह मेरे द्वारा किए गए मनोविश्लेषणों से प्राप्त जानकारी पर ही आधारित है। प्राप्त जानकारी के

अनुसार ये सपने बचपन में पड़े प्रभावों द्वारा ही रचे जाते हैं, अर्थात् ये उन तेज़ गति से होने वाले खेलों से जुड़े होते हैं जिन्हें हम बचपन में बहुत पसन्द करते हैं। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने अपने या अपने भाई-बहन के बच्चों को हवा में न उछाला हो और फिर तेजी से नीचे आते उस बच्चे को अपनी खुली बाहों में लपक न लिया हो, या लेटकर उसे अपने पैरों पर बिठाकर घुटने मोड़ते व सीधे करते हुए 'झूझू के माऊँ के' न खिलाया हो, या उसे सिर तक उठाकर यह नाटक करते हुए कि वह उसके हाथ से छूट रहा है, उसे फिर से न पकड़ लिया हो? उछाले जाने वाले या लुढ़काये जाने वाले इन करतबों में बच्चे खुशी से किलकारी मारते हैं और इन्हें बार-बार करने की ज़िद निश्चित रूप से करते हैं। सालों बाद वे इसी सनसनाहट को सपनों में दुहराते हैं–बस अन्तर इतना होता है कि सपनों में वे उन्हें थामने वाले हाथों को हटा देते हैं ताकि वे पूरी स्वतंत्रता से उड़ या लुढ़क सकें। हम सभी जानते हैं कि बच्चे आगे पीछे हिलने-डुलने वाले और ऊपर-नीचे होने वाले खेलों को बहुत पसन्द करते हैं। जब वे सर्कस में जिमनास्टिक करतबों को देखते हैं तो उन्हें अपने इन खेलों की याद ताजा हो जाती है। थोड़े शब्दों में कहें तो: बचपन के उत्तेजक खेल ही सपनों में उड़ने, गिरने, लुढकने या डगमगाने के रूप में बार-बार दिखाई देते हैं।

इसलिए, मेरे पास इस बात को नकार देने का पर्याप्त कारण है कि नींद के दौरान त्वचा से पैदा हुई या फेफड़ों से पैदा हुई सनसनाहट जैसी कोई चीज़ उड़ने, गिरने या लुढ़कने वाले सपनों का कारण नहीं बनती है। मैं समझता हूँ कि ये सपने स्मृतियों से जुड़े होते हैं और इसीलिए ये स्वप्न-कथा होते हैं स्वप्न-स्रोत नहीं।

परीक्षा स्वप्न

जिस किसी ने अपने स्कूल की अन्तिम परीक्षा पास करके मैट्रिकुलेशन या हाई स्कूल का प्रमाण-पत्र पा लिया है वह ऐसे सपने की बार-बार चर्चा करता है जिसमें वह किसी व्यग्रतापूर्ण स्वप्न में बावला हो रहा होता है क्योंकि वह फेल हो गया है या उसे अपना कोर्स फिर से करने को कहा गया है। विश्वविद्यालय की डिग्री पा चुके लोग इस विचित्र स्वप्न को कुछ अलग तरह से देखते हैं जिसमें दिखाया जाता है कि उन्हें डॉक्टर की डिग्री नहीं मिल रही है जिसके लिए वह सपने में ही आवाज़ उठाता है कि वह तो वर्षों से प्रैक्टिस कर रहा है या पहले से ही विश्वविद्यालय में लेक्चरर है या वकीलों की फर्म में एक प्रतिष्ठित वकील है। ये बचपन की वे यादें हैं जो अभी तक मिटी नहीं हैं और जिनमें हमें अपने किसी गलत काम की सज़ा भुगतनी पड़ी है–ये वे यादें हैं जो आज हमें अपने कैरियर में छात्रावस्था जैसी कोप-भाजन की स्थिति में ला खड़ा करने पर पुन: पुन: ताजा हो जाती हैं। न्यूरोटिक लोगों की 'परीक्षा-व्यग्रता' भी इस बचकाने

डर द्वारा घनीभूत हो जाती है। जब हमारा छात्र-जीवन पूरा हो जाता है तब हमारे अध्यापक व अभिभावक हमें दण्ड देने के प्रति उदासीन हो जाते हैं, हमारे बाद के जीवन में 'कारण व प्रभाव' वाला कठोर सिलसिला हमारे आगे की सीखने की अवस्था पर हावी हो जाता है। और तब हम अपनी मैट्रिकुलेशन या डॉक्टर की डिग्री की परीक्षा का सपना देखते हैं–तो ऐसे में भला किसका दिल नहीं बैठ जाएगा? जब कभी हम डरते हैं कि हमारे किसी गलत काम या लापरवाही के कारण हमें सजा दी जा सकती है, भला-बुरा कहा जा सकता है–या जब कभी हमें उत्तरदायित्व का बोझ महसूस होता है–तब हमें ऐसे सपने आते हैं।

मेरा एक सहकर्मी, जिसने इस विषय में काफी अध्ययन किया है, उसने एक वैज्ञानिक चर्चा के दौरान उल्लेख किया कि उसके अनुभव बताते हैं कि परीक्षा-स्वप्न उन्हीं लोगों को आते हैं जिन्होंने वह परीक्षा पास कर ली है, उन लोगों को नहीं जो फेल हो गए हों या जिन्होंने पढ़ना ही छोड़ दिया हो। मेरे एक रोगी ने मैट्रीकुलेशन की परीक्षा जानबूझकर इस इरादे से नहीं दी कि वह इसे बाद में पास कर लेगा, परन्तु अपने कार्यालय में प्रोन्नति हेतु हुई परीक्षा में वह फेल हो गया जिसके कारण वह प्रोन्नत न हो सका। वह बताता है कि वह मैट्रीकुलेशन परीक्षा का सपना तो अकसर देखता है परन्तु प्रोन्नति वाली परीक्षा का कभी नहीं।

हमें इस बात की लगातार पुष्टि मिलती रही है कि परीक्षा वाला व्यग्रतापूर्ण सपना तभी दिखाई देता है जब कि स्वप्न द्रष्टा अगले दिन कोई जिम्मेदारी वाला काम करने जा रहा हो और उसमें उसे कुछ गड़बड़ होने की आशंका लग रही हो। सपने में लाई गई व्यग्रता का स्रोत सपने वाले दिन की बातों का अवशेष होता है।

डब्ल्यू. स्टैवेल पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 'मैट्रीकुलेशन परीक्षा के सपने' की व्याख्या की है। उनके अनुसार ऐसे सपने निरपवाद रूप से यौन अनुभवों और यौन परिपक्वता से जुड़े होते हैं। इस बात की पुष्टि मेरे अनुभवों ने भी की है।

अध्याय | 6

स्वप्न-क्रिया

सपनों की समस्या की गुत्थी को सुलझाने के अब से पहले के सारे प्रयासों ने केवल स्मृति में संजोई गई विषय-वस्तु को स्वप्न रूप में प्रकट होने तक की बात से ही सरोकार रखा है। इसी आधार पर वे स्वप्न की व्याख्या की जुगत में लगे रहे हैं और उन्होंने यदि कोई व्याख्या की भी है तो वे इसी आधार द्वारा जुटाए गए साक्ष्यों के अनुसार ही निष्कर्ष निकाल पाए हैं। इसीलिए हमें भिन्न-भिन्न प्रकार की धारणाओं के समूह से सामना करना पड़ रहा है क्योंकि हमारे लिए तो स्वप्न-कथा व हमारी विवेचना के बीच एक नया मानसिक उपादान स्वयं हस्तक्षेप करता है और वह है अप्रकट स्वप्न-कथा या स्वप्न-विचार जो केवल हमारी पद्धति से ही उपलब्ध हो पाते हैं। हमने प्रकट स्वप्न-कथा के बजाय अप्रकट स्वप्न-कथा से सपनों की गुत्थी सुलझाना विकसित किया है। इसीलिए यह एक नई कठिनाई के रूप में, एक बिल्कुल नए तरह के कार्य के रूप में हमारे सामने है अर्थात् प्रकट स्वप्न-कथा और अप्रकट स्वप्न-विचारों के बीच सम्बन्धों का पता लगाना व उनका अध्ययन-परीक्षण करना तथा उस प्रक्रिया को जानना-समझना जिसके द्वारा अप्रकट प्रकट रूप में परिवर्तित हो जाता है।

स्वप्न-विचार और स्वप्न-कथा दोनों ही स्वयं को एक ही विषय के दो भाषाओं में लिखे दो विवरणों की तरह प्रस्तुत करते हैं। इस बात को और अधिक स्पष्ट कहें तो स्वप्न-कथा हमारे स्वप्न-विचारों का एक भिन्न भाव में परिवर्तित प्रकट रूप है जिसके प्रतीकों और संरचना-नियमों को हम प्रकट व अप्रकट की तुलना द्वारा जान-समझ सकते हैं। स्वप्न-विचारों को हम बिना किसी झंझट के उसी क्षण समझ सकते हैं जब हम उन्हें निश्चित रूप से जान व पहचान लेते हैं। स्वप्न-कथा चित्र रूप में प्रस्तुत की जाती है जिसके प्रतीकों को हमें एक-एक करके विचारों की शब्दावली में बदलना होता है। इन प्रतीकों को उनके अर्थ के बजाय चित्रों की मान्यता के अनुसार पढ़ने का प्रयास करना निश्चय ही सही नहीं होगा। उदाहरण के लिए, मेरे सामने एक चित्र-पहेली है–एक घर है जिसकी छत पर एक नाव है, फिर एक अकेला अक्षर है, फिर एक दौड़ती हुई

आकृति है जिसका सिर नहीं है, इत्यादि। एक आलोचक के रूप में मैं इस चित्र को ऊलजलूल की संज्ञा दे सकता हूँ। किसी घर की छत पर नाव होने की कोई तुक नहीं होती और बिना सिर के कोई दौड़ नहीं सकता और वह भी घर से बड़े आकार वाला और यदि इसे किसी दृश्य के रूप में प्रस्तुत किया ही जाना है तो फिर अक्षर की क्या तुक? इस चित्र-पहेली का सही समाधान तभी सम्भव है जब मैं इसके पूरे स्वरूप पर या इसके किसी टुकड़े पर कोई आपत्ति न उठाऊँ, आलोचना न करूं, बल्कि हर छवि को एक अक्षर या शब्द देना शुरु करूँ जो स्वयं को किसी संकेत या सम्बन्ध द्वारा निरूपित कर रहा हो। इस प्रकार बने शब्दों को यदि मिलाकर रखा जाए तो फिर वे निरर्थक नहीं बैठते बल्कि किसी बहुत सुन्दर व सार्थक लोकोक्ति की रचना करते हैं। स्वप्न भी इसी चित्र-पहेली की तरह होता है, परन्तु हमारे पूर्ववर्ती विश्लेषकों ने स्वप्न-व्याख्या की कला में चित्र-पहेली की एक कलाकृति समझने की गलती की है। यह बात सचमुच ही बेतुकी और बेकार प्रतीत होती है।

संक्षिप्तीकरण

किसी स्वप्न-कथा की तुलना स्वप्न-विचारों से करते समय विवेचनकर्ता को जो पहली बात स्पष्ट होती है वह यह है कि संक्षिप्तीकरण का काम बड़े कमाल से किया गया होता है। स्वप्न-विचारों की सुदीर्घता व बहुलता की तुलना में स्वप्न छोटा, बौना और संक्षिप्त होता है। किसी सपने को अगर लिखा जाए तो वह आधा पृष्ठ ही भर पाएगा, जबकि विश्लेषण में समाहित उसके स्वप्न-विचारों को लिखने के लिए छः, आठ या बारह पृष्ठों की आवश्यकता पड़ सकती है। स्वप्न–स्वप्न के अनुसार यह अनुपात बदल सकता है, परन्तु मेरा अनुभव बताता है कि यह रहता इसी तरह है। यह बता देना हम आवश्यक समझते हैं कि कोई भी इस बात से सुनिश्चित नहीं हो सकता कि उसने किसी स्वप्न की व्याख्या पूरी तरह कर ली है–भले ही उसके द्वारा सुलझाई गई गुत्थी सन्तोषजनक और त्रुटिरहित लगती हो–परन्तु इस बात की सम्भावना सदा बनी रहती है कि उसी स्वप्न का कोई और अर्थ भी सामने आ सकता है। इस प्रकार यदि यथातथ्य कहा जाए तो संक्षिप्तीकरण की मात्रा निर्धारित नहीं की जा सकती। इस दावे का अपवाद हो सकता है कि स्वप्न-कथा और स्वप्न-विचारों के बीच गड़बड़ाया हुआ अनुपात इस निष्कर्ष को सही ठहराता है कि मानसिक सामग्री का पर्याप्त संक्षिप्तीकरण तभी होता है जब सपना अपना रूप-आकार ले रहा होता है। हमें अकसर ऐसा लगता है कि हम सारी रात न जाने कितने सपने देखते रहे हैं परन्तु जागने पर हम उनमें से अधिकांश भूल जाते हैं। तभी तो जागने पर याद रहा सपना हमें सारी स्वप्न-क्रिया का बचा-खुचा अंश प्रतीत होता है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि किसी भी स्वप्न को ज्यों का त्यों सुनाया या

बताया जा सकता है, बशर्ते हम जागते ही उसे याद करने का प्रयास करें वरना तो दिन चढ़ने के साथ-साथ वह धुँधला होता चला जाता है। यदि सपने का एक बड़ा भाग स्मृति से सचमुच तिरोहित हो जाता है तो हम स्वप्न-विचारों की पूरी संखला तक पहुँच पाने से वंचित रह जाते हैं। इस बात की अपेक्षा करना औचित्यपूर्ण नहीं है कि सपने के जो अंश गुम हो गए हैं उनका सन्दर्भ भी उन्हीं विचारों से जोड़ दिया जाए जिन्हें हम याद रह गए स्वप्न-अंश के विश्लेषण से जान गए हैं।

इतना कुछ जान लेने पर पाठकों के मन में यह संदेह उठ सकता है कि क्या यह मान लेना उचित है कि तमाम विचार नींद के दौरान सक्रिय हो जाते हैं और सपनों को रुप-आकार देने में भाग लेने लगते हैं? क्या इस बात की भरपूर संभावना नहीं है कि विचारों के वे नए-नए संयोजन विश्लेषण के दौरान उभर कर सामने आ जाते हैं जिन्होंने सपने को रुप-आकार देने में कोई भूमिका ही न निबाही हो? इस आपत्ति का मैं सकारण उत्तर दूँगा। यह सच है कि विचारों के अलग-अलग संयोजन विश्लेषण के दौरान पहले उभर कर आते हैं परन्तु हम हमेशा स्वयं को इस सन्देह से दूर कर सकते हैं कि ऐसे नए-नए संयोजन केवल उन्हीं विचारों के बीच आते हैं जो कि स्वप्न-विचारों में किसी और तरह पहले से ही सम्बन्ध रखते हों। इस तरह हम कह सकते हैं कि नए संयोजन वे गौण तत्त्व हैं, शॉर्ट सर्किट हैं जो दूसरों के अस्तित्व के साथ अस्तित्व में आ सके हों और सम्बन्धों के अधिक मौलिक स्वरुप हों। विश्लेषण द्वारा विचारों के वर्गों की विशाल विपुलता के ऊपर से हटाए गए पर्दे से हम यह मानने के लिए बाध्य हो जाते हैं कि वे सपने को गढ़ने और उसे रुप-आकार देने में सक्रिय रहे हैं क्योंकि यदि हम उन विचारों को एक-एक करके देखते जाएँ जो कि प्रथम दृष्टया स्वप्न को गढ़ने में कोई भूमिका निबाहते प्रतीत नहीं होते तो हमारे हाथ अचानक वह विचार आ जाता है जो स्वप्न-कथा में प्रकट हुआ है और जिसकी व्याख्या करना टाला नहीं जा सकता, परन्तु जो इस विचार-श्रृंखला को देखे बिना हाथ भी नहीं आता।

परन्तु हम स्वप्नद्रष्टा की स्वप्न देखने से पहले की मानसिक अवस्था की कल्पना कैसे करें? क्या सारे के सारे स्वप्न-विचार गल-बहियाँ डाले हुए वहाँ पहले से ही बैठे होते हैं या वे एक दूसरे का पीछा करते हुए आ जाते हैं या विचार-श्रृंखलाओं की बहुत सारी रेल विभिन्न दिशाओं से आकर एक स्टेशन पर इकट्ठा हो जाती हैं? मैं नहीं समझता कि इस बिन्दु पर आकर स्वप्न-रचना के समय की मानसिक अवस्था की कोई लचर अवधारणा बनाई जाए। परन्तु, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारा सरोकार केवल अवचेतन विचारणा से है और यह भी कि यह प्रक्रिया उस प्रक्रिया से आसानी से अलग पहचानी जा सकती

है जो हमारे अन्दर चेतन मन द्वारा सजगता पूर्वक किए जा रहे चेतन चिन्तन रूप से होती है।

कुछ भी हो, यह तथ्य अकाट्य है कि स्वप्न-रचना संक्षिप्तीकरण पर आधारित होती है। तो, यह संक्षिप्तीकरण प्रभावी कैसे होता है?

यदि हम गौर करें कि स्वप्न-विचारों में से केवल सीमित संख्या में छाँटे गए विचार ही अपने संकल्पनात्मक तत्त्वों में से किसी एक के माध्यम से सपने में अपना प्रतिनिधित्व करते हैं तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि संक्षिप्तीकरण कुछ-कुछ छोड़ देने की प्रक्रिया द्वारा क्रिया जाता है और ऐसी दशा में सपना स्वप्न-विचारों का यथार्थ व प्रति-अंश रूपान्तरण या प्रदर्शन नहीं रहता बल्कि वह उनकी आधी-अधूरी और गड्डमड्ड प्रस्तुति हो जाता है। यह धारणा अभी यूँ तो अधपकी है, परन्तु थोड़ी देर के लिए हम इसे मान लेते हैं और स्वयं से प्रश्न करते हैं : यदि स्वप्न-कथा में थोड़े से ही स्वप्न-विचार प्रवेश कर पाते हैं तो उनके चयन को निर्धारित करने की शर्तें क्या-क्या होती हैं?

सपनों के संक्षिप्तीकरण का कार्य तब साफ़-साफ़ दिखाई पड़ता है जब यह शब्दों या नामों को वस्तु रूप में दर्शाता है। सपने में शब्द आमतौर पर वस्तु बन जाते हैं और इसीलिए उसी तरह के संयोजनों में बदल जाते हैं। तभी तो इस प्रकार के सपनों के परिणाम हास्यास्पद और ऊट-पटांग शब्द-संयोजन के रूप में निकलते हैं।

सपनों में शाब्दिक रूपान्तरण बहुत कुछ ऐसा ही होता है जैसा संविभ्रम में होता है जो कि हिस्टीरिया, भूत-प्रेत या सम्मोहन वाले मामलों में देखा जा सकता है। सपनों के निरर्थक शब्द-विन्यास का विश्लेषण स्वप्न-रचना में प्रभावी संक्षिप्तीकरण की मात्रा को दर्शाने का सही पैमाना होता है। थोड़े से विश्लेषणों से इस नतीजे पर पहुँचना गलत होगा कि ऐसा कभी-कभी या अपवाद स्वरूप ही होता है। सपने में जब कुछ बोला जाता है–जो कि विचार नहीं होता–तो यह निरपवाद रूप से देखा गया है कि स्वप्न में कही गई बात स्वप्न-सामग्री की किसी कही गई बात से निकल कर आती है। उसकी शब्दावली या तो पूरी तरह संजोकर रखी गई होती है या कहने में थोड़ा फेर-बदल कर दी गई होती है। स्वप्न में कही गई बात प्राय: सचमुच बोली गयी बातों के विभिन्न टुकड़ों को जोड़कर बनाई जाती है, इसीलिए शब्द तो वही रहते हैं, परन्तु उसका भाव अस्पष्ट हो जाता है या उन शब्दों से भिन्न हो जाता है। प्राय: देखा गया है कि सपने में कही गई बात उस घटना की ओर संकेत कर सकती है जिसके लिए वह सचमुच कही गई और जिसकी स्मृति बनी रही।

विस्थापन का कार्य

स्वप्न–संक्षिप्तीकरण के अध्ययन के दौरान पाया गया है कि यह बिन्दु भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। हम देख सकते हैं कि स्वप्न-कथा में स्वयं को अनावश्यक रूप से आवश्यक घटक बना बैठने वाले कुछ तत्त्व स्वप्न-विचारों में किसी भी तरह ऐसी कोई भूमिका नहीं निबाह रहे होते हैं। साथ ही, इसका विलोम भी सच है कि स्वप्न-विचारों की आवश्यक प्रतीत होने वाली विषय-वस्तु का स्वप्न में प्रकट होना कतई आवश्यक नहीं है। स्वप्न का 'वास्तविक केन्द्र' तो कहीं अन्यत्र होता है। सपने की कहानी उन चीज़ों से गढ़ी जाती है जिनका स्वप्न-विचार के मुख्य मुद्दे से कुछ लेना-देना नहीं होता। जैसे कि मेरे अंकल वाले सपने में खूबसूरत दाढ़ी उसका मुख्य मुद्दा नज़र आती है, परन्तु महानता की किसी तमन्ना से उसका कोई औचित्य पूर्ण सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता जिसे हम स्वप्न विचार का केन्द्र-बिनु मान बैठे हैं। ऐसे सपने सहज भाव से 'विस्थापन' का आभास देते हैं। स्वप्न-विचार और स्वप्न-कथा के बीच इस नए और एकदम परस्पर विरोधी सम्बन्ध को पहचानना एक बार तो शायद चकित ही कर देगा। अपने सामान्य जीवन की मानसिक प्रक्रिया में यदि हम यह पाते हैं कि अनेक विचारों में से एक विचार छाँट लिया जाता है और वही हमारे चेतन मन पर उस समय विशेष प्रभाव रखने लगता है तो इस बात को हम सबूत की तरह स्वीकार लेते हैं कि पसन्द की मात्रा के रूप में एक विशेष मानसिक महत्त्व उस छाँटे गए विचार को दे दिया जाता है। हमारा अन्वेषण अब यह है कि स्वप्न-विचार में इस विशेष तत्त्व के महत्त्व को स्वप्न-रचना में कोई स्थान नहीं दिया जाता क्योंकि इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हमारा निर्णय तुरन्त यह बता देता है कि स्वप्न-विचार का कौन-सा तत्त्व सर्वाधिक महत्त्व का है। स्वप्न-रचना में हमारी घनी-पसन्द से प्रभावी बन चुके आवश्यक घटकों के साथ दोयम दर्जे जैसा बर्ताव किया जा सकता है, और उनके स्थान पर उन अन्य घटकों को रख दिया जा सकता है जो कि स्वप्न विचारों में निश्चित रूप से दोयम दर्जे के थे। प्रथम-दृष्टया तो ऐसा लगता है कि मानो व्यक्ति के विचारों की मानसिक अनुभूति स्वप्न-रचना के लिए उन्हें चयनित करने में कोई महत्त्व ही न रखती हो, बल्कि निश्चयात्मकता में उनका कई गुना कम या अधिक होना महत्त्वपूर्ण होता हो। इससे हम ऐसा सोच सकते हैं कि जो कुछ स्वप्न में प्रवेश कर लेता है वह वह नहीं होता जो स्वप्न-विचारों के लिए महत्त्वपूर्ण होता है बल्कि वह होता है जो उनमें कई गुना होता है, परन्तु इस अनुमान से स्वप्न-रचना के प्रति हमारी समझ कुछ अधिक आगे नहीं बढ़ती। शुरू करने के लिए हम यह नहीं मान सकते कि गुणात्मक निर्णय और निजी महत्त्व–ये दोनों हेतु स्वप्न के चयन को प्रभावित कर सकते हैं, जब तक कि वे एक ही दिशा में रत न हों। स्वप्न-विचारों में रहने वाली वे ही धारणाएँ शायद सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होती है जिनकी पुनरावृत्ति सबसे अधिक होती है, क्योंकि व्यक्ति के स्वप्न-विचार इन्हीं को केन्द्र बनाकर कौंधते रहते हैं। परन्तु फिर भी, स्वप्न इन अच्छी तरह से ज़ोर दिए गए तथा अत्यधिक जमाए गए

घटकों को ठुकरा सकता है और उन अन्य अनेक घटकों को उठा सकता है जिन्हें खूब अच्छी तरह जमाया गया हो जिन पर बहुत बल दिया गया हो।

तथापि, सपनों के अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि गुणात्मक निर्णय–जो कि स्वप्न द्वारा किए जाने वाले चयन में निर्णायक भूमिका निबाहता है–शायद स्वप्न-रचना करने में हमेशा मुख्य भूमिका नहीं निबाहता, बल्कि यह उस मानसिक शक्ति का गौण उत्पाद होता है जो हमें अभी तक अज्ञात है। फिर भी, स्वप्न में प्रवेश पाने वाले वैयक्तिक घटकों के लिए इसका होना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हम देख सकते हैं कि जिन मामलों में गुणात्मक निर्णय स्वप्न-सामग्री से सरलतापूर्वक आगे नहीं बढ़ता वहाँ यह कुछ प्रयास से आगे बढ़ जाता है।

इस तरह, यह बहुत सम्भव है कि स्वप्न-कार्य में कोई मानसिक शक्ति कार्य करती हो और यह स्वप्न-रचना की प्रक्रिया में वैयक्तिक घटकों की मानसिक प्रबलताओं के स्थानान्तरण तथा विस्थापन के रूप में यह काम करती हो। और इसी का परिणाम होता है स्वप्न-कथा और विचार-कथा के बीच पाठ भेद हो जाना। जिस प्रक्रिया का हम यहाँ अनुमान लगा रहे हैं वह वास्तव में स्वप्न क्रिया का सर्वाधिक आवश्यक भाग है। इसे स्वप्न-विस्थापन कहना ठीक होगा। स्वप्न विस्थापन और स्वप्न-संक्षिप्तीकरण ऐसे दो प्रमुख कलाकार हैं जिन्हें स्वप्न की संरचना करने का श्रेय दिया जा सकता है।

मेरे विचार से स्वप्न-विस्थापन द्वारा स्वयं को प्रकट करने वाली मानसिक शक्ति को आसानी से पहचाना जा सकता है। इस विस्थापन का परिणाम यह होता है कि स्वप्न-कथा हमारे स्वप्न-विचारों का केन्द्र नहीं रह जाती और सपना केवल हमारे अवचेतन में बसी इच्छाओं को विद्रूपित स्वरूप में प्रस्तुत कर देता है। हम स्वप्न-विद्रूपण को देख चुके हैं, इसका पीछा करते-करते सैंसरशिप तक हो आए हैं। स्वप्न-विस्थापन इस विद्रूपण का प्रमुख साधन रहता है। हमें यह मान लेना चाहिए कि स्वप्न-विस्थापन इसी सैंसरशिप–अर्थात् मन की भीतरी सुरक्षा-पंक्ति के प्रभाव से पैदा होता है। अत: स्वप्न-व्याख्या करते समय हमें यह ध्यान रखना होगा कि स्वप्न-विस्थापन एक निर्विवाद सत्य है।

स्वप्न-प्रस्तुतिकरण के माध्यम

हमने देखा है कि संक्षिप्तीकरण और विस्थापन–ये दो ऐसे घटक हैं जो स्वप्न-सामग्री को प्रकट स्वप्न-कथा के रूप में परिवर्तित कर देने का काम करते हैं, परन्तु आगे गवेषणा के दौरान हम ऐसी दो अन्य स्थितियों को देखेंगे जो सपने में प्रकट होने से पहले सामग्री को छाँटने में अपने निर्विवाद प्रभाव का प्रयोग करती है। परन्तु इससे पहले हम उस प्रक्रिया पर एक नजर डालेंगे जिसके द्वारा सपनों

का विश्लेषण किया जाता है। इसके लिए किसी एक स्वप्न को उदाहरण के लिए लिया जा सकता है, जैसा कि मैंने पीछे दूसरे अध्याय में इर्मा के इंजेक्शन वाले सपने में किया है जिसमें मैंने अपने उन स्वप्न-विचारों का सम्मिश्रण किया जिन्हें मैंने खोज निकाला पर और उनसे स्वप्न की संरचना को खड़ा किया था– अर्थात् स्वप्न के तथ्यों, तत्त्वों और घटकों को संबद्ध करके स्वप्न-व्याख्या में सहायता की थी।

इस प्रकार स्वप्न-विचारों से संयोजन करके स्वप्न की संरचना खड़ा करने के अपने प्रयासों से मैंने जाना है कि व्याख्या द्वारा उत्पन्न हुई सामग्री के मूल्यों में भिन्नता रहती है। इसके एक भाग में मूलभूत स्वप्न-विचार पाए जाते हैं जो– यदि स्वप्न-सैंसरशिप न हो तो–पूरा स्वप्न ही बदल देते हैं और स्वयं ही उसका विकल्प भी बन जाते हैं। दूसरे भाग को कम ही महत्त्व दिया जाता है और न ही इसके दावे को कोई मूल्य दिया जाता है कि इन सारे विचारों ने ही स्वप्न की रचना करने में भागीदारी की है; इसके विपरीत वे उन अभिप्रायों को शामिल कर लेते हैं जो स्वप्न के बाद स्वप्न तथा व्याख्या के बीच होने वाले अनुभवों के साथ जुड़ जाते हैं। इस भाग में प्रकट स्वप्न-कथा से अप्रकट स्वप्न-कथा तक जाने वाले सूत्र ही विद्यमान नहीं रहते बल्कि व्याख्या के दौरान इन सूत्रों की जानकारी तक पहुँचने वाली मध्यवर्गी तथा निकटवर्ती घड़ियाँ भी इसमें रहती हैं।

इस जटिल संरचना का एक-एक भाग एक दूसरे के साथ नानाविध तर्कसंगत सम्बन्धों के साथ स्वाभाविक रुप से खड़ा हुआ है। ये ही अग्रभाग रचते हैं और पृष्ठभूमि भी। ये ही भटकाव पैदा करते हैं और समझाव भी और वे ही तर्क तथा आपत्तियों की दशा व दिशा तय करते हैं। जब इन स्वप्न-विचारों का पूरा पुंज ऐसी स्वप्न-क्रिया के दबाव के वशीभूत हो जाता है जिससे सारे अवयव तथा पुर्ज़े उलट-पलट हो जाते हैं, छिन्न-भिन्न हो जाते हैं, तब फिर घालमेल करके उन्हें एकाकार कर दिया जाता है–कुछ-कुछ साथ-साथ तैरते-बहते हिम खंडों की तरह–तब प्रश्न पैदा होता है कि फिर उस तर्कसंगत सम्बन्ध का क्या होता है जो अब तक इस संरचना की रुपरेखा बनाता आया है? इसका उत्तर है कि स्वप्न के पास स्वप्न-विचारों के बीच के इस तर्क संगत सम्बन्ध को प्रस्तुत या प्रकट करने का कोई साधन नहीं होता। स्वप्न-क्रिया द्वारा नष्ट कर दी गई संगतता को पुन: हासिल करने की जिम्मेदारी स्वप्न की व्याख्या के भरोसे छोड़ दी जाती है।

यहाँ शायद यह आपत्ति उठाई जाए और इस दावे को चुनौती दी जाए कि हमारे सपने तर्कसंगत सम्बन्धों को दर्शाए बिना भी काम चला सकते हैं। ऐसे सपने होते भी हैं जिनमें नितान्त जटिल बौद्धिक कार्यकलाप बिलकुल उसी तरह किए जाते हैं जिस तरह हम जागृत अवस्था में उन्हें करते हैं, जैसे किसी बात के पक्ष या विपक्ष में बहस करना लतीफ़े सुनाना, तुलना करना आदि। परन्तु

यहाँ भी जो दिखता है वह छलावा होता है। यदि इस प्रकार के सपनों का विश्लेषण किया जाता है तो जो तथ्य निकल कर सामने आएगा वह यही होगा कि ये तमाम बातें स्वप्न-सामग्री हैं न कि उस सपने की गतिविधि का बौद्धिक प्रस्तुतिकरण। स्वप्न-विचारों की विषय-वस्तु तो हमारे सपनों में प्रकट विचारणा द्वारा दोहराई जाती है, परन्तु उन स्वप्न-विचारों का परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं होता जिनके सम्बन्धों को तय करने में विचारणा मौजूद रहती है। मैं इसके कुछ उदाहरण दूँगा, परन्तु जो तथ्य आसानी से स्थापित किया जा सकता है वह यह है कि स्वप्न में कही जाने वाली तमाम बातें उन बातों का अपरिवर्तित या लेशमात्र परिवर्तित प्रतिकृति (नकल) होती है जो स्मृतियों में आती रहती हैं। ऐसा अकसर होता है कि कही गई बात स्वप्न-विचारों में समाविष्ट घटना की ओर केवल संकेत करती है जबकि स्वप्न का अर्थ बिल्कुल भिन्न होता है।

यह मेरा अनुभव रहा है–और इसका कोई अपवाद भी मुझे नहीं मिला है–कि हर स्वप्न व्यक्ति की स्वयं की अभिव्यक्ति होता है। सपने पूर्णतया अहंवादी होते हैं। जिन मामलों में अपनी अहमन्यता के बजाय कोई अजनबी व्यक्ति स्वप्न-कथा में भूमिका निबाह रहा होता है वहाँ यह सरलता से देखा जा सकता है कि तादात्म्यता द्वारा उस व्यक्ति में मेरा ही अहम काम कर रहा होता है।

स्वप्न को प्रस्तुतिकरण योग्य बनाने पर ध्यान

अब तक हम इस बात पर चर्चा कर आए हैं कि हमारा सपना हमारे स्वप्न-विचारों के बीच तालमेल किस तरह प्रदर्शित करता है, परन्तु अब हम अपनी इस छानबीन को आगे इस प्रश्न तक ले जा रहे हैं कि स्वप्न-सामग्री स्वप्न-रचना के प्रयोजन से स्वयं किस परिवर्तन से गुजरती है। हम अब तक यह जान चुके हैं कि अपने अनेकानेक सम्बन्धों के उजागर हो जाने के बाद स्वप्न-सामग्री दबाव में आ जाती है, जबकि उसी समय इसके घटकों के घनत्व का विस्थापन इस सामग्री का एक नया मूल्यांकन करने लगता है। यह विस्थापन किसी एक विशेष अवधारणा के स्थान पर दूसरा विकल्प दिखा देता है जो कि किसी न किसी रूप में अपने मूल से जुड़ा रहता है। यह विस्थापन संक्षिप्तीरकरण को सरल-सुगम करने के लिए किया जाता है जिससे दोनों घटकों के बजाय उनके बीच का उभय निष्ठ मध्य घटक स्वप्न में प्रवेश कर जाए। विस्थापन का कोई और प्रकार अभी तक उल्लिखित नहीं किया गया है, परन्तु विश्लेषणों से हमने जाना है कि एक और प्रकार का विस्थापन भी होता है और वह प्रसंगाधीन विचार के मौखिक भावों की अदला-बदली में स्वयं को प्रकट करता है।

स्वप्न-रचना में होने वाला यह दूसरे प्रकार का विस्थापन सिद्धान्त रूप में तो बहुत दिलचस्प है ही, साथ ही यह उन अजीबोगरीब और बेसिरपैर के दृश्यों को

समझा पाने में भी सटीक बैठता है जिनका वे स्वप्न स्वांग भर लेते हैं। विस्थापन आमतौर पर कुछ इस तरह घटित होता है कि स्वप्न-विचार के रंगहीन और अमूर्त भाव को एक चित्रमय व मूर्तरूप में बदल दिया जाता है। इस विनिमय द्वारा न केवल उसके प्रस्तुतिकरण को आगे बढ़ाया जा सकता है बल्कि संक्षिप्तीकरण और सैंसरशिप का कार्य भी पूरा कर लिया जाता है। अमूर्त भाव और अदृश्य स्वप्न-विचार जब चित्रकथा रुप में परिवर्तित कर दिए जाते हैं तो स्वप्न-रचना के लिए आवश्यक स्वप्न-सामग्री और इस नए प्रस्तुतिकरण के बीच में संपर्क-सूत्र अधिक सुलभ हो जाते हैं।

अभिव्यक्ति की अस्पष्टता के कई उदाहरण मैं पीछे दे आया हूँ (जैसे इर्मा वाले सपने में–"उसका मुँह बिना किसी परेशानी के खुल जाता है") मेरे पास इस तरह के बहुत सपने हैं परन्तु उन सभी को यहाँ प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है। हर बात एक निष्कर्ष की ओर इंगित करती है कि हम यह न मान बैठें कि स्वप्न-रचना में मानसिक अवस्था की कोई खास तरह की प्रतीकात्मक गतिविधि काम कर रही होती है, बल्कि इसके विपरीत सपना तो अवचेतन मन की विचारणा में पाए जाने वाले बने बनाए प्रतीकों का प्रयोग भर कर रहा होता है क्योंकि प्रस्तुतिकरण में सरल-सहज होने के कारण और अधिकांशत: सैंसरशिप में छोड़ दिए जाने के कारण ये प्रतीक स्वप्न-रचना की आवश्यकताओं को अधिक प्रभावी ढंग से सन्तुष्ट करते हैं।

प्रतीकों द्वारा स्वप्न-प्रस्तुति : कुछ और विचित्र स्वप्न

प्रतीकों के महत्त्व को मैंने शुरू से ही पहचान तो लिया था, परन्तु मेरे अनुभव धीरे धीरे इनके महत्त्व की पुष्टि करते चले गए। मनोविश्लेषण में अनुभव के बढ़ते कदमों ने हमें उन रोगियों की खोज करने की क्षमता प्रदान कर दी जिन्होंने स्वप्न के प्रतीकों को अविलम्ब समझ लेने की आश्चर्यजनक सूझ-बूझ दिखाई है। प्रतीकात्मक के अर्थ की विवेचना के लिए तथा अभी तक अनेक अनसुलझी स्वप्न सम्बन्धी समस्याओं पर विमर्श करने के लिए हमें स्वप्न-विश्लेषण की चार दीवारी के पार दूर तक जाना होगा।

स्वप्न इस प्रतीकात्मकता का प्रयोग अपने अप्रकट विचारों को बदले गए वेश में प्रस्तुत करने के लिए करते हैं। इस प्रकार प्रयुक्त प्रतीकों में से अनेकों का, बल्कि सभी का अर्थ एक समान रहता है। परन्तु हमें मानसिक सामग्री के विचित्र लचीलेपन को ध्यान में रखना होगा। स्वप्न-कथा में अकसर प्रतीकों का अर्थ-निरूपण प्रतीकात्मक रूप से न करके वास्तविक अर्थ के रूप में करना पड़ता है, और कई बार ऐसा भी होता है कि स्वप्न-द्रष्टा अपनी विशेष स्मृति को साथ लेकर सारी बात अपने हाथों में रखता है।

स्वप्न-प्रतीकात्मकता, निश्चित रूप से, स्थापित तो हो गई है–और हैवलॉक एलिस भी स्वीकार करता है कि हमारे स्वप्न निःसन्देह रूप से प्रतीकों से भरे होते हैं–परन्तु इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि सपनों में प्रतीकों का होना उसके विश्लेषण को जहाँ सरल बनाता है वही उसे दुरुह-दुर्गम भी बना देता है। जहाँ तक स्वप्न-कथा के प्रतीकों का सम्बन्ध है, वहाँ स्वप्न-द्रष्टा के असीम जुड़ाव हमें अकसर दुविधा में डाल देते हैं।

स्टेकल के अनुसार सपने में सीधा और उलटा अर्थात् दायाँ और बायाँ–इन्हें नैतिक आधार पर समझा जाना चाहिए–'दाहिना मार्ग हमेशा सही बात के लिए और बायाँ मार्ग अपराध के अभिप्राय के लिए लिया जाना चाहिए। प्रतीकों में यौनांगों के प्रतीकों की भरमार है। यात्री का लगेज निःसन्देह रूप से स्वप्न-द्रष्टा के अपने यौनांगों का प्रतीक होता है। स्वप्न में प्रकट होने वाली संख्याएँ निश्चित चीज़ों की प्रतीक होती हैं, जैसे तीन की संख्या पुरुष यौनांगों की। शरीर के अंग भी यौनांगों के प्रतीक रूप में आते हैं जैसे हाथ या पैर पुरुष के और मुँह, कान और आँख स्त्री जननांगों के प्रतीक होते हैं। बिल्डिंग, सीढ़ियाँ भी जननांगों के प्रतीक हैं और फूल भी। सभी लम्बाकार चीज़ें, घड़ी, पेड़ का तना, छाता (इसका खोला जाना स्तम्भन का प्रतीक है), सभी धारदार और लम्बे हथियार-चाकू छुरा, माला पुरुष के प्रतीक हैं जबकि छोटे बक्स, तिजोरी, अलमारी, तन्दूर, कोई छेद, गड्ढा या खोखला स्थान, जलयान और सभी तरह के बर्तन–ये सब स्त्री जननांगों के प्रतीक हैं। कमरा स्त्री का द्योतक है और ताला-चाबी को बताने की आवश्यकता नहीं है। कमरों में से गुजरना जनानखाने या विवाह का प्रतीक है। खड़ा ढलान, सीढ़ियाँ और ज़ीना तथा इनमें ऊपर-नीचे आना-जाना यौन क्रिया का प्रतीक हैं। मेज़–चाहे उस पर मेज पोश हो या न हो, और बोर्ड स्त्री के लिए प्रयुक्त होते हैं। वस्त्रों में–महिलाओं का हैट और पुरुषों की नैकटाई पुरुष के लिंग का प्रतीक होते हैं और सभी मशीनें, हथियार व औजार भी, जैसे हल का फाल, हथौड़ा, बन्दूक, रिवाल्वर, खंजर, तलवार आदि। स्वप्न में देखे गए दृश्य–विशेषकर पुल तथा जंगल से भरे पर्वत जननांगो को इंगित करते हैं और छोटे बच्चे भी। सपने में बच्चे के साथ खेलना या उसे पीटना हस्तमैथुन का द्योतक होता है। गंजापन, बाल कटाना, दाँत टूटना और सिर कटना खस्सी होना या जनन निरोध दर्शाता है। मिथकों और लोकोंक्तियों की तरह ही सपने में अनेक पशु जननांगों के प्रतीक हैं, जैसे मछली, घोंघा, बिल्ली, चूहा पुरुष जननेन्द्रियों के लिए, और सबसे ऊपर साँप जो कि पुरुष लिंग का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रतीक है। किसी कीड़े द्वारा काटा जाना गर्भवती हो जाना है। वायुयान अपनी उड़ान व आकार के कारण पुरुष जननांग का प्रतीक है। दरअसल स्टैकल ने तो इस विषय पर एक पूरी किताब लिख दी है जिसमें इन प्रतीकों का विपुल भंडार है। उसका

तो कहना है कि ऐसा प्रतीक है जिसे पुल्लिंग या स्त्रीलिंग के रूप में व्यक्त न किया जा सके।

सार-संक्षेप में कहें तो स्वप्न में आया कोई विचार ऐसा नहीं होता जो सैक्स या इच्छा को दर्शाने वाला न होता हो।

बेतुके सपने

अनेक सपने बड़े बेतुके होते हैं, जैसे एक व्यक्ति को सपने में दिखाई दिया कि उसके पिता रेल दुर्घटना में घायल हो गए हैं और वह उन्हें अस्पताल में एक बिस्तर पर घायल अवस्था में पड़ा देख रहा है–जबकि वास्तव में उसके पिता की मृत्यु कई वर्ष पहले हो चुकी है। इसी तरह एक ऐसे व्यक्ति को अपने पिता घर में पहले की तरह दिखाई दिए जिसने उनके अंत समय तक उनकी खूब सेवा की थी।

इस प्रकार के या अन्य ऐसे सपने हमारे स्वप्न-विचारों में लिए गए किसी निर्णय की पुनरावृत्ति मात्र होते हैं। यह एक ऐसी मानसिक गतिविधि के अन्तर्गत होता है जो स्वप्न-रचना में अपना योगदान तो देती प्रतीत होती है परन्तु विभिन्न स्रोतों के स्वप्न घटकों को मिला जुला कर एक साफ-सीधा अर्थभरा सपना बना देती है।

अध्याय 7

स्वप्न-प्रक्रिया का मनोविज्ञान

दूसरों द्वारा मुझे सुनाए गए सपनों में एक सपना ऐसा है जो इस मुद्दे में विशेष ध्यान देने योग्य है। यह सपना मुझे एक महिला रोगी ने सुनाया था और उसने इसे स्वप्न सम्बन्धी किसी व्याख्यान में सुना था। इसका मूल स्रोत मुझे नहीं मालूम। इस स्वप्न ने उस महिला पर बहुत प्रभाव डाला था–इतना अधिक कि उसने इसकी नकल तक कर डाली, यानि इस सपने की ख़ास-ख़ास बातों को उसने अपने सपने में पुन: देखा ताकि उन बातों को अपने सपने में लाकर वह इस सपने के एक असंदिग्ध विषय पर अपनी सहमति व्यक्त कर सके।

अपने आप में अनोखे इस सपने की पूर्व परिस्थितियाँ इस प्रकार थीं: एक पिता अपने बीमार बेटे के बिस्तर के पास दिन-रात बैठ कर उसकी तीमारदारी करता रहा था। बच्चे की मृत्यु हो जाने पर थोड़ा आराम करने की नीयत से वह बराबर वाले कमरे में जाकर लेट गया, लेकिन उसने दोनों कमरों के बीच के दरवाज़े का किवाड़ थोड़ा खुला छोड़ दिया ताकि अपने कमरे से वह उस कमरे में नज़र डालता रहे जहाँ उसके बेटे के शरीर के चारों ओर लम्बी-लम्बी मोमबत्तियाँ जल रही थीं। बालक के शरीर को देखते रहने के लिए एक वृद्ध व्यक्ति उसके पास बैठा दिया गया था जो कि धीमे स्वर में प्रार्थना-पाठ कर रहा था। कुछ घण्टे सोते रहने पर पिता ने सपना देखा कि वह बालक उसके बिस्तर के पास खड़ा है और उसकी बाह पकड़ कर शिकायत के स्वर में रोते हुए कह रहा है, "पिताजी क्या आप देख नहीं रहे हैं कि मैं जल रहा हूँ।" पिता घबराकर जाग उठता है और देखता है कि बराबर वाले कमरे से तेज रोशनी आ रही है। वह दौड़ता हुआ अन्दर जाता है और देखता है कि वह वृद्ध तो सो रहा है और एक जलती हुई गिरी मोमबत्ती ने उसके लाडले के नीचे बिछी चादर का एक हिस्सा और उसका एक हाथ जला डाला है।

दिलो-दिमाग पर अपनी छाप छोड़ने वाले इस सपने का अर्थ काफी सीधा-सरल है। उस वक्ता द्वारा दी गई जो व्याख्या उस महिला ने मुझे सुनाई वह भी सही थी। बीच के खुले दरवाज़े से आती तेज़ रोशनी ने सोते हुए उस

व्यक्ति को वही आभास दिया जो वह जागते हुए महसूस करता, अर्थात् किसी मोमबत्ती के गिर जाने के कारण शव के आस-पास आग लग गई है। बहुत सम्भव है कि आँख लग जाने से पहले भी यह आशंका उसके मन में रही हो कि पता नहीं वह वृद्ध व्यक्ति वहाँ ठीक तरह से देखभाल कर भी पाएगा या नहीं।

इस अर्थ-निरूपण में कुछ और परिवर्तन करने की गुंजाइश दिखाई नहीं देती। इसमें हम बस इतना ही जोड़ सकते हैं कि इस स्वप्न की कथा-वस्तु अवश्य ही उस घटना की अत्यधिक आशंका (over-determined) के कारण बन गई थी और बालक के कथन में: निश्चय ही जीवित अवस्था में बोले जाते रहे उसके उन शब्दों का समावेश रहा होगा जो कि पिता के लिए महत्त्वपूर्ण घटनाओं से जुड़े रहे होंगे। यह शिकायत कि 'मैं जल रहा हूँ' शायद उसे तेज बुखार से संबद्ध रही होगी जिसके चलते वह बालक मर ही गया था।

तो हमने यह पहचान लिया है कि यह सपना अर्थपूर्ण है और किसी मानसिक घटना के संदर्भ में सही-सही बैठाया जा सकता है। फिर भी यह बात आश्चर्यजनक लगती है कि कोई सपना ठीक उन हालात में घटित हो जाए जबकि उसे तदनुसार तुरंत जागने की आवश्यकता भी हो। हम साफ तौर पर देख रहे हैं कि यह सपना भी इच्छा-पूर्ति में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहा है। वह मृत बालक इस प्रकार व्यवहार कर रहा है जैसे कि वह अभी जीवित हो, वह अपने पिता को खुद ही खबरदार करता है, वह अपने पिता के बिस्तर के पास आता है और उसकी बाँह पकड़ता है–जैसा कि वह उन स्मृतियों में करता रहा हो जिनमें से यह सपना बालक के शब्दों को ग्रहण करता है। यह इस इच्छा-पूर्ति के वास्ते ही था कि पिता थोड़ी और देर तक सोता रहा। यह सपना जागृत-अवस्था की स्मृति के ऊपर छा जाता है क्योंकि तभी यह उस बालक को अभी-भी जीवित दिखा पाया है। पिता यदि पहले जाग जाता और फिर वह उस नतीजे पर पहुँचता जो उसे बराबर वाले कमरे की ओर ले गया था तो वह उस बालक का स्वप्न में आया जीवन उस एक पल के लिए तो कम कर ही देता।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारी खास दिलचस्पी का ध्यान खींचने वाली ख़ास-ख़ास बातें इस छोटे से सपने में बिल्कुल साफ हैं। अभी तक हमारा प्रयास उस चीज का निश्चित पता लगाना रहा है जिसमें सपने का गुप्त अर्थ छिपा होता है, कि कैसे उसे खोजा जाए, और उसे छिपाने के लिए सपना क्या-क्या तरीके अपनाता है। दूसरे शब्दों में, अभी तक हमारा विशेष ध्यान स्वप्न-व्याख्या की समस्या पर केन्द्रित रहा है, अब हमारे सामने एक ऐसा सपना आया है जिसका स्पष्टीकरण आसानी से हो गया है और जिसका अर्थ कोई छद्म वेश धारण किए हुए नहीं है, हम देखते हैं कि यह सपना भले ही अपने आप में वे सभी लक्षण लिए हुए हो जो कि किसी सपने को हमारी जागृत अवस्था के विचारों से साफ तौर पर भिन्न करते हैं, लेकिन इस भिन्नता को भी स्पष्ट करने की आवश्यकता

है। जब हम सारी स्वप्न समस्याओं का निपटारा कर चुके होते हैं, केवल तभी हम यह महसूस कर पाते हैं कि सपनों के बारे में हमारा मनोविज्ञान कितना आधा-अधूरा है।

लेकिन खोजबीन के इस रास्ते की ओर अपना ध्यान देने से पहले, हम तनिक ठहरें और पीछे देखें और ध्यान दें कि इधर आते हुए हमने कहीं किसी महत्त्वपूर्ण चीज़ को अनदेखा तो नहीं कर दिया है। मैं अगर गलती नहीं कर रहा हूँ तो अब तक हमने जिन रास्तों को अपनाया है वे हमें प्रकाश की ओर, स्पष्टीकरण की ओर व पूरी समझ की ओर ले जाने वाले रहे हैं, मगर हम ज्यों ही सपनों की मानसिक प्रक्रिया में और गहरे उतर कर खोजते हैं, तो सारे रास्ते अँधेरे की ओर ले जाने वाले नज़र आते हैं। सपने को एक मानसिक प्रक्रिया की तरह 'समझाना' कतई असम्भव है क्योंकि समझाने या व्याख्या करने का अर्थ है कि हमें पहले से सुनी-सुनाई बातों के आधार पर ही ऐसा करना पड़ेगा, लेकिन हमारे पास अभी तक ऐसी कोई मनोवैज्ञानिक जानकारी नहीं है जिसका संदर्भ हम ऐसे व्याख्याकारी मूल सिद्धान्तों के रुप में ले सकें जो कि सपनों की मनोवैज्ञानिक खोजबीन के परिणाम स्वरूप प्राप्त हुए हों। इसके विपरीत, हम उन अनेक धारणाओं को आगे बढ़ाने पर विवश हो जाएँगे जो कि मानसिक-यन्त्र की संरचना और उसमें सक्रिय ऊर्जा के खेल को आपस में जोड़ देने से ज़्यादा कुछ नहीं करती; साथ ही हमें बहुत सावधान रहना होगा कि हम सीधी-सरल तर्क संगत व्याख्या से बहुत दूर न चले जाएँ, क्योंकि फिर इसका ठीक अर्थ भी संदेहास्पद हो जाएगा। परन्तु, भले ही हम अपने निष्कर्षों में अचूक हों और सभी संभावनाओं का संज्ञान ले चुके हों, तो भी अपने मूल तथ्यों के आधारभूत विवरण के अभाव की संभावित अपूर्णता के चलते हमारा पूरी तरह गलत परिणाम पर पहुँचने का खतरा बना ही रहेगा। सपनों की भरपूर चौकस छानबीन या किसी गतिविधि को अलग करके देखने के बावजूद हम इस मन रूपी उपकरण की कार्यविधि व संरचना के बारे में किसी भी निष्कर्ष पर पहुँच पाने में सक्षम नहीं हो सकेंगे और न ही सभी घटनाओं के ऐसे अध्ययन से हम अपने निष्कर्षों की पुष्टि कर पाएँगे। ऐसा करने के लिए हमें ऐसे घटनाक्रम का मिलान मानसिक गतिविधियों के पूरे सिलसिले के तुलनात्मक अध्ययन की तरह करना होगा–जो कि स्थायी रुप से निर्भर योग्य होगा–ताकि स्वप्न-प्रक्रिया के विश्लेषण का आधार बनने वाले मनोवैज्ञानिक अनुमान तब तक कदमताल करते रहें जब तक उन अन्य छानबीनों के नतीजे इनके साथ नहीं आ मिलते जो कि किसी अन्य बिन्दु से शुरु होकर चलते हुए भी इसी समस्या के भीतर पैठ करने की तलाश में हों।

सपनों की विस्मृति

अत: मेरा सुझाव है कि हम सबसे पहले अपना अध्ययन उस विषय की ओर ले जाएँ जो हमें अभी तक उपेक्षित आपत्ति तक पहुँचा देता है, जो स्वप्न-व्याख्या के हमारे प्रयासों के आधार को ही निराधार बना देने का खतरा पैदा कर देता है। एक चौथई से अधिक मामलों में यह आपत्ति उठाई गई है कि जिस सपने का हम अर्थ निकालना चाहते हैं वह हमें सचमुच अज्ञात रहता है, या संक्षेप में कहें तो इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि हम उसे वैसा नहीं जानते जैसा कि वह सचमुच हुआ होता है।

सपने को हम जितना याद रख पाते हैं और अर्थ निकालने के लिए जिसे हम सामने रखते हैं वह तो शुरु में ही हमारी स्मृति द्वारा धोखा दे दिए जाने के कारण कतर-ब्योंत का शिकार हो चुका होता है–हमारी स्मृति हमारे सपने को अक्षुण्ण रूप से याद रख पाने में अक्षम रहती है और संभव है कि सपने के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अंश को ही याद रख पाने में वह चूक गई हो। क्योंकि, जब हम अपने सपने को सुनाने की कोशिश करते हैं तब अकसर यह शिकायत करते हैं कि जितना हमें याद आ रहा है सपना उससे कहीं अधिक लम्बा था, और यह कि दुर्भाग्यवश इतने से टुकड़े के अलावा हमें कुछ याद नहीं आ रहा है, और यह भी कि स्मृति में शेष बचे इस टुकड़े के बारे में भी हम अजीब तरह की अनिश्चितता महसूस करते हैं। इसके अलावा भी, यह सिद्ध करने के लिए काफी प्रमाण उपलब्ध हैं कि हमारी स्मृति सपने को न केवल आधा-अधूरा बयां कर पाती है बल्कि उसे भी मिथ्यापूर्ण व गोलगोल तरीके से बताती है। इससे एक तरफ तो हमें यह शक हो जाता है कि जो सपना हमने देखा उसके तार कहीं हमारी स्मृति से अलग तो नहीं हो गए हैं, और दूसरी तरफ हमें यह भी शक होने लगता है कि जैसा हम बता रहे हैं हमारा सपना वैसा था भी या नहीं, इसको बयां करने के अपने प्रयास में हमने ही क्या वे खाली स्थान तो नहीं भर दिए हैं जो सपने में दरअसल थे ही नहीं, या वे खाली स्थान हमारी विस्मृति के कारण बने थे जिन्हें हमने एक नयी और मनमानी सामग्री से भर दिया है, क्या हमने सपने को सजा-संवार कर, इसकी कमियों-खामियों को दूर करके, इसे ठीक-ठाक करके तो बयां नहीं किया है कि इसकी वास्तविक कथावस्तु के प्रति किसी भी निष्कर्ष पर हमारा पहुँच पाना असम्भव हो जाए! एक लेखक (Spilta) का तो मानना है कि जो कुछ सुव्यवस्थित और सुसंगत दीखता है वह दरअसल सपने को याद करते समय उसमें जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार इस बात का ख़तरा बना रहता है कि जिस विषय-वस्तु का हम मूल्यांकन करने जा रहे हैं वही हम तक पहुँच नहीं पाती है।

अपनी सभी स्वप्न-कथाओं में हम अभी तक इन चेतावनियों को अनदेखा करते आए हैं। इसके विपरीत हमने वास्तव में पाया है कि स्वप्न-कथा का सबसे छोटा, सबसे कम महत्त्व वाला और सबसे अधिक अनिश्चित अंश दरअसल

व्याख्या के लिए किसी भी तरह उन अंशों से कम महत्त्वपूर्ण नहीं होता जो कि सपने में निश्चित और साफ़ तौर पर स्थान पाए होते हैं। इर्मा के इंजेक्शन वाले सपने में हमने पढ़ा: 'मैंने तुरंत डॉ.एम. को पुकारा'। और हमने माना कि यह छोटा सा विशेषण भी सपने में न आया होता यदि एक विशेष स्रोत से इसके आने की सम्भावना न होती। इस तरह हम उस बेचारी मरीज के अतीत तक पहुँच जाते हैं जिसके बिस्तर के बराबर में खड़े हुए मैंने अपने वरिष्ठ साथी को 'तुरंत' पुकारा था।

प्रत्येक व्याख्या इस तथ्य की गवाही देती है कि किसी स्वप्न की सबसे कम महत्त्व वाली बातें भी व्याख्या के लिए अपरिहार्य होती हैं और वे दर्शाती हैं कि हम अगर अध्ययन-विवेचन एक तरफ रख दें तो व्याख्या करने का हमारा काम किस कदर देर से होता है। स्वप्न-व्याख्या में हमने सपनों में पायी गयी प्रत्येक शाब्दिक अभिव्यक्ति के प्रत्येक सूक्ष्म भेद या अन्तर पर बराबर ध्यान दिया है, और दरअसल जब भी हमारे सामने कोई निरर्थक या आधी-अधूरी शब्दावली आई है तो हम भले ही सपने को सही स्वरूप देने में असफल रहे हों मगर फिर भी भावाभिव्यक्तियों के इन दोषों को हमने पूरा ध्यान व स्थान दिया है। संक्षेप में, अन्य लेखकों ने जिसे बेसिर-पैर का तात्कालिक प्रलाप माना है और किसी भ्रम से बचने के लिए तुरत-फुरत में जिसकी वे कहानी गढ़ लेते हैं, उसे भी हमने किसी पवित्र-पाठ की तरह अपना पूरा ध्यान व सम्मान दिया है। इस असंगति को स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

ऐसा लगता है कि प्रसंगाधीन लेखकों के साथ कोई अन्याय किए बिना भी स्पष्टीकरण हमारे ही पक्ष में रहेगा। सपनों के उद्‌गम के बारे में हमारे नवीनतम ज्ञान के दृष्टिकोण से सभी प्रतिवादों का निपटारा हो जाता है। यह तो सच है कि सपने का बखान करने के प्रयास में हम उसे तोड़-मरोड़ देते हैं, मगर यह तोड़-मरोड़ अपने आप में उस विस्तारण के एक अंश से अधिक कुछ नहीं होती जिसके अधीन-सैंसरशिप के फलस्वरूप-स्वप्न विचार लगातार रहा करते हैं। कुछ अन्य लेखकों ने यहाँ स्वप्न-विकृति (dream-distortion) के उस अंश पर शंका की है जिसका काम प्रकट करना होता है, लेकिन हमारे लिए यह कोई कार्य-कारण वाली बात नहीं है क्योंकि हम जानते हैं कि तोड़-मरोड़ का काम कहीं अधिक यात्रा में पहले से ही छिपे हुए स्वप्न-विचारों में से सपने को अपने लक्ष्य स्वरूप चुन चुका होता है–हालाँकि इसे पहचान पाना आसान नहीं होता। इन लेखकों की एकमेव गलती सपने में होने वाले इस फेर-बदल में यकीन कर लेना है जो इसे याद करके बताने में और उसे शब्दों में बयां करते समय मनमानी करने के कारण होता है मगर जो हमें आगे किसी समाधान की ओर ले जाने में अक्षम रहता है, और फलस्वरूप सपने का संज्ञान लेने में हमें भटकाव की ओर ले जाता है। वे मन में सपने के स्वरूप-निर्धारण होने

को वास्तविकता से कम आंकते हैं। वहाँ कुछ भी मनमाना नहीं होता। यह तो दिखाया जा सकता है कि सभी मामलों में उन सभी अंशों के निर्धारण को विचार का कोई दूसरा सिलसिला अपने वश में ले लेता है जिन्हें विचारों के पहले सिलसिले द्वारा अनिर्धारित छोड़ दिया गया था। उदाहरण के लिए मैं एकदम अचानक या यकायक कोई संख्या सोचना चाहूँ तो यह सम्भव नहीं हो पाता है; फिर जो संख्या मेरे मन में आती है वह निश्चित व अनिवार्य रूप से मेरे भीतर विद्यमान उन विचारों द्वारा निर्धारित की जाती है जो मेरे इस तात्कालिक उद्देश्य के लिए बिल्कुल अजनबी व अनजान होते हैं। जाग्रत मन द्वारा अपने सपने को दोहराने में होने वाले बदलाव भी ना के बराबर यकायक होते हैं। स्वप्न-कथा के साथ जुड़ा उनका कोई न कोई सम्बन्ध बना रहता है जिनका स्थान वे लेते हैं और सपने में देखी गई कथा-वस्तु की ओर ले जाने वाले मार्ग को दिखाने का कार्य करते हैं जो कि स्वयं किसी अन्य कथा-वस्तु का अनुकल्प हो सकता है।

रोगियों के सपने का विश्लेषण करने में मैंने निम्नलिखित परीक्षण का प्रयोग किया है और यह हमेशा सफल रहा है। सपने का पहली बार दिया गया ब्यौरा बहुत बोधगम्य नहीं रहता है तो मैं स्वप्न-द्रष्टा से उस ब्यौरे को पुन: बोलने के लिए कहता हूँ मगर दुबारा दिया गया ब्यौरा शायद ही पहले वाले शब्दों में बोला गया हो। लेकिन जिन-जिन टुकड़ों में बदलाव किया जाता है उन-उन टुकड़ों की पहचान मैं सपने की शक्ल बदलने वाले कमजोर बिन्दुओं के रूप में कर लेता हूँ। ये वे ही बिन्दु होते हैं जहाँ से विश्लेषण की शुरुआत होती है। मेरी इस घोषणा से सपना सुनाने वाला चेत जाता है कि मैं सपने को खोलने के लिए कोई भी कष्ट उठाने का इरादा किए हुए हूँ, और तुरंत ही प्रतिरोध के आवेग का मान रखते हुए वह सपने का रूप बदलने वाले कमजोर बिन्दुओं का संरक्षण तथा बचाव करने लगता है–किसी हेर-फेर वाली अभिव्यक्ति के स्थान पर किसी कम प्रासंगिक अभिव्यक्ति को रखकर। इस प्रकार मेरा ध्यान वह उस अभिव्यक्ति की ओर ले जाता है जो उसने छाँटकर बाहर कर दी थी। सपने को खोलने के खिलाफ़ किए जा रहे प्रयासों की चौकसी में बरती जा रही उस सावधानी से भी मैं वह निष्कर्ष निकाल लेता हूँ जिसके ताने-बाने से उस सपने को बुना गया होता है।

जिन लेखकों का मैंने उल्लेख किया है उनका औचित्य तब कमतर हो जाता है जब वे उस अविश्वास को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दे देते हैं जिसके साथ चलते हमारा निष्कर्ष स्वप्न के सम्बन्ध को देखता है क्योंकि बौद्धिक तौर पर तो इस अविश्वास का कोई औचित्य ही नहीं है, हमारी स्मृति कोई गारण्टी नहीं दे सकती लेकिन फिर भी हमें इसके कथन को इतना अधिक महत्त्व देने को विवश होना पड़ता है जितना कि सचमुच न्याय संगत नहीं होता। सपने के बिल्कुल सही-सही पुन: प्रस्तुतिकरण या उसके हर एक विवरण पर शक करना स्वप्न-

सैंसरशिप की केवल दूसरी शाखा ही है–अर्थात् स्वप्न-विचारों के सचेतन मन में प्रवेश करने वाली बात को उभर कर आने से रोकने वाली सेंसरशिप। चीज़ों को इधर से उधर करने (displacements) और विकल्प तलाशने के द्वारा अभी यह रोकना स्वयं में खत्म नहीं हुआ होता है, इसीलिए संदेह रूप में अभी भी उससे चिपक जाता है जिसे कि उभर कर सामने आने दिया जा रहा होता है। इस सन्देह को हम वहाँ अधिक तत्परता से पहचान लेते हैं जहाँ यह सपने के गहन व प्रबल तत्त्वों पर बिल्कुल आक्रामक न होता हुआ केवल उसके कमजोर व अस्पष्ट तत्त्वों पर ही आक्रामक होता है। मगर हम यह बात पहले से ही जानते हैं कि सभी मानसिक मूल्यों का नए सिरे से मूल्यांकन करने का काम पहले ही स्वप्न-विचारों तथा सपनों के बीच किया जा चुका होता है। विकृति या तोड़-मरोड़ तो अवमूल्यन द्वारा होता है; यह स्वयं को इसी तरीके से प्रकट करता है और कभी-कभी तो स्वयं ही कथा-वस्तु के साथ हो लेता है। मैं इस बात पर बल देता हूँ कि स्वप्न-विश्लेषण में हमें अपने आप को भरोसे तथा विश्वास के सभी मानकों व मापदण्डों से मुक्त रखना चाहिए और सपने में इस या उस बात की अगर कोई भी सम्भावना लगती हो तो उसे पूरी तरह नि श्चिंतता के रूप में लेना चाहिए। जब तक हम स्वप्न के मूल तत्त्वों का सुराग लगाने में सामने प्रकट होने वाली बातों को दरकिनार करते रहेंगे तब तक हमारा विश्लेषण दो कदम भी आगे नहीं बढ़ पाएगा। विश्लेषित किए जा रहे व्यक्ति में सम्बन्धित तत्त्व को बेगौरा कर देने का मानसिक प्रभाव यह पड़ता है कि उस तत्त्व के पीछे किसी अनिच्छित धारणा का कोई सम्बन्ध उसके मन में नहीं उभरता। यह प्रभाव वास्तव में स्वयं-साक्ष्य नहीं होता; यह कहना पर्याप्त व औचित्यपूर्ण लगता है कि: 'मैं निश्चयपूर्वक तो नहीं कह सकता कि सपने में ऐसा हुआ था या बैसा, लेकिन आगे जो बताने जा रहा हूँ वह सपने में हुआ था।' मगर कोई ऐसा कहता नहीं है; संक्षेप में कहें तो यह विश्लेषण में संदेह का असहज करने वाला वह प्रभाव है जो मानसिक प्रतिरोध की शाखा या साधन के रूप में स्वयं को अपना मुखौटा उतारने देता है। मनोविश्लेषण न्याय संगत रूप में संदेह करने वाला होता है। इसका एक नियम है : कार्य के आगे बढ़ने में जो विघ्न-बाधा डालता है वह प्रतिरोध ही है।

सपनों को भूल जाना भी तब तक अव्याख्येय ही रहता है जब तक हम इसका खुलासा मानसिक सैंसरशिप के बल पर करने में लगे रहते हैं। यह एहसास कि हमने रात में बहुत सारे सपने देखे हैं, लेकिन याद बहुत थोड़े रहते हैं, अनेक मामलों में इसका अर्थ कुछ भिन्न भी हो सकता है; इसका अर्थ शायद यह भी हो सकता है कि सपने की कार्रवाई सुस्पष्ट रूप से सारी रात चलती रही हो मगर उसने अपने पीछे बस एक छोटा सा सपना ही छोड़ा हो। इसमें कोई शक नहीं है कि जाग जाने पर सपना शनैः शनैः भूलने की ओर चलता चला जाता है। इसमें से उबरने के पीड़ाजनक प्रयास के बावजूद हम उसे अकसर भूल

ही जाते हैं। मेरा मानना है कि जैसे हम आमतौर पर इस भुलाने की सीमा को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दे देते हैं, उसी प्रकार सपनों के बीच में पड़ने वाले अन्तरालों के कारण सपने के बारे में अपने संज्ञान के बीच-बीच में होने वाले विलोपन को भी आवश्यकता से अधिक महत्त्व दे देते हैं। सपने की वे सारी बातें जो कि भूलने के कारण खो गई हैं, विश्लेषण द्वारा पुन: प्राप्त की जा सकती हैं। अनेक मामलों में, किसी एक अकेले शेष बचे अंश से पूरा सपना तो नहीं मगर पूरे स्वप्न-विचारों को ढूँढ़ निकाला जा सकता है। इसके लिए अधिक ध्यान की तथा विश्लेषण में अधिक आत्म-निग्रह की आवश्यकता होती है। इतना काफी होता है लेकिन इससे यह बात भी साफ हो जाती है कि सपनों का भूल जाना विरोधी भावना से अनजान नहीं रहता है।

स्वप्न को भूलने की, उसे तोड़-मरोड़ करने वाली प्रवृत्ति को सिद्ध करने वाला सबूत को–इस तथ्य को सिद्ध करने वाले सबूत को कि यह प्रतिरोध का काम करता है–भूलने की शुरुआती अवस्था की विवेचना से हासिल किया जा सकता है। अकसर होता यह है कि किसी विश्लेषण को करते-करते सपने का कोई ऐसा छूटा हुआ अंश अचानक उभर कर सामने आ जाता है जिसे पहले भूला हुआ करार दे दिया गया था। सपने का यह भाग जो कि भूल जाने के कारण तोड़-मरोड़ दिया जाता है, हमेशा ही सबसे महत्त्वपूर्ण भाग होता है। यह सपने को खोलने के सबसे सीधे रास्ते पर स्थित रहता है और इसीलिए प्रतिरोध के सामने सबसे अधिक यही दिखाई पड़ता है। जिन सपनों के उदाहरण मैंने इस शोध में प्रस्तुत किए हैं, उनमें एक बार ऐसा भी हुआ कि बाद में स्वप्न-कथा के किसी अंश को मुझे क्षेपक के रूप में भी डालना पड़ा है।

इसके अलावा, प्रत्यक्ष प्रदर्शन द्वारा मैं निष्कर्ष रूप में यह सिद्ध कर सकता हूँ कि सपने को भूलने में प्रतिरोध का बहुत बड़ा हाथ होता है। एक रोगी ने मुझे बताया कि उसने सपना तो देखा मगर वह सपना अपना कोई भी निशान छोड़े बिना ऐसे गायब हो गया है जैसे वह हुआ ही न हो। तब हम इस पर काम करने बैठ गए, जो भी हो, मुझे एक प्रतिरोध दिखाई दिया जो मैंने उस रोगी को भली-भाँति बताया, उसे उत्साहित व प्रेरित किया। मैं उसे एक ऐसे विचार को पुन: याद करने में मदद करने लगा जिससे सपने में वह पूरी तरह असहमत रहा था, और मैं यह कर ही रहा था कि वह चिल्ला उठा, "हाँ, अब मुझे याद आ रहा है कि मैंने क्या सपना देखा था।" वही प्रतिरोध जो उसे उस दिन व्याख्या के काम में परेशान कर रहा था, वही उस सपने को भूलने का कारण बना था। इस प्रतिरोध को हटाकर मैं तो बस उस सपने को उसकी स्मृति में वापस ले आया था। इसी प्रकार व्याख्या में कुछ दूर तक पहुँच जाने के बाद रोगी को वह स्वप्न पुन: पूरा का पूरा याद आ जाता है जो कि तीन-चार या अधिक दिन पहले देखा गया हो और अब तक विस्मृति की तह में जा चुका हो।

मनोविश्लेषण के अनुभव ने हमें इस तथ्य का एक और सबूत उपलब्ध कराया है कि सपनों का भूलना नींद के दौरान जागने-सोने की अवस्थाओं के बेतरतीब झोंकों के आने-जाने के स्वभाव के बजाय प्रतिरोध पर अधिक टिका होता है, हालाँकि कुछ लेखक उन बेतरतीब झोंकों को इसका ज़िम्मेदार ठहराते हैं। अन्य विश्लेषकों के साथ-साथ मेरे साथ भी और उपचार में चल रहे रोगी के साथ भी–अकसर ऐसा हुआ है कि हम सपने के चलते-चलते जाग जाते हैं, और उसके बाद तुरंत अपनी पूरी समझ से उस सपने का विश्लेषण शुरू कर देते हैं। ऐसे मामलों में मैं तब तक चैन से नहीं बैठता जब तक मैं उस सपने को पूरी तरह समझ नहीं लेता–मगर फिर भी ऐसा हुआ है कि जागने के बाद मैं विश्लेषण का किया गया काम भी पूरी तरह वैसे ही भूल गया जैसे कि स्वप्न-कथा को, हालाँकि मुझे यह बात अच्छी तरह याद रही कि मैंने सपना देखा था और उसका विश्लेषण भी किया था। बौद्धिक क्षमता द्वारा सपने को अपनी स्मृति में सफलतापूर्वक धारण किए रखने की स्थिति की अपेक्षा विश्लेषण में परिणत हो चुके स्वप्न का विश्लेषण सहित विस्मृति में खो जाना अकसर अधिक होता है। लेकिन विश्लेषण किए जाने वाले इस काम के और जाग्रत अवस्था के विचारों के बीच ऐसा कोई अतल गर्त नहीं है जिसके सहारे अन्य लेखक सपने को भूलने की व्याख्या करने की कोशिश में लगे रहते हैं। सपने को भूलने की मेरी व्याख्या पर जब मोर्टन प्रिंस इस आधार पर आपत्ति उठाते हैं कि यह तो बस विच्छेदित मानसिक अवस्थाओं के स्मृति भ्रंश (amnesia) का एक मामला होता है, और यह कि इस अलग तरह के स्मृति भ्रंश की व्याख्या को अन्य तरह के स्मृति अंशों के ऊपर लागू करने की असंभाव्यता इसे निरर्थक सिद्ध कर देती है, तब वह पाठकों को यह याद दिला रहे होते हैं कि इस प्रकार की विच्छेदित मानसिक अवस्थाओं की अपनी तमाम व्याख्याओं में उन्होंने इन अवस्थाओं के मूल में बैठी जीती-जागती व्याख्या को खोजने का प्रयास कभी नहीं किया है, क्योंकि यदि वह ऐसा कर लेते तो निश्चित ही यह बात उन्हें प्रत्यक्ष दीख जाती कि दमन (repression) और उससे उत्पन्न प्रतिरोध न केवल इन विच्छेदनों का कारण बन जाते हैं बल्कि मानस में रखी बातों के स्मृति भ्रंश का भी कारण हो जाते हैं।

यह बात कि सपने वैसे ही थोड़े-थोड़े भुला दिए जाते हैं कि जैसे कि अन्य मानसिक क्रियाएँ, और यह भी कि स्मृति पर अपनी छाप छोड़ देने की क्षमता उनमें होते हुए भी उनकी तुलना अन्य मानसिक क्रियाओं से की जा सकती है–यह बात मेरे उस परीक्षण-प्रयोग से मेरे सामने सिद्ध हो गई है जो मैंने इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करते-करते किया था। अपने ही ऐसे बहुत सारे सपने मैंने सम्भाल कर नोट कर रखे थे जिनकी व्याख्या किसी न किसी कारण से मैं कर नहीं पाया था, या बस आधे-अधूरे तौर पर ही कर पाया था। इस दावे को

सविस्तार समझ पाने के उद्देश्य से इन सपनों से सामग्री प्राप्त करने के लिए मैंने इनमें से कुछ का विश्लेषण करने का काम एक-दो साल बाद शुरू किया। अपने इस प्रयास में मैं निरपवाद रूप से सफल रहा; सचमुच मैं कह सकता हूँ कि जब ये सपने आए थे तब की अपेक्षा अब इन सपनों का विश्लेषण अधिक सरलता से हो गया। इस बात की एक संभव व्याख्या के रूप में इतना तो कहूँगा ही कि इन सपनों को देखे जाते समय जिन आन्तरिक प्रतिरोधों ने मुझे परेशान किया था, उन पर अब मैं विजय प्राप्त कर चुका हूँ। वर्तमान परिणामों की तुलना मैंने पुराने स्वप्न-विचारों की खेप से की तो पाया कि निरपवाद रूप से पुराने स्वप्न-विचार वर्तमान वालों में भी अपरिवर्तित रूप से रहे हैं, हालाँकि मैं अपने इस आश्चर्य से तब जल्दी ही उबर आया जब मैंने चिंतन करके देखा कि बीते सालों के उन सपनों का विश्लेषण करने का मैं आदी हो चुका हूँ जो समय-समय पर मेरे रोगियों द्वारा मुझे इस तरह सुनाए गए जैसे वे पिछली रात के ही सपने हों–उसी तरीके से व उतनी ही सफलता के साथ। यह परीक्षण-प्रयोग जब मैंने पहली बार किया था तब मुझे उम्मीद थी–और वह कुछ गलत भी नहीं थी–कि इस सम्बन्ध में सपने केवल विक्षिप्तता वाले (neurotic) लक्षणों के साथ बर्ताव करेंगे। क्योंकि मैं जब किसी साइकोन्यूरोटिक रोगी का इलाज करता हूँ तो मुझे इस रोग के प्रथम लक्षणों की व्याख्या ढूँढ़नी पड़ती है जिन्हें कि गायब हुए काफ़ी समय हो चुका होता है, और साथ ही उसमें अभी तक विद्यमान उन लक्षणों की भी जिनके कारण वह मेरे पास लाया गया है; और उसमें विद्यमान आज के तुरंत ध्यान देने योग्य लक्षणों के मुकाबले मुझे पूर्ववर्ती समस्याओं को सुलझाना आसान रहता है।

अब मैं स्वप्न-विश्लेषण से जुड़ी हुई कुछ बेतरतीब टिप्पणियाँ दे रहा हूं जो कि ऐसे पाठक के लिए शायद मार्गदर्शक का काम करें जो मेरे दावों को अपने ही सपनों की कसौटी कर परखना चाहता हो।

ऐसे पाठक को यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि अपने ही सपने का विश्लेषण करना, उसका अर्थ निकालना कोई सीधी-सरल बात होगी। सपने की दृश्यावली के बीच घटित किसी बात का या ध्यान से चूक गई किसी अनुभूति का अवलोकन करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता है। कोई भी मानसिक हेतु (psychic motive) ऐसे अवलोकन के किसी वर्ग विशेष का विरोध नहीं करता। 'अनचाहे विचारों (unwished ideas) को थामे रखना कहीं अधिक कठिन होता है। जो ऐसा करना चाहता है उसे इस पुस्तक में बताई गई आवश्यकताओं को पूरा करना होगा, और इन उल्लिखित नियमों का अनुपालन करने के दौरान उसे तमाम तरह की आलोचनाओं, पूर्व-धारणाओं और स्वयं में विद्यमान सभी प्रभावी बौद्धिक पक्षपातों से बचना होगा। अपनी मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला में कार्य करते हुए उसे क्लाड बर्नार्ड द्वारा निर्धारित

नियमों का हमेशा ख्याल रखना होगा: उसे एक पशु की भाँति सहिष्णु रहना होगा, और अपने कार्य के परिणाम के प्रति निष्काम भाव रखना होगा। जो इस सलाह पर चलेगा उसे यह काम कोई मुश्किल नहीं लगेगा। किसी स्वप्न का विश्लेषण किसी एक बैठक में हमेशा पूरा नहीं किया जा सकता; उससे जुड़ी तमाम बातों की शृंखला पर चलते-चलते आप अकसर महसूस करेंगे कि अब आप काम नहीं कर पा रहे हैं, सपना आपको कुछ अधिक नहीं बता रहा है; तब सर्वोत्तम यही है कि आप थम जाएँ और इस काम को अगले दिन फिर उठाएँ। स्वप्न-कथा का कोई अन्य भाग तब आपका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करेगा और इस तरह आप स्वप्न-विचार की किसी नयी परत को देख पा रहे होंगे। इसे आप सपनों की 'खण्ड-खण्ड' व्याख्या कह सकते हैं।

स्वप्न-व्याख्या करने वाले नौसिखियों को इस तथ्य को स्वीकार कर पाना सबसे कठिन होता है कि वह अपना काम तब पूरा हुआ न समझ बैठें जब उसके हाथ में सपने का कोई ऐसा भरा-पूरा विश्लेषण आ जाए जो बुद्धिमत्तापूर्ण हो और जो स्वप्न-कथा के सभी घटकों की पूरी जानकारी भी दे रहा हो। हो सकता है कि उसी सपने का एक और ऐसा विश्लेषण संभव हो जो पहले उससे चूक गया हो। हमारे मन में प्रकट होने के लिए जद्दोजहद कर रहे अचेतन विचारों के काफिले के बारे में कोई धारणा बना पाना या एक ही झटके में सात मक्खियाँ मार देने जैसे चतुर प्रदर्शन के लिए स्वप्न-क्रिया को श्रेय दे देना–सचमुच इतना आसान नहीं है। लेखक द्वारा दिए गए शब्द-पटुता के प्रबल प्रदर्शन के लिए पाठक के मन में उसकी भारी आलोचना का सम्मान रहेगा, लेकिन जो स्वप्न व्याख्या का व्यक्तिगत अनुभव पा चुका हो वह इससे कहीं बेहतर जानता होगा।

दूसरी तरफ पहले-पहल एच. सिलबरर द्वारा दिए गए इस अभिमत को मैं स्वीकार नहीं करता कि प्रत्येक स्वप्न-या कह लें कि सभी स्वप्नों व उनके कुछ वर्गों को दो भिन्न-भिन्न विश्लेषणों की आवश्यकता होती है, जिनके बीच एक निश्चित सम्बन्ध भी मान लिया जाता है। इनमें से एक जिसे सिलबरर मनोविश्लेषणात्मक (psychenalatic) व्याख्या कहते हैं–सपने को जैसा आप चाहें वैसा अर्थ दे देता है लेकिन वह प्रमुख रूप से सैक्स से उपजा होगा। उनकी दूसरी तथा अधिक महत्त्वपूर्ण व्याख्या है–जिसे वह रहस्यबोधनात्मक (anagogic) व्याख्या कहते हैं–उन अधिक महत्त्वपूर्ण और प्राय: दुर्बोध विचारों को प्रकट करती है जिन्हें स्वप्न क्रिया अपनी सामग्री के रूप में प्रयुक्त करती है। सिलबरर ने अपने दावों को सिद्ध करने के लिए दो-चार सपनों का भी उल्लेख नहीं किया है जिन्हें उसने इन दिशाओं में विश्लेषित किया हो। इस आधार पर उसके इस अभिमत का विरोध करने के लिए मैं विवश हूँ कि यह तथ्य के विपरीत है। अधिकांश सपनों को पुनर्व्याख्या की आवश्यकता नहीं पड़ती और वे विशेष रूप से रहस्यबोधनात्मक व्याख्या के प्रति असंवेदनशील

होते हैं। स्वप्न-रचना (dream formation) की आधार भूत परिस्थितियों पर पर्दा डालना चाहने की और इसके नैसर्गिक मूल से हमारा ध्यान हटाने की प्रवृत्ति का प्रभाव सिलबरर के सिद्धान्त में साफ झलकता है। अन्य अनेक मामलों में मैं सिलबरर के दावों की पुष्टि कर सकता हूँ परन्तु इन मामलों में विश्लेषण मुझे साफ-साफ बता देता है कि स्वप्न-क्रिया उन अत्यन्त दुर्बोध विचारों की किसी शृंखला को जाग्रत जीवन से स्वप्न में रूपान्तरित कर देने वाले काम से प्रत्यक्ष विरोध करती है जो सीधे-सीधे सामने आने में अक्षम हैं। स्वप्न-क्रिया तो उस अन्य विचार सामग्री को अपनाकर इस काम को पूरा कर लेना चाहती है जो अव्यवस्थित और बेतरतीब पड़ी होती है, और जिसका दुर्बोध विचार से अकसर अन्योक्ति (allegorical) रूप में सम्बन्ध रहता है और इस तरह उनके सीधे-सीधे सामने प्रकट होने में आ रही कठिनाई दूर हो जाती है। इस तरीके से निकल कर आने वाली सपने की दुर्बोध व्याख्या स्वप्न-द्रष्टा को तत्काल दे दी जाती है, परन्तु सहायक व अनुपूरक सामग्री की सही-सही व्याख्या तो केवल सुज्ञात विधि अपनाए जाने से ही प्राप्त की जा सकती है।

इस प्रश्न का उत्तर कि क्या प्रत्येक सपने की व्याख्या की जा सकती है– ना में ही दिया जा सकता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि व्याख्या के काम में मानसिक शक्तियां (psychic forces) रास्ते में आड़े आती हैं। क्या अपने भीतरी प्रतिरोध को कोई अपनी बौद्धिक अभिरुचि द्वारा, अपनी आत्म-नियन्त्रण की क्षमता द्वारा, अपने मनोवैज्ञानिक ज्ञान द्वारा, या स्वप्न-व्याख्या के अपने अनुभव द्वारा जीत सकता है–यह विरोध में खड़ी शक्तियों की तुलनात्मक क्षमता पर निर्भर करता है। थोड़ी प्रगति करना सदैव सम्भव होता है, हर बार हम इस बात के कायल से आगे बढ़ते जाते हैं कि सपने स्वयं में कोई अर्थ तो रखते ही हैं, और आमतौर पर इसके अर्थ की धुंधली सी तस्वीर की तरफ हम आगे बढ़ते भी हैं। यह अकसर होता है कि कोई द्वितीय स्वप्न प्रथम स्वप्न के लिए मान ली गई व्याख्या को पुष्ट करने और उसे आगे बढ़ाने की सामर्थ्य हमें देता है। हफ्तों या महीनों लगातार चलने वाले सपनों की शृंखला का कोई एक साझा आधार हो सकता है और इसीलिए उसकी व्याख्या निरन्तरता के रूप में की जानी चाहिए। एक दूसरे के पीछे-पीछे आने वाले सपनों में हम अकसर यह पाते हैं कि एक सपना किसी एक मुद्दे को अपना केन्द्रीय विषय बनाता है और केवल वही विषय अगले सपने की कथा-वस्तु की ओर संकेत करने वाला होता है। इस तरह अपनी व्याख्या में दोनों एक-दूसरे के अनुपूरक हो जाते हैं। एक ही रात के विभिन्न सपनों को व्याख्या हेतु एकत्रित रूप में लिया जाना चाहिए।

सर्वोत्तम व्याख्या किए गए सपनों में भी हमें अकसर एक अँधेरा गलियारा छोड़ देना पड़ता है क्योंकि व्याख्या के दौरान हम देखते हैं कि वहाँ स्वप्न-विचारों की कोई गुत्थी ऐसी भी होती है जिसे खोला नहीं जा सकता और वह स्वप्न-

कथा में कोई नया योगदान भी नहीं करती है। तो, यह सपने का मूलतत्त्व होता है, यह वह बिन्दु होता है जहाँ से सपना अज्ञात में उड़ान भर लेता है। व्याख्या के दौरान हम जिन स्वप्न-विचारों से रू-ब-रू होते हैं, उनका आमतौर पर कोई आखरी छोर नहीं होता बल्कि वे तो हमारे बौद्धिक जगत में जाल जैसे ताने-बाने में हर दिशा में दौड़ते-भागते रहते हैं। वह तो इस ताने-बाने का काई सघन भाग होता है जहाँ से फिर स्वप्न-इच्छा उत्पन्न होती है जैसे इसके कवक जाल (mycelium) से कोई कुकुरमुत्ता उग आया हो।

आइए अब हम सपने को भूलने की बात पर वापस लौटें। अभी तक हम इनसे किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने में सचमुच असफल रहे हैं। जब हमारी जाग्रत अवस्था उस स्वप्न को पूरी तरह, या जागने के तुरंत बाद, या दिन चढ़ने के साथ धीरे-धीरे भुलाने की साफ नीयत दिखाती है जो कि रात के दौरान बना, और जब इस भूलने की प्रक्रिया में उस मानसिक प्रतिरोध (psychic resistance) को हम प्रमुख कारक के रूप में ले लेते हैं जो कि रात भर उस सपने का हर संभव विरोध करता रहा, तब प्रश्न यह उठता है: वह क्या है जो इस प्रतिरोध के बावजूद सपने को रूप आकार दे ही देता है? आइए हम उस सबसे अधिक विचित्र सपने पर विचार करें जिसमें जाग्रत अवस्था ने सपने को ऐसे दर किनार कर दिया जैसे वह कभी हुआ ही न हो। हम यदि मानसिक शक्तियों द्वारा किए जाने वाले खिलवाड पर विमर्श करें तो हम यह दावा करने पर विवश हो जाएँगे कि जैसा प्रतिरोध दिन के दौरान रहा था यदि वैसा ही रात के दौरान भी रहता तो सपना कभी अस्तित्व में नहीं आ सकता था। इस बात को अगर संक्षेप में कहें तो कह सकते हैं कि रात में प्रतिरोध अपने बल को अंशत: खो बैठता है; हम जानते हैं कि वह बंद नहीं होता–जैसा कि हम स्वप्न-रचना में अर्थात् सपने में तोड़-मरोड़ करने में इसकी भूमिका देख चुके हैं। इसलिए हम केवल यही संभावना मान सकते हैं कि रात में प्रतिरोध केवल घट जाता है, और इस प्रतिरोध में ढ़िलाई आ जाने के कारण ही स्वप्न-रचना सम्भव हो पाती है; और, हम सीधे-सीधे यह बात समझ सकते हैं कि हमारे जागने पर ज्यों ही यह अपनी पूरी शक्ति पुन: प्राप्त कर लेता है तब यह तुरन्त वह सब कुछ एक ओर धकेल देता है जिसे मान लेने के लिए इसे तब बाध्य कर दिया गया था जब यह मंद पड़ गया था। विवरणात्मक मनोविज्ञान (descriptive psychology) हमें बताता है कि मन की तन्द्रावस्था ही स्वप्न-रचना की मुख्य निर्धारक होती है; और, अब हम इस व्याख्या को यहाँ उद्धरित कर सकते हैं : 'सुहावस्था अन्तर्मन (endopsychic) के सैंसरशिप को दुर्बल करके स्वप्न-रचना को सम्भव बनाती है।

यहाँ हम इस बात के लिए अवश्य ही लालायित हो उठे हैं कि इस व्याख्या को ही हम सपने को भूलने वाली सच्चाई से निकले एकमेव निष्कर्ष के

रूप में मान लें तथा सुप्तावस्था व जाग्रतावस्था में कार्यरत रहने वाली सापेक्ष कार्यशक्ति के बारे में इसी निष्कर्ष से अगले निष्कर्षों तक भी पहुँच जाएँ। मगर हम फिलहाल यहीं रुकेंगे। जब हम सपनों के मनोविज्ञान में कुछ और गहरे पैठ कर लेंगे तब हम देखेंगे कि स्वप्न-रचना का स्रोत दूसरी तरह से भी समझा जा सकता है। जो प्रतिरोध स्वप्न-विचारों को सचेत होने से रोकने के लिए चौकस रहता है, वह शायद घर जाने के कष्ट के बिना भी बच निकलता है। यह भी युक्तिसंगत है कि स्वप्न-रचना के पक्षधर दोनों ही कारक–अर्थात् प्रतिरोध का घटना भी और अनिश्चितता भी–सुप्तावस्था द्वारा साथ-साथ हो जाने सम्भव हो सकते हैं। लेकिन हम यहाँ अभी तनिक रुकेंगे और इस विषय पर थोड़ी देर बाद पुन: आएँगे।

अभी हम स्वप्न-व्याख्या के लिए अपनाई जा रही अपनी प्रणाली के विरुद्ध उठाई जा रही आपत्तियों पर विचार करेंगे क्योंकि हम तभी आगे बढ़ सकते हैं जब हम उन सभी धारणाओं को छोड़ दें जो कभी हमारे अनुचिंतन को नियन्त्रित करती थीं, जब हम सपने, जब हम सपने के एकमेव तत्व की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं, और उन अनैच्छिक विचारों को नोट करते हैं जो अपने आप को उस तत्व से जोड़ लेते हैं। फिर हम सपने के अगले घटक को लेते हैं और उसके साथ भी वही चलन दोहराते हैं और विचारों द्वारा अपनाई गई दिशा के प्रति उदासीन रहते हुए हम उनके पीछे चलते स्वयं को आगे बढ़ने देते हैं–एक विषय से दूसरे विषय पर मटरगश्ती करते हुए। साथ ही, हम यह आश्वस्त आशा भी मन में रखते हैं कि अंततोगत्वा हम उन स्वप्न-विचारों तक पहुँच ही जाएँगे जिनसे स्वप्न का उद्‌गम हुआ है–बशर्ते हम अपनी तरफ से कोई भी हस्तक्षेप न करें। इस बात पर अलोचक यह आपत्ति उठा सकते हैं : यह कहना कि हम अगर सपने के एकमेव तत्व से शुरु करें तो कहीं न कहीं तो पहुँचेंगे ही–यह क्या खास बात हुई? हर एक विचार से, धारणा से कुछ न कुछ तो जुड़ा होता ही है। जो बात ख़ास है वह केवल यह है कि इस निरंकुश और लक्ष्यहीन अभियान में स्वप्न-विचारों को पा लेने में हमें सफल होना चाहिए। शायद यह आत्म-वंचना है; छानबीन कर्ता किसी एक तत्त्व से जुड़ी शृंखला की कड़ियों को तब तक मिलाता रहता है जब तक वह शृंखला टूट नहीं जाती, फिर वह कोई दूसरा तत्त्व हाथ में ले लेता है। इस प्रकार यह स्वाभाविक है कि शुरुआती तौर पर मुक्त रूप से विचरती कड़ियां अब सीमित व संकुचित हो जानी चाहिए। उसके मन में अभी भी कड़ियों की पहली वाली शृंखला मौजूद रहेगी, और वह दूसरे वाले स्वप्न-विचार के विश्लेषण में उन अकेली कड़ियों को आसानी से पा लेगा जो पहली शृंखला की कड़ियों से कुछ समानता रखती होंगी। फिर वह यह कल्पना करता है कि उसे एक ऐसा विचार मिल गया है जो दोनों स्वप्न-तत्त्वों के बीच एक सन्धि-बिन्दु का द्योतक है। चूँकि वह विचार-संबद्धता से स्वयं को पूरी तरह मुक्त रखता है–

हाँ, सामान्य सोच के दौरान एक विचार से दूसरे विचार तक उसका आना-जाना अवश्य रहता है–इसलिए अन्ततः उसके लिए इन 'बिचौलिए विचारों' को बाहर कर देने की तैयारी कर लेना कठिन नहीं रह जाता जिन्हें वह स्वप्न-विचार मानता आया था, और चूँकि वे अन्यथा अज्ञात रहते हैं अतः वह उन्हें सपनों के समतुल्य मानस के रूप में अनजाने ही स्वीकार कर लेता है। लेकिन यह सारी पूरी तरह मनमानी प्रणाली है, इतफ़ाक का सीधा-सच्चा प्रतीत होता कारनामा है, और जो कोई भी इस बेकार की कवायद में पड़ेगा वह किसी भी सपने में मनमानी व्याख्या निकाल ही लेगा।

इस तरह की आपत्तियाँ सचमुच यदि हमारे सामने बढ़ाई गईं तो हम बचाव के लिए अपनी स्वप्न-व्याख्या द्वारा दिए गए मत-विश्वास का हवाला ही देंगे, साथ ही अन्य स्वप्न-तत्वों से जुड़े उन आश्चर्यजनक सम्बन्धों का भी जो प्रत्येक विचार के पीछे लगे रहने के दौरान सामने आते हैं। हम इस तथ्य की तरफ भी इशारा कर सकते हैं कि स्वप्न-व्याख्या में अपनाई जा रही प्रणाली हिस्टीरिया के लक्षणों के निदान के लिए अपनाई जाने वाली प्रणाली के समान ही होती है जहाँ कि उस प्रणाली के सही होने की तसदीक रोग के लक्षणों के उभरने व गायब होने से की जा सकती है। लेकिन जब तक हम समस्या का निदान निकालने में समर्थ नहीं हो जाते तब तक समस्या से कतराने का हमारे पास कोई औचित्य नहीं है, अर्थात् स्वेच्छाचारी और लक्ष्यहीन विचारों की किसी शृंखला में भटकता हुआ कोई कैसे किसी पूर्ववर्ती 'लक्ष्य पर पहुँच सकता है।

यह कहना साफ तौर पर गलत होगा कि जब हम प्रतिभाव (reflection) को छोड़ रहे होते हैं और इच्छाशक्तिविहीन विचारों को सतह पर आने दे रहे होते हैं तब विचारों के लक्ष्यहीन अभियान के प्रति हम स्वयं का समर्पण कर रहे होते हैं–उदाहरण के लिए स्वप्न की व्याख्या में। यह बात दर्शाई जा सकती है कि हम केवल उन्हीं विदेशी धारणाओं को खारिज कर सकते हैं जिन्हें हम जानते हैं, और यह भी कि इन अज्ञात विचारों–जिन्हें हम गलती से अचेतन भी कह देते हैं–के अवसान के साथ ही विदेशी धारणा तुरन्त अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर देती है और तदनुसार इच्छाशक्तिहीन विचारों का प्रवाह निर्धारित कर देती है। विदेशी धारणाओं के बिना सोचना किसी ऐसे प्रभाव से सुनिश्चित नहीं किया जा सकता जो हमने अपने मानसिक जीवन पर स्वयं ही सायास डाल लिया हो, न ही मैं किसी ऐसी मानसिक उलट-पुलट (psychic derangement) की अवस्था को जानता हूँ जिसमें इस प्रकार की विचार शैली स्वयं को स्थापित कर लेती हो। मनोचिकित्सक यहाँ मानसिक संरचना की सघनता के विचार को पुख़्ता होने से बहुत पहले ही छोड़ चुके हैं। मैं जानता हूँ कि विदेशी धारणाओं से रहित रहने वाली विचारों की बेतरतीब धारा हिस्टीरिया तथा संविभ्रम रोग (karonoia) के दायरे में उतनी ही नगण्य होती है जितनी

कि सपनों की रचना में या उनके समाधान में। अंतर्जात मानसिक झुकाव (endogenous psychic affection) में तो शायद यह बिलकुल भी नहीं होती, और लारेट की बुद्धिपरक परिकल्पना (ingenious hypothesis) के अनुसार भ्रमित मानसिक अवस्था में देखा गया उन्माद (deliria) भी अर्थ रखता है मगर उपेक्षित कर दिए जाने के कारण वह हमें दीखता नहीं है। इस प्रकार की अवस्थाओं को देखने का जब भी मुझे अवसर मिला है, मैं हमेशा इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ। उन्माद तो उस सैंसरशिप का कारनामा है जो कि अपनी झोंक को छुपाने का कोई प्रयास नहीं कर रहा होता है, किसी संशोधन या परिशोधन को अपना समर्थन व सहारा देने के बजाय वह किसी भी ऐसी चीज़ को बिना किसी लिहाज के रद्द कर देता है जो इसके विरुद्ध जा रही होती है, और इस प्रकार असंबद्ध हो जाने का कारण बनता है। यह सैंसरशिप रूस की सीमा पर तैनात वहाँ की सैंसरशिप की तरह काम करती है जो कि केवल उन्हीं विदेशी पत्रिकाओं को अन्दर जाने की इजाज़त देती है जिनके कुछ निश्चित अंशों पर काले ठप्पे छाप दिए जाते हैं। ताकि वे उन पाठकों के हाथों में न पड़ जाएँ जिन्हें उन विचारों से दूर रखा जा रहा है।

संबद्ध बातों की किसी श्रृंखला के पीछे-पीछे चली आई विचारों की स्वच्छंद उछलकूद शायद मस्तिष्क के तोड़-फोड़ करने वाले अवयवी झुकाव वाले मामले में होती है। तथापि, साइकोन्यूरोसिस में ली गई किसी भी ऐसी बात को हमेशा ही उन विचारों की श्रृंखला पर सैंसरशिप के प्रभाव के रूप में बताया व दर्शाया जाता है जो कि गुप्तनिदेशी विचार धाराओं द्वारा आगे आने के लिए धकेल दिए जाते हैं। उभरते हुए विचार (या छवियाँ) यदि तथाकथित सतही जुड़ावों के माध्यम से संबद्ध प्रतीत होते हैं–जैसे स्वरसाम्य द्वारा, शाब्दिक अस्पष्टता द्वारा, अस्थाई इत्तफाक द्वारा–वह भी अर्थ का कोई आन्तरिक सम्बन्ध रखे बिना–तो इसे निदेशी विचारधाराओं द्वारा मुक्त कर दिए गए स्वच्छंद जुड़ावों का स्पष्ट संकेत मान लिया जाता है। स्पष्टत: अलग दीखने वाला यह संकेत उन जुड़ावों के साथ भली-भाँति लगा रहता है जो हमें स्वप्न-कथा के घटकों से मध्यस्थ विचारों की ओर ले जाते हैं, और वहाँ से फिर सीधे स्वप्न-विचारों की ओर–अनेक स्वप्न-विश्लेषणों में हमें इसके आश्चर्यजनक उदाहरण मिले हैं। उनमें कोई भी सूत्र इतना शिथिल नहीं था और न ही मजाक लगने वाली कोई बात इतनी अस्वीकार्य थी कि जो एक विचार से दूसरे विचार के बीच सेतु का काम न कर रही हो। लेकिन ऐसी विचित्र गुंजाइश की ठीक-ठीक समझ को पाने के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। जब कभी भी कोई एक मानसिक घटक किसी अन्य मानसिक घटक के साथ किसी अरुचिकर व सतही जुड़ाव के चलते जुड़ता है तब उन दोनों के बीच एक समुचित व गंभीर

संबन्ध का अस्तित्व भी रहता है जो कि सैंसरशिप के अड़ियल रुख के सामने हथियार डाल दिया करता है।

सतही जुड़ावों के छाये रहने का सही कारण है सैंसरशिप का दबाव होना न कि निदेशी विचारों का दबाया जाना। जब कभी भी सैंसरशिप सामान्यत: जड़ने वाले रास्तों को अगम्य के रूप में दर्शा देती है तब प्रस्तुतिकरण में सतही जुड़ाव गहरे जुड़ावों का स्थान ले लेते हैं। यह ऐसा ही है जैसे किसी पर्वतीय क्षेत्र में ट्रैफिक जाम लग जाने के कारण जब मुख्य मार्ग से जाना सम्भव न हो तो उस गहरे व ऊबड़-खाबड़ रास्ते से ट्रैफिक जाने लगता है जो कभी केवल पदयात्री शिकारियों द्वारा अपनाए जाते थे।

हम यहाँ दो मामलों को अलग-अलग पहचान सकते हैं जो कि मूलभूत रूप से यद्यपि एक हैं। पहले मामले में, सैंसरशिप केवल दो विचारों का विरोध करने के लिए निर्देशित की जाती है जो कि एक दूसरे से विमुख होने के कारण इसके विरोध से पलायन कर रहे होते हैं। ये दोनों ही विचार तब तक एक के पीछे आकर सचेतन मन में प्रवेश करते हैं, उनका सम्बन्ध तब भी छिपा रहता है लेकिन उसके स्थान पर हमें उनके बीच एक ऐसा सतही सम्बन्ध लगने लगता है जो हमें अन्यथा नहीं लग पाता है और, जो सिद्धान्त रूप में, धारणा सम्बन्धी मानसिक अवस्था के किसी अन्य पहलू से जोड़ देता है–बजाय इसके कि वह ऐसी मानसिक अवस्था से जोड़े कि जहाँ से दमित परन्तु आधारभूत सम्बन्ध शुरु होता है। या, दूसरे मामले में, दोनों ही विचार अपनी-अपनी कथा के कारण सैंसरशिप के सामने पुटने टेक देते हैं और फिर दोनों ही अपने-अपने वास्तविक रूप में प्रकट न होकर संशोधित, परिवर्तित व प्रतिस्थापित रूप में प्रकट होते हैं, और ये परिवर्तित दोनों ही विचार इस प्रकार किसी सतही जुड़ाव द्वारा उस मूलभूत सम्बन्ध को दर्शाने के लिए चुन लिए जाते हैं जो उनके बीच मौजूद तो रहा था मगर जिसे बदल दिया गया था। सैंसरशिप के दबाव में किसी सामान्य व महत्त्वपूर्ण जुड़ाव का विस्थापन किसी सतही तथा बेतुके दीखते जुड़ाव द्वारा इस तरह कर दिया जाना दोनों ही मामलों में घटित होता है।

चूँकि हम इन जुड़ावों के बारे में जानते हैं अत: हम स्वप्न-व्याख्या के दौरान आने वाले सतही जुड़ावों पर भी ससंकोच निर्भर हो जाते हैं।

न्यूरोटिक लोगों के मनोविश्लेषण में दो सिद्धान्तों का बहुतायत से प्रयोग होता है: कि सचेतन निदेशी विचारों के समर्पण के चलते विचार के प्रवाह पर रहने वाला नियन्त्रण दुर्बोध व छिपे हुए निदेशी विचारों के हाथ में चला जाता है, और कि सतही जुड़ाव दमित व प्रमुख जुड़ावों का केवल विस्थापन तथा विकल्प होता है। वास्तव में, मनोविश्लेषण इन दोनों सिद्धान्तों को अपनी तकनीक की आधारशिलाएँ मानता है। किसी रोगी से जब मैं सभी अनुचिन्तनों को मन से निकाल देने और अपने मन में आने वाले हर विचार को मुझे बता देने का अनुरोध

करता हूँ तो मैं दृढतापूर्वक इस अनुमान पर चलता हूँ कि वह निदेशी विचारों को नहीं छोड़ पाएगा, और अपने इस निष्कर्ष को सही मानता हूँ कि वह जो कुछ भी मुझे बताता है–भले ही वह सब सीधा-सरल व यादृच्छिक हो–उसका कोई न कोई सम्बन्ध तो उसकी अस्वस्थ अवस्था से होता ही है। दूसरी जिस निदेशी धारणा पर रोगी को कोई संदेह नहीं रहता वह है मेरा अपना व्यक्तित्व।

उठाई गई तमाम आपत्तियों में से केवल एक आपत्ति सही है और जिसका समाधान अभी निकाला जाना है, अर्थात् स्वप्न-विश्लेषण के सभी सूत्रों को हमें रात की स्वप्न-क्रिया के मत्थे नहीं मढ़ देना चाहिए। जाग्रत अवस्था में किए जा रहे स्वप्न-विश्लेषण द्वारा वास्तव में हम एक ऐसे रास्ते को खोल रहे होते हैं जो स्वप्न-कारकों से वापस स्वप्न-विचारों की ओर ले जा रहा होता है। स्वप्न-क्रिया उलट दिशा से आई होती है और यह बिल्कुल सम्भव नहीं है कि वे रास्ते विपरीत दिशाओं में एक समान से जा सकने योग्य हों। इसके विपरीत, लगता यह है कि दिन के दौरान नए विचार-सूत्रों द्वारा हम उन अक्षों (shafts) को डुबो देते हैं जो मध्यवर्ती विचारों को और उनके स्थान पर आए स्वप्न-विचारों से टकराते रहते हैं। हम देख सकते हैं कि दिन में आई हुई ताजा-तरीन विचार-सामग्री किस तरह व्याख्या के सिलसिले में जबरदस्ती अपना रास्ता बना लेती है, और रात के बाद आया अतिरिक्त प्रतिरोध किस तरह इसे किसी नए व घुमावदार रास्ते से आने के लिए विवश कर देता है। लेकिन अगर मनोवैज्ञानिक रूप से कहें तो इस तरह दिन के दौरान हमारे द्वारा संपार्श्वकिताओं की सोची व समझी गई संख्या व रूप तब तक उदासीन रहते हैं जब तक कि वह उस स्वप्न-विचार को इंगित नहीं कर देते जिसे हम तलाश कर रहे होते हैं।

परावर्तन (Regression)

चूँकि उठाई गई आपत्तियों से हम अपना बचाव कर चुके हैं या कम से कम बचाव से अपने हथियारों की ओर इशारा तो कर ही चुके हैं, अत: अब हमें अपने उस मनोवैज्ञानिक विवेचन को शुरू कर देने में कोई देर नहीं करनी चाहिए जिसकी तैयारी हम लम्बे समय से करते आ रहे हैं। आइए, हम अपने हाल ही के विवेचन के परिणामों का सारांश देख लें: सपना एक मानसिक क्रिया है जिसका कि भरापूरा अर्थ होता है; इसकी प्रेरणा शक्ति निरपवाद रूप से किसी उत्कट इच्छा की पूर्ति करना होती है, इस तथ्य का कारण कि इसकी विचित्रताओं और विसंगतियों के चलते इसे इच्छा रूप में पहचान पाना मुश्किल होता है, सैंसरशिप का प्रभाव है जिसके अंतर्गत सपना अपना रूप-आकार लेने के दौरान रहता है। सैंसरशिप से बच निकलने की आवश्यकता के अलावा निम्नलिखित कारक इसके रूप-आकार लेने में अपनी भूमिका निबाहते हैं: प्रथम, मानसिक सामग्री के घनीभूत करने की आवश्यकता, द्वितीय मस्तिष्कीय छवियों

में प्रस्तुतिकरण–योग्यता का ध्यान, और तृतीय (यद्यपि हमेशा नहीं) स्वप्न-रचना की बुद्धिगम्य व औचित्यपूर्ण बाहरी बनावट का ध्यान। इन सभी कारकों में प्रत्येक में से एक रास्ता मनोवैज्ञानिक अभिधारणा तथा मान्यताओं की ओर ले जाने वाला होता है। इस प्रकार, इच्छा-प्रयोजन की और साथ ही उक्त चार परिस्थितियों के पारस्परिक सम्बन्धों की विवेचना करना अब आवश्यक हो जाता है, सपने को मनोवैज्ञानिक जीवन के सन्दर्भ में प्रविष्ट-निविष्ट किया जाना आवश्यक हो जाता है।

इस भाग के आरम्भ में हमने एक सपने का उद्धरण दिया है ताकि यह हमें उन समस्याओं की याद दिला सके जो कि अभी तक अनसुलझी ही रही हैं। बालक के जलने वाले इस स्वप्न की व्याख्या को प्रस्तुत करने में कोई दिक्कत नहीं आई, यद्यपि विश्लेषणात्मक रूप में यह पूरी तरह नहीं दी जा सकी है। हमने स्वयं से ही पूछा है कि आखिर यह क्यों जरूरी था कि पिता जाग उठने के बजाय सपना देखे, मगर हमने उस इच्छा को पहचान लिया है जो बालक को जीवित रूप में प्रस्तुत करने के रूप में सपने का प्रेरणा स्रोत रही। उसमें एक और इच्छा भी मौजूद रही है जिसने कि सपने को चलाया उसे हम आगे चर्चा में दिखाएँगे। फिलहाल तो हम यही कह सकते हैं कि इच्छा पूर्ति के प्रयोजन से नींव की विचार-प्रक्रिया स्वप्न रूप में बदल गई थी।

इच्छा-पूर्ति वाली बात को यदि हम निरस्त करके बाहर कर दें तो केवल एक बात रह जाती है जो मनोवैज्ञानिक घटनाओं के दो प्रकारों को अलग-अलग करती है। स्वप्न विचार यह रहा होगा: मैं उस कमरे से तेज रोशनी आती देख रहा हूँ जिसमें वह लड़का लिटाया हुआ है, शायद कोई जलती मोमबत्ती उसके ऊपर गिर गई हो और वह लड़का जल रहा हो।' सपना इस परावर्तन को बिना कुछ बदलाव किए पुन: प्रस्तुत कर देता है; लेकिन वह इसे कुछ ऐसी स्थिति में प्रस्तुत करता है जो कि वर्तमान में घट रही होती है और जिसे जाग्रत अवस्था की तरह अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा महसूस किया जा सकता है। यह सपने की सबसे अधिक सर्वव्यापी तथा सबसे अधिक प्रभावी मनोवैज्ञानिक विशिष्टता होती है: जिस बात की इच्छा की गई हो ऐसा कोई भी विचार सपने में रूप-आकार ले लेता है और उसे दृश्य रूप में प्रस्तुत कर दिया जाता है–या जैसा कि हम सोचते हैं–हम उसे अनुभव रूप से महसूस करते हैं।

लेकिन, स्वप्न-क्रिया के इस विशिष्ट अनूठेपन को हम अब स्पष्ट कैसे करें, या–दूसरे शब्दों में–इसे मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से कैसे जोड़ें?

अगर नज़दीक से इसका अध्ययन करें तो यह विस्तुत साफ हो जाता है कि स्वप्न को प्रकट रूप में दो ऐसी विशिष्टताएँ परिलक्षित होती हैं जो एक दूसरे से लगभग स्वतन्त्र होती हैं। एक है वर्तमान स्थिति के रूप में 'शायद' को हटाते

हुए इसका प्रस्तुतिकरण, और दूसरी है विचारों का दृश्य-छवियों और संभाषण में रुपान्तरित हो जाना।

वह रूपांतरण जिसके अन्तर्गत स्वप्न-विचार इसलिए रहते हैं कि उन्हें वर्तमान काल में प्रस्तुत किया जाना अपेक्षित है, शायद इस स्वप्न में इतना प्रबल नहीं है। ऐसा शायद इसलिए हो कि इस स्वरुप में इच्छा-मूर्ति विशेष और वास्तव में सहायक भूमिका निबाहती है। आइए, अब एक अन्य स्वप्न लेते हैं जिसमें स्वप्न वाली इच्छा नींद में भी जाग्रत विचारों की निरंतरता को तोड़ती नहीं है, उदाहरण के लिए इर्मा के इंजेक्शन वाला स्वप्न। इससे स्वप्न-विचार सशर्त अपना प्रस्तुतिकरण कर रहा है: 'अगर केवल ओटो को ही इर्मा की बीमारी के लिए दोषी ठहराया जा सकता हो।' सपना इस सशर्तपन को दबा देता है और इसके स्थान पर वर्तमान काल को सीधे-सीधे रख देता है, "हाँ, इर्मा की बीमारी के लिए ओटो ही दोषी है।" तो यह मामला रुपान्तरण का है जो कि इस अविकृत स्वप्न को भी स्वप्न-विचार पर थोप देता है। लेकिन हम इस पहली विशिष्टता पर ही नहीं टिके रहेंगे। इसका निपटारा हम सचेतन मन की अतिकल्पना–दिवा स्वप्न–के संदर्भ के साथ किए दे रहे हैं जो कि अपनी काल्पनिक कथा के सदृश ही पेश आता है। ऐसी दशा में सपना उसी तरह और उसी प्रबलता के साथ वर्तमान काल का प्रयोग करता है जैसा कि दिवास्वप्न में किया जाता है। वर्तमान काल वह काल है जिसमें इच्छा को पूरा होते दर्शाया जाता है।

सपने का दूसरा विशेष गुण है–और यह दिवास्वप्न से भिन्न है–कि विचार वहाँ किसी धारणा या संकल्पना का विवरण नहीं रहता बल्कि दृश्यमान छवियों में हुआ रुपान्तरण होता है जिस पर हम विश्वास कर लेते हैं, और जो हम अनुभव कर रहे होते हैं उस पर भी विश्वास कर लेते हैं। यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि सभी स्वप्न-विचारों को दृश्य-छवियों में रुपान्तरित होना नहीं दर्शाते हैं। ऐसे भी स्वप्न हैं जिनमें केवल विचार ही विचार होते हैं, लेकिन इसी आधार पर हम उन्हें छोड़ नहीं सकते कि वे सारभूत स्वप्न होते हैं। मेरे द्वारा देखा गया प्रोफेसर एन.के दिवास्वप्न का सपना इसी प्रकार का है, इसमें दृश्य तत्त्व उसी तरह से गायब रहे हैं जैसे मैंने इसकी विषयवस्तु को दिन के दौरान सोचा था। साथ ही, हर एक लम्बे सपने में कई ऐसी चीज़ें रहती हैं जो दृश्य के इस रुपान्तरण में नहीं ढलती बल्कि वे केवल विचार-रूप में या उसी रूप में बनी रहती हैं जिस रूप में जाग्रत अवस्था में हमारे संज्ञान में रही हें। लेकिन यहाँ यह बताना आवश्यक है कि विचारों का दृश्य-छवियों में रुपान्तरित हो जाना केवल सपनों में ही नहीं होता बल्कि ऐसा दृष्टिभ्रम (hallucination) और काल्पनिक-प्रत्यक्ष में भी होता है जो कि स्वास्थ्य में या साइकोन्यूरोसिस के लक्षणों में भी यकायक प्रकट हो जाता है। संक्षेप, जिस तार के जुड़ने की हम यहाँ छानबीन कर रहे हैं वह

इकलौता नहीं है, तथ्य वही हैं कि स्वप्न की यह विशिष्टता जब भी घटित होती है, तब ही यह विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट करती है, इसीलिए इसके बिना हम किसी स्वप्न का होना सोच भी नहीं सकते हैं। इसको पूरी तरह समझने के लिए एक अत्यन्त सविस्तार चर्चा करने की आवश्यकता है।

इस विषय के साहित्य में उपलब्ध स्वप्न सम्बन्धी सिद्धान्तों के बारे में पाए गए तमाम मतों में से एक पर मैं विशेष बल देना चाहूँगा जो कि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सुप्रसिद्ध जी.टी.एच. फैचनर सपनों की प्रकृति के बारे में हुई एक परिचर्चा में यह धारणा व्यक्त करता है कि *सपना जाग्रत विचारणा का होने वाला अन्यत्र मंचन* है। स्वप्न-जीवन की विशिष्टता के बारे में कोई भी अन्य अनुमान हमें इससे अधिक नहीं समझा सकता।

अनुभव हमें बताता है कि पूर्वचेतन (preconscious) से गुजर कर चेतन मन (conscious) की ओर जाने वाला रास्ता दिन में प्रतिरोधी सैंसरशिप के कारण स्वप्न-विचारों तक जाकर बंद हो जाता है। रात में स्वप्न-विचार चेतन मन में प्रवेश कर जाते हैं, तो प्रश्न यह पैदा होता है कि ऐसा क्यों और किस परिवर्तन के साथ होता है? यदि अवचेतन तथा पूर्वचेतन के बीच की सीमा रेखा पर रात में पहरा कमजोर पड़ जाने के कारण यह प्रवेश स्वप्न-विचारों के लिए सम्भव हुआ होता है तो हम अपने ही विचारों की सामग्री वाले सपने देखते जो कि ऊटपटांग किस्म का प्रदर्शन नहीं करते।

हिस्टीरिया और विभ्रम (karanoia) में होने वाले दृष्टिभ्रम और साथ ही मानसिक रूप से सामान्य व्यक्ति को होने वाले भ्रम को मैं परावर्तन के अनुरूप मानता हूँ–अर्थात् छवियों में रूपान्तरित होने वाले विचार, और इस बात पर बल देता हूँ कि यह रूपान्तरण ऐसे ही विचारों का होता है जो कि दमन व दफन कर दी गई स्मृति के साथ अंतरंग रूप से जुड़े होते हैं, या फिर उन स्मृतियों से जुड़े होते हैं जो कि अचेतन मन में बनी रहती हैं। उदाहरण के लिए मैं अपने सबसे कम-उम्र रोगी का मामला यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ–बारह साल का एक लड़का जो 'लाल आँखों वाले हरे चेहरों' के कारण सो नहीं पा रहा था क्योंकि वे उसे भयाक्रान्त कर देते थे। इस प्रकटीकरण का स्रोत दबा दी गई लेकिन कभी सचेतन में रही एक ऐसे लड़के की एक स्मृति थी जिसे वह चार साल पहले अकसर देखा करता था, और जो अनेक बुरी आदतों के लिए एक चेतावनी प्रतीक का काम किया करता था–इन बुरी आदतों में हस्तमैथुन भी शामिल था जिसके लिए वह अब स्वयं को धिक्कारा करता था। तब उसकी माँ ने ध्यान दिया कि उस बेहूदे लड़के के चेहरे का रंग हरापन लिए हुए था और उसकी आँखें भी लाल थीं। इस प्रकार उसका डरावना रूप–जो कि उसकी माँ के कथनानुसार ही उसकी स्मृति में इतना असरदार था कि 'उससे डरने वाले लड़के स्कूल में फिसड्डी हो जाते हैं और शीघ्र मृत्यु उनका दुर्भाग्य बन जाती हैं।' इस

भविष्यवाणी का एक हिस्सा इस नन्हें रोगी के बारे में सच उतरा; वह स्कूल में पिछड़ने लगा था, और जैसा कि उसने स्वयं बताया कि वह इस भविष्यवाणी के शेष भाग से बुरी तरह भयग्रस्त हो गया था। यद्यपि थोड़े ही समय के सफल उपचार के बाद वह सामान्य रूप से सोने लगा था, उसकी व्यग्रता खत्म हो गई थी और उसने अपना स्कूल भी अच्छे अंकों से पूरा किया।

यहाँ मैं एक चालीस वर्षीय हिस्टीरियाग्रस्त महिला द्वारा की गई एक घटना की व्याख्या को जोड़ना चाहता हूँ जो कि तब घटी जब वह सामान्य स्वास्थ्य में थी। एक सुबह जब उसकी आँख खुली तो उसने देखा कि उस का भाई उसके कमरे में है–हालाँकि वह जानती थी कि वह एक पागलखाने में बंद है। उस महिला का छोटा बेटा उसके बराबर में ही सोया हुआ था। यह सोचकर कि वह कहीं अपने मामा को देखकर डर न जाए और मचल न जाए, उसने चादर खींचकर उसके मुँह तक ओढ़ा दी। यह करते ही दृष्टि भ्रम गायब हो गया। यह आभास दरअसल उसकी बचपन की स्मृति की पुनरावृत्ति था जो कि सचेतन में होते हुए भी उसके मन की तमाम अचेतन स्मृतियों के साथ अंतरंग रूप से जुड़ा हुआ था। उसकी नर्सरी की सहेली ने उसे बताया था कि उसकी माँ अपनी युवावस्था में ही चल बसी थी (उस समय मेरी रोगी की आयु केवल अठारह महीने थी) जो कि मिर्गी या हिस्टीरिया के दौरों से पीड़ित रहती थी, वह ऐसी काफी समय से अपने भाई (यानी मेरी रोगी के मामा) द्वारा भयभीत किए जाने से हो गई थी जो कि अपने सिर से एक चादर ओढ़ कर भूत का वेश बनाकर उसके सामने आ जाया करता था। यह दृश्य भी स्मृति स्वरूप वही घटक लिए हुए है–भाई का अचानक प्रकट होना, चादर, डर और उसका असर। यह और बात है कि ये संदर्भ एक नए संदर्भ में बिठा दिए गए थे और एक नए व्यक्ति के साथ जोड़ दिए गए थे। इस दिवास्वप्न का तथा इसमें रूपान्तरित विचार का स्पष्ट हेतु उस महिला की व्यग्रता तथा व्याकुलता थी कि उसके बेटे पर कहीं उसके मामा का साया न पड़ जाए।

ऊपर उद्‌धृत किए गए दोनों ही उदाहरण पूरी तरह नींद की अवस्था से असम्बद्ध नहीं हैं, और इसी कारण सम्भव है कि ये उस सबूत पर खरे न उतरें जिनके लिए मैंने इन्हें उद्‌धृत किया है। इसलिए मैं एक दृष्टिभ्रम तथा विभ्रम से ग्रस्त महिला रोगी का विश्लेषण तथा न्यूरोसिस लोगों के मनोविज्ञान पर मेरा एक अध्ययन परिणाम यहाँ दूँगा ताकि इस तथ्य पर बल डाला जा सके कि परावर्ती विचार-रूपान्तरण वाले इन मामलों में हमें दमित स्मृति या अचेतन मन में पड़ी स्मृति के प्रभाव को अनदेखा नहीं करना चाहिए जो कि प्राय: अपनी अविकसित अवस्था में रहती है। यह स्मृति जिस विचार से जुड़ी होती है उसमें परावर्तित होकर यथावत प्रवेश कर जाती है, मगर उसे प्रकट होने में सैंसरशिप द्वारा रोके रखा जाता है–अर्थात् प्रकट होने के उस स्वरूप में जिसमें कि वह

स्मृति अपना वास्तविक स्वरूप रखती है। और यहाँ मैं हिस्टीरिया के अध्ययन का परिणाम जोड़ सकता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति अविकसित दृश्यों को (चाहे वे स्मृतियां हों या कल्पनाएँ) सचेतन मन में ले जाने में सफल हो जाता है तो वे दृष्टिभ्रम की तरह प्रकट होने लगते हैं, और उनका यह चरित्र तभी बेनकाब हो पाता है जब वह दिल खोलकर अपनी बात किसी को बता देता है।

तो, यदि हम स्वप्न-विचारों में ऐसे अविकसित अनुभवों द्वारा या उन पर आधारित कल्पनाओं द्वारा खेली जा रही भूमिका का ध्यान रखें और याद रखें कि स्वप्न-कथाओं में ये अंशत: कितनी बार प्रकट होते रहे हैं, और किस तरह स्वप्न-इच्छा भी इन्हीं में से प्रकट होने लगी है तो हम इस सम्भावना से इंकार नहीं कर सकते कि सपने में भी दृश्य-छवियों में रूपान्तरित होते विचार उस 'आकर्षण' का परिणाम हो सकते हैं जिसका प्रयोग पुनर्जीवन के लिए जूझती तथा दृश्य रूप में प्रकट हुई स्मृति द्वारा उन विचारों पर किया गया होता है जो सचेतन मन से अलग हो गए होते हैं परन्तु प्रकट होने के लिए संघर्ष कर रहे होते हैं। इस धारणा को आगे बढ़ाते हुए हम स्वप्न की एक और परिभाषा दे सकते हैं कि *स्वप्न विकसित दृश्य को स्थानान्तरण द्वारा मन की नवीन सामग्री में लाए जाने का अनुकल है।* अविकसित दृश्य अपने पुनरुज्जीवन के लिए स्वयं बल प्रयोग नहीं कर सकता और इसलिए उसे स्वप्न के रूप में आकर ही सन्तुष्ट हो जाना पड़ता है।

अविकसित दृश्यों (या उनकी काल्पनिक पुनरावृत्तियों) के महत्त्व को किसी हद तक स्वप्न-कथा के लिए उपलब्ध कराए जा रहे स्वरूप का यह सन्दर्भ शर्नर व उसके शिष्यों द्वारा दिए गए उस अनुमान को फालतू सिद्ध कर देता है जो उन्होंने सपनों के आन्तरिक प्रेरणा स्रोत के सम्बन्ध में दिया है। शर्नर 'दृश्य-उद्दीपन' का, दृष्टि के अंगों में आन्तरिक उत्तेजन की उस अवस्था की परिकल्पना करता है, जबकि स्वप्न किसी दृश्य के अंशों को एक विशेष सजीवता में या किसी असाधारण बहुतायत में प्रकट कर रहा होता है। इस परिकल्पना के प्रति हमें कोई आपत्ति उठाने की आवश्यकता नहीं है; हम शायद उद्दीपन की ऐसी अवस्था को दृष्टि के अंगों की एक मानसिक दर्शन प्रणाली मानकर स्वयं को संतुष्ट कर सकते हैं; तथापि हम इस बात पर बल देंगे कि उद्दीपन की यह अवस्था किसी पूर्ववर्ती वास्तविक दृश्य-उद्दीपन का स्मृति द्वारा किया गया पुन: प्राण संचार ही होता है।

आइए, सपनों की इस विशिष्टता के बारे में जो हमने जाना है, उसका सार-संक्षेप कर लें: अपनी विचार-वस्तु को दृश्य-छवियों में नया रूप-आकार देने की उनकी क्षमता है यह। हो सकता है कि स्वप्न-क्रिया के इस स्वभाव की व्याख्या हमने मनोविज्ञान के किसी जाने-माने नियम का संदर्भ-दिए बिना की हो, परंतु हमने इसे अज्ञात संबंधों की ओर इंगित करने के लिए छाँट कर निकाला है और

इसे नाम दिया है–'परावर्तन' स्वभाव, जहाँ कहीं भी इस प्रकार का परावर्तन हुआ है वहाँ हमने इसे ऐसे प्रतिरोध का प्रभाव माना है जो कि सचेतन मन की ओर अपने सामान्य स्वभाव से जाते विचार की बढ़त का विरोध करता है, मगर साथ-साथ उसे जीवंत स्मृतियों द्वारा आकर्षित करने की कोशिश भी करता है। (इस प्रकार परावर्तन में एक तरफ से तो सचेतन मन की सैंसरशिप द्वारा इसे बाहर धकेला जाता है, तो दूसरी ओर से अचेतन मन द्वारा इसे अपनी ओर खींचा जाता है।) सपनों में होने वाला परावर्तन शायद दिन के दौरान ज्ञानेन्द्रियों से प्रवाहित होने वाले उत्तरोत्तर प्रवाह के विराम द्वारा ही सुगम ब सरल हो जाता है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि परावर्तन के रोग विज्ञान (pathological) मामलों में, सपनों की ही तरह, ऊर्जा के स्थानांतरण की प्रक्रिया उस प्रक्रिया से भिन्न होती है जो कि सामान्य मानसिक जीवन के परावर्तन में घटित हुआ करती है।

जहाँ तक परावर्तन की बात है, हम और आगे देखें तो पाते हैं कि यह जितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका सपनों के सिद्धान्त में अदा करता है उतनी ही न्यूरोटिक लोगों की लक्षण-रचना में करता है। इस प्रकार हम परावर्तन के तीन प्रकार देखते हैं: (क) प्रासांगिक, (ख) अल्पकालिक, और (ग) औपचारिक। तथापि, परावर्तन के ये तीनों प्रकार मूलभूत रुप से एक ही हैं और अधिकांश मामलों में मेल खाते हैं।

सपनों में होने वाले परावर्तन के प्रतिपाद्य विषय को हम उस धारणा के बारे में दो शब्द कहे बिना नहीं छोड़ सकते जो कि बारंबार और प्रबल रुप से हम पर अपनी छाप छोड़ती रही है और जो साइकोन्यूरोसिस लोगों के गहन अध्ययन के बाद लौट-लौटकर हमारे पास पुन: आ जाती है, यानि: कुल मिलाकर, सपना स्वप्नद्रष्टा के पूर्ववर्ती सम्बन्धों के प्रति परावर्तन की क्रिया है, उसके बचपन का, उसके उन मनोवेगों का पुनरुत्थान है जो तब हावी थे और भावाभिव्यक्ति के तत्कालीन तरीके थे। तब व्यक्ति के बचपन के पीछे स्थित जाति-वृत्तीय (psychogenetic) बचपन में हमें झाँकने का मौका मिलता है–अर्थात् मानव-जाति के विकास में–जिसमें हर व्यक्ति के विकास ने जीवन की आकस्मिक परिस्थितियों द्वारा बारंबार प्रभावित किए जाने के फलस्वरुप एक संक्षिप्त स्वरुप ले लिया है। हम संदेह करने लगते हैं कि फ्रीडरिच नीत्शे ने ठीक ही कहा था स्वप्न में 'मानव जाति का एक ऐसा आदिम काल विद्यमान रहता है जिसके पास सीधे-सीधे पहुँचने का अब कोई और रास्ता नहीं रह गया है'। और सपनों के विश्लेषण से हमें मानव की पुराकालीन वंशानुगतता का ज्ञान तथा उसमें अंतर्जात रुप से विद्यमान मानसिक बातों की जानकारी हासिल होने की काफी आशा बढ़ जाती है। ऐसा लगता है कि सपनों ने और विक्षिप्त लोगों ने हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा मनोवैज्ञानिक पुरावशेष हमारे लिए संभाल कर रखे हैं ताकि उन विज्ञानों में मनोविश्लेषण सर्वोच्च पद का दावेदार बन सके जो

मानव के प्राचीनतम तथा गुप्ततम आदिकाल की पुनर्रचना करने के काम में जुटे हैं।

सम्भव है कि हम सपनों के अपने मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के इस प्रथम भाग से कोई विशेष सन्तुष्ट न हो पाएँ हों, फिर भी हमें स्वयं को इस विचार से दिलासा दे देनी चाहिए कि अन्ततः हम अज्ञात क्षेत्र में कुछ तो निर्मित कर ही रहे हैं। अगर हम भटके नहीं तो निश्चय ही हम फिर से किसी और शुरुआती बिन्दु के आस-पास पहुँच जाएँगे और तब शायद हम अपने आचरणों को बेहतर ढंग से समझ पाएँगे।

इच्छापूर्ति (Wish Fulfillment)

ऊपर दिया गया जलते बालक वाला सपना इच्छापूर्ति के सिद्धान्त के सामने आने वाली कठिनाइयों को समझने के लिए एक अच्छा उदाहरण है। यह बात कि सपना इच्छा-पूर्ति के सिवाय कुछ नहीं होता, हम सभी को निस्संदेह बड़ी विचित्र लगती है–और ऐसा केवल व्यग्रता–स्वप्नों द्वारा दर्शाए जाने वाले विरोधाभास के ही कारण नहीं है। जब एक बार हमारा पहला विश्लेषण हमें यह बोध करा चुका हो कि हमारे सपनों की पृष्ठभूमि में उसका अर्थ व मनोवैज्ञानिक मूल्य छिपा होता है तो हमने इस अर्थ के इतना व्यापक रूप से लागू होने के बारे में शायद ही उम्मीद की हो। अरस्तू द्वारा दी गई सटीक व संक्षिप्त परिभाषा के अनुसार सपना नींद में जारी रहने वाली विचारणा ही तो है। तो अगर दिन के दौरान हमारे विचार मानसिक क्रियाकलापों में इतनी विविधतापूर्वक गतिविधि करते हैं–जैसे किसी नतीजे पर पहुँचना, कोई निष्कर्ष निकालना, आपत्तियों का उत्तर देना, आशा करना, इच्छा करना, इत्यादि–तो रात में वे केवल इच्छा को ही पैदा करने के लिए बाध्य क्यों हो जाते हैं? इसके विपरीत क्या ऐसे अनेक सपने नहीं होते जो कि स्वप्न-रचना में बिल्कुल ही भिन्न गतिविधि दर्शाते हैं–उदाहरण के लिए चिंतातुर देखभाल–और जलते बालक वाला पिता का असाधारण रूप से पारदर्शी स्वप्न क्या ऐसा ही नहीं है? सोते हुए पिता की आँखों पर पड़ने वाली तेज़ रोशनी से उसने यह सशंक निष्कर्ष निकाल लिया कि कोई मोमबत्ती गिर गई है और शायद बालक को जला रही है। इस निष्कर्ष को वह एक ऐसे स्वप्न में परिणत कर देता है जिसमें यह वर्तमान में साकार रूप से अभिनीत होती एक स्पष्ट घटना बन जाता है। इस सपने में इच्छा-पूर्ति वाली कौन सी भूमिका अदा की गई है? और किस तरह हम इसे विचार की पूर्व प्रभावितता को जाग्रत अवस्था से जारी रखने या किसी नए शारीरिक एहसास से उत्पन्न होने की सम्भावना मान लेने की गलती कर सकते हैं?

ये सभी बातें अपनी जगह सही हैं लेकिन सपने में इच्छा पूर्ति की भूमिका को तथा जाग्रत अवस्था के विचारों को नींद में जारी रहने के अर्थ व महत्त्व को और भी नज़दीक से देखने के लिए ये हमें बाध्य करती हैं।

संक्षेप में, यह इच्छा-पूर्ति ही है जिसके कारण हमने सपनों को दो भागों में विभाजित किया है। हमें ऐसे सपने मिले हैं जो सीधे-सीधे तौर पर इच्छा-पूर्ति वाले ही हैं लेकिन अन्य अनेक ऐसे भी हैं जिनमें इच्छा-पूर्ति को पहचान पाना असम्भव रहा है और वह हर उपलब्ध साधन के पीछे छिपी रही है। इस दूसरी श्रेणी के सपनों में हमने स्वप्न-सैंसरशिप के प्रभाव को पहचान लिया है। सामान्य इच्छा-पूर्ति स्वप्न मुख्य रूप से बच्चों में पाए गए हैं; बहुत अल्प अवधि का और स्पष्ट इच्छा पूर्ति वाले स्वप्न बालिग लोगों को भी आते 'प्रतीत' होते हैं। (यहाँ मैंने प्रतीत शब्द पर सप्रयोजन बल दिया है।)

अब हम पूछ सकते हैं कि प्रत्येक सपने में पूरी होती इच्छा का उद्गम कहाँ से होता है? बल्कि, इस 'कहाँ' का सम्बन्ध किस विरोध या किस भिन्नता से रहता है? मैं समझता हूँ कि विरोध तो सचेतन मन के दैनिक जीवन तथा अचेतन मानसिक गतिविधियों के बीच रहता है जो कि केवल रात में ही स्वयं को अनुभवगम्य बना पाता है। इस प्रकार, इच्छा के उद्गम की मैं तीन सम्भावनाएँ देख रहा हूँ। पहली, यह दिन के दौरान उछल कर आई हो लेकिन बाहरी परिस्थितियों के कारण असंतुष्ट होकर रह गई हो, और इस प्रकार रात के लिए एक अभिस्वीकृत परन्तु असन्तुष्ट इच्छा की तरह पड़ी रही हो। दूसरी, यह दिन के दौरान प्रकट हुई हो–केवल अस्वीकृत होने के लिए, और इस प्रकार यह रात के लिए असंतुष्ट परन्तु दमित इच्छा की तरह पड़ी रही हो। तीसरी, हो सकता है कि इसका दैनिक जीवन से कोई सम्बन्ध ही न रहा हो लेकिन यह उन इच्छाओं में से हो जो कि रात को जागकर उस सामग्री में से निकल आ जाती हैं जो हमारे भीतर दबी पड़ी होती है। तो क्या इन विभिन्न स्त्रोतों से उठती इच्छाएं सपने के लिए एक जैसा मूल्य व महत्त्व रखती हैं, किसी सपने को प्रेरित करने, उसे उभारने के लिए एक जैसी शक्ति रखती हैं।

इस प्रश्न का उत्तर देने की दृष्टि से हमारे पास निपटान हेतु आए हुए सपनों का सर्वेक्षण करने पर हम एकदम ही उन सपनों को इच्छा वाले स्वप्न के रूप में वास्तविक इच्छा-प्रेरक के चौथे स्त्रोत के रूप में जोड़ देने के मुकाम पर पहुँच जाते हैं जो रात के दौरान उठ खड़े होते हैं, सक्रिय हो जाते हैं (उदाहरण के लिए प्यास अथवा यौन-इच्छा का उत्तेजित हो जाना)। तब हमें यह सम्भव लगने लगता है कि इच्छा वाला स्वप्न किसी सपने को प्रेरित करने की अपनी क्षमता को प्रभावित नहीं करता है। मुझे एक ऐसे बच्चे का स्वप्न याद है जिसमें वह अपनी उस यात्रा को जारी रखता है जिसका दिन में क्रमभंग कर दिया गया था। ऐसे ही अन्य बच्चों के स्वप्न भी हैं जिन्हें ऐसी इच्छाओं के रूप में व्याख्यायित

किया गया है जो अ-परिपूरित तो रहीं मगर दबाई नहीं गईं। दिन के दौरान की दमित इच्छाओं का स्वयं को स्वप्न में बलपूर्वक उठाए जाने के बहुत सारे उदाहरण दिए जा सकते हैं। इस प्रकार के एक साधारण स्वप्न को मैं यहाँ देना चाहता हूँ। एक लड़की से–जो कि व्यंग्यपूर्ण और कटु बोलने वाली थी जिसकी एक कमतर उम्र की सहेली की शादी उससे पहले पक्की हो गई थी– दिन के दौरान संगी-साथियों ने पूछा कि क्या वह अपनी इस सहेली के मंगेतर को जानती है और उसके बारे में उसकी क्या राय है। जवाब में अपने निर्णय-निष्कर्ष पर अंकुश लगाते हुए उसने उसकी इतनी तारीफ की जिसके कि योग्य नहीं था वह, हालाँकि वह सच कहना चाहती थी–जैसे कि वह तो एक मामूली सा बंदा है, ऐसे लोग तो रास्ते में ही मिल जाते हैं। अगली रात को उसने सपना देखा कि उससे वही प्रश्न पूछा गया है, तब वह उसका जवाब सूत्र रूप में देती है: जो लोग लाइन में पीछे की ओर खड़े हों, उन्हें तो नंबर से पुकारना काफी होता है। अन्ततः अनेक विश्लेषणों के परिणाम स्वरूप हम यह जान जाते हैं कि सभी सपनों में आई हुई परन्तु तोड़-मरोड़ कर दर्शाई गई इच्छा की जड़ें अचेतन मन में जमी होती हैं मगर वे दिन के दौरान यानि जाग्रत अवस्था में नहीं देखी जा सकतीं। अत: प्रथम दृष्टया तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि स्वप्न-रचना के मामले में सभी इच्छाएँ एक जैसा मूल्य-महत्त्व तथा एक जैसी शक्ति रखती हैं।

बच्चों के सपने इस बारे में कोई शक की गुंजाइश नहीं छोड़ते कि दिन के दौरान अ-परिपूरित इच्छा किसी स्वप्न को उकसा सकती है। लेकिन हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि वह एक बच्चे की इच्छा है, कि वह बचपन में होने वाला एक विशेष प्रबलता वाला इच्छा-आवेग है। मुझे पूरा संदेह है कि दिन के दौरान अ-परिपूरित कोई इच्छा किसी वयस्क व्यक्ति के लिए कोई सपना रच पाने की पर्याप्त क्षमता रखती है। बल्कि, लगता तो यह है कि जैसे-जैसे बुद्धि द्वारा हम अपनी नैसर्गिक वृत्तियों को नियन्त्रित करना सीखते जाते हैं, वैसे-वैसे ऐसी प्रबल इच्छाओं की निरर्थक रचना करने और उन्हें सहेज कर रखने की प्रवृत्ति छोड़ते जाते हैं–जो कि बचपन में सहज-स्वाभाविक रही थी। हाँ, इसमें व्यक्ति-व्यक्ति में अन्तर हो सकता है, कुछ लोग अविकसित प्रकार की मानसिक प्रक्रियाओं को औरों की अपेक्षा लम्बा खींच लेते हैं। फिर भी, सामान्यत: मेरा विचार यह है कि दिन की अ-परिपूरित इच्छाएं वयस्क लोगों में कोई सपना पैदा कर पाने में अक्षम रहती हैं। मैं यह एकदम स्वीकार करता हूँ कि सचेतन मन में उद्भावित होते इच्छा-आवेग सपनों को उकसाने में योगदान तो करते हैं, लेकिन शायद इससे ज़्यादा कुछ नहीं। यदि किसी अन्य स्रोत से पूर्वचेतन इच्छा को बल न मिले तो सपना हो नहीं सकता।

और, वह स्रोत है अचेतन मन। मेरा विश्वास है कि चेतन-इच्छा किसी स्वप्न को उकसाने में तभी कारगर होती है जब वह किसी ऐसी समतुल्य इच्छा को

जगाने में सफल हो जाए जो कि उसे बल प्रदान कर सके। न्यूरोसिस लोगों के मनोविश्लेषण से प्राप्त संकेतों व लक्षणों से मेरा मानना है कि ये अचेतन इच्छाएँ सदैव सक्रिय रहती हैं और जब-जब उन्हें सचेतन मन में उठे किसी आवेग के साथ खुद को जोड़ लेने का मौका मिल जाता है, तब-तब वे स्वयं को प्रकट करने के लिए व उस आवेग की कमतर प्रबलता के साथ अपनी अधिक प्रबलता को जोड़ देने के लिए तत्पर रहती हैं। इसीलिए, प्रतीत तो यही होता है कि केवल चेतन इच्छा ही स्वप्न में पूरी होती है, मगर सपने के स्वरूप में थोड़ा अनोखापन तथा विचित्रता हमें इसे अचेतन से आने वाले सशक्त सूत्र के मार्ग पर ला खड़ा करती है। हमारे अचेतन की ये सदा-सक्रिय तथा कभी न मरने वाली इच्छाएँ भीमकाय टाइटन की उस पौराणिक गाथा की याद दिला देती हैं जिस पर विजय पाकर देवताओं ने उसे एक पहाड़ के नीचे दबा तो दिया था लेकिन वह अभी भी समय-समय पर अपने अंगों को हिलाडुला कर उसे दहला देता है। जैसा कि हमने न्यूरोसिस लोगों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से जाना है परावर्तन में विद्यमान ये इच्छाएँ स्वयं अविकसित होती हैं। अत: मैं पहले कहे गए इस अभिमत को एक तरफ कर देता हूँ कि : 'इस बात का कोई खास महत्त्व नहीं है कि इच्छा वाला स्वप्न पैदा कहाँ से होता है' और इसके स्थान पर दूसरा अभिमत रख रहा हूँ कि : स्वप्न में प्रकट हुई इच्छा अवश्य ही कोई अविकसित इच्छा होती है। वयस्क व्यक्ति में यह अचेतन मन से पैदा होती है जबकि बच्चों में–जिनके कि सचेतन व अचेतन मन के बीच कोई विभाजन या सैंसर अभी अस्तित्व में नहीं आया होता है–उनमें यह जाग्रत अवस्था की एक अ-परिपूरित तथा अदमित (unrepressed) इच्छा होती है। मुझे मालूम है कि इस अवधारणा को आमतौर पर प्रदर्शित नहीं किया जा सकता, परन्तु मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि इसे आमतौर पर वहाँ भी देखा जा सकता है जहाँ किसी ने सोचा तक न हो, और, आमतौर पर इसका खण्डन भी नहीं किया जा सकता।

स्वप्न-रचना में जाग्रत अवस्था के दौरान परित्यक्त कर दिए गए इच्छा-आवेगों को उनकी पृष्ठभूमि से जोड़ा जाना चाहिए। मैं यह नहीं मान सकता कि नींद के दौरान स्वप्न-कथा के साथ संवेद पैदा करने वाली सामग्री में अपना योगदान देने के अलावा वे सचमुच कुछ और भूमिका भी अदा करते हैं। दिन की जाग्रत अवस्था में परित्यक्त अन्य उकसाहटों को भी अगर मैं हिसाब में ले लूँ–जो कि इच्छाएँ नहीं हैं–तो मैं इसी विचारधारा द्वारा बनाए गए रास्ते पर ही चल रहा होऊँगा। सोने जाने का निर्णय ले लिए जाने के द्वारा हम जाग्रत अवस्था के अपने विचारों के ऊर्जा-सम्पन्न भावाभिनिवेश (cathexis) का अन्तरिम निपटान कर देने में सफल हो सकते हैं। जो ऐसा कर पाता है वह एक अच्छी नींद लेने वाला होता है, नेपोलियन प्रथम इसका एक उदाहरण कहा जा सकता है। पर ऐसा कर पाने में हम पूरी तरह हमेशा सफल नहीं होते हैं। अनसुलझी

समस्याएँ, परेशान करने वाली चिन्ताएँ, मन से निकाले नहीं निकल रहीं गहरे असर वाली बातें–ये नींद के दौरान भी हमारे विचारों की गतिविधि को निरन्तरता प्रदान करती हैं और उस मानसिक क्रिया को बनाए रखती हैं जिसे हमने पूर्वचेतन (pre-conscious) का नाम दिया है। नींद में निरन्तर रहने वाले विचार-आवेगों को हम निम्नलिखित वर्गों में बाँट सकते हैं–

1. वे जो किसी आकस्मिक कारण से दिन के दौरान पूरे नहीं हो सके,
2. वे जिन्हें हमने अपनी मानसिक क्षमता की विफलता के कारण बीच में ही अधूरा छोड़ दिया, जैसे अनसुलझी समस्याएँ।
3. वे जिन्हें दिन के दौरान वापस कर दिया गया और दबा दिया गया।
4. वे जो दिन के दौरान पूर्वचेतना की क्रियाशीलता के कारण हमारे अचेतन में उद्दीप्त हुए और
5. दिन के उदासीन प्रभाव जो कि इसी उदासीनता के चलते अनिश्चित व अनिर्णित छोड़ दिए गए।

दिन की जाग्रत अवस्था के इन अवशेषों द्वारा नींद में प्रविष्ट कर दी जाने वाली गहन मानसिक प्रबलताओं को हमें कुछ कम नहीं आंकना चाहिए–विशेष रूप से उन्हें जो कि अनसुलझे मुद्दों के वर्ग से उपजती हैं। यह निश्चित बात है कि ये उत्तेजनाएँ रात में प्रकट होने के कारण जूझना जारी रखती हैं, और यह भी निश्चित है कि निद्रावस्था पूर्वचेतन में चलने वाली उत्तेजनाओं की प्रक्रिया को सामान्य रूप से चलते रहने की इजाज़त नहीं देती और न ही इसके अंत को सचेतन बन जाने की। जहाँ तक हम सामान्य ढंग से अपनी मानसिक प्रक्रियाओं के प्रति सचेत रहते हैं–यहाँ तक कि रात में भी–वहाँ तक हम सो नहीं पाते। मैं नहीं कह सकता कि निद्रावस्था द्वारा पूर्वचेतन प्रणाली में क्या बदलाव किया जाता है लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि नींद के मनोवैज्ञानिक अभिलक्षणों की तलाश इसी प्रणाली में होने वाले भावाभिनिवेशिक परिवर्तनों में ही की जानी चाहिए जो कि स्वत: चरता पर तो हावी रहती है परन्तु नींद के दौरान पंगु हो जाती है। दूसरी तरफ, सपनों के विज्ञान में मुझे ऐसा कुछ नहीं मिला है जो इस अनुमान को सही ठहराता हो कि नींद अचेतन की अवस्था में केवल दोयम दर्जे का बदलाव करती है। अत: पूर्वचेतना में नींद के दौरान होने वाली उत्तेजनाओं के लिए अचेतन मन से इच्छा सम्बन्धी उत्तेजना द्वारा अपनाए गए मार्ग के अलावा कोई और रास्ता नहीं बचता, उन्हें अचेतन से कुमुक मँगानी ही पड़ती है और अचेतन की उत्तेजनाओं को कोई घुमावदार रास्ता अपनाना पड़ता है। लेकिन पूर्वचेतन के दिन वाले अवशेषों का सपने से क्या सम्बन्ध है इसमें कोई संदेह नहीं कि वे बहुतायत में पैठ करते हैं, कि वे रात में भी सचेतन पर जबरन चढ़ बैठने के लिए स्वप्न-कथा का इस्तेमाल करते हैं, वास्तव में कभी-कभी तो वे स्वप्न-कथा की बाग-डोर भी अपने हाथ में ले लेते हैं और उसे दिन

वाला काम जारी रखने के लिए तिकतिकाते रहते हैं। यह बात भी निश्चित है कि दिन के अवशेषों में भी इच्छाओं जैसे ही अभिलक्षण हो सकते हैं। लेकिन, यह देखना अत्यन्त शिक्षाप्रद भी है और इच्छा-पूर्ति के सिद्धान्त के लिए निर्णायक महत्त्व वाला भी कि सपने में प्रवेश करने के लिए उन्हें किन शर्तों को पूरा करना पड़ता है।

हमें यह पड़ताल करना शायद उचित रहे कि जब किसी स्वप्न को स्वप्न-विचार के रूप में कोई ऐसी सामग्री पेश की जाती है जो कि इच्छा-पूर्ति को– जैसे कि कोई उचित चिन्ता, दुखद यादें और परेशान करने वाली अनुभूति-इस सबको वह सिरे से नकार देता हो तब वह कैसी अनुक्रिया करता है। इसके अनेक सम्भव परिणामों को नियमानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है: (क) स्वप्न-क्रिया तमाम दुखद विचारों को विपरीत विचारों से बदलने तथा उनके साथ जुड़े दुखद प्रभावों को दबा देने में कामयाब हो जाती है। तब इसका परिणाम होता है एक नितांत सरल व संतोषप्रद स्वप्न का आना, एक ऐसी सुस्पष्ट इच्छा की पूर्ति का होना जिसके बारे में कुछ और कहने को नहीं रह गया हो। (ख) दुखद विचार–कमोबेश संशोधित होकर–स्वप्न-कथा में प्रकट होने का मार्ग ढूँढ़ निकालते हैं लेकिन फिर पहचाने जा सकते हैं। यही वह बात है जो कि स्वप्न के इच्छा-सिद्धान्त पर संदेह उठाती है और इसलिए इसमें आगे खोजबीन किए जाने की माँग करती है। दुखद कथा-वस्तु वाले ऐसे स्वप्न या तो अनुभूति में उदासीन रहते हैं। या फिर वे पूरा दुखद प्रभाव अपने साथ लेते आते हैं, या वे जागने के क्षणों तक व्यग्रता को बढ़ाते चले जाते हैं।

विश्लेषण बताते हैं कि ये दुख व पीड़ा से भरे सपने भी इच्छा-पूर्ति वाले सपने ही होते हैं। कोई ऐसी अचेतन व दमित इच्छा जिसकी परिपूर्ति स्वप्न-द्रष्टा के अहं द्वारा केवल पीड़ापूर्ण ही महसूस की जा सकती हो वह दिन के पीड़ापूर्ण अवशेषों के जारी भावाभिनिवेश द्वारा दिए गए मौके को हड़प लेता है, उन्हें अपनी सहायता व समर्थन देता है और इस प्रकार उसे सपने में देखे जाने योग्य बना देता है। लेकिन, जबकि (क) वाले मामले में अचेतन इच्छा सचेतन के साथ मेल खाती है तो (ख) वाले मामले में अचेतन व सचेतन दमित सामग्री व अहं के बीच विसंगति तथा विषमता के रूप में परिलक्षित होती है। हम जानते हैं कि स्वप्न-द्रष्टा का रुझान अपनी इच्छाओं के प्रति बड़ा अजीबोगरीब रहता है: वह उन्हें नकारता भी है और उनमें काट छाँट भी करता है, नतीजतन उसके हाथ-पल्ले कुछ नहीं पड़ता, उन इच्छाओं का पूरा होना उसे कोई आनंद नहीं देता बल्कि इसका विपरीत ही होता है, और यही 'विपरीतता' दरअसल 'व्यग्रता' का रूप ले लेती है। दमित इच्छा की पूर्ति के बारे में हुई तुष्टि इतनी अधिक सिद्ध हो सकती है कि वह दिन के अवशेषों के साथ लगे आए पीड़ापूर्ण प्रभावों को सन्तुलित कर सकती है, सपना तब अपने भावनात्मक स्वर में तटस्थ हो जाता है–

हालाँकि यह एक ओर तो इच्छापूर्ति होता है और दूसरी ओर भय की पूर्ति। या, यह भी हो सकता है कि स्वप्न का स्वार्थ स्वप्न-रचना में और भी बड़ी भूमिका अदा करता हो, कि वह दमित इच्छा के पूरे हो जाने की तुष्टि के प्रति उग्र रोष के साथ अपनी प्रतिक्रिया करता हो, और सपने के अन्त को व्यग्रतापूर्ण बना देने की हद तक चला जाता हो। इस प्रकार, हमारे सिद्धान्त के अनुसार, यह पहचान लेना कठिन है कि पीड़ा तथा व्यग्रता वाले स्वप्न वैसे ही इच्छा-पूर्ति वाले स्वप्न हैं जैसे कि तुष्टिकरण वाले सीधे-सीधे स्वप्न।

पीड़ापूर्ण सपने 'दण्ड-स्वप्न' भी हो सकते हैं। यह स्वीकार करना होगा कि सपनों की पहचान एक तरह से सपनों के सिद्धान्त में कुछ नया ही जोड़ती है। उनके द्वारा जो कुछ परिपूरित होता है वह आखिर एक अचेतन इच्छा ही तो होती है–किसी दमित तथा वर्जित इच्छा-आवेग के लिए स्वप्न-द्रष्टा की दण्ड की इच्छा। यहाँ तक ये सपने निम्नलिखित आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं कि : स्वप्न-रचना के पीछे प्रेरणा शक्ति को अचेतन में विराजमान इच्छा द्वारा जुटाया जाता है। परन्तु, एक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हमें इस तथा अन्य इच्छा-स्वप्न के बीच अन्तर स्पष्ट कर देता है। वर्ग (ख) के सपनों में अचेतन स्वप्न-रचना की इच्छा दरअसल दमित सामग्री का भाग होती है। दण्ड-स्वप्नों में होती तो यह वैसी ही अचेतन इच्छा है, मगर एक ऐसी इच्छा जिसे हमें दमित सामग्री का भाग नहीं बल्कि 'ईगो' (ego) का भाग मानना चाहिए।

दण्ड-स्वप्न, इस तरह, स्वप्न रचना में ईगो की और भी व्यापक भागीदारी की संभावना की ओर संकेत करते हैं। स्वप्न-रचना की क्रिया-विधि वास्तव में हर तरह से तब और भी परदर्शी हो जाती है जब हम 'सचेतन' व 'अचेतन' के वैपरीत्य के स्थान पर 'ईगो' व 'दमित' का वैपरीत्य रख देते हैं। लेकिन यह इस बात को ध्यान में रखे बिना नहीं हो सकता कि साइकोन्यूरोसिस में क्या होता है। यहाँ मुझे केवल यह टिप्पणी देने की आवश्यकता है कि दण्ड-स्वप्न का होना सामान्यत: दिन के पीड़ापूर्ण अवशेषों की उपस्थिति के कारण नहीं होता। यदि इसका विपरीत सच हो तो वे वाकई तत्परतापूर्वक पैदा हो जाते, यानि वे विचार जो कि दिन के अवशेष हैं, तुष्टिकरण प्रकृति के तो हों परन्तु अनुचित व निषिद्ध तुष्टीकरण दर्शाते हों, तब इन विचारों में से इनकी विपरीतता के अतिरिक्त कुछ ऐसा नहीं बचता जो कि सपनों में प्रकट होने का रास्ता ढूँढ़ निकाल सकता हो–जैसा कि वर्ग (क) के सपनों के साथ हुआ है। इस प्रकार दण्ड-स्वप्नों की प्रमुख विशेषता यह होगी कि उनमें दमित सामग्री (अचेतन प्रणाली) से आई अचेतन इच्छा स्वप्न-रचना के लिए जिम्मेदार नहीं होती, बल्कि उसके विरुद्ध, प्रतिक्रिया कर रही वह दण्डात्मक इच्छा उसके लिए जिम्मेदार होती है जो कि 'ईगो' से संबद्ध होती है–भले ही वह अचेतन हो।

ऊपर कहे गए कथनों में से कुछ को मैं अपने ही एक सपने से स्पष्ट करूँगा और कुल मिलाकर यह दिखाने का प्रयत्न करूँगा कि सपना किस प्रकार दिन के एक ऐसे अवशेष के साथ बरतता है जिसमें पीड़ाप्रद आशंका शामिल रहती है।

सपने की धुंधली सी शुरुआत, मैं अपनी पत्नी से कहता हूँ कि मेरे पास तुम्हारे लिए ख़बर है, एक ख़ास खबर। वह घबरा जाती है और उस ख़बर को सुनना नहीं चाहती। मैं उसे भरोसा दिलाता हूँ कि घबराने की कोई बात नहीं है और यह एक ऐसी खबर है जिससे तुम बहुत खुश हो जाओगी; और मैं उसे बताना शुरू करता हूँ कि हमारे बेटे की सैन्य अधिकारी कोर ने...की धन राशि भेजी है (5000 क्राउन)...सम्मान स्वरूप...बाँटना...इसी दौरान मैं उसके साथ कोई सामान लेने के लिए एक छोटे से कमरे में जाता हूँ जो स्टोर जैसा है। अचानक मैं देखता हूँ कि मेरा बेटा मेरे सामने हैं, उसने यूनीफार्म नहीं पहन रखी है बल्कि शरीर से बिल्कुल चिपका हुआ सा (सील मछली जैसा) स्पोर्ट सूट पहन रखा है और एक छोटी कैप लगाई हुई है। वह एक अलमारी के बराबर में रखी टोकरी पर चढ़ता है ताकि वह उस अलमारी पर कुछ रख सके। मैं उसे पुकारता हूँ लेकिन कोई जवाब नहीं आता। मुझे लगता है कि चेहरे या माथे पर पट्टी बँधी हुई है, अपने मुँह में कुछ रखते हुए वह उसे मुँह में ठीक बिठाने की कोशिश करता है। साथ ही उसके बालों में सफेदी झलक रही है। इस पर मैं सोचता हूँ: 'क्या वह इतना थक गया है? और क्या उसने नकली दाँत लगवा लिए हैं? लेकिन इससे पहले कि मैं दोबारा उसे पुकारूँ मैं बिना किसी व्यग्रता के जाग जाता हूँ, मगर मेरे पिता की धड़कन तेज़ चल रही थी। घड़ी में उस समय रात के 2.30 बजे थे।

एक पूरा विश्लेषण देना एक बार फिर असम्भव लग रहा है। अत: मैं स्वयं को कुछ निर्णायक बिन्दुओं का महत्त्व बताने तक ही सीमित रखूँगा। दिन के दौरान की पीड़ाप्रद आशंकाओं ने इस सपने को होने का मौका दिया है, एक बार फिर सीमा पर लड़ रहे मेरे बेटे की एक सप्ताह से कोई ख़ैर-ख़बर नहीं आई थी। यह देखना बड़ा आसान है कि स्वप्न-कथा में यह सचेत दोषानुभूति अपना प्रकटीकरण कर देती है कि वह मारा गया है या घायल हो गया है। सपने की शुरुआत से ही हम देख सकते हैं कि पीड़ाप्रद विचार को उसके विपरीत भाव से बदलने की पुरजोर कोशिश की गई है। मुझे एक बड़ी सुखद बात बतानी पड़ी है–धन राशि, सम्मानजनक उल्लेख और बाँटना। लेकिन यह कोशिश बेकार जाती है। बेटे की माँ को कुछ बुरा होने का पूर्वाभास हो जाता है और वह कुछ सुनना नहीं चाहती। छद्म आवरण बहुत झीने हैं, जो प्रसंग छिपाया जाना है वह हर तरफ दीख रहा है। यदि मेरा बैटा मारा जाता है तो उसके साथी उसका सारा सामान आदि वापस कर देंगे, जो कुछ उसने छोड़ा है वह मुझे उसकी बहनों, भाइयों व अन्य लोगों में बाँटना पड़ेगा। आमतौर पर सम्मान की उपाधि उस

अधिकारी को मरणोपरान्त दी जाती है जो वीरगति को प्राप्त हो जाता है। इस तरह यह सपना वह प्रत्यक्ष भावाभिव्यक्ति प्रकट करने का भरसक प्रयास करता है जिसे यह पहले-पहल नकार देना चाहता है, और इसके साथ ही इच्छा-पूर्ति वाली प्रवृत्ति भी स्वयं को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत कर ही देती है। वास्तव में हम नहीं जानते कि इसे आवश्यक प्रेरणा-शक्ति देता कौन है। मगर मेरा बेटा (युद्ध भूमि में) 'गिरता हुआ नहीं दिखाई पड़ा था बल्कि 'चढ़ता हुआ' दिखाई दिया था–दरअसल वह एक अति साहसी पर्वतारोही था। वह यूनिफार्म में न होकर स्पोर्ट सूट में था–यानि उसकी मृत्यु का स्थान अब उस दुर्घटना की आशंका ने ले लिया था जो तब हुई थी जब वह एक बार स्की-दौड़ कर रहा था और गिर पड़ा था और जिससे उसकी जांघ की हड्डी टूट गई थी। जिस तरह की पोशाक उसने पहन रखी थी–जिसमें वह सील मछली जैसा लग रहा था–उससे मुझे तुरन्त एक छोटे बच्चे की याद आ गई–अपने चुलबुले नन्हे नाती की; बालों में सफेदी से उसका पिता यानि अपना दामाद याद आया जिसने युद्ध के दौरान बड़े बुरे वक्त का सामना किया था। इस का अर्थ व महत्त्व क्या है? फिर भी हमें इसे तो छोड़ ही देना चाहिए: वह जगह, स्टोर रूम, अलमारी जिससे वह कुछ निकालना चाहता है (सपने में वह इस पर कुछ रखना चाहता था)–ये सब बातें निश्चित रूप से मेरी अपनी ही एक छोटी सी दुर्घटना की ओर इशारा करती हैं जो हुई भी मेरे ही कारण थी, तब मैं दो व तीन साल की उम्र के बीच रहा था। मैं रसोई वाले स्टोर में एक स्टूल पर चढ़ गया था ताकि अलमारी या मेज़ पर रखी किसी मज़ेदार चीज को ले सकूँ। वह स्टूल डगमगा गया और उसका कोना मेरे निचले जबड़े से टकरा गया, इससे मेरे दाँत टूट कर झड़ सकते थे।

मैं अब स्पष्ट रूप से परिभाषित कर सकता हूँ कि सपने के लिए अचेतन इच्छा का क्या अर्थ होता है। मैं यह मानता हूँ कि ऐसे सपनों का पूरा एक वर्ग है जिसमें 'प्रेरण' मुख्य रूप से या कहें कि एकमेव रूप से केवल दिन के अवशेषों से ही उपजता है। सपने द्वारा वांछित 'प्रेरणा शक्ति' का योगदान किसी इच्छा द्वारा किया जाना आवश्यक होता है। इस बात को अगर आंलकारिक भाषा में कहा जाए तो कहना होगा कि यह पूरी तरह संभव है कि दिन का कोई विचार सपने में 'उद्यमी' की भूमिका निबाहता है लेकिन जैसा कि कहा जाता है–जिस उद्यमी के पास योजना हो और उसे साकार करने के लिए वह उत्साहित भी हो, मगर बिना 'पूँजी' के वह कुछ नहीं कर सकता, अत: उसे एक पूँजीपति की आवश्यकता होती है जो उसके खर्च को वहन कर सके। और, वह पूँजीपति जो कि सपने के मानसिक खर्च का योगदान करता है, निरपवाद रूप से और निर्विवाद रूप से अचेतन से आई इच्छा ही होती है–दिन के विचार की प्रकृति चाहे जो रही हो।

अन्य मामलों में पूँजीपति स्वयं ही उद्यमी बन जाता है, और वास्तव में यही अधिकांश मामलों में होता है। कोई अचेतन इच्छा दिन के कार्यकलाप से जाग जाती हे और फिर वह सपने की रचना करती है, और स्वप्न-प्रक्रियाएँ अन्य सभी आर्थिक सम्भावनाओं के सम्बन्ध को–उपर्युक्त अलंकार के अनुसार– एक समानान्तरता उपलब्ध कराती है। इस प्रकार 'उद्यमी' स्वयं कुछ पूँजी का योगदान करता है, या अनेक 'उद्यमी' इस पूँजीपति से सहयोग-सहायता माँग सकते हैं, या अनेक पूँजीपति मिलकर आवश्यक पूँजी 'उद्यमी' को मुहैया करा सकते हैं। इस तरह ऐसे सपने हैं जिनका भरण-पोषण एक से अधिक स्वप्न-इच्छाओं द्वारा किया जाता है।

इस प्रकार इच्छापूर्ति की प्रकट करने वाली शक्ति एक निश्चित क्षेत्र तक अपना विस्तार कर लेती है और फिर उस क्षेत्र के अन्दर आ जाने वाले सभी तत्त्व प्रकट होने को उद्यत हो उठते हैं–वे भी जो कि बिना किसी स्रोत के होते हैं। अनेक सक्रिय इच्छाओं वाले सपने में हम आसानी से हर इच्छा की पूर्ति होना अलग-अलग देख सकते हैं और प्रत्येक की सीमा भी पहचान सकते हैं, और हम यह भी देख सकते हैं कि सपने में पड़े अन्तराल प्राय: सीमा क्षेत्र की तरह होते हैं।

उपर्युक्त टिप्पणियों ने यद्यपि सपने के लिए दिन के अवशेषों के महत्त्व को सीमित कर दिया है, तथापि उन पर ध्यान दिए जाने की उनकी पात्रता बिलकुल कम नहीं हुई है क्योंकि स्वप्न-रचना में वे एक आवश्यक घटक बने ही रहते हैं–जहाँ तक अनुभव यह आश्चर्य जनक तथ्य उजागर करता है कि हर सपने की कथा-वस्तु जाग्रत अवस्था की हाल-फिलहाल की किसी न किसी बात से अवश्यमेव जुड़ी रहती है, और वह भी किसी एकदम उदासीन किस्म की बात से। अभी तक हम सपने में होने वाले इस घालमेल की आवश्यकता को समझ पाने में असफल रहे हैं। जब हम अचेतन इच्छा द्वारा खेली जा रही भूमिका पर ध्यान देते हैं और न्यूरोसिस के मनोविज्ञान में और आगे की जानकारी चाहते हैं तब हम जान पाते हैं कि कोई अचेतन धारणा या विचार यथावत पूर्वचेतन में प्रवेश कर पाने में अक्षम रहता है और यह कि पूर्वचेतना में पहले से ही विद्यमान ऐसे अहानिकर विचारों से सम्पर्क साध कर ही यह कोई प्रभाव पैदा कर सकता है जिनमें यह अपनी प्रबलता स्थानान्तरित कर दे और फिर उसके द्वारा यह स्वयं को प्रदर्शित होने दे। 'स्थानान्तरण' (transference) ही वह सच है जो कि न्यूरोटिक लोगों के मानसिक जीवन में घटने वाली अनेक आश्चर्यजनक बातों का स्पष्टीकरण उपलब्ध कराता है। यह स्थानान्तरण पूर्वचेतन से लिए हुए विचार को ज्यों का त्यों रहने दे सकता है। मुझे विश्वास है कि पाठक गण दैनिक जीवन के साथ तुलना करने के मेरे शौक को क्षमा करेंगे, परन्तु मैं यह कहने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ कि किसी दमित विचार की स्थिति किसी अमेरिकन दंत चिकित्सक के आस्ट्रिया में होने जैसी है जो कि अपनी प्रैक्टिस तब तक

नहीं चला सकता जब तक वह एक समुचित औषधीय-चिकित्सक अपने साथ न रख ले जिसे कि वह एक साइनबोर्ड की तरह प्रयुक्त कर सके और 'वैधानिक' सुरक्षा भी जिससे पा सके। इसके अलावा चूँकि इस प्रकार का गठजोड़ करने वाला सही मायनों में व्यस्ततम कायिक चिकित्सक (फिजीशियन) नहीं होता है अत: मानसिक जीवन में दमित विचारों के लिए सुरक्षा मुहैया कराने का चयन ऐसे पूर्वचेतन या सचेतन विचारों पर नहीं आ पड़ता है जो कि पूर्वचेतन में सक्रिय अवधान (attention) के प्रति काफी आकर्षित हो चुके होते हैं। अचेतन मन या तो पूर्वचेतन के उन प्रभावों और विचारों में अपने संघर्ष सूत्र ढूँढना पसन्द करता है जो उदासीन होने के कारण अनदेखे रह गए हैं, या उनके प्रति आकर्षित हो जाता है जो रह कर दिए जाने के कारण पुन: उदासीन हो गए हैं। जुड़ाव के सिद्धान्त का यह सुपरिचित मुहावरा है–जिसकी पुनरावृत्ति सारे अनुभव ने की है–कि किसी एक दिशा में बहुत अंतरंग सम्बन्ध-सूत्र रच लेने वाले विचार अन्य सभी नए सम्बन्ध-सूत्रों के पूरे वर्ग के प्रति नकारात्मक तरह का रवैया अपना लेते हैं।

हम यदि यह मान लें कि इन दमित विचारों की बिना स्थानान्तरित होने की वही आवश्यकता स्वप्न में अपना आभास दिलाती है जिनके प्रति हम न्यूरोसिस के विश्लेषण के माध्यम से अवगत हो चुके हैं, तो हम सपने की दो समस्याओं की व्याख्या कर सकते हैं: कि, प्रत्येक स्वप्न-विश्लेषण हाल-फिलहाल के किसी न किसी प्रभाव का सम्मिश्रित होना प्रकट करता है, और कि हाल-फिलहाल का यह तत्त्व सर्वाधिक उदासीन प्रकार का होता है जैसा कि हम अन्यत्र भी देख आए हैं, हम यहाँ यह भी जोड़ सकते हैं कि हाल-फिलहाल के इन उदासीन तत्त्वों का स्वप्न-विचार के प्राचीनतम तत्त्वों का विकल्प बनकर स्वप्न-कथा के रास्ते में बारंबार आ जाने का कारण यह है कि इन्हें प्रतिरोधी सैंसरशिप का भय लेशमात्र भी नहीं होता। हालाँकि सैंसरशिप से मुक्ति केवल आदिम तत्त्वों के प्रति प्राथमिकता को दर्शाती है, मगर हाल-फिलहाल के तत्त्वों की निरन्तर उपस्थिति स्थानान्तरण के वास्ते आवश्यकता की ओर इशारा करती है। प्रभावों के दोनों ही वर्ग, अभी भी जुड़ावों से युक्त सामग्री के लिए दमित विचारों की माँग को सन्तुष्ट करते हैं–उदासीन तत्त्व इसलिए कि दूर तक जाने वाले जुड़ावों को कोई मौका ही नहीं दिया है, और हाल-फिलहाल वाले तत्त्व इसलिए कि उन्हें ऐसे जुड़ावों को रचने के लिए पर्याप्त समय ही नहीं मिला है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दिन के दौरान के अवशेष जिनमें अब हम उदासीन प्रभावों को भी शामिल कर सकते हैं–स्वप्न-रचना में एक भाग सुरक्षित रखते हुए–जैसे दमित इच्छा के अधिकार में प्रेरणा शक्ति–अचेतन से न केवल कुछ ग्रहण करते हैं बल्कि वे अचेतन को ऐसा कुछ प्रस्तुत भी करते हैं जो कि उसके लिए अपरिहार्य होता है। यदि हम इस मानसिक क्रिया में और गहरे तक

पैठ करें तो हमें पूर्वचेतन और अचेतन के बीच चलने वाले उत्तेजनाओं के खेल पर और प्रकाश डालना होगा।

अभी तक हमने स्वप्न-इच्छा पर चर्चा की है और हम इसका सिरा ढूँढ़ते हुए अचेतन तक चले गए हैं, हमने दिन के अवशेषों के साथ इसके सम्बन्धों का विश्लेषण भी किया जो कि पलट कर या तो इच्छा बन जाते हैं या किसी प्रकार का मानसिक आवेग, या फिर केवल हाल-फिलहाल का कोई प्रभाव। इस प्रकार हमारे उन दावों को जगह मिल गई है जो कि अपने पूरे बहुविध रूप में हमारी जाग्रत मानसिक गतिविधि का स्वप्न का रूप ले लेने के बारे में किए जा सकते हैं। अपने विचारों की शृंखला के आधार पर उन पराकाष्ठा वाले मामलों की व्याख्या करना सम्भव हो सकेगा जिनमें सपना–दिन का कार्यकलाप जारी रखते हुए–जाग्रत अवस्था की किसी अनसुलझी समस्या का कोई सुखद परिणाम ले आता है। मगर हम इस प्रश्न की ओर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा पाए हैं: ऐसा क्यों है कि अचेतन मन नींद के दौरान किसी इच्छा-पूर्ति के लिए प्रेरणा शक्ति उपलब्ध कराने के अलावा कुछ और नहीं देता है? इस प्रश्न के उत्तर से इच्छा की अवस्था की मानसिक प्रकृति स्पष्ट हो जानी चाहिए।

जीवन की अनिवार्य आवश्यकता सबसे पहले महत्त्वपूर्ण शारीरिक आवश्यकता के रूप में उभरती है। इन भीतरी आवश्यकताओं द्वारा उत्पन्न उत्तेजनाओं को सक्रियता दर्शाने के लिए बाहरी प्रदर्शन की दरकार होती है जिसे हम 'भावनाओं की अभिव्यक्ति' का नाम दे देते हैं। भूखा बच्चा रोता है या असहाय होकर हाथ-पैर मारता है, और उसकी यह अवस्था बदलती नहीं है क्योंकि भीतरी आवश्यकता से उत्पन्न हुई उत्तेजना की प्रक्रिया किसी क्षणिक प्रभाव वाली नहीं होती बल्कि एक निरन्तर दबाव डालने वाली होती है। उसमें बदलाव केवल तभी आ सकता है जब किसी तरह (बच्चों के मामले में किसी बाहरी मदद द्वारा) सन्तुष्टि की अनुभूति हो जाए। इस अनुभव का एक अनिवार्य घटक होता है किसी निश्चित बोध या अनुभूति का प्रकट हो जाना (हमारे उदाहरण में भोजन का) जिसकी स्मृति-छवि अब उस आवश्यकता से उत्पन्न उत्तेजना की पथरेख से जुड़ चुकी होती है। भला हो इन स्थापित जुड़ावों का, उनके परिणामों का, इस आवश्यकता की आगामी पुनरावृत्ति पर उस मानसिक आवेग का जो कि उस पूर्ववर्ती अनुभूति की स्मृति-छवि को पुनरुज्जीवित करना चाहता है और अनुभूति का आहान करना चाहता है; अर्थात वास्तव में वह प्रथम सन्तुष्टि की अवस्था को पुन: स्थापित करना चाहता है। इस तरह के आवेग को ही हम इच्छा कहते हैं और उसी अनुभूति के पुन: होने को इच्छा-पूर्ति। और, आवश्यकता से उत्पन्न हुई उत्तेजना द्वारा उस अनुभूति को पूरा भावाभिनिवेश इच्छा-पूर्ति का सबसे छोटा रास्ता रचता है। इस प्रकार पहली मानसिक

गतिविधि ही अनुभूति की पहचान को लक्ष्य बनाती है, अर्थात् अनुभूति की उस पुनरावृत्ति को जो कि आवश्यकता की सन्तुष्टि से जुड़ी होती है।

सपना-जो कि एक छोटे परावर्ती पथ को अपना कर अपनी इच्छाएँ पूरी करता है–मानसिक तन्त्र के परिचालन के प्राथमिक तरीके का एक नमूना हमारे लिए एकदम सुरक्षित रखता है जो कि असंगत मानकर परित्यक्त कर दिया गया था, जो जाग्रत अवस्था में तब हावी रहा करता था जब हमारा मानसिक जीवन शैशव काल में था और अक्षत था, वह वहाँ से निकलकर हमारी निद्रावस्था में प्रवेश कर गया लगता है–ठीक वैसे ही जैसे हम अपनी नर्सरी कक्षा में मानव जाति के परित्यक्त अस्त्र-शस्त्रों को अब भी देखते हैं–धनुष, बाण। सपने देखना बालपन के पीछे छूट गए मानसिक जीवन का एक भाग है। साइकोसिस अवस्था में मानसिक तन्त्र के परिचालन के वे तौर तरीके जो कि जाग्रत अवस्था में दबा दिए जाते हैं, स्वयं को पुन: प्रबल रूप से खड़ा कर लेते हैं, और इस प्रकार बाहरी जगत में अपनी माँगों को संतुष्ट न कर पाने की अपनी अक्षमता को बहला व बहका लेते हैं।

अचेतन इच्छा-आवेग दिन के दौरान भी साफ तौर पर अपना सर उठाने की भरपूर कोशिश करते हैं; और स्थानान्तरण का सच हमें बताता है कि वे आवेग पूर्वचेतन प्रणाली से होते हुए सचेतन में बलपूर्वक घुसने का प्रयास करते हैं और इस स्वत: चरता की बागडोर भी अपने हाथ में रखते हैं। इस प्रकार अचेतन व पूर्वचेतन के बीच होने वाली सैंसरशिप में–स्वप्न जिसे हमें मान लेने को बाध्य करता है–हमें अपने मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षक को पहचान लेना चाहिए और उसका आदर करना चाहिए। लेकिन, रात में उसकी चौकसी में आई कमी और अचेतन के दमित आवेगों को प्रकट होने देना तथा इस तरह भ्रमित करने वाले परावर्तन की प्रक्रिया को सम्भव होने देना क्या उसकी लापरवाही नहीं है? मेरे विचार से ऐसा नहीं है क्योंकि जब समीक्षा करने वाला यह संरक्षक विश्राम के लिए जाता है–और हमारे सबूत हैं कि उसकी नींद घोड़े बेचकर सोने वाली नींद होती है–तब वह स्वत: चरता के प्रवेश द्वार को बन्द करना नहीं भूलता। सामान्यत: अचेतन से आकर जो भी आवेग मंच पर उछल-कूद मचाए उन्हें रोकने-थामने की आवश्यकता नहीं है, वे कोई हानि नहीं पहुँचाते। नींद उस दुर्ग की रक्षा की गारण्टी देती है जिसकी चौकसी की जानी है। हालात तब कम हानिकर नहीं होते जब ऊर्जा का विस्थापन तैयार कर दिया जाता है–रात में समीक्षाकर्ता सैंसरशिप द्वारा की गई ऊर्जा की अवनति से नहीं बल्कि सैंसरशिप की दुर्बलता द्वारा, या अचेतन उत्तेजनाओं के विकृतिजन्य बलवर्धन द्वारा, और यह भी तब होता है जब पूर्वचेतन केन्द्रित हो जाए और स्वत: चरता के द्वार खुल जाएँ। तब संरक्षक निष्प्रभावी हो जाता है, अचेतन उत्तेजनाएँ पूर्वचेतना को पराजित कर देती हैं और पूर्वचेतना से वे हमारे वचनों एवं कर्मों पर हावी हो

जाती हैं; या वे विभ्रम कर देने वाले परावर्तन को बल प्रदान करती है; और इस प्रकार वे एक ऐसे नए तन्त्र को दिशा-निर्देश देने लगती है जो कि उनके लिए रचा ही नहीं गया है। इस अवस्था को हम साइकोसिस कहते हैं।

अब हम अपने उस मनोवैज्ञानिक संरचना के निर्माण को जारी रखने की बिल्कुल सही स्थिति में पहुँच गए हैं जिसे हमने दो प्रणालियों–अचेतन व पूर्वचेतन–को ले आने के बाद छोड़ दिया था। तथापि, सपने में एकमेव मानसिक प्रेरणा शक्ति के रूप में इच्छा के बारे में अभी और आगे विचार करने का हमारे पास कारण है। हमने इस व्याख्या को स्वीकार कर लिया है कि हर मामले में सपने का इच्छा-पूर्ति वाला होने का कारण उस अचेतन प्रणाली की गतिविधि होती है जिसके सामने इच्छा-पूर्ति के अलावा कोई और लक्ष्य नहीं होता, और जिसके पास इसे करने के लिए इच्छा-संवेगों के अलावा कोई और बल नहीं होता। तो अगर हम थोड़ी देर के लिए स्वप्न-व्याख्या के तथ्य से ऐसे दूरगामी मनोवैज्ञानिक अनुमानों को विकसित करने के अधिकार पर जमे रहे तो यह दिखाना हमारा कर्तव्य हो जाता है कि वे ऐसे प्रसंग में भी सपने को प्रवेश दिला देते हैं जो कि अन्य मनोवैज्ञानिक संरचनाओं को भी अपने आगोश में ले सकते हैं। अगर अचेतन की प्रणाली का अस्तित्व है तो सपना अपनी अकेली अभिव्यक्ति नहीं ले सकता, हर सपना एक इच्छा पूर्ति सपना ही हो सकता है, 'मगर सपने के साथ-साथ असामान्य इच्छा-पूर्ति के अन्य स्वरूप भी अवश्य होते हैं। और सच तो यह है कि सभी विक्षिप्त (psychoneurotic) लक्षणों का सिद्धान्त इसे एक वाक्य में कहते समय अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है कि 'वे भी अचेतन की इच्छा-पूर्ति के रूप में ही देखे जाने चाहिए।' हमारी व्याख्या सपने को मनोचिकित्सक के लिए सर्वाधिक महत्त्व की शृंखला का केवल पहला सदस्य बनाती है, जिसकी समझ का अर्थ है मनोचिकित्सकीय समस्या के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक भाग का समाधान। परन्तु इच्छा-पूर्ति के इस वर्ग के अन्य सदस्य–उदाहरणार्थ, हिस्टीरिया वाले लक्षण–का मैं एक आवश्यक घटक जानता हूँ जिसे मैं अभी तक सपनों में तलाश लेने में विफल रहा हूँ।

स्वप्न के बारे में अभी तक हम यही जाने हैं कि यह अचेतन की किसी इच्छा-पूर्ति की अभिव्यक्ति होती है, और प्रकटत: हावी पूर्वचेतना प्रणाली इस पूर्ति को तब होने देती है जब यह इच्छा को कुछ तोड़-मरोड़ में से गुजरने को विवश कर देती है। इसके अलावा, दरअसल हम ऐसी अवस्था में नहीं होते कि स्वप्न में पूरी होने वाली इच्छा के विरुद्ध विद्यमान विचारों की शृंखला को लगातार प्रदर्शित करते रहें। स्वप्न-व्याख्या में हम केवल यदा-कदा ही प्रतिक्रिया उत्पन्न होने के संकेत देख पाते हैं। लेकिन पूर्वचेतना से आया कोई योगदान अन्यत्र से मिल जाता है। प्रभावी प्रणाली जब एक बार सोने की इच्छा करती हुई अपने आप को वापस लेने लगती है तो सपना अचेतन से कोई

इच्छा उठाकर उसे तोड़ने-मरोड़ने के सारे तरीके अपना कर, और अभिव्यक्ति में परिवर्तन पैदा करके इस इच्छा को पहचानते हुए उसे अभिव्यक्ति प्रदान कर सकता है, और इस प्रकार नींद की पूरी अवधि के लिए प्रसंगाधीन इच्छा को उठाए रख सकता है।

पूर्वचेतना की ओर से, सोने की यह आग्रही इच्छा, सपने के बनने पर एक बिलकुल सामान्य सुगमीकरण प्रभाव डालती है। उस पिता के सपने को यहाँ फिर से लें जो मृत्यु-कक्ष से आने वाली तेज़ रोशनी से इस निष्कर्ष पर पहुँच गया था कि हो सकता है कि उसके बच्चे के पार्थिव शरीर को आग लग गई हो। हम यह देख चुके हैं कि तेज चमक से पिता के स्वयं जाग जाने के बजाय सपने में उसे इस निष्कर्ष पर पहुँचाने के लिए मानसिक निर्णायक शक्ति की यह इच्छा रही थी कि सपने में जीवित दीखते बच्चे का जीवन कुछ पलों के लिए तो बढ़ ही जाए। इस दमन से उभरती अन्य इच्छाओं पर शायद हमारा ध्यान नहीं गया है क्योंकि हम इस सपने की व्याख्या नहीं कर पाए हैं। मगर, इस सपने में दूसरी प्रेरणा शक्ति को हम जोड़ सकते हैं–पिता की सोने की इच्छा। क्योंकि बच्चे के जीवन की तरह ही पिता की नींद भी कुछ पलों के लिए लम्बी हो गई थी। इसके मूल में यह हेतु हो सकता है: 'सपने को चलने दो, वरना मुझे उठ-जागना पड़ेगा।' जैसा कि इस सपने में है वैसा ही अन्य सभी सपनों में भी होता है कि सोते रहने की इच्छा अचेतन इच्छा को अपना अवलम्बन दे देती है। इस पुस्तक में हमने अनेक ऐसे सपनों का उल्लेख किया है जो सुविधा के लिए अभिव्यक्त हुए थे। परन्तु सच तो यह है कि सभी सपने इस श्रेणी में आ सकते हैं। नींद को जारी रखने की इच्छा की सामर्थ्य सपने से जागने में आसानी से पहचानी जा सकती है जो कि बाहरी संवेदी उद्दीपनों को इतना विस्तार दे देती हे कि वे नींद को जारी रहने के साथ अपना तालमेल बिठा लेती है; उसे सपने में बुन देती है ताकि बाहरी जगत के किसी बुलावे से वह बाहर न चला जाए। लेकिन सोते रहने की यह इच्छा अन्य उन सभी सपनों को भी आने की इजाजत दे देती है जो नींद को अन्दर से बाधा डालने का काम कर सकते हैं। 'चिन्ता मत करो, सोते रहो, यह तो एक सपना है'–पूर्वचेतना बहुत से मामलों में सचेतन को तब यही सुझाव देती है जब सपना बहुत खराब हो, और बिल्कुल सामान्य ढंग से सपना देखने के लिए प्रभावी हमारे मानसिक रवैये को प्रकट करती है–भले ही सपना अकथित रहा हो। मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि अपनी नींद की पूरी अवधि के दौरान हम सब इस बात के प्रति कि हम सपना देख रहे हैं, उतने ही निश्चित रहते हैं, जितना कि इस बात के प्रति कि हम सो रहे हैं। इस आपत्ति को यहाँ उपेक्षित कर देना आवश्यक हे कि हमारी सचेतना कभी बाद वाली बात (सो रहे हैं) से निर्देशित नहीं होती, और, कि यह पहले वाली बात (सपना देख रहे है) से सीधे-सीधे केवल खास मौकों पर ही निर्देशित होती है–जब सैंसरशिप

को आवश्यक लगे, वह भी अचानक। इसके विपरीत ऐसे लोग हैं जिन्हें यह बात सारी रात पता रहती है कि वे सो रहे हैं और सपने अच्छी तरह अभिव्यक्त हो रहे हें और जो इस प्रकार प्रकटत: अपने स्वप्न-जीवन के मार्ग दर्शन की सचेत क्षमता से सम्पन्न रहते हैं। उदाहरण के लिए, ऐसा स्वप्न द्रष्टा जब किसी सपने के किसी पहलू से असन्तुष्ट हो जाता है तो वह जागे बिना उस सपने को वहीं काट देता है और फिर उसे एक नए सिरे से शुरू कर लेता है ताकि वह सपना एक भिन्न मार्ग पर जारी रहे–बिलकुल किसी ऐसे लोकप्रिय नाटककार की तरह जो जनता की माँग पर अपने नाटक को एक सुखद अन्त की तरफ मोड़ देता है। या, कभी-कभी, सपना जब स्वप्न द्रष्टा को यौन उत्तेजना के चरम की ओर ले जाने लगता है, तब वह नींद में ही सोच लेता है: मैं इस सपने को जारी रखना और स्खलित होकर खाली होना नहीं चाहता, बल्कि इसे सचमुच की स्थिति के लिए बचाए रखना चाहता हूँ।'

जहाँ तक सपनों के मार्गदर्शन को लेकर दी गई अन्य टिप्पणियों का प्रश्न है, फेरेंजी कहता है: 'सपना उस विचार को ग्रहण कर लेता है जो उस समय हमारे मानसिक जीवन में स्थान बनाए हुए हो, और फिर उसे हर तरफ से विस्तार देता है। यह किसी भी चल रहे स्वप्न के चलचित्र को वहीं रोक देता है जहाँ इसे यह खतरा लगता है कि इच्छा-पूर्ति रास्ता भटक जाएगी, और फिर वह एक नए तरह का समाधान तब तक ढूँढ़ता है जब तक वह किसी इच्छा की पूर्ति नहीं कर देता।

सपने के कारण जाग जाना, सपनों का कार्य, व्यग्रता-स्वप्न

चूँकि अब हम यह जान गए हैं कि पूरी रात पूर्वचेतन नींद की इच्छा को पूरा करने में लगी रहती है, तो हम स्वप्न-प्रक्रिया के रास्ते पर समझदारी के साथ आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन हम उस का संक्षिप्तिकरण कर लें जो हम इस प्रक्रिया के बारे में जाने हैं। हमने देखा है कि दिन के अवशेष मन की जाग्रत अवस्था से छूटे रह जाते हैं, ये वे अवशेष होते हैं जिनसे सारे भावाभिनिवेशों को वापस लेना सम्भव नहीं होता है। या तो दिन के दौरान की जाग्रत अवस्था में कोई अचेतन इच्छा उठ खड़ी होती है, या फिर ये दोनों मेल खा जाती हैं। इसकी बहुविध सम्भावनाओं के बारे में हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। या तो दिन के दौरान पहले से ही आ जाने पर या निद्रावस्था के आ जाने पर अचेतन इच्छा दिन के अवशेषों की ओर उनुख हो जाती है और उन तक पहुँच भी जाती है। इस प्रकार एक इच्छा का स्थानान्तरण हाल-फिलहाल की सामग्री के पास हो जाता है, या अचेतन से आयी हुई किसी प्रबलता के चलते हाल-फिलहाल की कोई दमित इच्छा पुनरुज्जीवित हो उठती है। यह इच्छा अब विचार प्रक्रिया के सामान्य मार्ग के साथ-साथ चलते हुए सचेतन तक पहुँचने का प्रयास उस

पूर्वचेतना के माध्यम से करती है जिसकी वह मूल निवासी है। लेकिन उस सैंसरशिप से इसका टकराव हो ही जाता है जो अभी भी डटा खड़ा होता है और जिसके प्रभाव से यह हथियार डाल देती है। अब यह तोड़-मरोड़ आरम्भ करती है जिसके लिए हाल फिलहाल की सामग्री का स्थानान्तरण हो जाने के कारण इसे रास्ता पहले से ही तैयार मिलता है। अभी तक यह मनोग्रंथी (obsession) मिथ्या आभास जैसा कुछ–बनने के रास्ते पर होती है, अर्थात् स्थानांतरण द्वारा सबल किया गया लेकिन सैंसरशिप के कारण तोड़ा-मरोड़ा गया कोई विचार। परन्तु पूर्वचेतन की निद्रावस्था के कारण इसकी प्रगति अब थम जाती है, लगता है कि यह प्रणाली उत्तेजना में कमी लाकर स्वयं को सुरक्षा प्रदान करती है। इसलिए, स्वप्न-प्रक्रिया परावर्तन का रास्ता चुनती है जो कि निद्रावस्था की विलक्षणता के कारण तभी-तभी खुला होता है, और ऐसा करने में वह स्मृति-समूहों द्वारा इसे दिए गए आकर्षण के पीछे चलने लगती है जो कि केवल टुकड़ों-टुकड़ों में स्वयं को दृश्य-भावाभिनिवेश के रूप में प्रस्तुत करते हैं न कि प्रतीकों के अनुवाद के रूप में। परावर्तन के रास्ते पर चलने के लिए इसे चित्रणीयता की आवश्यकता होती है। स्वप्न क्रिया अब तक अपने घुमावदार रास्ते का दूसरा भाग पूरा कर चुकी होती है। पहला भाग अचेतन दृश्यों या काल्पनिकताओं को पूर्वचेतना की ओर ले जाने वाला संकरा मार्ग होता है, जबकि दूसरा भाग सैंसरशिप की हदबंदी से टकरा दृढ़ता व संघर्ष करने वाला मार्ग हो जाता है। लेकिन, स्वप्न-प्रक्रिया जब एक दृश्य-वस्तु बन जाती है तब यह पूर्वचेतना में सैंसरशिप तथा निद्रावस्था द्वारा खड़े किए गए अवरोधों से बच-बचाकर निकल जाती है। यह सचेतन का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हो जाती है क्योंकि सचेतन मन–जिसका अर्थ हमारे लिए मानसिक गुणों का बोध कराने वाला एक संवेदन तन्त्र है–जाग्रत अवस्था में दो स्रोतों से उद्दीप्त हो सकता है: प्रथम, पूरे मानसिक तन्त्र की अवबोधक प्रणाली से, और द्वितीय उस सुख या दुख के उद्दीपन से जो कि इस तन्त्र के भीतर ऊर्जा के क्रम-परिवर्तन द्वारा उत्पन्न अनन्य मानसिक विशिष्टताओं के रूप में उभरते हैं। हमें यह मानना पड़ेगा कि सुख और दुख, आनंद और पीड़ा–इनकी अनुभूति स्वत: ही भावाभिनिवेशिक प्रक्रिया को नियन्त्रित तथा व्यवस्थित करती है, परन्तु प्रदर्शन को और अधिक तृप्तिप्रद बनाने के लिए बाद में पीड़ा-प्रतीकों के कुछ अन्य विचारों के प्रवाह को भी नियन्त्रित करने लगती है। ऐसा कर पाने के लिए, पूर्वचेतन प्रणाली को स्वयं के ही कुछ ऐसे गुणों की आवश्यकता होती है जो सचेतन को आकर्षित कर सके और उन्हें सम्भाषण के प्रतीकों वाली स्मृति प्रणाली के माध्यम द्वारा पूर्व चेतन प्रक्रिया के सूत्रों से प्राप्त कर सके। इस प्रणाली की विशिष्टताओं के माध्यम से वह सचेतन मन अब विचार-प्रक्रिया का एक भाग बन जाता है जो कि अब तक केवल अवबोधन वाला एक संवेदी अंग

ही था। अब यहाँ दो संवेदी सतह बन जाती हैं–एक तो अवबोधन की ओर जाती है और दूसरी पूर्वचेतन की विचार-प्रक्रिया की ओर।

मेरा मानना है कि पूर्वचेतना की ओर उन्मुख होने वाले सचेतन की संवेदी सतह नींद द्वारा अनुद्दीप्त रहती है। निद्राकालीन विचार-प्रक्रिया के प्रति रुचि न रखना एक समुचित प्रक्रिया होती है। विचार में तब कुछ भी घटित नहीं होता, पूर्वचेतन तो बस सो जाना चाहता है। परन्तु सपना जब एक बार दृश्य बन जाता है तो वह प्राप्त गुणों के माध्यम से सचेतन को उद्दीप्त करने में सक्षम हो जाता है। संवेदी उद्दीपन वही करता है जो वास्तव में इसका कार्य है, अर्थात् यह पूर्व चेतन में उपलब्ध भावाभिनिवेशिक ऊर्जा के एक ऐसे भाग को निर्देशित करता है जो कि अवधान के रूप में उद्दीपन का कारण बनता है। अत: हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि सपने में हमेशा एक 'जगाने वाला' प्रभाव रहता है अर्थात् यह पूर्वचेतना की शांत ऊर्जा के क्रियाशीलता वाले भाग को जगा देता है। इस ऊर्जा के प्रभाव में आकर वह अब उस प्रक्रिया से प्रवेश कर जाता है जिसे हमने संबद्धता तथा बोधगम्यता की दृष्टि से द्वितीय विस्तार का नाम दिया है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस ऊर्जा द्वारा स्वप्न को एक अन्य दृश्य-वस्तु की तरह लिया जाता है और यह समान प्रकार के पूर्वानुमानित विचारों का उतना ही विषय बनता है जितना कि उस सामग्री में सम्भव हो पाता है। जहाँ तक स्वप्न-प्रक्रिया का यह तीसरा भाग कोई दिशा पाता है, यह और भी आगे बढ़ने लगता है।

गलतफहमी को दूर करने के लिए, इन स्वप्न प्रक्रियाओं की अस्थायी विशिष्टताओं के लिए कुछ शब्द कहना अनुचित न होंगे। मौरी के पहेली जैसे गिलोटीन वाले सपने द्वारा प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत एक बहुत ही दिलचस्प चर्चा में गौबलॉट दिखाना चाहता है कि सपना सुप्तावस्था और जागने के बीच का ही समय लेता है। जाग जाने की प्रक्रिया को समय की आवश्यकता होती है, और इसी दौरान सपना होता है। यह मान लिया जाता है कि सपने की अन्तिम तस्वीरें इतनी स्पष्ट होती हैं कि वे स्वप्न-द्रष्टा को जागने के लिए बाध्य कर देती हैं, वास्तव में ये केवल इसलिए स्पष्ट लगती हैं क्योंकि जब ये प्रकट होती है तब स्वप्न द्रष्टा पहले ही जाग जाने के कगार पर पहुँच चुका होता है।

डगास द्वारा इस बात की ओर पहले ही संकेत दे दिया गया है कि अपने सिद्धान्त को व्यापक बनाने के चक्कर में गौबलॉट अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों को अनदेखा करने के लिए विवश था। ऐसे भी अनेक सपने होते हैं जिनसे हम जाग नहीं उठते, उदाहरणार्थ, ऐसे सपने जिनमें हम सपना देखते हैं कि हम सपना देख रहे हैं। स्वप्न-क्रिया की हमारी अपनी जानकारी के अनुसार हम यह किसी भी तरह नहीं मान सकते कि सपना केवल जाग जाने के बिन्दु तक ही चलता है। इसके विपरीत, हम इस बात की संभावना पर विचार कर सकते हैं कि स्वप्न-क्रिया का प्रथम भाग तो पहले ही दिन के दौरान तब शुरू हो चुका होता है

जब कि हम पूर्वचेतन के प्रभाव में ही चल रहे होते हैं। सपने का दूसरा चरण–जैसे कि सैंसरशिप द्वारा बदलाव किया जाना, अचेतन दृश्यों द्वारा आकर्षण का प्रयोग किया जाना और दृश्यों में पैठ करना–ये सब शायद सारी रात चलता रहता है, और तदनुसार जब हम कहते हैं कि हम सारी रात सपने देखते रहे, तो वह बात एक तरह से सही ही होती है–हालाँकि हम यह नहीं कहते कि हमने सपना देखा है। फिर भी मैं यह मान लेना आवश्यक समझता हूँ कि सजग होने के समय तक स्वप्न-प्रक्रियाएँ वाकई उस अस्थायी क्रम में चलती हैं जैसा कि हमने बताया है–यानि पहले स्थानान्तरित इच्छा आती है, फिर सैंसरशिप द्वारा की गई काट-छाँट तथा बदलाव आता है, और फिर यह दिशा परिवर्तन करके परावर्तन की ओर चला जाता है इत्यादि। यह क्रम तो हमने विवरण हेतु बना लिया है। कुछ व्यक्तिगत अनुभव तो मुझे यह विश्वास कर लेने के लिए विवश करते हैं कि स्वप्न-क्रिया को अपने परिणाम को प्रस्तुत करने के लिए एक दिन और एक रात से अधिक समय की आवश्यकता होती है। यह पूरा मामला एक आतिशबाजी जैसा है जिसके एक पल की चकाचौंध भरे प्रदर्शन के लिए कई घण्टों की तैयारी की आवश्यकता होती है।

स्वप्न-क्रिया में से गुजरते हुए स्वप्न प्रक्रिया या तो सचेतन को अपनी ओर आकृष्ट करने और पूर्वचेतन को उठाने के लिए पर्याप्त प्रबलता हासिल करती है या इसकी प्रबलता होती ही पर्याप्त है, और यह तब तक प्रतीक्षा करती है जब तक कि जागने से ठीक पहले वाली सजगता आधे रास्ते तक नहीं पहुँच जाती। अधिकांश सपने तुलनात्मक तौर पर कम मानसिक प्रबलता के साथ चलते प्रतीत होते हैं क्योंकि वे जागने की प्रक्रिया की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जब हम गहरी नींद से अचानक जाग उठते हैं तब सिद्धान्ततः हम कोई सपना देखा हुआ मान बैठते हैं। यहाँ, और स्वतः जागने में भी, हमारी पहली नज़र स्वप्नक्रिया द्वारा निर्मित दृश्य-कथा को ही उजागर करती है, जबकि दूसरी नज़र बाहरी दुनिया की चीज़ों पर।

लेकिन, सिद्धान्त की दृष्टि से, अधिक दिलचस्प सपने वे होते हैं जो हमें नींद के बीच जगा देने में सक्षम होते हैं। हमें उस उद्देश्यपरकता को दिमाग में रखना चाहिए जो अन्य सभी मामलों में देखी-दिखाई जा सकती है, और स्वयं से यह पूछना चाहिए कि सपना जो कि अचेतन इच्छा ही होता है–इतनी शक्ति कैसे पा जाता है कि वह हमारी नींद को विक्षुब्ध कर दे इसका स्पष्टीकरण शायद ऊर्जा के उन सूत्रों में मिल सके जिन्हें हम अभी तक समझ नहीं पाए हैं। यदि हम समझ सके तो शायद जान सकेंगे कि सपने को दी गई स्वतन्त्रता दरअसल सचेतन की उस वैकल्पिक अवस्था के विरुद्ध बचाई गई ऊर्जा की स्थानपूर्ति करती है जो कि जाँच-पड़ताल का अधिकार रात के दौरान वैसा ही अपने हाथ में रखती है। जैसा कि दिन में। अनुभव बताता हे कि सपने से हमारी नींद रात में कई बार भले

ही खुल जाती हो मगर फिर भी यह नींद के साथ अनुकूल और अविरुद्ध रहता है। हम एक दो पल के लिए जागते तो हैं मगर फिर तुरंत ही सो भी जाते हैं। यह ऐसा ही है जैसा हम किसी मक्खी या मच्छर को उड़ा देने के लिए जागें–बस। जब हम दोबारा नींद में डूब जाते हैं तब तक हम नींद में खलल डालने वाले कारण को दूर कर चुके होते हैं। इसका एक सुपरिचित उदाहरण धाय या नर्स की नींद है जो दर्शाता है कि सोने की इच्छा कोई कार्य-विशेष करने के प्रति दिए जा रहे ध्यान के साथ तालमेल बैठाए रखती है।

परन्तु, यहाँ हमें एक आपत्ति पर ध्यान देना होगा जो कि अचेतन प्रक्रिया की एक बड़ी जानकारी पर आधारित है। हमने अचेतन इच्छाओं को सदैव सक्रिय रहने वाली बताया है, तथापि इस बात पर भी बल दिया है कि वे दिन के दौरान इतनी सशक्त नहीं रहतीं कि स्वयं को प्रकट कर सकें। लेकिन, जब निद्रावस्था एकदम आ जाए और अचेतन इच्छा कोई सपना रच देने के लिए और पूर्बचेतन को जगा देने के लिए अपनी शक्ति दिखा चुकी हो, तब सपने का संज्ञान हो जाने के बाद यह शक्ति अशक्त क्यों हो जाती है? क्या इस बात की भरपूर संभावना नहीं है कि स्वप्न स्वयं को लगातार पूर्वावस्था में लाता रहता हो–उस मच्छर या मक्खी की तरह जो कि बार-बार उड़ा दिए जाने के बाद लौट-लौटकर वहीं आना पसन्द करती है? अपने इस दावे के लिए हमारे पास क्या दलील हैं कि सपना खलल को दूर करता है ताकि हम सोते रह सकें?

यह तो नितांत सत्य है कि अचेतन इच्छाएँ सदैव सक्रिय रहती हैं। जब कभी भी उद्दीपन की एक बड़ी मात्रा उनका प्रयोग करती है तो वे ऐसा मार्ग अपनाती हैं जो हमेशा व्यवहार्य होता है। दरअसल, यह अचेतन प्रक्रिया की एक ऐसी अनूठी विशिष्टता हे जोकि अविनाशी है। अचेतन मन में से कुछ भी मिटाया या हटाया नहीं जा सकता। वह कुछ भी व्यतीत या विस्मृत नहीं होता। न्यूरोसिस के अध्ययन में–खासतौर पर हिस्टीरिया के मामलों में–इस बात ने हम पर जबरदस्त असर डाला है। विचारों का अचेतन पथ तब अविलम्ब सुगम हो जाता है जब उद्दीपन पर्याप्त मात्रा में एकत्रित हो गया होता है। तीस वर्ष झेला गया अपमान भाववृत्ति के अचेतन स्रोतों तक पहुँच बनाए रखते हुए, इन तमाम तीस वर्षों में इस तरह सक्रिय रहता है जैसे यह कल की ही घटना हो। जब कभी भी इसकी स्मृति को छेड़ दिया जाता है तो यह पुनरुज्जीवित हो उठता है और उत्तेजना के साथ स्वयं को प्रदर्शित करता है। मनोचिकित्सा को यहीं हस्तक्षेप करना होता है, इसका काम यही है कि अचेतन प्रक्रियाओं का निपटान कर दिया जाए ताकि वे भुला दी जाएँ। दरअसल, स्मृतियों का धुँधला होते जाना और पुरानी छवियों का हलका पड़ते जाना–यह सब बड़ा श्रम साध्य काम है, और यह काम पूर्वचेतन करता है। मनोचिकित्सा तो बस इतना भर करती है कि वह अचेतन को पूर्वचेतन के अधिक्षेत्र में ले आए।

इसलिए, किसी एकल अचेतन उद्दीपन-प्रक्रिया के लिए केवल दो सम्भव मार्ग रह जाते हैं–या तो उसे उसी के भरोसे छोड़ दिया जाए, जिस दशा में यह अन्ततः कहीं न कहीं फूट पड़ती है और उस समय अपनी उत्तेजना को अपनी स्वाभाविक चलन क्षमता में बदल देती है, या पूर्वचेतन के प्रभाव के समक्ष अपने हथियार डाल देती है और इस तरह इसकी उत्तेजना कहीं फूट पड़ने के बजाए निष्क्रिय हो जाती है। फूट पड़ने वाली स्थिति ही स्वप्न-प्रक्रिया में घटित होती है। पूर्वचेतन से उत्पन्न भावाभिनिवेश–जो कि सपने के दृश्यमान हो जाने के बाद उससे मिल जाता है–सपने के अचेतन उद्दीपन को बाँध देता है और नींद के लिए उसे निरापद बना देता है। स्वप्न द्रष्टा जब पल भर के लिए जागता है तब तक वह उस मक्खी या मच्छर को उड़ा चुका होता है जिसने उसकी नींद में खलल डाला था। यहाँ हम यह संदेह कर सकते हैं कि यह अधिक सुविधाजनक व सरल रहेगा कि अचेतन इच्छा का रास्ता खुला छोड़ दिया जाए ताकि वह अपने पथ को परावर्तन के लिए सुगम बना सके, ताकि वह परावर्तन कोई सपना रच सके और फिर पूर्वचेतन के किसी छोटे से खाके में उस सपने को बाँध सके और उसका निपटान कर सकें–बजाय इसके कि नींद की पूरी अवधि के दौरान अचेतन पर अंकुश लगाए रखे। दरअसल यह अपेक्षित किया जाता रहा है कि सपना–भले ही वह मूलरूप से सोद्देश्य प्रक्रिया न रहा हो–मानसिक जीवन की शक्तियों के खेल में किसी न किसी निश्चित कार्य को पकड़ ही लेगा। अब हम देखें कि वह कार्य है कौन सा। सपने ने अचेतन के उस उद्दीपन को वापस पूर्वचेतन के अधिक्षेत्र में तो आने का काम अपने हाथ में ले लिया है जो खुला छोड़ दिया गया था। इस तरह यह अचेतन के उद्दीपन को विमुक्त कर देता है; यह अचेतन के लिए एक सेफ्टी-वाल्व का काम करता है, और साथ ही, जाग्रत गतिविधियों की थोड़ी सी लागत पर पूर्वचेतन की नींद को संरक्षित करता है। इस प्रकार, इस वर्ग के अन्य मानसिक स्वरूपों की तरह ही सपना स्वयं एक सुलह-समझौता बनकर आता है, दोनों ही प्रणालियों की इच्छाओं की पूर्ति करता हुआ–जहाँ तक कि वे परस्पर अनुकूल तथा अविरोधी रहती हैं–दोनों की ही सेवा करता हुआ।

उपर्युक्त गुण में कि–जहाँ तक वे दो इच्छाएँ परस्पर अनुकूल तथा अविरोधी हों–यह बात अन्तर्निहित है कि कुछ ऐसे मामले भी हो सकते हैं जिनमें सपने का कामधाम ठप हो जाए। यदि देखें तो स्वप्न-प्रक्रिया को अचेतन की इच्छापूर्ति के रूप में स्वीकार किया गया है, परन्तु यदि इस इच्छापूर्ति का प्रयास पूर्वचेतन को इतने प्रबल रूप से अशान्त कर देता है कि वह अपनी विश्राम की अवस्था में न रह सके तो सपना अपना समझौता तोड़ देता है और अपने काम का दूसरा भाग पूरा नहीं कर पाता है। तब यह पूरी तरह विदा हो जाता है और इसके स्थान पर पूरी जाग आ जाती है। परन्तु, यहाँ भी अगर सपना नींद में

खलल डालने वाले के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो भी वह इसका दोषी नहीं है। यहाँ, वास्तव में मैं व्यग्रतास्वप्न के बारे में सोच रहा हूँ लेकिन इससे पहले कि ऐसा लगने लगे कि जब भी मौका मिलता है मैं इस साक्ष्य को इच्छा-पूर्ति के सिद्धान्त के विरुद्ध ऊहा-पोह में डाल देने की कोशिश करता हूँ, मैं व्यग्रता-स्वप्न के बारे में कम से कम कुछ तो स्पष्टीकरण कर ही दूँ।

कोई ऐसी मानसिक प्रक्रिया जो व्यग्रता उत्पन्न करती हो, वह भी एक इच्छापूर्ति हो सकती है–इस बात में हमारे लिए अब कुछ भी विरोधाभास नहीं रहा है। इसे हम इस तथ्य के साथ स्पष्ट कर सकते हैं कि इच्छा एक प्रणाली (अचेतन) का तो हिस्सा होती है, जब कि दूसरी प्रणाली (पूर्वचेतन) उसे, अर्थात् इच्छा को खारिज कर देती हे और दबा देती हैं। पूर्वचेतना द्वारा अचेतन को अपने अधीन कर लेने की स्थिति हमारी मानसिक स्वस्थता को ओर से छोर तक नहीं होती; इस दमन की सीमा ही हमारी मानसिक सामान्य स्थिति की मात्रा की परिचायक होती है। विक्षिप्तता के लक्षण इस बात के सूचक होते हैं कि दोनों प्रणालियाँ परस्पर द्वन्द्व में हैं, ये लक्षण इस द्वन्द्व में समझौते का परिणाम होते हैं और अस्थायी रूप से इस द्वन्द्व पर विराम लगाते हैं। एक ओर तो वे इसके उद्दीपन को बाहर निकलने का मार्ग सुझाते हैं–यह एक प्रकार का लाँघ कर जाने वाले गेट का काम करता है–जबकि, दूसरी ओर वे पूर्वचेतन का अचेतन पर हावी होना किसी हद तक सम्भव बना देते हैं। इस बारे में उदाहरण के लिए हिस्टीरिया में होने वाली दुर्भीति (agoraphobia) ली जा सकती हैं। एक मनस्ताप ग्रस्त (neurotic) व्यक्ति के बारे में कहा जाता है कि वह अकेला सड़क पार करने में डरता है। इसे अवश्य ही एक लक्षण माना जा सकता है। अब किसी को उसका यह लक्षण जबरदस्ती वही काम कराकर दूर करने दीजिए जिसे करने में वह स्वयं को असमर्थ समझता है–इसका नतीजा होगा उसे व्यग्रता का दौरा पड़ जाना। इस प्रकार हम देखते हैं कि लक्षण व्यग्रता को फूट पड़ने से रोकने के लिए बनाए जाते हैं। ऐसे में लक्षण एक रक्षा कवच का काम करते हैं।

इस विषय में हम और विस्तार से तब तक नहीं जा सकते जब तक हम इन प्रक्रियाओं के प्रभावों की भूमिका का अध्ययन नहीं कर लेते जो कि यहाँ अधूरे तौर पर ही की जा सकती हैं। अत: हम इस कथन की पुष्टि ही करेंगे कि अचेतन का दमन इस कारण से आवश्यक हो जाता है कि यदि अचेतन में विद्यमान विचारों की गतिविधि–को उसके रास्ते पर जाने दिया जाए तो यह एक ऐसा असर पैदा कर देगा जो कि शुरु-शुरु में तो आनंददायी रहेगा, परन्तु दमन की प्रक्रिया के चलते पीड़ादायी हो जाएगा। दमन का लक्षण, और परिणाम भी, इस पीड़ा को आगे बढ़ने से रोकना होता है। दमन अचेतन की विचार-वस्तु तक जाता है क्योंकि हो सकता है कि पीड़ा की मुक्ति विचार-वस्तु से निकल कर आए।

जैसा कि मैं पहले भी अनेक बार बता चुका हूँ व्यग्रता-स्वप्न का सिद्धान्त विक्षिप्तता (neurosies) के मनोविज्ञान का भाग है। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए मैं कह सकता हूँ कि सपने में आई हुई व्यग्रता दरअसल व्यग्रता की समस्या है न कि स्वप्न की समस्या। न्यूरोसिस के मनोविज्ञान का स्वप्न-प्रक्रिया के साथ सम्बन्ध होना दिखा दिए जाने के बाद इससे हमें कुछ और करने को नहीं रह जाता। केवल एक ही बात शेष रह जाती है जो मैं बता देना चाहता हूँ। चूँकि मैंने इस बात पर बल दिया है कि न्यूरोसिस व्यग्रता का उद्गम यौन-सम्बन्धी स्रोत से होता है। तो मैं व्यग्रता-स्वप्न को विश्लेषण के अन्तर्गत लाकर यह दिखा सकता हूँ कि व्यग्रता के सपनों के स्वान-विचारों में यौन-सम्बन्धी सामग्री विद्यमान रहती है।

कुछ विशेष कारणों से मैं विक्षिप्त लोगों के उदाहरण यहाँ न देकर बच्चों के कुछ व्यग्रता वाले सपने दे रहा हूँ।

व्यक्तिगत रूप से, कई दशकों से मुझे कोई व्यग्रता-स्वप्न नहीं आया है; लेकिन मुझे अपना एक सपना तब का याद आ रहा है जब में सात-आठ साल का था और जिसे मैंने लगभग तीस साल बाद व्याख्या का विषय बनाया। सपना काफी स्पष्ट था और उसमें *मुझे अपनी माँ दिखाई दी–एक अलग ही तरह से शांत, जैसे सो रही हो, चिड़ियों की चोंच बाले दो (या तीन) व्यक्तियों द्वारा उन्हें कमरे में ले जाया जाकर बिस्तर पर लिटाया जा रहा था।* मैं रोता-चिल्लाता हुआ जाग पड़ा था और मैंने अपने माता-पिता की नींद भी खोल दी। अजीब ढंग की पोशाक पहने हुए, चोंच वाली कुछ अधिक लम्बी मुखाकृति को मैंने फिलिपसंस की बाइबिल के चित्रों से ले लिया था। मेरा मानना है कि वे उन देवताओं के प्रतीक थे जिनके सिर बाज जैसे होते हैं और जो मिस्र के मकबरों में चित्रित किए गए हैं। विश्लेषण किसी के उस घरेलू नौकर की याद भी आ गई जो घर के बाहर घास के मैदान में हमारे साथ खेला करता था, मैं कह सकता हूँ कि उसका नाम फिलिप था। मुझे ऐसा याद पड़ता है कि मैंने मैथुन सम्बन्धी अश्लील शब्द पहली बार उसी लड़के के मुँह से सुने थे लेकिन सपने में इन्हें दर्शाने के लिए चिड़ियों जैसे सिर वालों का चयन किया था। मैंने उस शब्द का यौन सम्बन्धी अर्थ अपने स्कूली अध्यापक के चेहरे-मोहरे से लगा लिया होगा। अपने सपने में अपनी माँ के चेहरे के भाव मैंने अपनी दादी के शान्त चेहरे से ले लिए होंगे जिन्हें मैंने उनकी मृत्यु से कुछ ही दिन पहले संमूर्च्छा (coma) की अवस्था में देखा था।

अब, इस सपने के दूसरे विस्तार का विश्लेषण इस प्रकार है कि मेरी माँ मर रही थी, मकबरे के प्रतीक भी इसकी पुष्टि करते हैं, मैं इसी व्यग्रता के साथ जाग उठा था और तब तक शान्त नहीं हुआ था जब तक कि मेरे माता-पिता भी जाग नहीं गए। मुझे याद है कि जैसे ही मैंने माँ को देखा था मैं एकदम शान्त हो

गया था–जैसे कि मैं आश्वस्त हो जाना चाहता था कि वह मरी नहीं हैं। परन्तु इस सपने का यह दूसरा विश्लेषण तभी हो सका जब बड़ी हुई व्यग्रता अपना काम करने लगी थी। मैं इसलिए व्यग्र-अवस्था में नहीं आया था कि मैंने सपना देखा था कि मेरी माँ मर रही थी, मैंने इस पूर्वचेतन के विस्तार में सपने का यही अर्थ लगाया क्योंकि मैं पहले से ही व्यग्रता के अधिक्षेत्र में था।

एक वर्ष से गंभीर रुप से बीमार सत्ताइस वर्षीय एक व्यक्ति ने अपनी ग्यारह से तेरह वर्ष की आयु के बीच बारंबार देखे एक ऐसे सपने के बारे में बताया जिससे वह बहुत व्यग्र हो उठता था–एक आदमी एक कुल्हाड़ी जैसी कोई चीज़ लिए उसके पीछे दौड़ता है, स्वप्न द्रष्टा भाग जाना चाहता है लेकिन जैसे उसके पैर पत्थर के हो गए हैं, वह हिल भी नहीं पाता है। आमतौर पर देखे जाने वाले व्यग्रतापूर्ण सपनों का यह एक अनूठा उदाहरण है जिसमें यौन सम्बन्धी कोई अर्थ होने का सन्देह भी नहीं होता है। विश्लेषण में, स्वप्न-द्रष्टा को पहले वाले दिन का किस्सा याद आता है जो उसके अंकल ने उसे सुनाया था कि रात में एक संदिग्ध से व्यक्ति ने गली में उन पर हमला कर दिया था, और वह इस निष्कर्ष पर पहुंच जाता है कि उसने इसी तरह का कोई किस्सा उस रात भी सुना होगा। कुन्हाड़ी से जुड़ी बात के बारे में उसे याद आता है कि अपने जीवन की उस अवधि में एक बार लकड़ी काटते समय उसके हाथ में चोट लग गई थी। इसी से तुरन्त उसे अपने छोटे भाई के साथ अपने सम्बन्ध की याद हो आई जिसके साथ वह दुर्व्यवहार किया करता था और उसे नीचे गिरा दिया करता था। उसे खास तौर पर याद आया कि उसने एक बार जब अपने भाई के सिर पर बूट मार दिया था और इससे उसके खून निकल आया था तो उसकी माँ ने कहा था, 'मुझे तो डर है कि कहीं उसे यह एक दिन मार ही न डाले।' जब वह इस हिंसा भरी विषय-वस्तु में उलझा हुआ था तो उसे अचानक नौ साल की उम्र की एक घटना याद आ गई। उसके माता-पिता एक रात देर से घर लौटे और तुरंत ही बिस्तर में घुस गए। उस समय वह सो नहीं रहा था बल्कि ऐसा दिख रहा था कि जैसे वह सो गया है। जल्दी ही उसे हाँफने जैसी और कुछ अजीबोगरीब आवाज़ें सुनाई देने लगीं, वह बिस्तर में अपने माता-पिता की स्थिति का अन्दाज भी लगा पा रहा था। आगे वह बताता है कि उसने अपने माता-पिता के बीच और अपने व अपने छोटे भाई के बीच अनुरुपता, साम्यता बिठा ली। जो कुछ उसके माता-पिता के बीच हो रहा था उसने उसे 'हिंसा और लड़ाई की शैली' के अभिप्राय के अन्तर्गत लिया। यह सच है कि उसने अपनी माँ के बिस्तर पर कई बार खून देखा था जो उसकी इस धारणा को पक्का कर रहा था।

यह बात दिन प्रतिदिन के अनुभव से सही सिद्ध होती जा रही है कि वयस्कों को मैथुनरत देखना बच्चों को बड़ा अजीब व खतरनाक लगता है, और इससे उनकी व्यग्रता उठ खड़ी होती है। मैंने इस व्यग्रता की व्याख्या इस आधार पर

की है कि यहाँ हम एक ऐसी यौन सम्बन्धी उत्तेजना देख रहे हैं जो कि बालक की समझ के बाहर है, और साथ ही इसमें शायद एक विकर्षण (repulsion) भी है क्योंकि इसमें उसके अपने माता-पिता सम्मिलित होते हैं, और इसीलिए यह व्यग्रता में तब्दील हो जाती है। जीवन की इससे भी कम आयु में विपरीत लिंग के माता-पिता के प्रति यौन-आवेग दबता नहीं है बल्कि स्वंय को स्पष्ट अभिव्यक्त करता है।

बच्चों में रात में अक्सर होने निर्मूल भ्रम के साथ भय के बारे में भी मैं निस्संकोच यही व्याख्या दूँगा। ये भी केवल गलत समझे गए व दबा दिए गए यौन-आवेगों के कारण पैदा होते हैं, जिन्हें यदि बाकायदा रिकार्ड किया जाए तो शायद ये एक अस्थायी अवधि को दर्शा देंगे, क्योंकि काम लिप्सा (libido) का घनीभूत हो जाना अचानक उत्तेजक प्रभाव द्वारा तथा शारीरिक विकास की स्वत: व समयानुसार चलती प्रक्रिया द्वारा भी पैदा हो सकती है।

इस व्याख्या को पूरे प्रदर्शन के लिए मेरे पास आवश्यक टिप्पणी विषयक सामग्री नहीं है। दूसरी ओर बाल-चिकित्सकों में ऐसे दृष्टिकोण की कमी लगती है जो अपने आप में इस पूरे मामले को स्पष्ट कर सकें–शारीरिक पक्ष से भी और मानसिक पक्ष से भी। एक हास्योत्पादक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करने के लिए मैं एक मामला यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ जो मैंने एक थीसिस से लिया है :

तेरह साल का एक लड़का कमज़ोर स्वास्थ्य के चलते व्यग्र रहने लगा और उसे इसी के सपने आने लगे, वह नींद में बेचैन रहने लगा और सप्ताह में एक बार तो उसकी नींद व्यग्रता तथा विभ्रम के दौरे के द्वारा खुल ही जाती थी। इन सपनों की स्मृति हमेशा बहुत धुंधली रहती थी। वह यही बता पाता था कि शैतान उस पर चिल्ला रहा था, “अब हम तुम्हें ले जाएँगे, अब हम तुम्हें ले जाएँगे।” फिर उसे टायर और गंधक की गंध आती थी और फिर आग उसकी खाल को जला डालती थी (सपने में ही)। इस सपने से वह बदहवास होकर जाग उठता था, तुरन्त तो वह चीख भी नहीं पाता था, फिर उसकी आवाज़ खुलती थी और साफ तौर पर यह सुना जाता था : ‘नहीं, नहीं, मुझे नहीं, मैंने कुछ नहीं किया है!’ या : प्लीज़ ऐसा मत करो, मैं फिर कभी नहीं करूँगा’। कभी-कभी वह कहते सुना गया, “एलबर्ट ने यह कभी नहीं किया!” बाद में उसने निर्वस्त्र होकर सोना छोड़ दिया क्योंकि ‘आग उस पर तभी आक्रमण करती थी जब वह निर्वस्त्र होकर सोता था।’ इसके स्वास्थ्य को चौपट करने वाले इन बुरे सपनों के बीच उसे गाँव भेज दिया गया जहाँ उसने अठारह महीने की अवधि में स्वास्थ्य लाभ कर लिया। पन्द्रह साल की उम्र में उसने एक दिन यह सब स्वीकार कर ही लिया।

यह अंदाज लगाना वाकई कठिन नहीं हे (1) कि वह लड़का शुरुआती वर्षों में हस्तमैथुन करता रहा था, कि उसने इस बात से इंकार भी किया था, और उसकी इस बुरी आदत के लिए उसे कड़ी सजा देने की धमकी भी दी गई थी।

(2) कि यौवनारंभ के बढ़ते दबाव के अन्तर्गत गुप्तांगों को सहलाने से हस्तमैथुन की ललक फिर से जाग जाती थी, (3) कि अब उसके भीतर दमन का द्वंद्व उठ खड़ा हुआ था जिसने उसकी काम लिप्सा को दबा दिया था और उसे व्यग्रता में तब्दील कर दिया था, और यह कि इस व्यग्रता के गुबार ने सजा का रूप ले लिया था जिसकी धमकी उसे शुरू में ही मिल गई थी।

आइए; अब हम उन निष्कर्षों को देखें जो लेखक ने निकाले हैं:

1. इसे देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि यौवनारंभ का प्रभाव किसी लड़के में अत्यंत कमजोरी पैदा कर देता है और यह साफ तौर पर देखी जा सकने वाली खून की कमी का कारण बन जाता है।
2. दिमाग को पहुँचने वाली खून की कमी चरित्र में बदलाव ले आती है–भूत-प्रेत सम्बन्धी निर्मूल भ्रम (demonomaniacal hallucinations) रात में बहुत प्रबल हो जाने वाली व्यग्रता की अवस्था और शायद दिन में भी।
3. लड़के का भूत-प्रेत सम्बन्धी उन्माद और आत्म-भर्त्सना (self-reproach) के सूत्र किसी धार्मिक शिक्षा के प्रभाव से जुड़े हुए हैं जो बचपन में उस पर पड़े थे।
4. गाँव के लम्बे प्रवास, शारीरिक श्रम और यौवनारम्भ के बाद शारीरिक शक्ति पुन: आ जाने के फलस्वरूप सारे शैतान-वैतान गायब हो गए।
5. सम्भवत: लड़के की ऐसी मानसिकता का उभरना वंशनुगतता और उसके पिता को पहले हुई सिफलिस की बीमारी के कारण हुआ हो।

प्राथमिक व द्वितीय प्रक्रियाएँ, दमन

स्वप्न-प्रक्रियाओं के मनोविज्ञान में सपनों को समझने हेतु अपनाए गए दृष्टिकोण मेरे लिए उन पूर्ववर्ती छानबीनों ने निर्धारित कर दिए थे जो विक्षिप्त लोगों के मनोविज्ञान में की गई थीं और जिनका मुझे सन्दर्भ लेना नहीं चाहिए था, हालाँकि मैं ऐसा लगातार करता आ रहा हूँ; जबकि मुझे इसकी विपरीत दिशा में चलना चाहिए था, यानि सपने से शुरू करूँ और फिर विक्षिप्त लोगों के मनोविज्ञान के साथ इसका मिलन स्थान स्थापित करने के लिए आगे बढ़ूँ।

चूँकि मैं वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट नहीं हूँ इसलिए एक अन्य दृष्टिकोण को अपनाना होगा जो मेरे प्रयासों का महत्त्व बढ़ा देगा। जैसा कि शुरू में परिचयात्मक भाग में बताया गया है, पूर्ववर्ती लेखकों ने इस विषय में जो कुछ लिखा है उससे मेरा तीखा विरोध है। सपनों की समस्याओं के हमारे उपचार में इन विरोधाभासी विचारों ने काफी स्थान घेर रखा है। इनमें से दो अपवादों को लेने के लिए मैं विवश हूँ: अर्थात् कि सपना एक निरर्थक क्रिया है और यह कि

यह एक शारीरिक प्रक्रिया है। हमारे सपने हमारी जाग्रत अवस्था के आवेगों और रुचियों को नींद में जारी रखते हैं, यह बात छिपे हुए स्वप्न-विचारों के अन्वेषण में आमतौर पर पुष्ट हुई। ये सपने केवल उन्हीं बातों से सरोकार रखते हैं जो हमें अधिक महत्त्वपूर्ण और रुचिकर लगते हैं। सपने कभी भी किसी नगण्य या क्षुद्र बात से अपना वास्ता नहीं रखते। लेकिन हमने इसके विलोमित विचार को भी स्वीकार कर लिया है, अर्थात् कि सपना दिन भर उदासीन अवशेषों को इकट्ठा कर लेता है और दिन की किसी महत्त्वपूर्ण रुचिकर बात को तब तक नहीं पकड़ सकता जब तक कि वह जाग्रत अवस्था से स्वयं को काफी हद तक पीछे नहीं हटा लेता। हमने पाया है कि यह स्वप्न-कथा पर भी सही बैठती है जो कि स्वप्न-विचार को तोड़-मरोड़ कर एक परिवर्तित स्वरूप प्रदान कर देती है। हमने कहा है कि जुगाड़ कर लेने के अपने स्वभाव के कारण, स्वप्न-प्रक्रिया को यह आसान लगता है कि वह हाल-फिलहाल की या नगण्य प्रकार की उस सामग्री को कब्जा ले जो हमारी जाग्रत अवस्था की मानसिक गतिविधि की नाकेबंदी से बच निकली हो मगर फिर सैंसरशिप के कारण इसने महत्त्व वाली मानसिक प्रबलता को, तथा आपत्तिजनक सामग्री को भी, नगण्य में स्थानान्तरित कर दिया हो। सपने का हाईपर्मनेसिया (hypermnesia: अतीत की स्मृति की असाधारण रूप से स्पष्ट और सम्पूर्ण वापसी) और अविकसित सामग्री को ठिकाने लगा देने की इसकी योग्यता हमारे सिद्धान्त का प्रमुख आधार रहे हैं। सपनों के अपने सिद्धान्त में हमने अविकसित स्रोत से छाई हुई इच्छा के स्वप्न रचना की अपरिहार्य प्रेरणा शक्ति के एक भाग के रूप में प्रस्तुत किया है। वास्तव में, नींद के दौरान बाहरी संवेदी उद्दीपन के प्रयोगात्मक रूप से प्रदर्शित महत्त्व पर कोई सन्देह नहीं करने दिया है परन्तु हमने इस सामग्री को उसी सम्बन्ध में रखा है जैसा कि जाग्रत अवस्था की गतिविधि-से छूटे हुए विचार-अवशेषों को रखा है। इस तथ्य पर हमें कोई बहस करने की आवश्यकता नहीं है कि सपना विषयाश्रित संवेदी उद्दीपन के पीछे मायारचना के ढंग को व्याख्यायित करता है, परन्तु हमने इस व्याख्या को वह हेतु दे दिया है जो अन्य लेखकों द्वारा अनिर्धारित छोड़ दिया गया। यह व्याख्या इस तरह आगे बढ़ती है कि देखी गयी चीज़ नींद के लिए खलल डालने वाले स्रोत के रूप में निरापद बताई जाती है, मगर साथ ही यह इच्छा-पूर्ति के लिए उपयोज्य बना दी जाती है। नींद के दौरान संवेदी अंगों को सपने के विशेष स्रोत के रूप में हालाँकि हम स्वीकार नहीं करते, मगर फिर भी सपने के पीछे सक्रिय रहने वाली स्मृतियों के परावर्ती पुनरुत्थान द्वारा उत्तेजन की इस अवस्था का हम खुलासा कर सकते हैं। आन्तरिक अंगों की अनुभूतियों के समान ही ये भी हमारी संकल्पनाओं में स्थान पा जाती हैं–हालाँकि थोड़ा-बहुत ही। ये अनुभूतियाँ–जैसे गिरने की, ऊँची उड़ान भरने की या कहीं फँस जाने की–एक ऐसी सदा तत्पर सामग्री को दर्शाती है जिन्हें स्वप्न-

क्रिया आवश्यकतानुसार स्वप्न-विचार को प्रकट करने के लिए कभी भी प्रयोग कर सकती है।

शर्नर ने सपने का कल्पना-लोक रचने में सपने को जो श्रेय दिया है उसे हम पूरी तरह स्वीकार करते हैं लेकिन जो व्याख्या दी है उन्हें हम दूसरे स्थान पर रखने के लिए बाध्य हैं। यह सपना नहीं है जो कल्पना-लोक को रचता है बल्कि अचेतन का कल्पना-लोक है जो स्वप्न-विचारों को रूप-आकार देने में प्रमुख भूमिका निबाहता है। स्वप्न-रचना के स्रोत का पता बताने के लिए हम शर्नर के आभारी हैं, लेकिन स्वप्न-क्रिया के लिए वह जिन-जिन चीज़ों को श्रेय देता है उनमें से हर एक उस दिन के दौरान अवचेतन की गतिविधि के लिए ज़िम्मेदार है और वही है जो सपने को किसी पागलपन के लक्षणों से कुछ कम नहीं उकसाती। इस गतिविधि से अलग की गई स्वप्न-क्रिया एक बिल्कुल भिन्न प्रकार से तथा कहीं अधिक गुप्त रूप से नियन्त्रित होती है। अन्ततः, हमने मन के साथ सपने के सम्बन्ध को किसी भी तरह कम नहीं किया है बल्कि इसे एक नयी धरती पर एक अधिक मजबूत आधार दिया है।

हमने देखा है कि सपना हमारे दैनिक जीवन से व्युत्पन्न अनेकानेक विचारों के विकल्प के रूप में कार्य करता है जो कि पूरी तर्कसंगतता सहित एक साथ ठीक तरह बैठ जाते हैं। इसलिए हम यह संदेह नहीं कर सकते कि ये विचार हमारे सामान्य जीवन में स्वयं ही पैदा हो जाते हैं। अपनी विचार-प्रक्रियाओं में हमने जिन तमाम विशिष्टताओं को महत्त्व दिया है और जो उन्हें अधिक महत्त्व के जटिल तमाशे के रूप में चिन्हित कर देती हैं, उन्हें हम स्वप्न-विचारों में दोहराये जाते पाते हैं। तथापि, यह मान लेने की आवश्यकता नहीं है कि यह मानसिक कार्य नींद के दौरान पूरा होता है; ऐसा अनुमान तो नींद की उस मानसिक अवस्था की धारणा को बुरी तरह भ्रमित कर देगा जिसके साथ हम जुड़े हुए हैं। इसके विपरीत, इन विचारों का उद्‌गम दिन के दौरान भली-भाँति हो सकता है और नींद के झूमकर आने पर हमारे सचेतन द्वारा ध्यान चूक जाने से ये अपने प्रथम चरण से पूर्णता तक पहुँच जाते हैं। इन हालातों में हमें यदि किसी निष्कर्ष पर पहुँचना है तो वह केवल यही होगा कि यह सिद्ध होता है कि सबसे अधिक जटिल मानसिक गतिविधियाँ सचेतन के सहयोग के बिना सम्भव हो जाती हैं–यह एक सच है जो हिस्टीरिया या प्रेतबाधाओं से ग्रस्त किसी रोगी के मनोविश्लेषण से हमें किसी न किसी तरह सीखना ही होगा। ये स्वप्न-विचार निश्चित रूप से सचेतन के अयोग्य होते हैं। हम उनके प्रति यदि दिन के दौरान सचेत नहीं हुए हैं तो इसके कई कारण हो सकते हैं। सचेत होना एक निश्चित मानसिक गतिविधि पर–अर्थात् अवधान पर–आधारित रहता है। यह भी एक निश्चित मात्रा में उपलब्ध होता प्रतीत होता है जो कि विचारों के कारवां से–किसी अन्य लक्ष्य की ओर निकल पड़ने के कारण बिछुड़ गया हो। दूसरा तरीका

जिससे कि विचारों का कारवां सचेतन से रोके रखा जा सकता है, वह है: अपना अवधान लगाते समय हम अपने सचेत परावर्तन से जान जाते हैं कि हम एक ख़ास रास्ता चुन रहे हैं। लेकिन, यदि वह रास्ता हमें ऐसे विचार की ओर ले जाता है जो आलोचना नहीं सह सकता तो हम उससे सम्बन्ध तोड़ देते हैं और अवधान के भावाभिनिवेश को वहीं छोड़ देते हैं। तो, ऐसा लगता है कि विचारों का शुरु हुआ और छोड़ दिया गया ऐसा सिलसिला उसके प्रति हमारा ध्यान वापस आए बिना खुद ही बढ़ता रहता है जब तक कि किसी बिन्दु पर अत्यन्त सघन न हो जाए और फिर हमें ध्यान देने के लिए विवश न कर दे। विचार के तात्कालिक प्रयोजन के लिए अनुपयोगी व अनुपयुक्त होने के आधार पर हमारे निर्णय की शुरू में ही दे दी गई सचेत अस्वीकृति उस विचार-प्रक्रिया के चलते रहने का कारण बन सकती है जो कि नींद का झोंका आने तक सचेतन द्वारा अनदेखी ही रहती है।

आइए, इसे संक्षेप में दोहराते हैं: इस प्रकार की विचार शृंखला को हम पूर्वचेतन विचार शृंखला कहते हैं और यह भी विश्वास करते हैं कि यह पूरी तरह सही है, और, यह बस यूँ ही अनदेखा कर दी गयी या बाधित व दमित कर दी गई विचार शृंखला के समान होती है। आइए सीधे शब्दों में यह भी बता दें कि हम अपने विचारों की गतिशीलता को किस तरह देखते हैं। हमारा विश्वास है कि उत्तेजना या उद्दीपन की एक निश्चित मात्रा–जिसे हम भावाभिनिवेशी ऊर्जा कहते हैं–को कि सोद्देश्य विचार से निदेशी विचार द्वारा चुने गए पथ से विस्थापित कर दिया जाता है। विचारों के किसी ऐसे सिलसिले को ऐसा कोई भावाभिनिवेश प्राप्त नहीं हुआ होता है और वह भावाभिनिवेश 'दमित' या 'अस्वीकृत' से वापस ले लिया जाता है, इस प्रकार दोनों अपनी-अपनी उत्तेजनाओं के सहारे छोड़ दिए जाते हैं। किसी उद्देश्य द्वारा भावाभिनिवेशित किए गए विचार का सिलसिला कुछ अवस्थाओं में सचेतन का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने योग्य हो जाता है और सचेतन के ध्यान द्वारा वह अति भावाभिनिवेश को प्राप्त कर लेता है। अब हम सचेतन के कार्य व प्रकृति के अपने अनुमान पर प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

पूर्वचेतन में इस प्रकार उठा विचार का सिलसिला या तो स्वत: गायब हो सकता है या जारी रह सकता है। हम इसे अन्तत: इस प्रकार देखते हैं: यह अपनी ऊर्जा को अपने से निकले सभी संबद्ध रास्तों पर विस्तारित कर देता है और विचारों की पूरी शृंखला को उत्तेजना की अवस्था में ले आता है जो कि कुछ समय तक जारी रहती है, मगर फिर यह उस उत्तेजना के माध्यम से शान्त भी हो जाती है कि सुषुप्त भावाभिनिवेश में बदल जाने से विसर्जित हो गई होती है। यदि यह पहली सम्भावना होती है तो प्रक्रिया का स्वप्न-रचना के लिए कोई अर्थ या महत्त्व नहीं रह जाता। परन्तु, अन्य निदेशी विचार भी हमारी पूर्वचेतना

में घात लगाए बैठे होते हैं जिनका स्रोत हमारे अचेतन में और सदा सक्रिय रहने वाली इच्छाओं में रहता है। इस प्रकार, अपने भरोसे छोड़ दिए गए विचार चक्र में उत्तेजना को ये अपने नियन्त्रण में ले लेते है तथा इसके व अचेतन इच्छा के बीच सम्बन्ध स्थापित कर देते हैं, साथ ही, अचेतन इच्छा में अन्तर्निहित ऊर्जा को इसमें स्थानान्तरित कर देते हैं। इसके पश्चात उपेक्षित या दमित विचार शृंखला अपने को बनाए रखने की स्थिति में आ जाती है–हालाँकि उसकी यह पुन: शक्ति प्राप्ति सचेतन तक पहुँच पाने में कारगर नहीं होती। अत: हम कह सकते हैं कि यहाँ तक आते-आते विचार की पूर्वचेतन शृंखला खींच कर सचेतन में ले आयी जाती है।

स्वप्न-रचना की तरफ ले जाने वाली अन्य स्थिति इस प्रकार होती है: विचार की पूर्वचेतन शृंखला शुरू से ही अचेतन इच्छा से जुड़ी हुई हो सकती है और इसी कारण हावी भावाभिनिवेश द्वारा अस्वीकृत कर दी जाती हो, या कोई अचेतन इच्छा किसी अन्य कारण (संभवत: शारीरिक कारण) से सक्रिय हो गई हो और अपने ही बलबूते पर पूर्वचेतन द्वारा भावाभिनिवेशित न किए गए मानसिक अवशेषों में स्थानान्तरित हो जाने के जुगाड़ में लग गई हो। इन सभी मामलों का परिणाम एक ही है: पूर्वचेतन में विचार की कोई शृंखला सुस्थित होती है जो कि पूर्वचेतन-भावाभिनिवेश द्वारा परित्याग कर दिए जाने पर अचेतन इच्छा से भावाभिनिवेश हासिल कर लेती है।

इस बिन्दु से आगे विचार की शृंखला रूपान्तरण के लिए एक सिलसिले के अधीन हो जाती है जिसे हम कोई सामान्य मानसिक प्रक्रिया नहीं मानते और जो ऐसे-ऐसे परिणाम देती है जिन्हें हम बड़ा विचित्र पाते हैं–मनोरोगात्मक रूप-स्वरूप। आइए, अब इन रूपान्तरणों का एक साथ अध्ययन करें:

1. अंततोगत्वा, विचारों की प्रबलताएँ अपने समूचे रूप में बाहर निकलने में सक्षम हो जाती हैं, और वे एक विचार से दूसरे विचार की ओर अग्रसर होती जाती हैं ताकि वे विचार अपना रूप-आकार ग्रहण कर लें। इस प्रक्रिया के बार-बार दोहराए जाने से विचारों की पूरी शृंखला अन्तत: एक एकल संकल्पना की इकाई में घनीभूत हो जाती है। सकंचन (compression) या संघनन (condensation) का तथ्य यही है और स्वप्न-क्रिया में इससे हमारा परिचय हो चुका है। यह संघनन ही है जो सपनों द्वारा विचित्र प्रभाव पैदा करने के लिए ज़िम्मेदार है क्योंकि हम तो अपने सामान्य जीवन में वैसी विचित्रता जैसा कुछ जानते ही नहीं हैं। यहीं उन विचारों को भी पाते हैं जिनका पूरी विचार-शृंखला में किसी एक या अन्तिम लक्ष्य के रूप में अत्यधिक मानसिक महत्त्व होता है, परन्तु यह महत्त्व किसी वास्तविक रूप से प्रकट विशेष अभिलक्षण द्वारा हमारे आन्तरिक बोध के लिए अभिव्यक्त नहीं किया जाता, जो कुछ

इसमें दर्शाया जाता है वह किसी भी तरह कोई अधिक प्रबलता लिए हुए नहीं होता। संघनन की प्रक्रिया में मानसिक सूत्रों का समूचा समूह विचार-वस्तु की सघनता में रूपान्तरित हो जाता है। यह ऐसा ही है जैसे कि अपनी पुस्तक में मैं जिस बात पर बल देना चाहता हूँ उसे तिरछा (italics) में या मोटे अक्षरों में दर्शाता हूँ।

सपने के संघनन द्वारा अपनायी गई दिशा एक ओर तो स्वप्न-विचारों के पूर्वचेतन-सम्बन्धों द्वारा निर्धारित होती है मगर दूसरी ओर अचेतन में स्थित दृश्य-स्मृतियों के आकर्षण द्वारा। संघनन-क्रिया की सफलता उन प्रबलताओं को पैदा करती है जो अनुभूति-प्रणाली में पैठ बनाने क लिए आवश्यक होती है।

2. प्रबलताओं के इधर से उधर होने के द्वारा और संघनन की क्रिया में मध्यस्थ विचार–जैसे कि समझौते–रूप-आकार ले लेते हैं। यह भी हमारे विचारों की गतिविधि में एक प्रकार की अनसुनी चीज रहती है जहाँ सही प्रकार की संकल्पना-सामग्री का चयन करने तथा उसे थामे रखने का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य चल रहा होता है। दूसरी तरफ सम्मिश्र व समझौते वाली संरचना अत्यधिक पुनरावृत्ति के साथ तब होती है जब हम पूर्वचेतन-विचारों की शाब्दिक अभिव्यक्ति ढूँढ़ निकालने का प्रयास करते हैं; इन्हें 'जुबान लड़खड़ाना' कहा जाता है।
3. जो विचार अपनी सघनता तथा प्रबलता को एक दूसरे को स्थानान्तरित करते रहते हैं, वे बहुत शिथिल रूप से जुड़े होते हैं, लेकिन संयोजन के ऐसे स्वरूपों में आपस में जुड़ जाते हैं जो कि हमारी गम्भीर विचारणा द्वारा तिरस्कृत कर दिए गए हों और केवल बुद्धि द्वारा काम में लाने के लिए छोड़ दिए गए हों।
4. विरोधी विचार एक दूसरे का अन्त नहीं करते बल्कि आजू-बाजू साथ चलते रहते हैं और संघनन-उत्पाद बनने के लिए अकसर इस तरह जुड़ जाते हैं जैसे कभी कोई विरोध था ही नहीं, या वे समझौता कर लेते हैं- जिसके लिए हमें अपने विचारों को कभी माफ नहीं करना चाहिए–मगर जिसे हम अपने क्रियाकलाप द्वारा प्रायः अनुमोदित कर देते हैं।

ये कुछ ऐसी स्पष्टतम और असामान्य प्रक्रियाएँ हैं जिनके अधीन स्वप्न-क्रिया के दौरान चलने वाले स्वप्न-विचार रहा करते हैं। इन प्रक्रियाओं की प्रमुख विशेषता के रूप में हम देख सकते हैं कि सबसे अधिक महत्त्व भावाभिनिवेशी ऊर्जा की गतिशीलता को और बाहर निकलने की क्षमता को दिया जाता है, और मानसिक तत्त्वों के आन्तरिक महत्त्व तथा अन्तर्वस्तु दोयम दर्जे के महत्त्व वाले हो जाते हैं। कोई शायद यह मान ले कि संघनन व समझौता केवल परावर्तन की क्रिया में ही तब प्रभावित होता है जब बदलते विचारों का

छवियों में बदलने का मौका आता है। लेकिन, ऐसे सपनों का विश्लेषण तथा और भी साफ संश्लेषण (synthesis)–हमें छवियों के प्रति कोई परावर्तन नहीं दिखाता।

अत: हम इस निष्कर्ष को अनदेखा नहीं कर सकते कि स्वप्न-रचना में मूलत: दो भिन्न प्रकार की मानसिक प्रक्रियाएँ भाग लेती हैं, एक तो पूरी तरह सही-सही और फिट बैठने वाले ऐसे स्वप्न-विचारों को रूप-आकार देती हैं जो कि सामान्य विचारणा के परिणाम के समतुल्य होते हैं, जबकि दूसरी उन विचारों के साथ एक अत्यन्त आश्चर्यजनक, या कहें कि अनुचित ढंग से व्यवहार करती है। अब इस मानसिक प्रक्रिया के मूल के बारे में हम क्या कह सकते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर दे पाना असम्भव ही रहेगा अगर हमने विक्षिप्त लोगों के–खासतौर पर हिस्टीरिया ग्रस्त लोगों के–मनोविज्ञान में गहराई तक पैठ नहीं की है। इससे हम यह जान पाते हैं कि एक ही तरह की 'गलत' मानसिक प्रक्रियाएँ हिस्टीरिया के लक्षणों की उत्पत्ति को नियन्त्रित करती है। हिस्टीरिया में हम पहले पहल तो बिल्कुल सही और उपयुक्त विचारों की शृंखला पाते हैं जो कि हमारे सचेतन के समतुल्य ही होती है। लक्षणों के विश्लेषण से अन्वेषित हुआ है कि ये सामान्य विचार फिर असामान्य व्यवहार के अधीन हो जाते हैं और फिर इस विरोधाभास को ढकने वाले सतही सहयोगियों के माध्यम से तथा अन्तत: परावर्तन की राह पकड़ कर वे लक्षणों में प्रकट होने लगते हैं।

हिस्टीरिया के सिद्धान्त से हम यह उक्ति उधार ले रहे हैं कि इस प्रकार के विचारों की सामान्य शृंखला का एक असामान्य मानसिक विस्तार तभी होता है जब उस सामान्य विचार शृंखला का प्रयोग किसी ऐसी अचेतन इच्छा के स्थानान्तरण के लिए किया जाए जो कि अविकसित आयु से चली आ रही हो मगर दमित अवस्था में रही हो। इस उक्ति के अनुपालन में हमने इस अनुमान पर सपने का सिद्धान्त खड़ा कर लिया है कि प्रवृत्त होने वाली स्वप्न-इच्छा अपरिहार्य रूप से अचेतन से ही उद्गमित होती है जिसे सदा-सर्वदा दिखाया तो नहीं जा सकता मगर इसे गलत भी सिद्ध नहीं किया जा सकता। मगर जिस 'दमन' का जिक्र हम बार-बार करते आए हैं उसके बारे में यह बताने के लिए कि यह है क्या, हमें अपनी मनोवैज्ञानिक संरचना को थोड़ा और विस्तार देना होगा।

हम उस अनगढ़ मानसिक तन्त्र की कथा तो सुन चले हैं जिसका कार्य उत्तेजना का जमावड़ा रोकने और स्वयं भी यदा सम्भव उत्तेजित न होने के द्वारा नियन्त्रित होता है। इसके बाद हमने तुष्टिकरण के अनुभवों के परिणामों पर चर्चा की और एक अन्य अनुमान की ओर इंगित करने की स्थिति में आए कि उत्तेजना का जमावड़ा पीड़ा की तरह अनुभूत होता है, और मानसिक तन्त्र का संचालन वह कुछ इस तरह से चालित करता है जिससे संतुष्टि की अवस्था पुन: प्राप्त हो जाए जिसमें उत्तेजना के उतार को एक सुखानुभूति की तरह महसूस किया जाता

है। मानसिक तन्त्र में पीड़ा से उपजते और सुखानुभूति के लिए जूझते इस प्रवाह को हम इच्छा कह देते हैं। हमने बताया है कि और कुछ नहीं बल्कि केवल इच्छा ही इस तन्त्र को चलायमान रखने में समर्थ होती है, और कि इस तन्त्र में किसी उत्तेजना की कोई भी गति पीड़ा और सुखानुभूति के बोध द्वारा स्वत: नियमित हो जाती है। इच्छा की उत्पत्ति भले ही सन्तुष्टि की स्मृति के भ्रान्तिजनक भावाभिनिवेश से होती हो, लेकिन यह भ्रान्ति व भ्रम उस आवश्यकता की पूर्ति कर पाने में अक्षम सिद्ध होने के साथ ही सन्तुष्टि से जुड़ी सुखानुभूतियों की तलाश में लगे रहने वाले सिद्ध होते हैं।

साइको न्यूरोसिस का सिद्धान्त पूरे विश्वास के साथ इस बात पर बल देता है कि यह अविकसित जीवन से चलती चली आ रही यौन-इच्छा संवेग ही हो सकते हैं जो कि बाद की विकास अवधि में स्वयं का नवीकरण करने की क्षमता रखते हैं और इसीलिए जो तमाम साइकोन्यूरोटिक लक्षणों को रचने के लिए प्रेरणा शक्ति प्रदान करते हैं। केवल इन यौन-आवेगों का समावेश करके ही दमन के सिद्धान्त में दीखते खाली स्थानों को भरा जा सकता है। अपने इस अनुमान पर कि स्वप्न-इच्छा अपरिहार्य रूप से अचेतन में ही जन्म लेती है, चूँकि मैं काफी कुछ बता चुका हूँ इसलिए इस विषय को यहीं छोड़ रहा हूँ। तो, सपना कोई विकृति जन्य दृश्य-घटना नहीं होता, यह हमारे मानसिक सन्तुलन की किसी गड़बड़ का पूर्वानुमान भी नहीं लगाता, और न ही यह अपने पीछे हमारी क्षमताओं या सामर्ध्यताओं की कोई कमजोरी छोड़ जाता है। यह आपत्ति कि किसी स्वस्थ व्यक्ति के सपने से कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता–बिना कोई टिप्पणी किए खारिज की जा सकती है। अपनी जानकारी के अनुसार हम कह सकते हैं कि सपना यह सबूत देता है कि दमित सामग्री सामान्य व्यक्ति में भी अपना अस्तित्व बनाए होती है और मानसिक गतिविधि–को चलाने योग्य भी बनी रहती है। सपने दमित सामग्री की अभिव्यक्ति होते हैं, सिद्धान्तत: यह बात सभी मामलों में सही उतरती है। जाग्रत अवस्था में अभिव्यक्ति से वंचित रहने और परस्पर विरोधी रवैये के चलते आन्तरिक बोध से कही हुई दमित मानसिक सामग्री नींद के दौरान स्वयं का सचेतन में अनधिकार प्रवेश करा कर समझौता करती हुई अपना रास्ता बना लेती है। जो भी हो, स्वप्न विश्लेषण हमारे मानसिक जीवन में विद्यमान अचेतन तत्त्वों की जानकारी प्राप्त करने का माध्यम होता है।

स्वप्न-विश्लेषण द्वारा हम इस सबसे उकृष्ट और सबसे रहस्यमय उपकरण के अन्दर झाँक सकते हैं, यह सच है कि हम इसमें कुछ दूर तक ही जा सकते हैं, परन्तु यह हमें एक ऐसी शुरुआत करा देता है जिससे हम इसमें और गहरे उतर कर इसकी गुत्थियों को खोल सकते हैं।

अचेतन और सचेतन मनः वास्तविकता

जब हम यह कहते हैं कि कोई अचेतन विचार स्थानांतरित होकर पूर्वचेतन में जाने का भरसक प्रयास करता है ताकि सचेतन में घुसपैठ कर सके, तब हमारा यह मतलब नहीं होता कि वह किसी भावानुवाद की तरह नए स्थान में जाकर कोई दूसरा ही विचार बन जाता है, और जब हम सचेतन में गहरे पैठने की बात कहते हैं, हमारा अभिप्राय स्थान परिवर्तन होना नहीं होता। जब हम कहते हैं कि कोई पूर्वचेतन विचार दबा दिया जाता हे और बाद में अचेतन द्वारा उसे आत्मसात कर लिया जाता है, तब हम इन शब्द-रूपकों के बहकावे में आ सकते हैं, ऐसा लगने लगता है कि जैसे किसी खास इलाके के लिए संघर्ष हो रहा हो, जैसे किसी एक मनोवैज्ञानिक बस्ती का प्रबन्ध सचमुच बिगड़ गया हो और कोई नई बस्ती बनाई जा रही हो। दरअसल, यह मानसिक संरचना नहीं है जो हमें चलायमान तत्त्व की तरह लग रही है, बल्कि यह तो इसका तन्त्रिकोत्तेजन (innervation) है।

तथापि, मैं इन दोनों प्रणालियों के सोदाहरण विचारों के प्रयोग को जारी रखना उचित व तर्कसंगत मानता हूँ। हम यदि यह याद रखें कि धारणा, विचार तथा मानसिक रचना आमतौर पर किसी भी मामले में मानसिक तन्त्र प्रणाली के अवयवी घटकों में स्थित नहीं होती बल्कि उनके 'बीच' होती है जहाँ प्रतिरोध व जुड़ाव के तार उनकी पारस्परिकता को रचते हैं, तो हम इस अभिव्यक्ति की किसी आलोचना करने से बनेंगे। जो भी चीज़ आन्तरिक बोध की वस्तु बन जाती है, वह दृश्य बन जाती है–दूरबीन में एक दूसरे को काटती प्रकाश रेखाओं द्वारा बनी छवि की तरह। परन्तु हम इन प्रणालियों के बारे में सोचने में बिल्कुल सही हैं–जिनमें मानसिक जैसा कुछ नहीं है और जो हमारे मानसिक बोध की पकड़ में भी कभी नहीं आती है–जैसे कि दूरबीन के लैंस जो छवि को बनाते भर हैं। यदि हम यह तुलना करना जारी रखें तो हम कह सकेंगे कि इन दोनों प्रणालियों के बीच सैंसरशिप प्रकाश किरणों के वक्री होकर एक नए माध्यम में पहुँचने के अनुकूल हो जाता है।

अभी तक हम अपनी ही ज़िम्मेदारी पर मनोविज्ञान को विकसित करते आए हैं। अब समय आ गया है कि हम आधुनिक मनोविज्ञान में व्याप्त सिद्धान्तों को भी देखें। लिप्स ने ज़ोर देकर कहा है कि मनोविज्ञान में अचेतन की समस्या एक मनोवैज्ञानिक समस्या कम और मनोविज्ञान की समस्या ज़्यादा है। जब तक मनोविज्ञान इस समस्या को यह शाब्दिक व्याख्या देकर इसे निपटाता रहा कि 'मन' (psychic) ही सचेतन (conscious) है, और कि 'अचेतन मानसिक घटनाएं' स्पष्ट विरोधाभास हैं, तब तक किसी असामान्य मस्तिष्कीय अवस्था को किसी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने के लिए किसी काम-चिकित्सक के

पास कोई चारा नहीं था। काम-चिकित्सक व दार्शनिक तभी एक मत हो सकते हैं जब दोनों यह स्वीकार कर लें कि 'अचेतन मानसिक प्रक्रिया' ही एक स्थापित तथ्य के लिए समुचित व तर्क संगत अभिव्यक्ति है। किसी काय-चिकित्सक के सामने अपने कन्धे उचका कर इस बात को नकार देने के अलावा कोई चारा नहीं है कि 'सचेतन मन साइकिक का अनिवार्य तथा अपरिहार्य गुण-धर्म है।' किसी एक ही व्यक्ति के मानसिक जीवन का बुद्धिमत्तापूर्ण अवलोकन तथा किसी एक ही सपने का विश्लेषण उसे यह प्रबल व अडिग विश्वास दिला सकता है कि विचारों का सबसे जटिल व सबसे सही चलन बिना सचेतन के जागे भी हो सकता है। यह सच है कि काय-चिकित्सक इन अवचेतन क्रियाओं को तब तक नहीं सीख पाता जब तक कि वे सचेतन पर अपना प्रभाव नहीं डालतीं। परन्तु सचेतन पर पड़ने वाला यह प्रभाव एक ऐसा मानसिक चरित्र दिखा सकता है जो कि अचेतन प्रक्रिया से पूरी तरह भिन्न हो।

जैसा कि लिप्स ने कहा है–अचेतन को मानसिक जीवन के व्यापक आधार के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। अचेतन वह विशाल वृत्त है जिसमें सचेतन एक छोटे से वृत्त के रूप में शामिल है, जो भी सचेतन है उसकी एक प्राथमिक अचेतन अवस्था रही है, हालाँकि अचेतन इस अवस्था में ठहर सकता है मगर फिर भी पूरी मानसिक गतिविधि के रूप में माना जाने का दावा कर सकता है। अचेतन ही यथार्थ मानसिक अवस्था है, अपने आन्तरिक स्वरूप में हमें यह उतना ही अज्ञात है जितनी कि बाहरी जगत की वास्तविकता, और यह सचेतन द्वारा उतनी ही अधूरी सम्प्रेषित होती है जितनी कि हमारी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा हमें दी गई बाहरी जगत की जानकारी।

अनेक उपलब्धियाँ–जो कि सपने को आश्चर्यजनक बताती हैं, उनका श्रेय सपने को नहीं बल्कि उन अचेतन विचारधाराओं को जाता है जो कि दिन के दौरान सक्रिय रहती हैं। सपना यदि शरीर की प्रतीकात्मक प्रस्तुति के साथ कोई दृश्य बनाता प्रतीत हो तो–जैसा कि शर्नर ने कहा है–हम जानते हैं कि यह किसी अचेतन काल्पनिकता का ही तमाशा होता है जो शायद यौन-आवेगों के अन्तर्गत रही हो, और वह अपनी अभिव्यक्ति न केवल सपने में कर देती है बल्कि हिस्टीरिया के निर्मूल भय और अन्य लक्षणों में भी करती है। सपना यदि दिन में शुरु हुए काम को जारी रखता है और उसे पूरा भी करता है, और नए-नए विचारों को भी प्रकाश में लाता है तो हमें सपने के बहुरुपिए वाले इस लिबास को उतारना भर होगा जो कि स्वप्न-क्रिया में योगदान करने वाला और मन की गहराइयों में छिपी शक्तियों का सहायक हुआ करता है। हम बौद्धिक व कलात्मक कृतियों को भी सचेतन स्वभाव की बताकर शायद उसे कुछ ज़्यादा ही महत्त्व दे देते हैं। गोयथे और हैल्मोल्ट्ज़ जैसे अत्यधिक रचनाशील लेखकों की रिपोर्टों से पता चला है कि उनकी रचनाओं का सबसे अधिक सारगर्भित तथा

मौलिक भाग उनके अन्त: स्फुरण से उभर कर आया है। अन्य मामलों में भी–जहाँ मानसिक बलों का सामूहिक प्रयास रहा है–वहाँ इस तथ्य में भी कोई अचरज नहीं रहा है कि सचेतन गतिविधि ने भी अपना सहयोग दिया है। मगर सचेतन गतिविधि का यह बहुत दुरुपयोग किया गया अधिकार रहा है कि जहाँ कहीं भी वह भाग लेती है वहाँ अन्य गतिविधियों को हमारी नजर में नहीं आने देती।

मनोरोगी-अध्ययन के और सपनों के विश्लेषण से हम जिस नए तथ्य को जान पाए हैं वह यह है कि अचेतन–अर्थात् जो कुछ भी मानसिक है–दो भिन्न प्रणालियों के कार्यकलाप के रूप में कार्य करता है, और वह कि इसी तरह यह सामान्य मानसिक गतिविधियों में कार्य करता है। फलस्वरूप अचेतन मन दो प्रकार के हैं, मगर मनोवैज्ञानिकों द्वारा इन्हें अभी तक अलग-अलग नहीं पहचाना गया है। मनोवैज्ञानिक अर्थ में है दोनों अचेतन मन ही, लेकिन हमारे अर्थ में पहला–जिसे हम अचेतन कहते हैं–सचेतन की तरह ही अक्षम होता है, जबकि दूसरा–जिसे हम इसकी उत्तेजनाओं के कारण पूर्वचेतन कहते हैं–सचेतन तक पहुँचने में सक्षम रहता है, मगर शायद सैंसरशिप में से गुजरने से पहले नहीं। इस तथ्य ने कि सचेतन तक पहुँचने के लिए उत्तेजनाओं को एक अपरिवर्तनीय शृंखला में से गुजरना पड़ता है क्योंकि सैंसरशिप द्वारा उनमें किए गए परिवर्तनों से धोखा हो जाता है, हमें स्थानिक शब्दों में सादृश्यता द्वारा उनका वर्णन करने योग्य बना दिया है। हमने दोनों प्रणालियों को एक दूसरे के साथ तथा सचेतन के साथ सम्बन्धों का वर्णन यह कहते हुए किया है कि पूर्वचेतन दरअसल अचेतन तथा सचेतन के बीच पड़े हुए पर्दे की तरह होता है। पूर्वचेतन न केवल सचेतन तक पहुँचने को रोकता है बल्कि स्वैच्छिक स्वतःचरता तक पहुँचने पर भी अंकुश रखता है, और सचल भावाभिनिवेशी ऊर्जा के निकल जाने पर भी नियन्त्रण रखता हे जिसके अंश से हम अवधान के रूप में परिचित हैं।

यदि मुझसे पूछा जाए कि सपनों के अध्ययन का सैद्धान्तिक महत्त्व क्या है तो मैं कहूँगा कि यह मनोविज्ञान की अभिवृद्धि करता है और न्यूरोसिस को समझने की शुरुआत कराता है। इस मानसिक तन्त्र की कार्य-पद्धति और संरचना के पूर्ण ज्ञान के महत्त्व का पूर्व दर्शन कौन कर सकता है? परन्तु यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि व्यक्तिगत चरित्र छिपी हुई विलक्षणताओं से पर्दा हटाने और मन के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से इस अध्ययन का वास्तविक महत्त्व क्या है? क्यों स्वप्न द्वारा अचेतन आवेग हमारे मानसिक जीवन में विद्यमान वास्तविक शक्तियों के महत्त्व को प्रकट नहीं कर देते? क्या दमित इच्छाओं के नैतिक महत्त्व को यूँ ही अनदेखा कर देना चाहिए क्योंकि जैसे कि वे स्वप्न की रचना कर देती हैं, वैसे ही कल वे कुछ और रच सकती हैं?

इन प्रश्नों के उत्तर देना मैं उचित नहीं समझता। सपनों की समस्या के इस पहलू पर मैंने कभी विचार नहीं किया है। तथापि, कुछ भी हो, रोमन सम्राट तब

बिल्कुल गलत था जब उसने अपने एक नागरिक को फाँसी का आदेश केवल इसलिए दे दिया था कि उस बेचारे ने अपने सपने में सम्राट को मार दिया था। सम्राट को सबसे पहले उसके सपने के अर्थ को समझना चाहिए था, इस बात की बहुत सम्भावना थी कि जो दिखाई दिया था वह वास्तविकता न थी। और, यदि कोई सपना ऐसा देशद्रोह पूर्ण अर्थ रखता भी हो तो भी इस बारे में प्लूटो के शब्द याद कर लेने चाहिए कि: एक शरीफ आदमी उस बात का सपना देखकर ही स्वयं कां संतुष्ट कर लेता जिसे कि कोई बदमाश आदमी यथार्थ में सचमुच कर डालता है। इसलिए मेरा यह मानना है कि सपने को बुरा होने के दोष से मुक्त कर दिया जाना चाहिए। क्या किसी 'वास्तविकता' का आरोप अचेतन इच्छाओं पर लगाया जा सकता है–मैं नहीं मानता। वास्तव में, वास्तविकता को सभी क्षणिक तथा मध्यवर्ती विचारों द्वारा नकार दिया जाता है। अगर हमारे सामने अचेतन इच्छाएँ हों और वे अपनी सच्ची व समापक अभिव्यक्ति में हों तो भी हमें यह याद रखना चाहिए कि मानसिक वास्तविकता अपने अस्तित्व का एक विशेष स्वरूप रखती है जिसका भौतिक वास्तविकता के साथ घालमेल नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए यह अनावयक प्रतीत होता है कि लोग अपने सपनों की अनश्वरता की जिम्मेदारी लेने से इंकार कर दें। इस मानसिक तन्त्र के काम करने के तरीके का मूल्यांकन करने से और सचेतन व अचेतन मन के बीच सम्बन्धों में झाँकने से, हमारे स्वप्न-जीवन में तथा हमारे कल्पना-लोक के अधिकांश भाग में जो कुछ आक्रामक या आपत्तिजनक है वह तिरोहित हो जाता है।

एक सपना वर्तमान यानि वास्तविकता के साथ हमारे सम्बन्ध के बारे में जो कुछ बताता है उसे हम अपने सचेतन में ढूँढ़ने लगते हैं लेकिन अगर हम विश्लेषण के आवर्धक शीशे (magnifying-glass) के नीचे दिखाई पड़ते जिस विशालाकार को देखा, वह तो (सचेतन मे) एक नन्हें से भी नन्हें जीव के समान है।' (H. Sachs)

किसी व्यक्ति के चरित्र को आँकने के सभी व्यावहारिक प्रयोजनों के लिए, अधिकांश मामलों में, उसके विचारों की सजग अभिव्यक्ति तथा उसके कृत्य काफी रहते हैं। कृत्य, विशेष रुप से, प्रथम पंक्ति में रखने लायक होते हैं क्योंकि सचेतन में प्रवेश करने वाले बहुत सारे आवेग तो कृत्य रूप में प्रकट होने से पहले ही मानसिक क्षेत्र में बलपूर्वक निष्क्रिय कर दिए जाते हैं, दरअसल इसका कारण कि वे अपने रास्ते में पड़ने वाले मानसिक अवरोधों से अकसर भिड़ते क्यों नहीं हैं, यह है कि अचेतन उनकी मुठभेड बाद में होने के प्रति आश्वस्त रहता है।

लेकिन, सपनों के महत्त्व का हमारे भविष्य की जानकारी के साथ क्या सम्बन्ध है? यह बात ही वास्तव में पूरी तरह असंगत है। मैं इसे यूँ कहना चाहूँगा: '(सपने का) अतीत की जानकारी के साथ क्या सम्बन्ध है?' क्योंकि सपने का

स्रोत हर तरह से अतीत में ही होता है। पुरातन विश्वास कि सपने भविष्य को प्रकट करते हैं या भविष्य का रहस्य खोलते हैं–सच से पूरी तरह खाली नहीं है। किसी इच्छा को पूरी होती दिखाकर सपना हमें, निश्चित रूप से, भविष्य की ओर उन्मुख कर देता है, परन्तु वह भविष्य जिसे कि स्वप्न-द्रष्टा वर्तमान की तरह ले रहा होता है, वह तो अनश्वर इच्छा द्वारा अतीत के प्रतिरूप में गढ़ा जा चुका होता है।

❑❑❑

हमें सपने क्यों आते हैं? क्या हमारे सपनों का कोई गहरा अर्थ होता है? क्या सपने आने वाली किसी सच्चाई की सूचना देते हैं या फिर बीते हुए दिनों पर कोई नई रोशनी डालते हैं? क्या सपने हमारे मन के भीतर छिपी किसी दबी आशा, निराशा या अभिलाषा की तरफ इशारा करते हैं या वे महज दिन-भर की बातों का एक बेजोड़ चलचित्र हैं। ऐसे ही कई सवाल हैं जो हम सबके मन में कभी न कभी ज़रूर उठते हैं। और इन सब सवालों का जवाब पाएंगे आप इस पुस्तक में। विश्व-विख्यात मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रॉयड ने अपने जीवनकाल में सपनों पर गहन वैज्ञानिक अध्ययन किया था और उसी का निचोड़ इस प्रामाणिक पुस्तक में प्रस्तुत है।

नया साहित्य